

भाग – 1
सहज योग

(याद, अवस्था, स्वरूप, स्थिति)

अव्यक्त वाणी संकलन (1969-2015)



SpARC Wing

अधिक जानकारी के लिए संपर्क : बी.के.निलिमा (मो)9869131644/8422960681



शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन



**परम आदरणीय नलिनीदीदी जी,
संचालिका, घाटकोपर सबझोन**

संगमयुग है हि याद में रहने का युग। मुख्य श्रीमत यही है कि ज्यादा से ज्यादा समय याद की यात्रा में रहना। निरन्तर योगी, सहज योगी - यह है ऊँची स्थिति, यह है ऊँचा जाना। योग लगाना नहीं पड़ेगा लेकिन हर सेकण्ड, हर समय योगी जीवन स्वतः ही होगी। सहजयोगी के आगे कितनी भी बड़ी बात ऐसे सहज हो जाती है जैसे कुछ हुआ ही नहीं, सूली से काँटा। सहज राजयोग भाग 1 पुस्तिका द्वारा राजयोगी, निरन्तर योगी, प्रयोगी, ज्ञानयोगी, कर्मयोगी बनने का अभ्यास कर सकते हो।

अमृतवेला भोले भण्डारी के वरदानों के खजाने से सहज वरदान प्राप्त होने का वेला है। अमृतवेले और उसके बाद अपने सारे दिन की दिनचर्या जिसमें मन बिजी रहे, कोई न कोई ड्रिल, अनेक ड्रिल बापदादा ने सुनाई है, लेकिन कोई न कोई ड्रिल साथ-साथ करते रहना। मन की ड्रिल जितना बार करेंगे उतना ही सहज योगी, सरल योगी बनेंगे। सहज राजयोग भाग 2 पुस्तिका द्वारा इसका अभ्यास कर सकते हैं।

विश्व में एक तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि होगी, तब पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि ज्वाला रूप में आवश्यक है। यह ज्वाला रूप इस भ्रष्टाचार, अत्याचार के अग्नि को समाप्त करेगी और दूसरे तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करायेगी। विदेहि, आत्म अभिमानी, अव्यक्त, ज्वालारूप, फरिश्ता बनने के लिए सहज राजयोग भाग 3 पुस्तिका मार्गदर्शन करेगी।

समय अचानक और नाजुक आ रहा है इसलिए एवररेडी, अशरीरीपन का अनुभव आवश्यक है। देहि अभिमानी, लवलीन, कर्मातीत, कम्बाइन्ड, बीजरूप, अशरीरी आदि स्थिति का अभ्यास करने के लिए सहज राजयोग भाग 4 पुस्तिका मार्गदर्शन करेगी।

बापदादा के वरदानों की स्मृति के साथ विजयी भव, सफलतामूर्त भव !!!

धन्यवाद।

**योग के मार्ग पर हम बुलाते तुम्हें ।
आओ भाई बनो राजयोगी ।।**

सूची

| क्र. | विषय | पृष्ठ क्र. |
|------|-------------------------------|------------|
| 1 | योगी / सहजयोगी / सहयोगी | 4 |
| 2 | राजयोगी | 37 |
| 3 | निरंतर योगी | 46 |
| 4 | प्रयोगी | 48 |
| 5 | ज्ञानयोगी | 50 |
| 6 | बुद्धि योग | 51 |
| 7 | कर्मयोगी | 57 |
| 8 | रूहानी यात्रा / याद की यात्रा | 89 |

1. योगी / सहजयोगी / सहयोगी

13.3.71... .. बन्धनमुक्त की निशानी है योगयुक्त। और, जो योगी होगा, ऐसे योगी का मुख्य गुण कौनसा दिखाई देगा? जान-बूझकर के बुद्धि का खेल कराते हैं। तो ऐसे योगी का मुख्य गुण वा लक्षण क्या होगा? जितना योगी उतना सर्व का सहयोगी और सर्व के सहयोग का अधिकारी स्वतः ही बन जाता है। योगी अर्थात् सहयोगी। जो जितना योगी होगा उतना उसको सहयोग अवश्य ही प्राप्त होता है। अगर सर्व से सहयोग प्राप्त करना चाहते हो तो योगी बनो। योगी को सहयोग क्यों प्राप्त होता है? क्योंकि बीज से योग लगाते हो। बीज से कनेक्शन अथवा स्नेह होने के कारण स्नेह का रिटर्न सहयोग प्राप्त हो जाता है। तो बीज से योग लगाने वाला, बीज को स्नेह का पानी देने वाला सर्व आत्माओं द्वारा सहयोग रूपी फल प्राप्त कर लेता है। जैसे साधारण वृक्ष से फल की प्राप्ति के लिए क्या किया जाता है? वैसे ही जो योगी है उसको एक- एक से योग लगाने की आवश्यकता नहीं होती, एक-एक से सहयोग प्राप्त करने की आशा नहीं रहती। लेकिन एक बीज से योग अर्थात् कनेक्शन होने के कारण सर्व आत्मायें अर्थात् पूरे वृक्ष के साथ कनेक्शन हो ही जाता है। तो कनेक्शन का अटेन्शन रखो। तो सहयोगी बनने के लिए पहले अपने आप से पूछो कि कितना और कैसा योगी बना हूँ? अगर सम्पूर्ण योगी नहीं तो सम्पूर्ण सहयोगी नहीं बन सकते, न सहयोग मिल सकता है। कितनी भी कोई कोशिश करे परन्तु बीज से योग लगाने के सिवाय कोई पत्ते अर्थात् किसी आत्मा से सहयोग प्राप्त हो जाये— यह हो नहीं सकता। इसलिए सर्व के सहयोगी बनने वा सर्व का सहयोग लेने के लिए सहज पुरुषार्थ कौनसा है? बीज रूप से कनेक्शन अर्थात् योग। फिर एक-एक से मेहनत कर प्राप्त करने की आशा समाप्त हो जायेगी, मेहनत से छूट जायेंगे। शार्टकट रास्ता यह है। अगर सर्व का सहयोगी, सदा योगयुक्त होंगे तो बन्धमुक्त भी जरूर होंगे। क्योंकि जब सर्व शक्तियों का सहयोग, सर्व आत्माओं का सहयोग प्राप्त हो जाता है तो ऐसी शक्तिरूप आत्मा के लिए कोई बन्धन काटना मुश्किल होगा? बन्धन- मुक्त होने के लिए योगयुक्त होना है। और योगयुक्त बनने से स्नेह और सहयोग युक्त बन जाते हैं। तो ऐसे बन्धनमुक्त बनो। सहज-सहज करते भी कितना समय लग गया है।

30.6.73 सहज योगी अर्थात् सर्वशक्तियाँ क्या आपके पूर्ण रूप से सहयोगी हैं?

20.2.74 किला मज़बूत है ना? किला अर्थात् संगठन। जब विश्व पर प्रभाव डाल सकते हो तो क्या समीप वालों को प्रभावित नहीं कर सकते? इतना सहजयोगी बनो जो आपको देखते ही औरों का योग लग जावे। एक घड़ी का रोब सारे दिन की रूहानियत को तो गँवा देता है, इससे तो फौरन किनारा करना चाहिये।

21.6.74 कोटों में कोऊ अर्थात् पूरे ब्राह्मण परिवार में से बहुत थोड़ी आत्मायें अपनी विशेषता को जानती भी हैं, विशेषता में रहती भी हैं और कर्म में आती भी हैं। अर्थात् अपनी विशेषता से ईश्वरीय कार्य में सदा सहयोगी बनती

हैं। ऐसी सहयोगी आत्मायें बापदादा की अति स्नेही हैं। ऐसी आत्मायें सदा सरलयोगी व सहजयोगी व स्वतःयोगी होती हैं।

24.6.74 टाइटल भी तब मिलता है, जब कि उसमें पास होते हैं। तो जब आपको भी अपनी सहजयोगी की स्थिति दिखाई दे और सभी यह महसूस करें कि आपका सहजयोग है, तब ही पास कहेंगे।

तो सहजयोगी, राजयोगी आदि जो भी ज्ञान और योग के टाइटल हैं, वह आप में आठ घण्टे तो पूर्ण रूप में होने ही चाहिए जिससे कि अन्य आत्मायें भी यह महसूस करें व सर्टिफिकेट प्रदान करें कि हाँ यह सब लक्षण इसमें हैं, तब ही इसमें 75% मार्क्स मिल सकेंगे।

11.2.75 ड्रामा प्रमाण जितना सहजयोगी, श्रेष्ठ योगी और सफलतामूर्त बनने की सेल्वेशन (Salvation) प्राप्त है, उतना ही रिटर्न (Return) दिया है? वातावरण की भी सेल्वेशन है तो इसका रिटर्न वातावरण को पॉवरफुल बनाकर रखने में, सहयोगी बनने में रिटर्न दो। साथ-साथ श्रेष्ठ संग है, यह भी सेल्वेशन है तो जो भी आत्मायें अपना भाग्य प्राप्त करने के लिए आती हैं उन्हीं को भी अपने संग की श्रेष्ठता का अनुभव हो। यह है रिटर्न। सब अनुभव करें कि यह सब आत्मायें संग के रंग में रंगी हुई हैं।

6.2.76 अब अपने को चेक करो कि राइट हैंड (Right hand) हो या लेफ्ट हैंड; लॉयर (Lawyer) हो या लॉ फुल (Lawful) हो? बाप-दादा के तो दोनों ही सहयोगी हैं। सदा अपने को सहयोगी समझने से सहज योगी बन जायेंगे। करावनहार बाप-दादा के निमित्त करनहार समझ कर चलने से सदैव निश्चिन्त और हर्षित रहेंगे।

14.5.77 माया को अर्थात् विघ्न को कैसे मिटावें? तो झाटकू न होने के कारण, माया भी चिल्लाती – आप भी चिल्लाते हो। इसलिए फ़रमान पर चलो, तो वह कुर्बान हो जाए। आप बाप पर कुर्बान जाओ, माया आप पर कुर्बान जायेगी। कितना सहज साधन है फ़रमान पर चलना। स्वमान और फ़रमान सहज है ना। इस से जन्म-जन्मान्तर की मुश्किल से छूट जायेंगे। अभी सहज योगी और भविष्य में सहज जीवन होगी। ऐसी सहज जीवन बनाओ।

20.6.77 सदा सहजयोगी बनने का साधन है – महादानी बनना

20.6.77 सभी ब्राह्मण आत्माएं स्वयं को सहजयोगी वा निरन्तर योगी की श्रेष्ठ स्टेज पर सदा स्थित रहने के पुरुषार्थ में, सभी का लक्ष सहजयोगी बनने का है। लेकिन अपने कमजोरियों के कारण कभी सहज अनुभव करते, कब मुश्किल। कमजोरी कहकर मुश्किल बना देते हैं। वास्तव में हरेक श्रेष्ठ आत्मा वा ब्राह्मण आत्मा, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा, त्रिकालदर्शी, मास्टर ज्ञान सागर आत्मा कोई भी कर्म में वा संकल्प में मुश्किल अनुभव नहीं कर सकती। सहजयोगी के साथ-साथ ऐसी श्रेष्ठ आत्मा, स्वतः होती है। क्योंकि ऐसी श्रेष्ठ आत्मा के लिए बाप और सेवा – यही संसार है। बाप की याद और सेवा के ब्राह्मण जन्म के संस्कार हैं।

अगर सहजयोगी और स्वतः योगी नहीं हैं; तो अवश्य बाप से सर्व सम्बन्ध और सर्व प्राप्ति नहीं है। तो स्वतः योगी हुए न? अगर सहजयोगी और स्वतः योगी नहीं है; तो अवश्य बाप से सर्व सम्बन्धों का अनुभव नहीं है। सर्व सम्बन्धों से बाप को अपना नहीं बनाते हैं। सर्व प्राप्ति का आधार एक बाप हैं। इस अनुभव को अपनाया नहीं है।

अब सहजयोगी बनने के लिए कौन-सा प्रयत्न करेंगे? सहजयोगी बनने चाहते हो न? तो सदा सहजयोगी अर्थात् सदा सहयोगी। सदा सहजयोगी बनने का साधन – सदा अपने को संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा और हर कार्य द्वारा विश्व के सर्व आत्माओं के प्रति सेवाधारी समझ, सेवा में ही सब कुछ लगाओ।

हर बात द्वारा सहयोगी बनो, तो सहजयोगी बन ही जायेंगे।

22.6.77 तो सदा देही अभिमानी बनने का अर्थात् नष्टोमोहा बनने का सहज साधन क्या हुआ? ट्रस्टी हूँ, मैं ट्रस्टी हूँ। कल्प पहले के यादगार में भी अर्जुन का जो यादगार दिखाया है – उसमें अर्जुन को मुश्किल कब लगा? जब मेरापन आया। मेरा खत्म तो नष्टोमोहा। अर्थात् स्मृति स्वरूप हो गए। मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी दुकान, मेरा दफ्तर – यह मेरा-मेरी सहज को मुश्किल कर देता है। सहज मार्ग का साधन है – ‘नष्टो मोहा अर्थात् ट्रस्टी।’ इस स्मृति से स्वयं और सर्व को सहज योगी बनाओ। समझा?

सदैव अपने को परमधाम निवासी वा पार्ट बजाने लिए मधुबन निवासी समझो। मधुबन निवासी समझने से नशा वा खुशी रहती है। मधुबन में कितनी भी लकलीफ में हो, फिर भी यहाँ रहना पसन्द करते। घर में भल डनलप के गद्दे हो फिर भी यहाँ अच्छा लगता। क्योंकि मधुबन निवासी बनने से ऑटोमेटिकली सहज और निरन्तर योगी बन जाते। मधुबन की महिमा भी है। मधुबन और मधुबन की मुरली मशहूर है। इसलिए मधुबन में आना सब पसन्द करते हैं। तो सदैव अपने को मधुबन निवासी समझकर चलना। तो सहज योगी की स्थिति रहेगी।

13.1.78 नया प्लैन बनाओ कि स्वतः और सहजयोगी कैसे बने। क्योंकि सभी इस वर्ष में यही लक्ष्य रख करके चल रहे हैं कि अब लास्ट में सहजयोग और स्वतः योग का अनुभव जरूर होना चाहिए। तो सहजयोग किस आधार पर होता और या स्वतः योगी किस युक्ति से बन सकते। यह प्लान निकालो और अनुभव करो फिर सभी को सुनाओ तो वह आपके गुण-गान करेंगे। मेहनत कम और सफलता मधुबन को वरदान भूमि कहा जाता है तो वरदान मूर्त बनो। ज़्यादा ऐसे नये पुरुषार्थ के तरीके बनाओ।

सदैव स्वयं को सर्वश्रेष्ठ महान आत्मा समझते हो। महान आत्मा जिसकी स्मृति से स्वतः ही हर संकल्प और हर कर्म महान अथवा सर्वश्रेष्ठ होते हैं। जैसे आजकल की दुनिया में अल्पकाल की पोजीशन (Position) वाली आत्माएँ अपने पोजीशन की स्मृति में रहने के कारण दिन-रात स्वतः ही उसी नशे में रहती हैं वैसे बाप द्वारा प्राप्त हुई पोजीशन को स्मृति में रखना सहज और स्वतः है। जैसी पोजीशन है वैसा ही कर्म, जैसा नाम वैसा ही श्रेष्ठ

कर्म भी है इसलिए वर्तमान समय सहजयोगी के साथ कर्मयोगी भी कहलायेंगे। कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म द्वारा बाप से स्नेह और सम्बन्ध का हर आत्मा को साक्षात्कार होगा।

सहजयोगी की स्टेज स्वतः बनी रहे उसकी विधि:- अमृतवेले के महत्व को जानो। अमृतवेला है दिन का आदि। जो अमृतवेले अर्थात् सारे दिन के आदि के समय पावरफुल स्टेज (Powerful stage) बनायेंगे तो सारा दिन मदद मिलेगी। सारे दिन की जीवन महान बन जायेगी। क्योंकि जब अमृतवेले विशेष बाप से शक्ति भर ली तो शक्ति स्वरूप हो चलने से मुश्किल नहीं होगा, चाहे जैसा कार्य आवे मुश्किल का अनुभव नहीं, लेकिन प्राप्त शक्ति के आधार से सहज हो जायेगा। इससे सहज योगी की स्टेज स्वतः बनी रहेगी।

14.2.78 सहजयोगी हो ना। मुश्किल तो नहीं लगता? कोई भी परिस्थिति जो भल हलचल वाली हो लेकिन बाबा कहा और अचल। तो बाबा कहने में कितना टाइम लगता है। परिस्थिति के संकल्प में चले जाते हैं तो जितना समय परिस्थिति का संकल्प रहता उतना समय मुश्किल लगता। अगर कारण के बजाए निवारण में चले जाओ तो कारण ही निवारण बन जाये।

21.12.78 सदा हर कर्म में वरदान का हाथ अपने ऊपर अनुभव करेंगे। हर दिनचर्या में अपने साथ सर्व सम्बन्धों से समीप और साकार रूप में साथ का अनुभव करेंगे। स्वतः योगी और सहज योगी होंगे।

टीचर्स तो बाप समान हैं ना, जैसे बाप शिक्षक है वैसे आप भी शिक्षक हो तो समानता हो गई ना! तो समान वाले को क्या कहा जाता है? फ्रैन्ड। टीचर भी बाप-दादा की फ्रैन्ड्स हैं, यह फ्रैन्ड्स का सम्बन्ध भी याद रहे तो सहजयोगी हो जायेंगे। फ्रैन्ड्स का नाता बहुत समीप का नाता है। फ्रैन्ड्स आपस में जितना स्पष्ट होते है उतना माँ बाप से भी नहीं होते। फ्रैन्ड्स का सम्बन्ध याद रहे तो तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खेलूँ यह अभ्यास सहज हो जायेगा।

12.1.79... .. सदा यह स्मृति रहे कि हम कल्प-कल्प के विजयी हैं। अनेक बार कर चुके हैं अब सिर्फ रिपीट कर रहे हैं, तो सहज योगी होना चाहिए ना – क्या करें कैसे करें, इन सब कम्प्लेन (Complain) से कम्प्लीट (Complete) कम्प्लीट आत्माओं की सब कम्प्लेन खत्म हो जाती हैं।

14.1.79... .. जिस बात में मुश्किल अनुभव करो वह मुश्किल की बात बाप पर छोड़ दो – स्वयं सदा सहजयोगी रहो। सहजयोगी रहना ही सदा सर्विस करना है। आपकी सूक्ष्म योग की शक्ति स्वतः ही आत्माओं को आपके तरफ आकर्षित करेगी तो यही सहज सेवा है, यह तो सभी करते हो ना।

18.1.79... .. जैसे आज के दिन सहजयोगी, निरन्तरयोगी, एक बाप दूसरा न कोई – इसी स्थिति में स्थित रहे, ऐसे ही सदा अमर भव के वरदानी बनो। तो क्या होगा। सदाकाल के लिए जुदाई को विदाई मिल जावेगी और सदा मिलन की बधाई होगी। स्नेह स्वरूप को समान स्वरूप में परिवर्तन करो।

1.2.79... .. हर संकल्प वा कर्म बाप समान करने से – निरन्तर सहजयोगी की स्टेज का अनुभव :- संगमयुग का श्रेष्ठ स्थान है बाप का दिलतख्त, जो इस तख्त पर बैठते हैं वही विश्व के तख्त के अधिकारी बनते हैं। और जैसे बाप परमपूज्य है वैसे बच्चे भी पूज्य बन जाते हैं। क्योंकि दिल में वही समाये जाते हैं जो समान होते हैं, तो बाप समान फालो फादर करने वाली आत्मायें हो ना – ऐसे अनुभव होता है जो बाप की स्मृति वह बच्चों की स्मृति, जो बाप के गुण वह बच्चों के गुण, जो बाप का कर्तव्य वह बच्चे का। इसको कहा जाता है फालो फादर। जो भी संकल्प वा कर्म करो तो पहले चेक करो कि बाप समान है, अगर बाप समान है तो सहजयोगी की स्टेज का अनुभव होगा।

19.11.79... .. जो सदा बाप के दिलतख्तनशीन हैं वह निरन्तर स्वतः योगी रहते हैं, मेहनत की कोई बात है ही नहीं। क्योंकि एक तो सम्बन्ध बड़ा समीप है तो मेहनत काहे की। दूसरे प्राप्ति अखुट है, जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ स्वतः याद होती है। ऐसे स्वतः और सहज योगी हो कि मेहनत करनी पड़ती है।

26.11.79... .. चल रहे हैं, कर रहे हैं इससे अभी काम नहीं चलेगा। इसमें भी खुश हो जाना कि रोज़ क्लास तो करते हैं, रेगुलर पन्चुअल हैं, सेवा भी करते हैं लेकिन जो बाप का डायरेक्शन है – निरन्तर योगी, सहजयोगी – उसमें रेगुलर और पन्चुअल बनो। बाप के पास वह प्रेजेन्ट मार्क पड़ेगी ना। उसकी भी मार्क्स मिलती हैं लेकिन नम्बर आगे तो इसी प्रेजेन्ट मार्क से बनेंगे।

5.12.79... ..सर्व सम्बन्धों की अनुभूति वा प्राप्ति में मग्न रहो तो पुरानी दुनिया के वातावरण से सहज ही उपराम रह सकते हो। हर कार्य के समय भिन्न-भिन्न सम्बन्ध का अनुभव कर सकते हो। और उसी सम्बन्ध के सहयोग से निरन्तर योग का अनुभव कर सकते हो। हर समय बाप के भिन्न-भिन्न सम्बन्धों का सहयोग लेना अर्थात् अनुभव करना ही योग है। ऐसे सहज योगी वा निरन्तर योगी क्यों नहीं बनते हो? बाप कैसे भी समय पर सम्बन्ध निभाने के लिए बँधे हुए हैं। जब बाप साथ दे रहे हैं तो लेने वाले क्यों नहीं लेते। सहयोग लेना ही योग कैसे होता है, यह अनुभव करो। माता का सम्बन्ध क्या है? बाप का सम्बन्ध क्या है? सखा और बन्धु का सम्बन्ध क्या है, सदा साजन के संग का अनुभव क्या है यह अलग-अलग सम्बन्ध का रहस्य अनुभव में आया है! अगर एक भी सम्बन्ध की अनुभूति से वंचित रह गये तो सारा कल्प ही वंचित रह जायेंगे। क्योंकि कल्प में अब ही सर्व अनुभवों की खान प्राप्त होती है। अब नहीं तो कभी नहीं।

12.12.79... .. अनेक बार के विजयी हो, इसलिए सहजयोगी कहा जाता है। अनेक बार किया हुआ फिर करना तो सहज हो जाता है ना। नई बात नहीं कर रहे हो। बने हुए को बना रहे हो इसलिए कहा जाता है बना-बनाया-बना रहे हैं, बना हुआ है लेकिन फिर रिपीट कर बनाया है। पहले भी पदमा पदम भाग्यशाली बने थे अब भी बन रहे हो। **ऐसे सहयोगी हो।** उनकी निशानी तथा रहन-सहन का चित्र कौन-सा दिखाया है? विष्णु की शैया अर्थात् साँप को भी शैया बना दिया अर्थात् वह अधीन हो गए वह अधिकारी हो गए। नहीं तो साँप को कोई हाथ नहीं लगाता, साँपों को शैया बना दिया अर्थात् विजयी हो गये। विकारों रूपी साँप ही अधीन हो गये अर्थात् शैया बन गये तो निश्चिन्त हो गये ना। जो विजयी होते हैं वह सदा निश्चिन्त विष्णु के समान सदा हर्षित रहते हैं। हर्ष भी तब होगा जब ज्ञान का सुमिरण करते रहेंगे। तो यह चित्र आप का ही है ना। जो भी बाप के बच्चे बने और विजयी हो रहे हैं, उन सब का यह चित्र है। सदा सामने देखो कि विकारों को अधीन किया हुआ अधिकारी हूँ। आत्मा सदा आराम स्थिति में रहे। शरीर को सोने का आराम नहीं, वह तो सेवा में हड्डियाँ देनी हैं लेकिन आत्मा की निश्चिन्त स्थिति – यह है आराम? क्योंकि कि अब भटकने से बच गये।

19.12.79... .. कहना और करना समान करने वाले हो ना? तो **मन बुद्धि के लिए सदा यह भी वायदा याद रखो तो सहज योगी बन जावेंगे। बाप ने कहा और किया।** अपना बोझ अपने ऊपर न रखो। कैसे करूँ, कैसे चलूँ, इस बोझ से हल्के होकर के ऊंची स्थिति पर जा नहीं सकते हो। इसलिए श्रीमत से संकल्प तक भी चलते चलो तो मेहनत से बच जाओगे।

19.12.79... .. संगमयुगी साहेब और बीबी बनने की बजाए गुलाम बन जाते हो। तो सच्चे साहिब की सच्ची बीबीयाँ बनो। गुलाम नहीं बनो। जो सदा सबकी नज़र से बची हुई पर्दापोश में रहती, उन पर किसी की नज़र नहीं पड़ती। तो माया से पर्दापोश और साहेब के साथ बैठ जाओ। तो सभी गुलाम आपकी सेवा में हाज़िर रहेंगे। समझा – क्या करना है? आज मेहनत से किनारा कर दो। सदा सहजयोगी तख्तनशीन बाप के साथ-साथ बैठ जाओ।

26.12.79... .. याद में रहते हो, यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन याद के साथ-साथ सहजयोगी, निरन्तर योगी हो। अगर यह नहीं तो याद भी अधूरी रहेगी।

9.1.80... .. सदा बाप और सेवा – यह दोनों ही ऐसे स्मृति में रहते हैं जैसे शरीर की स्मृति स्वतः ही रहती है। याद करना नहीं पड़ता लेकिन स्वतः याद रहती है। ऐसे बाप की याद और सेवा भी स्वतः याद रहे। अगर आप भी मेहनत करके याद में रहो तो औरों को सहजयोगी कैसे बनायेंगे। **सर्विसएबुल बच्चों की क्वालिफिकेशन है ही – ‘सहजयोगी’, स्वतः योगी।**

14.1.80... .. कर्मयोगी, सहजयोगी का हरेक सैम्पल अनेक आत्माओं को श्रेष्ठ सौदा करने के निमित्त बना सकते हैं। और जो भी हृद के गुरु होते हैं उनका एक गद्दी नशीन शिष्य अपने गुरु का नाम बाला करता है और यहाँ सतगुरु के इतने सब तख्त नशीन बच्चे हो – एक-एक बच्चा कितना श्रेष्ठ कार्य कर सकते हैं!

30.1.80... .. अच्छे-अच्छे सर्विस एबुल, सहजयोगी बच्चे बाप-दादा के सदा साथ हैं। दूर होते हुए भी स्नेह के आधार पर अति समीप हैं। आज बाप-दादा हरेक बच्चे के स्नेह, सहयोग और शक्ति स्वरूप की श्रेष्ठ मूर्त देख रहे थे। आदि से अब तक तीनों ही विशेषताओं में विशेष कितने मार्क्स रहे हैं? स्नेह में तीन बातें विशेष देखीं – 1. अटूट स्नेह – परिस्थितियाँ वा व्यक्ति स्नेह के धागे को तोड़ने की कितनी भी कोशिश करें लेकिन परिस्थितियों और व्यक्तियों की ऊँची दीवारों को भी पार कर सदा स्नेह के धागे को अटूट रखा है। कारण व कमजोरी की गाँठ बार-बार नहीं बाँधी है। ऐसा अटूट स्नेह है। 2. सदा सर्व सम्बन्धों से प्रीति की रीति प्रैक्टिकल में निभाई है। एक सम्बन्ध की भी प्रीति निभाने में कमी नहीं। 3. स्नेह का प्रत्यक्ष रिटर्न अपने स्नेही मूर्त द्वारा कितनों को बाप का स्नेही बनाया है। सिर्फ ज्ञान के स्नेही नहीं या प्योरिटी के स्नेही या बच्चों के जीवन-परिवर्तन के स्नेही नहीं या श्रेष्ठ आत्माओं के स्नेही नहीं, लेकिन 'डायरेक्ट बाप के स्नेही'। आप अच्छे हो, ज्ञान अच्छा है, जीवन अच्छा है – यहाँ तक नहीं, लेकिन बाप अच्छे-से-अच्छा है। इसको कहा जाता है बाप के स्नेही बनाना। तो स्नेह में इन तीन बातों की विशेषता देखी। 2. सहयोग में – मुख्य बात 1. निष्काम सहयोगी हैं? 2. सहयोग में मनसा- वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध और सम्पर्क में इन सभी रूप के सहयोगी सदा रहे हैं? 3. ऐसे योग्य सच्चे सहयोगी कितने बनाये हैं?

6.2.80... .. जैसे बाप की महिमा है कि वह मुश्किल को सहज करने वाला है। ऐसे ही बाप समान बच्चे भी मुश्किल को सहज करने वाले हैं। जो विश्व की मुश्किल को सहज करने वाले हैं वह स्वयं मुश्किल अनुभव करें यह कैसे हो सकता है! इसलिए सदा सर्व सहजयोगी।

6.2.80... .. संगमयुगी ब्राह्मणों के मुख से 'मेहनत' है वा 'मुश्किल है' – यह शब्द मुख से क्या लेकिन संकल्प में भी नहीं आ सकता। तो इस वर्ष का विशेष अटेंशन 'सदा सहज योगी'। जैसे बाप को बच्चों पर रहम आता है वैसे स्वयं पर भी रहम करो और सर्व प्रति भी रहमदिल बनो।

6.2.80... .. इस वर्ष का होमवर्क दे रहे हैं। 'सहजयोगी बनो। रहमदिल बनो और दिलतख्तनशीन बनो'। तो सदा भाग्य-विधाता बाप ऐसे आज्ञाकारी बच्चों को अमृतवेले रोज़ सफलता का तिलक लगाते रहेंगे। यह भी तिलक का गायन है ना कि भक्तों को भगवान तिलक लगाने आया तो इस वर्ष आज्ञाकारी बच्चों को स्वयं बाप आपके सेवास्थान अर्थात् तीर्थ स्थान पर सफलता का तिलक देने आयेंगे। बाप तो रोज़ चक्र लगाने आते ही हैं। अगर बच्चे सोये हुए हों, वह उनकी गफलत है।

9.2.80... .. जैसे कर्मणा सेवा के लिए अथक सेवाधारी का सर्टिफ़िकेट देकर जाते हैं, ऐसे तीव्र पुरुषार्थी व निरन्तर सहजयोगी की स्थिति का सर्टिफ़िकेट देते हैं? दोनों सर्टिफ़िकेट साथ-साथ मिले तब कहेंगे यज्ञ की समाप्ति समीप है।

18.1.81... .. सहजयोगी के आगे कितनी भी बड़ी बात ऐसे सहज हो जाती है जैसे कुछ हुआ ही नहीं, सूली से काँटा। तो ऐसे सहजयोगी हो ना? बचपन में जब चलना सीखते हैं तब मेहनत लगती, तो मेहनत का काम भी बचपन की बातें हैं, अब मेहनत सामप्त सब में सहज। जहाँ कोई भी मुश्किल अनुभव होता है वहाँ उसी स्थान पर बाबा को रख दो। बोझ अपने ऊपर रखते हो तो मेहनत लगती। बाप पर रख दो तो बाप बोझ को खत्म कर देंगे। जैसे सागर में किचड़ा डालते हैं तो वह अपने में नहीं रखता किनारे कर देता, ऐसे बाप भी बोझ को खत्म कर देते। जब पण्डे को भूल जाते हो तब मेहनत का रास्ता अनुभव होता। मेहनत में टाइम वेस्ट होता। अब मंसा सेवा करो, शुभचिंतन करो, मनन शक्ति को बढ़ाओ। मेहनत मजदूर करते आप तो अधिकारी हैं।।

17.3.81... .. एक कदम आप उठाओ तो हजार कदम बाप मदद देंगे। एक कदम उठाना तो सहज है ना। तो आज से सब सहजयोगी का टाइटिल मधुवन वरदान भूमि से वरदान ले जाना। यह ग्रुप जर्मन ग्रुप नहीं लेकिन सहज योगी ग्रुप है। कोई भी बात सामने आये तो सिर्फ बाप के ऊपर छोड़ दो। जिगर से कहो – “बाबा”। तो बात खत्म हो जायेगी। यह “बाबा” शब्द दिल से कहना ही जादू है। इतना श्रेष्ठ जादू का शब्द मिला हुआ है। सिर्फ जिस समय माया आती है उस समय भुला देती है। माया पहला काम यही करती है कि बाप को भुला देती। तो यह अटेन्शन रखना पड़े। जब यह अटेन्शन रखेंगे तो सदा कमल के फूल के समान अपने को अनुभव करेंगे। चाहे माया के समस्याओं की कीचड़ कितनी भी हो लेकिन आप याद के आधार पर कीचड़ से सदा परे रहेंगे। आपका ही चित्र है ना – कमल पुष्प! इसीलिए देखो जर्मन वालों ने झाँकी में कमल पुष्प बनाया ना। सिर्फ ब्रह्मा बाप कमल पर बैठे हैं या आप भी बैठे हो? कमल पुष्प की स्टेज आपका आसन है। आसन को कभी नहीं भुलाना। तो सदा चियरफुल रहेंगे। कभी भी किसी भी बात में हलचल में नहीं आयेंगे। सदा एक ही मूड होगी – ‘चियरफुल’। सब देख करके आपकी महिमा करेंगे कि यह सदा सहजयोगी, सदा चियरफुल हैं। समझा? कमल पुष्प के आसन पर सदा रहो। सदा चियरफुल रहो। सदा बाप शब्द के जादू को कायम रखो। यह तीन बातें याद करना।

18.3.81... .. बातें सुनना और बातें सुनाना यह तो आधा कल्प किया। भक्ति मार्ग का भागवत या रामायण क्या है? कितनी लम्बी बातें हैं। जब बातें थी तो बाप नहीं था। अब भी जब बातों में जाते हो तो बाप को खो लेते हो। फिर कौन-सा खेल करते हो? (आँख मिचौनी का) तीसरे नेत्र को पट्टी बाँधकर और ढूँढते हो। बाप बुलाता रहता और आप ढूँढते रहते। आखिर क्या होता? बाप स्वयं ही आकर स्वयं का साथ दिलाते। ऐसा खेल क्यों करते हो? क्योंकि बातों के विस्तार में रंग बिरंगी बातें होती हैं, वह अपनी तरफ आकर्षित कर लेती हैं। उससे किनारा हो जाए तो सदा सहज योगी हो जाएं।

23.3.81... .. जैसे सहज योगी वैसे सहज पवित्र आत्मा। बी होली नहीं, वह हैं ही होली।

ऐसे अभ्यासी बन जाओ जो कहाँ भी रहते यहाँ जैसी स्थिति बना सको। यहाँ सहज योगी की अनुभूति होती है ना! मेहनत समाप्त हो जाती, तोय ही सहजयोग का अनुभव परम्परा चलाते रहो। संगमयुग में परम्परा। मधुबन में यह अनुभव छोड़ के नहीं जाना लेकिन साथ ले जाना। ऐसे कई कहते हैं – मधुबन से नीचे उतरे तो मीटर भी नीचे उतर गया। ऐसे नहीं करना। इसी अभ्यास का लाभ लो। सेवा करते हुए भी सहजयोगी की स्थिति पर अटेंशन रखो। ऐसे नहीं सिर्फ कर्मणा सेवा में बिजी हो जाओ। कर्मणा के साथ-साथ मंसा स्थिति भी सदा श्रेष्ठ रहे, तब सेवा का फायदा है।

3.4.81... .. टीचर्स तो सदा सहजयोगी है ना। टीचर्स मेहनत का अनुभव करेंगे तो स्टूडेंट का क्या हाल होगा?

5.4.81... .. जो सदा याद और सेवा में रहने वाले हैं उन्हीं को प्रत्यक्षफल सहज प्राप्त होता है। सोचेंगे भी नहीं कि ऐसा हो सकता है! लेकिन सहज अनुभव होते रहेंगे। चलते-चलते ऐसे अनुभव करेंगे जैसे भक्ति मार्ग में कहावत है, “भगवान छप्पर फाड़कर देते हैं।” तो यहाँ भी मेहनत का छप्पर फाड़कर सहज अनुभूति होगी। जब सर्वशक्तिवान के बच्चे बन गये तो मेहनत रही क्या? सभी सहजयोगी हो ना।

2.10.81... .. जो साक्षी हो कर्म करते हैं उन्हें स्वतः ही बाप के साथीपन का अनुभव भी होता है। साक्षी नहीं तो बाप भी साथी नहीं इसलिए सदा साक्षी अवस्था में स्थित रहो। देह से भी साक्षी। जब देह के सम्बन्ध और देह के साक्षी बन जाते हो तो स्वतः ही इस पुरानी दुनिया से साक्षी हो जाते हो। देखते हुए, सम्पर्क में आते हुए सदा न्यारे और प्यारे। यही स्टेज सहज योगी का अनुभव कराती है। तो सदा साक्षी इसको कहते हैं – साथ में रहते हुए भी निर्लेप। आत्मा निर्लेप नहीं है लेकिन आत्मअभिमानि स्टेज निर्लेप है अर्थात् माया के लेप व आकर्षण से परे है। न्यारा अर्थात् निर्लेप।

9.10.81... .. सभी सहजयोगी हो ना? बाप का बनना अर्थात् सहजयोगी बनना क्योंकि बच्चा अर्थात् भाग्यशाली। बच्चे को सिवाए बाप के और है ही क्या? माँ होते हुए भी प्राप्ति का आधार बाप है। प्यार के सम्बन्ध में माँ याद आयेगी, प्राप्ति के सम्बन्ध में बाप याद आयेगा। योग लगाना न पड़े लेकिन न चाहते हुए भी एक बाप के सिवाए और कोई नज़र न आये। बाप का बनना अर्थात् सहजयोगी बनना।

11.11.81... .. सभी बच्चों को बापदादा सदा सहजयोगी भव का वरदान दे रहे हैं। सिर्फ एक बिन्दी को याद करो। सबसे सरल मात्रा बिन्दी है। तो बापदादा सिर्फ बिन्दी का ही हिसाब बताते हैं। स्वयं भी बिन्दु रूप बनो, याद भी बिन्दु को करो और ड्रामा के हर दृश्य को जाने, करने के बाद बिन्दु की मात्रा लगा दो। एक बिन्दु की मात्रा में आप, बाप और रचना, सब आ जाता है। तो जानना ही क्या है – “बिन्दु”। करना भी क्या है – “बिन्दु को

याद' । इसी बिन्दु की मात्रा के महत्व को जान सदा सहजयोगी बन सकते हो। कितना भी बड़ा विस्तार है लेकिन समाया हुआ बिन्दु में है।

11.11.81... .. यहाँ तो नालेज द्वारा सिर्फ क्या सामने रखते? बिन्दु। इसी बिन्दु की स्मृति द्वारा स्वयं ही सिद्धि स्वरूप बन जाते। तो क्या सहज हुआ? बुद्धि में बिन्दु लगाना या आकार इमर्ज करना? इसीलिए सहजयोगी बनो। बिन्दु को जानो तो सदा सहज है। तो स्नेह का रिटर्न सहज साधन द्वारा सहजयोगी भव। तो सभी सहजयोगी बन गये ना! विस्तार में जाते हो तो मुश्किल में चले जाते हो। क्योंकि विस्तार में जाने से क्वेश्चनमार्क बहुत लग जाते हैं। इसलिए जैसे क्वेश्चनमार्क की मात्रा स्वयं ही टेढ़ी है, तो क्या-क्या के क्वेश्चनमार्क के टेढ़े मार्ग पर चले जाते हो। बिन्दु बन विस्तार में जाओ तो सार मिलेगा। बिन्दु को भूल विस्तार में जाते हो तो जंगल में चले जाते हो। जहाँ कोई सार नहीं। बिन्दु रूप में स्थित रहने वाले सारयुक्त, योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वरूप का अनुभव करेंगे।

21.11.81... .. अनेक बार के विजयी हैं— यह स्मृति रहे तो विघ्न-विनाशक हो जायेंगे। अनेक बार की हुई बात रिपीट कर रहे हो, ऐसे सहजयोगी। इस निश्चय में रहने वाली विघ्न-विनाशक आत्माँ स्वतः और सहजयोगी होंगी।

26.11.81... .. सहयोगी ही सहजयोगी .. “आज बापदादा अपने स्वराज्य-अधिकारी, राजऋषि भविष्य में राज्य-वंशी बच्चों को देख रहे हैं। सभी सहजयोगी अर्थात् राज- ऋषि हो। बापदादा सभी बच्चों को वर्तमान वरदानी समय पर विशेष वरदान कौन-सा देते हैं? सहजयोगी भव! यह वरदान अनुभव करते हो? योगी तो बहुत बनते हैं लेकिन सहजयोगी सिर्फ संगमयुगी आप श्रेष्ठ आत्मायें बनती हो। क्योंकि वरदाता बाप का वरदान है। ब्राह्मण बने अर्थात् इस वरदान के वरदानी बने। सबसे पहला जन्म का वरदान यही सहजयोगी भव का वरदान है। तो अपने आप से पूछो— वरदानी बाप, वरदानी समय और आप भी वरदान लेने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। इस वरदान को सदा बुद्धि में याद रखना-यह है वरदान को जीवन में लाना। तो ऐसे वरदान को सदा प्राप्त की हुई आत्मा, प्राप्ति स्वरूप आत्मा समझते हो? वा मेहनत भी करनी पड़ती है? सदा वरदानी आत्मा हो? इस वरदान को सदा कायम रखने की विधि जानते हो? सबसे सहज विधि कौन-सी है? जानते हो ना? सदा सर्व के और सेवा में सहयोगी बनो। तो सहयोगी ही सहज योगी हैं। कई ब्राह्मण आत्मायें सहज योग का अनुभव सदा नहीं कर पाती। योग कैसे लगायें? कहाँ लगायें? इसी क्वेश्चन में अब तक भी हैं। सहज योग में क्वेश्चन नहीं होता है। साथ-साथ वरदान है, वरदान में मेहनत नहीं होती है। और सहज, सदा स्वतः ही रहता है अर्थात् सहज योगी वरदानी आत्मा स्वतः निरन्तर योगी होती है। नहीं रहते इनका कारण? प्राप्त हुए वरदान को वा ब्राह्मण जन्म के इस अलौकिक गिफ्ट को सम्भालना नहीं आता। स्मृति द्वारा समर्थी रखने में अलबेले बन जाते हो। नहीं तो ब्राह्मण और सहज योगी न हों तो ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही क्या रही। वरदानी होते भी सहज योगी नहीं तो और कब

बनेंगे? यह नशा और निश्चय सदा याद रखो— यह हमारा जन्म का वरदान है। इसी वरदान को सर्व आत्माओं के प्रति सेवा में लगाओ। **सेवा में सहयोगी बनना— यही विधी है सहजयोगी की।**

अमृतवेले से लेकर सहयोगी बनो। सारे दिन की दिनचर्या का मूल लक्ष्य एक शब्द रखो कि सहयोग देना है। **सहयोगी बनना है।** अमृतवेले बाप से मिलन मना कर बाप समान मास्टर बीजरूप बन, मास्टर विश्व-कल्याणकारी बन सर्व आत्माओं को अपनी प्राप्त हुई शक्तियों के द्वारा आत्माओं की वृत्ति और वायुमण्डल परिवर्तन करने के लिए सहयोगी बनो। बीज द्वारा सारे वृक्ष को रूहानी जल देने के सहयोगी बनो। जिससे सर्व आत्माओं रूपी पत्तों को प्राप्ति के पानी मिलने का अनुभव हो। ऐसे अमृतवेले से लेकर जो भी सारे दिन में कार्य करते हो, हर कार्य का लक्ष्य— “सहयोग देना” हो। चाहे व्यवहार के कार्य में जाते हो, प्रवृत्ति को चलाने के कार्य में रहते हो। लेकिन सदा यह चैक करो— लौकिक व्यवहार में भी स्व प्रति वा साथियों के प्रति शुभ भावना और कामना से वायुमण्डल रूहानी बनाने का सहयोग दिया? वा ऐसे ही रिवाजी (साधारण) रीति से अपनी डियुटी बजाकर आ गये। जैसा जिसका आक्युपेशन होता है, वह जहाँ भी जायेंगे, अपने आक्युपेशन प्रमाण कार्य ज़रूर करेंगे। **आप सबका विशेष आक्युपेशन ही है— “सहयोगी बनना”।** वह कैसे भूल सकते! तो हर कार्य में सहयोगी बनना है अर्थात् सहजयोगी बन जायेंगे। कोई भी सेकण्ड सह- योगी बनने के सिवाए न हो। चाहे मंसा में सहयोगी बनो चाहे वाचा से सहयोगी बनो। चाहे सम्बन्ध सम्पर्क के द्वारा सहयोगी बनो। चाहे स्थूल कर्म द्वारा सहयोगी बनो। लेकिन सहयोगी ज़रूर बनना है। क्योंकि आप सभी दाता के बच्चे हो। **दाता के बच्चे सदा देते रहते हैं। तो क्या देना है? “सहयोग”।**

स्व परिवर्तन के लिए भी स्वयं के भी सहयोगी बनो। कैसे? साक्षी बन स्व के प्रति भी सदा शुभचिन्तन की वृत्ति और रूहानी वायु-मण्डल बनाने के लिए स्व प्रति भी सहयोगी बनो। जब प्रकृति अपने वायुमण्डल के प्रभाव में सभी को अनुभव करा सकती है— जैसे सर्दी, गर्मी प्रकृति अपना वायुमण्डल पर प्रभाव डाल देती है, ऐसे प्रकृतिजीत, सदा सहयोगी, सहज योगी आत्मायें अपने रूहानी वायुमण्डल का प्रभाव अनुभव नहीं करा सकती? सदा स्व प्रति और सर्व के प्रति सहयोग की शुभ भावना रखते हुए सहयोगी आत्मा बनो। वह ऐसा है, वा ऐसा कोई करता है, यह नहीं सोचो। कैसा भी वायुमण्डल है, व्यक्ति है— “मुझे सहयोग देना है”।

ऐसे सभी ब्राह्मण आत्मायें सदा सहयोगी बन जाएं तो क्या हो जायेगा? सभी सहज योगी स्वतः हो जायेंगे क्योंकि सर्व आत्माओं का सहयोग मिलने से कमज़ोर भी शक्तिशाली हो जाते हैं। कमज़ोरी समाप्त होने से सहयोगी तो हो ही जायेंगे ना! कोई भी प्रकार की कमज़ोरी, मुश्किल वा मेहनत का अनुभव कराती है। शक्तिशाली हैं तो सब सहज है। तो क्या करना पड़े? सदा चाहे तन से, मन से, धन से, मंसा से, वाणी से वा कर्म से सहयोगी बनना है। अगर कोई मन से नहीं कर सकते तो तन और धन से सहयोगी बनो। **मंसा, वाणी से नहीं तो कर्म से सहयोगी बनो।** सम्बन्ध जुड़वाने वा सम्पर्क रखाने के सहयोगी बनो। सिर्फ़ सन्देश देने के सहयोगी नहीं बनो, अपने परिवर्तन से सहयोगी बनो। अपने सर्व प्राप्तियों के अनुभव सुनाने के सहयोगी बनो। अपने सदा हर्षित रहने वाली सूरत से सहयोगी बनो। किसी को गुणों के दान द्वारा सहयोगी बनो। किसी को उमंग-उत्साह बढ़ाने के सहयोगी बनो। **जिसमें भी सहयोगी बन सको उसमें सहयोगी सदा बनो।** यही सहज योग है। समझा

क्या करना है? यह तो सहज है ना! जो है वह देना है। जो कर सकते हो वह करो। सब नहीं कर सकते हो तो एक तो कर सकते हो? जो भी एक विशेषता हो उसी विशेषता को कार्य में लगाओ अर्थात् सहयोगी बनो। यह तो कर सकते हो ना यह तो नहीं सोचते हो कि मेरे में कोई विशेषता नहीं। कोई गुण नहीं। यह हो नहीं सकता। ब्राह्मण बनने की ही बड़ी विशेषता है। बाप को जानने की बड़ी विशेषता है। इसलिए अपनी विशेषता द्वारा सदा सह- योगी बनो।

31.12.81... .. कुमार ग्रुप अर्थात् समय के ख़ज़ाने से सम्पन्न और समय होने के कारण औरों की सेवा में भी सम्पन्न बन सकते हो। सेवा की सबजेक्ट में भी 100 ले सकते हो। सदा बन्धनमुक्त अर्थात् सदा योगयुक्त। संसार ही बाप हो गया ना! कुमारों का संसार क्या है? “बापदादा”। औरों का संसार तो हृद में है लेकिन आप लोगों का एक ही बेहद का संसार है। तो सहजयोगी भी हो क्योंकि संसार में ही बुद्धि जायेगी ना! संसार ही बाप है तो बुद्धि बाप में ही जायेगी। तो कुमारों को सहजयोगी बनने की लिफ्ट है।

6.1.82... .. ब्राह्मण जीवन अर्थात् सहजयोगी और सदा के लिए पावन।

22.1.82... .. यहाँ रहते सहजयोगी, कर्मयोगी, निरन्तर योगी का अभ्यास हो गया है। यही संस्कार अब ऐसे पक्के करके जाओ जो वहाँ भी यही संस्कार रहें। जैसे पुराने संस्कार न चाहते भी कर्म में आ जाते हैं ऐसे यह संस्कार भी पक्के करो। तो संस्कारों के कारण यह अभ्यास चलता ही रहेगा। फिर माया विघ्न नहीं डालेगी क्योंकि संस्कार बन गये। इसलिए सदा इन संस्कारों को अन्डरलाइन करते रहना। फ्रेश करते रहना।

3.4.82... .. जब बुद्धि में यह स्पष्ट हो जाता है कि बाप के सिवाए और कोई भी श्रेष्ठ नहीं तो ‘सहजयोगी’ बन जाते हैं। बन्धनमुक्त भी सहज बन जाते हैं, मेहनत नहीं करनी पड़ती। सब सम्बन्ध बाप के साथ जुड़ गये। मेरा-मेरा सब समाप्त, इसको कहा जाता है – सर्व सम्बन्ध एक के साथ।

2.5.82... .. सहज योगी जीवन वाले, सदा बाप के समीप और साथ की अनुभूति करते हैं।

6.1.83... .. बाप से सर्व सम्बन्धों के रस का नशा साकार रूप में चलते फिरते अनुभव हो। यह नशा और खुशी निरन्तर सहज योगी बना देती है। इसलिए निराकारी और साकारी डबल रिफाइण्ड साधन की आवश्यकता है।

जब यह अनुभव हो जाता है कि मेरा बाबा है, तो जो ‘मेरा’ होता है वह स्वतः ही याद रहता है, याद किया नहीं जाता है। मेरा अर्थात् अधिकार प्राप्त हो जाना। “मेरा बाबा और मैं बाबा का”, कितने थोड़े से शब्द हैं और सेकण्ड की बात हैं। इसको ही कहा जाता है – ‘सहजयोगी’। आपके बोर्ड में भी सहज राजयोग केन्द्र लिखा हुआ है ना! तो ऐसा ही सहज योग सीखे हो? माया आती है? बाप के साथ रहने वाले के सामने माया आ नहीं

सकती। जैसे अपने शरीर के रहने का स्थान मालूम है, बना हुआ है तो जब भी फ्री होते हो तो सहज ही अपने घर में जाकर रेस्ट करते हो। इसी रीति से जब मालूम है कि मुझे बाप के पास रहना है, यही ठिकाना है तो कार्य करते भी रह सकते हो। ऐसे बुद्धि द्वारा अनुभव हो।

9.1.83... .. तन और मन दोनों को सदा खुश रखने के लिए – सोचो कम। अगर सोचना ही है तो ज्ञान रत्नों को सोचो। व्यर्थ संकल्प की भेंट में समर्थ संकल्प हर बात का होता है। मानों अपनी स्थिति वा योग के लिये व्यर्थ संकल्प चलता है कि मेरा पार्ट तो इतना दिखाई नहीं देता, योग लगता नहीं। अशरीरी होते नहीं। यह है – व्यर्थ संकल्प। उनकी भेंट में समर्थ संकल्प करो – याद तो मेरा स्वधर्म है। बच्चे का धर्म ही है बाप को याद करना। क्यों नहीं होगा, ज़रूर होगा। मैं योगी नहीं तो और कौन बनेगा! मैं ही कल्प-कल्प का सहजयोगी हूँ। तो व्यर्थ के बजाए इस प्रकार के समर्थ संकल्प चलाओ। मेरा शरीर चल नहीं सकता, यह व्यर्थ संकल्प नहीं चलाओ। इसके बजाए समर्थ संकल्प यह है कि – इसी अन्तिम जन्म में बाप ने हमको अपना बनाया है। कमाल है, बलिहारी इस अन्तिम शरीर की। जो इस पुराने शरीर द्वारा जन्म-जन्म का वर्सा ले लिया। दिलशिकस्त के संकल्प नहीं करो। लेकिन खुशी के संकल्प करो। वाह मेरा पुराना शरीर! जिसने बाप से मिलाने के निमित्त बनाया! वाह वाह कर चलाओ। जैसे घोड़े को प्यार से, हाथ से चलाते हैं तो घोड़ा बहुत अच्छा चलता है अगर घोड़े को बार-बार चाबुक लगायेंगे तो और ही तंग करेगा। यह शरीर भी आपका है। इनको बार-बार ऐसे नहीं कहो कि यह पुराना, बेकार शरीर है। यह कहना जैसे चाबुक लगाते हो। खुशी-खुशी से इसकी बलिहारी गाते आगे चलाते रहो। फिर यह पुराना शरीर कब डिस्टर्ब नहीं करेगा। बहुत सहयोग देगा।

9.1.83... .. जब सदा का वर्सा पाने के अधिकारी हो तो स्थिति भी सदाकाल की। 'सदा' शब्द को सदा याद रखना। यही वरदान सभी बच्चे को बापदादा देते हैं। सदा खुश रहेंगे, सदा उड़ती कला में रहेंगे, सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न रहेंगे। ऐसे वरदान लेने वाली आत्मायें सहजयोगी स्वतः हो जाती हैं।

15.1.83... .. सहजयोगी, समीप सम्बन्ध औरसर्व प्राप्ति के कारण सहज योग का सदा स्वतः अनुभव करता है। सदा समर्थ स्वरूप होने के कारण इसी नशे में सदा अनुभव करता कि मैं हूँ ही बाप का। याद दिलाना नहीं पड़ता स्वयं को मैं आत्मा हूँ, मैं बाप का बच्चा हूँ। "मैं हूँ ही" सदा अपने कोइस अनुभव के नशे में प्राप्ति स्वरूप नैचुरल निश्चय करता है। सहयोगी को सर्व सिद्धियाँ स्वतः ही अनुभव होती हैं। इसलिए सहजयोगी सदा ही श्रेष्ठ उमंग उत्साह खुशी में एकरस रहता है। सहजयोगी सर्व प्राप्तियों के अधिकारी स्वरूप में सदा शक्तिशाली स्थिति में स्थित रहते हैं।

अधिकार का स्वरूप है सहजयोगी। प्रयोगी भी कभीकभी सहजयोगी बन जाते हैं। लेकिन सदा नहीं।

15.2.83... .. बापदादा को हर्ष है कि हरेक बच्चा इस विश्व परिवर्तन के कार्य में आधारमूर्त, उद्धारमूर्त है। सभी बच्चे बापदादा के कार्य में सदा सहयोगी आत्मा हैं। ऐसे सहयोगी, सहजयोगी, श्रेष्ठ विशेष आत्माओं को वा सेवा के निमित्त बने हुए बच्चों को देख बापदादा अति स्नेह के सुनहरी पुष्पों से बच्चों का स्वागत और मुबारक की सैरीमनी मना रहे हैं। बापदादा हर बच्चे को मस्तकमणि, सन्तुष्टमणि, हृदयमणि जैसे चमकते हुए स्वरूप में देखते हैं। बापदादा भी सदा एक गीत गाते रहते हैं, कौन सा गीत गाते हैं, जानते हो ना? यही गीत गाते— वाह मेरे बच्चे, वाह! वाह मीठे बच्चे, वाह! वाह प्यारे ते प्यारे बच्चे, वाह! वाह श्रेष्ठ आत्मायें वाह! ऐसा ही निश्चय और नशा सदा रहता है ना। सारे कल्प में ऐसा भाग्य प्राप्त नहीं हो सकता जो भगवान बच्चों के गीत गाये। भक्त, भगवान के गीत बहुत गाते हैं। आप सब ने भी बहुत गीत गाये हैं। लेकिन ऐसे कब सोचा कि कब भगवान भी हमारे गीत गायेंगे! जो सोचा नहीं था वह साकार रूप में देख रहे हो।

30.3.83... .. दुनिया वालों का है सिंहासन और आप सबका है अथार्टी का आसन। इसी आसन पर सदा स्थित रहो। तो सहज योगी, सदा के योगी, स्वतः योगी हैं ही।

7.4.83... .. प्रश्न:- सहजयोगी जीवन की विशेषता क्या है? उत्तर:- योगी जीवन अर्थात् सदा सुखमय जीवन। तो जो सहजयोगी हैं वह सदासुख के झूले में झूलने वाले होते हैं। जब सुखदाता बाप ही अपना हो गया तो सुख ही सुख हो गया ना। तो सुख के झूले में झूलते रहो। सुखदाता बाप मिल गया, सुख की जीवन बन गई, सुख का संसार मिल गया, यही है योगी जीवन की विशेषता जिसमें दुख का नाम निशान नहीं।

11.4.83... .. सहज पुरुषार्थी सदा हर समय में बाप के साथ का अनुभव करेगा। ऐसे सहज पुरुषार्थी हो? सहज पुरुषार्थी सदा सहज योगी जीवन का अनुभव कर सकता है। तो क्या पसन्द है? सहज पुरुषार्थ या मुश्किल? पसन्द तो सहज पुरुषार्थ है ना! दिलपसन्द चीज जब बाप दे ही रहे हैं तो क्यों नहीं लेते? न चाहते भी हो जाता है, यह शब्द भी मास्टर सर्वशक्तिवान का बोल नहीं है। चाहना एक, कर्म दूसरा तो क्या उसको शिव-शक्ति कहेंगे!

ब्राह्मण की परिभाषा है ही – ‘ मुश्किल को सहज बनाने वाला’। ब्राह्मण का धर्म, कर्म सब यही है। तो जन्म के, कर्म के ब्राह्मण आत्मायें अर्थात् सहज योगी। सहज पुरुषार्थी।

11.4.83... .. जितना-जितना बाप के प्यार में, बाप के गुण गाते रहेंगे तो मेहनत से छूट जायेंगे। सदा स्नेही, सदा सहजयोगी बन जाते हैं।

15.5.83... .. अमृतवेले से लेकर रात तक सहज योगी, श्रेष्ठ योगी जो भी श्रेष्ठ जीवन के लिए दिनचर्या मिली हुई है, उसी प्रमाण सभी को यथार्थ रीति चलना पड़ेगा – यह अटेन्शन अभी से दृढ़ संकल्प के रूप में रखना। सभी को योगी के लक्षणों का पता है? (सब बच्चे बापदादा को हरेक बात पर ‘हाँ जी’ का रेसपान्ड करते रहे) योगी आत्माओं की बैठक, चलन, दृष्टि क्या होती है यह सब जानते हो? ऐसे ही

चलते हो वा थोड़ी-थोड़ी चंचलता भी करते हो? सब योगी आत्मायें हो ना! जो दुनिया वाले करते हैं वह आप बच्चे नहीं कर सकते। आप महान आत्मायें ऐसे शान्त स्वरूप रहो जो भल कितने भी बड़े-बड़े हों लेकिन आप शान्त स्वरूप आत्माओं को देख शान्ति की अनुभूति करें और यही दिखाई दें कि यह साधारण बच्चे नहीं लेकिन सभी अलौकिक बच्चे हैं। न्यारे हैं और विशेष आत्मायें हैं। तो ऐसे चलते हो? अभी से यह भी परिवर्तन करना। आज सभी बच्चों से मिलने के लिए ही विशेष बापदादा आये हैं। समझा!

15.5.83... .. जो भी किसी भी बात में कमज़ोर हो तो उसको अभी से ठीक कर लेना। आप सभी के ऊपर सभी की नज़र है। इसलिए अमृतवेले से लेकर रात तक सहज योगी, श्रेष्ठ योगी जो भी श्रेष्ठ जीवन के लिए दिनचर्या मिली हुई है, उसी प्रमाण सभी को यथार्थ रीति चलना पड़ेगा – यह अटेन्शन अभी से दृढ़ संकल्प के रूप में रखना। सभी को योगी के लक्षणों का पता है? (सब बच्चे बापदादा को हरेक बात पर ‘हाँ जी’ का रेस्पान्ड करते रहे) योगी आत्माओं की बैठक, चलन, दृष्टि क्या होती है यह सब जानते हो? ऐसे ही चलते हो वा थोड़ी-थोड़ी चंचलता भी करते हो? सब योगी आत्मायें हो ना! जो दुनिया वाले करते हैं वह आप बच्चे नहीं कर सकते। आप महान आत्मायें ऐसे शान्त स्वरूप रहो जो भल कितने भी बड़े-बड़े हों लेकिन आप शान्त स्वरूप आत्माओं को देख शान्ति की अनुभूति करें और यही दिखाई दें कि यह साधारण बच्चे नहीं लेकिन सभी अलौकिक बच्चे हैं। न्यारे हैं और विशेष आत्मायें हैं। तो ऐसे चलते हो? अभी से यह भी परिवर्तन करना। आज सभी बच्चों से मिलने के लिए ही विशेष बापदादा आये हैं। समझा

10.11.83... .. अभी साक्षात मूर्त बनना है। सहज योगी बने हो लेकिन श्रेष्ठ योगी बनना है। तपस्वी बने हो, महातपस्वी और बनना है।

आजकल सेवा कहो, तपस्या कहो, पढ़ाई कहो, पुरुषार्थ कहो, पवित्रता की सीमा कहो, किस लहर में चल रही है, जानते हो? सहज योगी के “सहज” शब्द की लहर चल रही है। लेकिन लास्ट समय के प्रमाण वर्तमान मनुष्य आत्माओं को, वाणी की नहीं लेकिन श्रेष्ठ वायब्रेशन, श्रेष्ठ वायुमण्डल, जिससे साक्षात्कार सहज हो जाए, इसी की आवश्यकता है। अनुभव भी साक्षात्कार समान है। सुनाने वाले तो बहुत हैं जिन्हों को सुनाते हो वो भी सुनाने में कम नहीं। लेकिन कमी है साक्षात्कार कराने की। वह नहीं करा सकते। यही विशेषता, यही नवीनता, यही सिद्धि, आप श्रेष्ठ आत्माओं में है। इसी विशेषता को स्टेज पर लाओ। इसी विशेषता के आधार पर सभी वर्णन करेंगे कि हमने देखा, हमने पाया! हमने सिर्फ सुना नहीं लेकिन साक्षात् बाप की झलक अनुभव की। फलानी बहन वा फलाना भाई बोल रहे थे, यह अनुभव नहीं। लेकिन इन्हीं द्वारा कोई अलौकिक शक्ति बोल रही थी। जैसे आदि में ब्रह्मा को साक्षात्कार हुआ विशेष शक्ति का तो क्या वर्णन किया! यह कौन था, क्या था! ऐसे सुनने वालों को अनुभव हो कि यह कौन थे? सिर्फ पाइंटस नहीं सुने लेकिन मस्तक बीच पाइंट आफ लाइट (Point of Light) दिखाई दे। यह नवीनता ही सभी की पहचान की आँख खोलेगी। अभी पहचान की आँख

नहीं खुली है। अभी तो दूसरों की लाइन में आपको भी ला रहे हैं। जैसे यह-यह हैं वैसे यह भी है। जैसे वह भी यह कहते हैं वैसे यह भी कहते हैं। यह भी करते हैं। लेकिन यह वो ही हैं जिसका हम आह्वान करते हैं, जिसका इन्तजार कर रहे हैं। अभी इस अनुभूति की आवश्यकता है। इसका साधन है सिर्फ एक शब्द को चेन्ज करो। सहज योगी की लहर को चेन्ज करो। सहज शब्द पवित्र प्रवृत्ति में नहीं यूज करो। लेकिन सर्व सिद्धि स्वरूप बनने में यूज करो। श्रेष्ठ योगी की लहर, महातपस्वी मूर्त की लहर, साक्षात्कार मूर्त बनने की लहर, रूहानियत की लहर, अब इसकी आवश्यकता है। अब यह रेस करो। सन्देश कितनों को दिया, यह तो 7 दिन के कोर्स वालों का काम है। वो भी यह सन्देश दे सकते हैं। लेकिन यह रेस करो – अनुभव कितनों को कराया! अनुभव कराना है, अनुभवी बनाना है। यह लहर अभी चारों ओर होनी चाहिए। समझा।

5.12.83... .. ऐसी भी अन्य आत्मायें हैं जो कब होगा, कब आयेंगे, कब मिलेंगे ऐसे वियोग के गीत गाते रहते हैं। वो सभी हैं कब कहने वाले और आप सब हैं – अभी वाले। वो वियोगी और आप सहज योगी। सेकण्ड में मिलन का अनुभव करने वाले। अभी भी कोई आपसे पूछे कि बापसे मिलना कब और कितने समय में हो सकता है, तो क्या कहेंगे? निश्चय और उमंग से यही कहेंगे कि बाप से मिलना बच्चों के लिए कभी मुश्किल हो नहीं सकता। सहज और सदा का मिलना है।

29.12.83... .. संगम सहज प्राप्ति का युग है। इसलिए सदा सहज योगी भव के अधिकारी और वरदानी बनो। समझा। मास्टर सर्वशक्तिवान बन कर के भी मेहनत की, तो मास्टर बन के क्या किया? मेहनत से छुड़ाने वाला मुश्किल को सहज करने वाला बाप मिला, फिर भी मेहनत! बोझ उठाते हो इसलिए मेहनत करते। बोझ छोड़ो, हल्के बनो तो फ़रिश्ता बन उड़ते रहेंगे।

31.12.83... .. दृढ़ संकल्प की निशानी बिन्दी लगाते हो कि आज का दिन सारा ही 'सहज योगी और श्रेष्ठ योगी' के स्वरूप में रहेंगे। तो आज भी जो थोड़ा सा कच्चा हो तो दृढ़ संकल्प द्वारा फुलस्टाप की बिन्दी लगाओ, दूसरी समर्थ स्वरूप की बिन्दी लगाओ।

जो सदा याद में रहते हैं, याद समीप अनुभव कराती है। सहज योगी हो ना। जब बाबा कहा तो 'बाबा' शब्द ही सहज योगी बना देता है। 'बाबा' शब्द जादू का शब्द है। जादू की चीज बिना मेहनत के प्राप्ति कराती है। आप सभी को जो भी चाहिए – सुख चाहिए, शान्ति चाहिए, शक्ति चाहिए जो भी चाहिए 'बाबा' शब्द कहेंगे तो सब मिल जायेगा। ऐसा अनुभव है!

22.2.84... .. अमृतवेले पर स्वयं बाप बच्चों को विशेष वरदान देने आते हैं। उस समय जो वरदान लेता है उसका सारा दिन सहजयोगी की स्थिति में रहता है।

10.4.84... .. सभी सहज योगी आत्मायें हो ना! सर्व सम्बन्ध से याद सहज योगी बना देती है। जहाँ सम्बन्ध है वहाँ सहज है। मैं सहजयोगी आत्मा हूँ, यह स्मृति सर्व समस्याओं को सहज ही समाप्त करा देती है। क्योंकि सहजयोगी अर्थात् सदा बाप का साथ है। जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है, सर्व शक्तियाँ साथ हैं तो समस्या समाधान के रूप में बदल जायेगी। कोई भी समस्या बाप जाने, समस्या जाने। ऐसे सम्बन्ध के अधिकार से समस्या समाप्त हो जायेगी। मैं क्या करूँ! नहीं। बाप जाने समस्या जाने। मैं न्यारा और बाप का प्यारा हूँ। तो सब बोझ बाप का हो जायेगा और आप हल्के जो जायेंगे। जब स्वयं हल्के बन जाते तो सब बातें भी हल्की हो जाती हैं। जरा भी सोच चलता तो भारी हो जाते और बातें भी भारी हो जातीं। इसलिए मैं हल्का हूँ, न्यारा हूँ तो सब बातें भी हल्की हैं। यही विधि है, इसी विधि से सिद्धि प्राप्त होगी। पिछला हिसाब-किताब चुक्त्तू होते हुए भी बोझ अनुभव नहीं होगा। ऐसे साक्षी होकर देखेंगे तो जैसे पिछला खत्म हो रहा है और वर्तमान की शक्ति से साक्षी हो देख रहे हैं। जमा भी हो रहा है और चुक्त्तू भी हो रहा है। जमा की शक्ति से चुक्त्तू का बोझ नहीं। तो सदा वर्तमान को याद रखो। जब एक तरफ भारी होता तो दूसरा स्वतः हल्का हो जाता। तो वर्तमान भारी है तो पिछला हल्का हो जायेगा ना। वर्तमान प्राप्ति का स्वरूप सदा स्मृति में रखो तो सब हल्का हो जायेगा। तो पिछले हिसाब को हल्का करने का साधन है – वर्तमान को शक्तिशाली बनाओ। वर्तमान है ही शक्तिशाली। वर्तमान की प्राप्ति को सामने रखेंगे तो सब सहज हो जायेगा। पिछला सूली को काँटा हो जायेगा। क्या है, क्यों है! नहीं। पिछला है। पिछले को क्या देखना। जहाँ लगन है वहाँ विघ्न भारी नहीं लगता। खेल लगता है। वर्तमान की खुशी की दुआ से और दवा से सब हिसाब-किताब चुक्त्तू करो।

10.4.84... .. सभी सहज योगी आत्मायें हो ना! सर्व सम्बन्ध से याद सहज योगी बना देती है। जहाँ सम्बन्ध है वहाँ सहज है। मैं सहजयोगी आत्मा हूँ, यह स्मृति सर्व समस्याओं को सहज ही समाप्त करा देती है। क्योंकि सहजयोगी अर्थात् सदा बाप का साथ है। जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है, सर्व शक्तियाँ साथ हैं तो समस्या समाधान के रूप में बदल जायेगी। कोई भी समस्या बाप जाने, समस्या जाने। ऐसे सम्बन्ध के अधिकार से समस्या समाप्त हो जायेगी। मैं क्या करूँ! नहीं। बाप जाने समस्या जाने। मैं न्यारा और बाप का प्यारा हूँ। तो सब बोझ बाप का हो जायेगा और आप हल्के जो जायेंगे। जब स्वयं हल्के बन जाते तो सब बातें भी हल्की हो जाती हैं। जरा भी सोच चलता तो भारी हो जाते और बातें भी भारी हो जातीं। इसलिए मैं हल्का हूँ, न्यारा हूँ तो सब बातें भी हल्की हैं। यही विधि है, इसी विधि से सिद्धि प्राप्त होगी।

3.12.84... .. जितना सेवा में बिज़ी रहेंगे उतना सहजयोगी रहेंगे लेकिन याद सहित सेवा हो तो सेफ़्टी है। याद नहीं तो सेफ़्टी नहीं।

19.12.84... .. बापदादा देखते हैं कि नाम 'सहज योगी' है और अनुभव मुश्किल होता है। मानते अपने को अधिकारी हैं और बनते अधीन हैं। हैं भाग्यविधाता के बच्चे और सोचते हैं – पता नहीं मेरा भाग्य है वा नहीं। शायद यही मेरा भाग्य है। इसलिए अपने आपको जानो और सदा स्वयं को हर समय के साथी समझ चलते चलो।

24.12.84... .. परमात्मा बाप की पहली देन 'स्नेह' है। स्नेह ने आप सबको ब्राह्मण जन्म दिया है। स्नेह की पालना ने आप सबको ईश्वरीय सेवा के योग्य बनाया है। स्नेह ने सहज योगी, कर्मयोगी, स्वतः योगी बनाया है। स्नेह ने हृद के त्याग को भाग्य अनुभव कराया है। त्याग नहीं – भाग्य है। यह अनुभव सच्चे स्नेह ने कराया ना। इसी स्नेह के आधार पर किसी भी प्रकार के तूफान ईश्वरीय तोफा अनुभव करते। स्नेह के आधार पर मुश्किल को अति सहज अनुभव करते है। इसी ईश्वरीय स्नेह के अनेक सम्बन्धों में लगी हुई दिल को, अनेक टुकड़े हुई दिल को एक से जोड़ लिया है। अब एक दिल, एक दिलाराम है। दिल के टुकड़े नहीं हैं। स्नेह ने बाप समान बना दिया। स्नेह ने ही सदा साथ के अनुभव कारण सदा समर्थ बना दिया। स्नेह ने युग परिवर्तन कर लिया। कलियुगी से संगमयुगी बना दिया। स्नेह ने ही दुःख-दर्द की दुनिया से सुख के खुशी की दुनिया में परिवर्तन कर लिया। इतना महत्व है इस 'ईश्वरीय स्नेह' का। जो महत्व को जानते हैं वही महान बन जाते हैं।

सदा अपने को इस पुरानी दुनिया की आकर्षण से न्यारे और बाप के प्यारे, ऐसे अनुभव करते हो? जितना न्यारे होंगे उतना स्वतः ही प्यारे होंगे। न्यारे नहीं तो प्यारे नहीं। तो न्यारे हैं और प्यारे हैं या कहाँ न कहाँ लगाव है? जब किसी से लगाव नहीं तो बुद्धि एक बाप तरफ स्वतः जायेगी। दूसरी जगह जा नहीं सकती। सहज और निरंतर योगी की स्थिति अनुभव होगी। अभी नहीं सहजयोगी बनेंगे तो कब बनेंगे? इतनी सहज प्राप्ति है, सतयुग में भी अभी की प्राप्ति का फल है। तो अभी सहजयोगी और सदा के राज्य भाग्य के अधिकारी सहजयोगी बच्चे सदा बाप के समान समीप हैं।

16.1.85... .. सदा सहयोगी, कर्मयोगी, स्वतः योगी, निरन्तर योगी – ऐसी स्थिति का अनुभव करते हो? जहाँ सहज है वहाँ निरंतर है। सहज नहीं तो निरंतर नहीं। तो निरंतर योगी हो या अन्तर पड़ जाता है? योगी अर्थात् सदा याद में मगन रहने वाले। जब सर्व सम्बन्ध बाप से हो गये तो जहाँ सर्व सम्बन्ध हैं वहाँ याद स्वतः होगी और सर्व सम्बन्ध हैं तो एक की ही याद होगी। है ही एक तो सदा याद रहेगी ना। तो सदा सर्व सम्बन्ध से एक बाप दूसरा न कोई। सर्व सम्बन्ध से एक बाप... यही सहज विधि है, निरंतर योगी बनने की। जब दूसरा सम्बन्ध ही नहीं तो याद कहाँ जायेगी। सर्व सम्बन्धों से सहजयोगी आत्माये यह सदा स्मृति रखो। सदा बाप समान हर कदम में स्नेह और शक्ति दोनों का बैलेंस रखने से सफलता स्वतः ही सामने आती है।

18.1.85... .. आज का दिन अनेक बंधन वाली गोपिकाओं के दिल के वियोग और स्नेह से सम्पन्न मीठे गीत सुनने का दिन है। बापदादा ऐसी लगन में मगन रहने वाली स्नेही सिकीलधे आत्माओं को रिटर्न में यही खुशखबरी सुनाते कि अब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजने वाला ही है। इसलिए हे सहज योगी और मिलन के वियोगी बच्चे

यह थोड़े से दिन समाप्त हुए कि हुए। साकार स्वीट होम में मधुर मिलन हो ही जायेगा। वह शुभ दिन समीप आ रहा है।

23.1.85... .. सहजयोगी बनने की विधि – सभी सहजयोगी आत्मायें हो ना। सदा बाप के सर्व सम्बन्धों के स्नेह में समाये हुए। सर्व सम्बन्धों का स्नेह ही सहज कर देता है। जहाँ स्नेह का सम्बन्ध है वहाँ सहज है। और जो सहज है वह निरंतर है। तो ऐसे सहजयोगी आत्मा बाप के सर्व स्नेही सम्बन्ध की अनुभूति करते हो? ऊधव के समान हो या गोपियों के समान? ऊधव सिर्फ ज्ञान का वर्णन करता रहा। गोप-गोपियाँ प्रभु प्यार का अनुभव करने वाली। तो सर्व सम्बन्धों का अनुभव यह है विशेषता। इस संगमयुग में यह विशेष अनुभव करना ही वरदान प्राप्त करना है। ज्ञान सुनना सुनाना अलग बात है। सम्बन्ध निभाना, सम्बन्ध की शक्ति से निरंतर लगन में मगन रहना वह अलग बात है। तो सदा सर्व सम्बन्धों के आधार पर सहयोगी भव। इसी अनुभव को बढ़ाते चलो। यह मगन अवस्था गोप-गोपियों की विशेष हैं। लगन लगाना और चीज़ है लेकिन लगन में मगन रहना यही श्रेष्ठ अनुभव हैं।

18.2.85... .. बापदादा बच्चों के सहयोग देने का चार्ट देख रहे थे। हैं सब सहयोगी। जब सहयोगी बने हैं तब सहज योगी बने हैं। सभी सहयोगी, सहजयोगी, श्रेष्ठ आत्मायें हों।

मेरा-पन समाप्त होना अर्थात् ममता समाप्त होना। तो सारी ममता यानी मोह बाप में हो गया। तो बदल गया, शुद्ध मोह हो गया। बाप सदा शुद्ध है तो मोह बदलकर प्यार हो गया। एक मेरा बाबा, इस एक मेरे से सब समाप्त हो जाता और एक की याद सहज हो जाती। इसलिए सदा सहजयोगी। मैं श्रेष्ठ आत्मा और मेरा बाबा बस! श्रेष्ठ आत्मा समझने से श्रेष्ठ कर्म स्वतः होंगे, श्रेष्ठ आत्मा के आगे माया आ नहीं सकती।

6.3.85... .. बाप हर विशेष आत्मा को विशेषताओं से देखते हुए यही गीत गाते – ‘वाह मेरा सहज योगी बच्चा, वाह मेरा पद्मापद्म भाग्यशाली बच्चा’। तो सभी अपनी-अपनी विशेषता और नाम सहित सम्मुख अपने को अनुभव करते हुए यादप्यार स्वीकार करना और सदा बाप की छत्रछाया में रह माया से घबराना नहीं। छोटी बात है, बड़ी बात नहीं है। छोटी को बड़ा नहीं करना। बड़ी को छोटा करना। ऊँचे रहेंगे तो बड़ा छोटा हो जायेगा। नीचे रहेंगे तो छोटा भी बड़ा हो जायेगा। इसलिए बापदादा का साथ है, हाथ है तो घबराओ नहीं, खूब उड़ो, उड़ती कला से सेकण्ड में सबको पार करो। बाप का साथ सदा ही सेफ़ रखता है। और रखेगा।

11.12.85... .. सहयोगी वा सहजयोगी सिर्फ स्वयं के प्रति हैं वा दूसरों को भी आपके सहयोग के उमंग-उत्साह की लहर सहयोगी बना देती है। आपके सहयोग की विशेषता सर्व आत्माओं को यह महसूस हो कि यह हमारे सहयोगी हैं। किसी भी कमज़ोर स्थिति वा परिस्थिति के समय यह सहयोग द्वारा आगे बढ़ने का साधन देने वाले हैं। सहयोग की विशेषता का सर्व को आप आत्मा के प्रति अनुभव हो। इसको कहा जाता है – विशेषता

को सेवा में लगाया। बाप के सहयोगी तो हैं ही लेकिन बाप विश्व सहयोगी है। बच्चों के प्रति भी हर आत्मा के अन्दर से यह अनुभव के बोल निकले कि यह भी बाप समान सर्व के सहयोगी हैं। पर्सनल एक दो के सहयोगी नहीं बनना। वह स्वार्थ के सहयोगी होंगे। हृद के सहयोगी होंगे। सच्चे सहयोगी बेहद के सहयोगी हैं। आप सबका टाइटिल क्या है? विश्व-कल्याणकारी हो या सिर्फ सेन्टर के कल्याणकारी? देश के कल्याणकारी हो या सिर्फ क्लास के स्टूडेंट के कल्याणकारी हो? ऐसा टाइटिल तो नहीं हैं ना। विश्व-कल्याणकारी विश्व के मालिक बनने वाले हो कि सिर्फ अपने महल के मालिक बनने वाले हो! जो सिर्फ सेन्टर की हृद में रहेंगे तो सिर्फ अपने महल के मालिक बनेंगे। लेकिन बेहद के बाप द्वारा बेहद का वर्सा लेते हो। हृद का नहीं। तो सर्व प्रति सहयोग की विशेषता को कार्य में लगाना इसको कहेंगे – ‘सहयोगी आत्मा’। इसी विधि प्रमाण शक्तिशाली आत्मा सर्व शक्तियों को सिर्फ स्व के प्रति नहीं लेकिन सर्व के प्रति सेवा में लगायेंगी। कोई में सहज शक्ति नहीं है, आपके पास है। दूसरे को यह शक्ति देना – यह है शक्ति को सेवा में लगाना। सिर्फ यह नहीं सोचो, मैं तो सहनशील रहता हूँ। लेकिन आपके सहनशीलता के गुण की लाइट-माइट दूसरे तक पहुँचनी चाहिए। लाइट-हाउस की लाइट सिर्फ अपने प्रति नहीं होती है। दूसरों को रोशनी देने वा रास्ता बताने के लिए होती है। ऐसे शक्ति रूप अर्थात् लाइट-हाउस, माइट-हाउस बन दूसरों को उसके लाभ का अनुभव कराओ। वह अनुभव करें कि निर्बलता के अंधकार से शक्ति की रोशनी में आ गये हैं वा समझें कि यह आत्मा शक्ति द्वारा मुझे भी शक्तिशाली बनाने में मददगार है। कनेक्शन बाप से करायेंगी लेकिन निमित्त बन। ऐसे नहीं कि सहयोग देकर अपने में ही अटका देगी। बाप की देन दे रहे हैं, इस स्मृति और समर्थी से विशेषताओं को सेवा में लगायेंगे। सच्चे सेवाधारी की निशानी यही है। हर कर्म में उस द्वारा बाप दिखाई देवे। उनका हर बोल बाप की स्मृति दिलावे। हर विशेषता दाता के तरफ इशारा दिलावे। सदा बाप ही दिखाई देगा। वह आपको न देख सदा बाप को देखेंगे। मेरा सहयोगी है, यह सच्चे सेवाधारी की निशानी नहीं। यह कभी भी संकल्प मात्र भी नहीं सोचना कि मेरी विशेषता के कारण यह मेरे बहुत सहयोगी हैं। सहयोगी को सहयोग देना मेरा काम है। अगर आपको देखा, बाप को नहीं देखा तो यह सेवा नहीं हुई। यह द्वापरयुगी गुरुओं के माफिक बेमुख किया। बाप को भुलाया, न कि सेवा की। यह गिराना है, न कि चढ़ाना है। यह पुण्य नहीं, यह पाप है। क्योंकि बाप नहीं है तो जरूर पाप है। तो सच्चे सेवाधारी सत्य के तरफ ही सम्बन्ध जोड़ेंगे।

25.12.85... .. सदा साथ रहने वाले निरन्तर योगी, सदा सहजयोगी, उड़ती कला में जाने वाले, सदा फरिश्ता स्वरूप हो!

1.1.86... .. सदा अपने को सहयोगी अनुभव करते हो? सहज लगता है या मुश्किल लगता है? बाप का वर्सा बच्चों का अधिकार है। तो अधिकार सदा सहज प्राप्त मिलता है। जैसे लौकिक बाप का अधिकार बच्चों को सहज होता है। तो आप भी अधिकारी हो। अधिकारी होने के कारण सहजयोगी हो। मेहनत करने की

आवश्यकता नहीं। बाप को याद करना कभी मुश्किल होता ही नहीं है। यह बेहद का बाप है और अविनाशी बाप है। इसलिए सदा सहजयोगी आत्माएँ। भक्ति अर्थात् मेहनत, ज्ञान अर्थात् सहज फल की प्राप्ति। जितना सम्बन्ध और स्नेह से याद करते हो उतना सहज अनुभव होता है। सदा अपना यह वरदान याद रखना कि – ‘मैं हूँ ही सहजयोगी’। तो जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति स्वतः बन जायेगी।

19.3.86... .. सहयोग, सहज योग है। सहयोग का संकल्प आने से भी याद तो बाप की रहेगी ना। तो सहयोगी, सहज योगी स्वतः ही बन जाते हैं। योग बाप से होता, मधुबन अर्थात् बापदादा से। तो सहयोगी बनने वाले भी सहजयोग की सबजेक्ट में अच्छे नम्बर ले लेते हैं। दिल का सहयोग बाप को प्रिय है। इसलिए यहाँ यादगार भी ‘दिलवाला मन्दिर’ बनाया है। तो दिलवाला बाप को दिल का स्नेह, दिल का सहयोग ही प्रिय है।

23.1.87... .. सदा बाप की अति स्नेही, सहयोगी आत्मायें अनुभव करते हो? स्नेही की निशानी क्या होती है? जिससे स्नेह होता है उसके हर कार्य में सहयोगी जरूर होंगे। अति स्नेही आत्मा की निशानी सदा बाप के श्रेष्ठ कार्य में सहयोगी होगी। जितना-जितना सहयोगी, उतना सहज योगी क्योंकि बाप के सहयोगी हैं ना। दिन-रात यही लग्न रहे – बाबा और सेवा, इसके सिवाए कुछ है ही नहीं। अगर लौकिक कार्य भी करते हो तो बाप की श्रीमत प्रमाण करते हो, इसलिए वह भी बाप का कार्य है। लौकिक में भी अलौकिकता ही अनुभव करेंगे, कभी लौकिक कार्य समझ न थकेंगे, न फँसेंगे, न्यारे रहेंगे। तो ऐसे स्नेही और सहयोगी आत्मायें हो। न्यारे होकर कर्म करेंगे तो बहुत अच्छा कर्म होगा। कर्म में फँसकर करने से अच्छा नहीं होता, सफलता भी नहीं होती, मेहनत भी बहुत और प्राप्ति भी नहीं। इसलिए सदा बाप के स्नेह में समाई हुई सहयोगी आत्मायें हैं। सहयोगी आत्मा कभी भी माया की योगी हो नहीं सकती, उसका माया से किनारा हो जायेगा। हर संकल्प में ‘बाबा’ और ‘सेवा’, तो जो नींद भी करेंगे, उसमें भी बड़ा आराम मिलेगा, शान्ति मिलेगी, शक्ति मिलेगी। नींद, नींद नहीं होगी, जैसे कमाई करके खुशी में लेटे हैं। इतना परिवर्तन हो जाता है! ‘बाबा-बाबा’ करते रहो। बाबा कहा और कार्य सफल हुआ पड़ा है। क्योंकि बाप सर्वशक्तिवान है। सर्वशक्तिवान बाप की याद स्वतः ही हर कार्य को शक्तिशाली बना देती है।

18.3.87... .. बाप की याद से खुशियों के झूलों में झूलने वाले हो ना। क्योंकि इस संगमयुग में जो खुशियों की खान मिलती है, वह और किसी युग में प्राप्त नहीं हो सकती। इस समय बाप और बच्चों का मिलन है, वर्सा है, वरदान है। बाप के रूप में वर्सा देते, सत्गुरु के रूप में वरदान देते हैं। तो दोनों अनुभव हैं ना? दोनों ही प्राप्तियाँ सहज अनुभव कराने वाली हैं। वर्सा या वरदान – दोनों में मेहनत नहीं। इसलिए टाइटल ही है – ‘सहजयोगी’। क्योंकि ऑलमाइटी अथॉर्टी बाप बन जाए, सत्गुरु बन जाए... तो सहज नहीं होगा? यही अन्तर परम-आत्मा और आत्माओं का है। कोई महान आत्मा भी हो लेकिन प्राप्ति कराने के लिए कुछ-न-कुछ मेहनत जरूर देगी। 63

जन्म के अनुभवी हो ना। इसलिए बापदादा बच्चों की मेहनत देख नहीं सकते। जब बाप से थोड़ा भी, संकल्प में भी किनारा करते हो तब मेहनत करते हो। उसी सेकण्ड बाप को साथी बना दो तो सेकण्ड में मुश्किल सहज अनुभव हो जायेगा।

1.10.87... .. स्नेह पहले सहयोगी बनाता है, सहयोगी बनाते-बनाते स्वतः ही समय पर सर्व को सहजयोगी भी बना देता है। सहयोगी बनने की निशानी है – आज सहयोगी हैं, कल सहज-योगी बन जायेंगे। ईश्वरीय स्नेह परिवर्तन का फाउन्डेशन (नींव) है अथवा जीवन-परिवर्तन का बीज स्वरूप है। जिन आत्माओं में ईश्वरीय स्नेह की अनुभूति का बीज पड़ जाता है, तो यह बीज सहयोगी बनने का वृक्ष स्वतः ही पैदा करता रहेगा और समय पर सहजयोगी बनने का फल दिखाई देगा क्योंकि परिवर्तन का बीज फल जरूर दिखाता है। सिर्फ कोई फल जल्दी निकलता है, कोई फल समय पर निकलता है। चारों ओर देखो, आप सभी मास्टर स्नेह के सागर, विश्व-सेवाधारी बच्चे क्या कार्य कर रहे हो? विश्व में ईश्वरीय परिवार के स्नेह का बीज बो रहे हो। जहाँ भी जाते हो - चाहे कोई नास्तिक हो वा आस्तिक हो, बाप को न भी जानते हों, न भी मानते हों लेकिन इतना अवश्य अनुभव करते हैं कि ऐसा ईश्वरीय परिवार का प्यार जो आप शिववंशी ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों से मिलता है, यह कहीं भी नहीं मिलता और यह भी मानते हैं कि यह स्नेह वा प्यार साधारण नहीं है, यह अलौकिक प्यार है वा ईश्वरीय स्नेह है। तो इन्डायरेक्ट नास्तिक से आस्तिक हो गया ना। ईश्वरीय प्यार है, तो वह कहाँ से आया? किरणें सूर्य को स्वतः ही सिद्ध करती हैं। ईश्वरीय प्यार, अलौकिक स्नेह, निःस्वार्थ स्नेह स्वतः ही दाता बाप को सिद्ध करता ही है। इन्डायरेक्ट ईश्वरीय स्नेह के प्यार द्वारा स्नेह के सागर बाप से सम्बन्ध जुट जाता है लेकिन जानते नहीं हैं। क्योंकि बीज पहले गुप्त रहता है, वृक्ष स्पष्ट दिखाई देता है। तो ईश्वरीय स्नेह का बीज सर्व को सहयोगी सो सहजयोगी, प्रत्यक्षरूप में समय प्रमाण प्रत्यक्ष कर रहा है और करता रहेगा। तो सभी ने ईश्वरीय स्नेह के बीज डालने की सेवा की। सहयोगी बनाने की शुभ भावना और शुभ कामना के विशेष दो पत्ते भी प्रत्यक्ष देखे। अभी यह तना वृद्धि को प्राप्त करते प्रत्यक्षफल दिखायेगा।

1.10.87... .. सभी वर्ग वाले अर्थात् सत्ता वाले सम्पर्क में, सहयोग में आये, स्नेह में आये तो फिर सम्बन्ध में आकर सहजयोगी बन जायेंगे। अगर कोई भी सत्ता सहयोग में नहीं आती है तो सर्व के सहयोग का जो कार्य रखा है, वह सफल कैसे होगा?

9.10.87... .. किसी भी व्यक्ति को देखेंगे तो सबसे पहले दृष्टि चेहरे तरफ ही जायेगी। यह चेहरा ही वृत्ति और स्थिति का दर्पण है। तो बापदादा देख रहे थे - चमक तो सभी में थी लेकिन एक थे सदा रूहानीयत की स्थिति में स्थित रहने वाले, स्वतः और सहज स्थिति वाले और दूसरे थे सदा रूहानी स्थिति के अभ्यास द्वारा स्थित रहने वाले। एक थे सहज स्थिति वाले, दूसरे थे प्रयत्न कर स्थित रहने वाले। अर्थात् एक थे सहज योगी, दूसरे थे पुरुषार्थी से योगी। दोनों की चमक में अन्तर रहा। उनकी नैचरल ब्यूटी थी और दूसरों की पुरुषार्थ द्वारा ब्यूटी थी।

जैसे आजकल भी मेकप कर ब्यूटीफुल बनते हैं ना। नैचरल (स्वाभाविक) ब्यूटी की चमक सदा एकरस रहती है और दूसरी ब्यूटी कभी बहुत अच्छी और कभी परसेन्टेज में रहती है; एक जैसी, एकरस नहीं रहती। तो सदा सहज योगी, स्वतःयोगी स्थित नम्बरवन स्वराज्य-अधिकारी बनाती है। जब सभी बच्चों का वायदा है – ब्राह्मण जीवन अर्थात् एक बाप ही संसार है वा एक बाप दूसरा न कोई; जब संसार ही बाप है, दूसरा कोई है ही नहीं तो स्वतः और सहज योगी स्थिति सदा रहेगी ना, वा मेहनत करनी पड़ेगी? अगर दूसरा कोई है तो मेहनत करनी पड़ती है - यहाँ बुद्धि न जाए, वहाँ जाए। लेकिन एक बाप ही सब कुछ है – फिर बुद्धि कहाँ जायेगी? जब जा ही नहीं सकती तो अभ्यास क्या करेंगे? अभ्यास में भी अन्तर होता है। एक है स्वतः अभ्यास है, है ही है, और दूसरा होता है मेहनत वाला अभ्यास। तो स्वराज्य-अधिकारी बच्चों का सहज अभ्यासी बनना - यही निशानी है सहज योगी, स्वतः योगी की। उन्हीं के चेहरे की चमक अलौकिक होती है जो चेहरा देखते ही अन्य आत्मायें अनुभव करती कि यह श्रेष्ठ प्राप्तिस्वरूप सहजयोगी हैं।

9.10.87... .. आगे जाने का सहज रास्ता है - सहजयोगी, स्वतःयोगी बनो। बहुत सहज है। जब है ही एक बाप, दूसरा कोई नहीं तो जायेंगे कहाँ? प्राप्ति ही प्राप्ति है फिर मेहनत क्यों लगेगी? तो प्राप्ति के समय का लाभ उठाओ। सर्व प्राप्ति स्वरूप बनो। समझा? बापदादा तो यही चाहते हैं कि एक- एक बच्चा - चाहे लास्ट आने वाला, चाहे स्थापना के आदि में आने वाला, हर एक बच्चा नम्बरवन बने। राजा बनना, न कि प्रजा।

14.10.87... .. बाप के सहयोग के पात्र सहजयोगी आत्मायें स्वतः बनती हैं। जो कुछ समय पहले मुश्किल लगता था, वह अब सहज बन गया है और आगे और भी सहज बनता जायेगा। स्वयं सब वर्ग वाले आफर करेंगे। पहले आप उन्हीं को सहयोगी बनाने की मेहनत करते, लेकिन अभी वह स्वयं सहयोगी बनने की आफर कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। तो समय प्रति समय सेवा की रूपरेखा बदल रही है और बदलती रहेगी। अभी आप लोगों को ज़्यादा कहना नहीं पड़ेगा लेकिन वह स्वयं कहेंगे कि यह कार्य श्रेष्ठ है, इसीलिए हमें भी सहयोगी बनना ही चाहिए। समय समीप की यह निशानी है।

25.10.87... .. इसलिए, देह के पदार्थों की आसक्ति वा आधार से भी निराधार 'अनासक्त' होना है। अभी तो सब साधन अच्छी तरह से प्राप्त हैं, कोई कमी नहीं है। लेकिन साधनों के होते, साधनों को प्रयोग में लाते, योग की स्थिति डगमग न हो। योगी बन प्रयोग करना - इसको कहते हैं न्यारा। है ही कुछ नहीं, तो उसको न्यारा नहीं कहेंगे। होते हुए निमित्त-मात्र, अनासक्त रूप से प्रयोग करना; इच्छा वा अच्छा होने के कारण नहीं यूज़ करना – यह चेकिंग ज़रूर करो। जहाँ इच्छा होगी, फिर भला कितनी भी मेहनत करेंगे लेकिन इच्छा, अच्छा बनने नहीं देगी। पेपर के समय मेहनत करने में ही समय बीत जायेगा। आप साधना में रहने का प्रयत्न करेंगे और साधन अपने तरफ आकर्षित करेंगे। आप युद्ध कर, मेहनत कर साधनों की आकर्षण को मिटाने का प्रयत्न करते रहेंगे तो युद्ध की कशमकश में ही पेपर का समय बीत जायेगा। रिज़ल्ट क्या हुई? प्रयोग करने वाले साधन ने

सहजयोगी स्थिति से डगमग कर दिया ना। प्रकृति के पेपर तो अभी और रफ्तार से आने वाले हैं। इसलिए, पहले से ही पदार्थों के विशेष आधार - खाना, पीना, पहनना, चलना, रहना और सम्पर्क में आना - इन सबकी चेकिंग करो कि कोई भी बात महीन रूप में भी विघ्न-रूप तो नहीं बनती? यह अभी से ट्रायल करो। जिस समय पेपर आयेगा उस समय ट्रायल नहीं करना, नहीं तो फेल होने की मार्जिन है। योग-स्थिति अर्थात् प्रयोग करते हुए न्यारी स्थिति। सहज योग की साधना साधनों के ऊपर अर्थात् प्रकृति के ऊपर विजयी हो। ऐसा न हो उसके बिना तो चल सकता लेकिन इसके बिना रह नहीं सकते, इसलिए डगमग स्थिति हो गई... इसको भी न्यारी जीवन नहीं कहेंगे। ऐसी सिद्धि को प्राप्त करो जो आपके सिद्धि द्वारा अप्राप्ति भी प्राप्ति का अनुभव कराये।

25.10.87... .. मधुबन में आये हुए सेवाधारी भाई बहिनों से – जितना समय मधुबन में सेवा की, उतना समय निरन्तर योग का अनुभव किया? योग टूटा तो नहीं? मधुबन में सेवाधारी बनना अर्थात् निरन्तर योगी, सहजयोगी के अनुभवी बनना। यह थोड़े समय का अनुभव भी सदा याद रहेगा ना। जब भी कोई परिस्थिति आये तो मन से मधुबन में पहुँच जाना। तो मधुबन निवासी बनने से परिस्थिति वा समस्या खत्म हो जायेगी और आप सहजयोगी बन जायेंगे। सदैव अपने इस अनुभव को साथ रखना। तो अनुभव याद करने से शक्ति आ जायेगी। सेवा का मेवा अविनाशी है।

2.11.87... .. आज विश्व-परिवर्तक, विश्व-कल्याणकारी बापदादा अपने स्नेही, सहयोगी, विश्व-परिवर्तक बच्चों को देख रहे हैं। हर स्व एक परिवर्तन द्वारा विश्व-परिवर्तन करने की सेवा में लगे हुए हैं। सभी के मन में एक ही उमंग-उत्साह है कि इस विश्व को परिवर्तन करना ही है और निश्चय भी है कि परिवर्तन होना ही है अथवा यह कहें कि परिवर्तन हुआ ही पड़ा है। सिर्फ निमित्त बापदादा के सहयोगी, सहजयोगी बन वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बना रहे हैं।

22.11.87... .. स्वराज्य अधिकारी आत्मायें सहजयोगी, निरन्तर योगी बन सकते हैं। स्वराज्य अधिकारी के नशे और निश्चय से आगे बढ़ते चलो।

6.12.87... .. सहजयोगी कुमार हो ना? निरन्तर योगी कुमार, कर्मयोगी कुमार। क्योंकि कुमार जितना अपने को आगे बढ़ाने चाहें उतना बढ़ा सकते हैं। क्यों? निर्बन्धन है, बोझ नहीं हैं और जिम्मेवारी नहीं है इसलिए हल्के हैं। हल्के होने के कारण जितना ऊँचा जाना चाहे जा सकते हैं। निरन्तर योगी, सहज योगी - यह है ऊँची स्थिति, यह है ऊँचा जाना। ऐसे ऊँच स्थिति वाले को कहते हैं – 'विजयी कुमार'। विजयी हो या कभी हार, कभी जीत - यह खेल तो नहीं खेलते हो? अगर कभी हार कभी जीत के संस्कार होंगे तो एकरस स्थिति का अनुभव नहीं होगा। एक की लगन में मग्न रहने का अनुभव नहीं करेंगे।

23.12.87... .. मग्न आत्मा सदा तृप्त आत्मा, सन्तुष्ट आत्मा, सम्पन्न आत्मा, सम्पूर्णता के अति समीप आत्मा है। सदा अनुभव की अथार्टी के कारण सहज योगी, स्वतः योगी, ऐसी श्रेष्ठ जीवन, न्यारी और प्यारी जीवन का अनुभव करते हैं। उनके मुख से अनुभवी बोल होने के कारण दिल में समा जाते हैं और वर्णन करने वाले के बोल दिमाग तक बैठते हैं। तो समझा, फर्स्ट स्टेज क्या है? मनन करने वाले भी विजयी हैं लेकिन सहज और सदा में अन्तर है। मग्न रहने वाले सदा बाप की याद में समाये हुए होते हैं। तो अनुभव को बढ़ाओ लेकिन पहले वर्णन से मनन में आओ। मनन-शक्ति, मग्न-स्थिति को सहज प्राप्त करा लेती है। मनन करतेकरते अनुभव स्वतः ही बढ़ता जायेगा। मनन करने का अभ्यास अति आवश्यक है। इसलिए मनन-शक्ति को बढ़ाओ। सुनना और सुनाना तो अति सहज है। मनन-शक्ति वाले, मग्न रहने वाले सदा पूज्य; वर्णन करने वाले सिर्फ गायन योग्य होते हैं। तो सदा अपने को गायन-पूजन योग्य बनाओ।

31.12.87 बाप समान बनना मुश्किल नहीं है ना? सिर्फ डाट (बिन्दी) याद रखो तो मुश्किल नाट हो जायेगी। डाट को भूलते हो तो नाट नहीं होता। कितना सहज है डाट बनाना वा डाट लगाना। सारा ज्ञान इसी एक 'डाट' शब्द में समाया हुआ है। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो बीत गया उसे भी बिन्दी लगा दो, बस। छोटा बच्चा भी लिखने जब शुरू करता है तो पहले जब पेन्सिल कागज पर रखता है तो क्या बन जाता? डाट बनेगा ना? तो यह भी बच्चों का खेल है। यह पूरा ही ज्ञान की पढ़ाई खेल-खेल में है। मुश्किल काम नहीं है। इसलिये काम भी सहज है और हो भी 'सहज-योगी'। बोर्ड में भी लिखते हो - "सहज राजयोग"। तो ऐसा सहज अनुभव करना, इसे ही ज्ञान कहा जाता है।

6.1.88 रायल भाषा यही कहते कि हठयोगी नहीं हैं, सहजयोगी हैं। सहजयोगी बनना तो अच्छा लेकिन योगी हो? जो बाप की याद को हलचल में लावे अर्थात् अपनी तरफ आकर्षित करे, झुकाव करे तो योगी बनके प्रयोग करने वाले नहीं कहेंगे। क्योंकि बाप के बनने कारण समय प्रति समय प्रकृति दासी अर्थात् वैभवों के साधनों की प्राप्ति बढ़ती जा रही है। अभी-अभी 18-19 वर्ष के अन्दर कितनी प्राप्ति हो रही है! सब आराम के साधन बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन यह प्राप्तियाँ बाप के बनने का फल मिल रहा है। तो फल को खाते बीज को नहीं भूल जाना। यह साधन बढ़ते जायेंगे थोड़ा समय। लेकिन आराम में आते 'राम' को नहीं भूल जाना। सच्ची सीता रहना। मर्यादा की लकीर से संकल्प रूपी अंगूठा भी नहीं निकालना। क्योंकि यह साधन बिना साधना के यूज करेंगे तो स्वर्ण-हिरण का काम कर लेगा। इसलिए व्यक्ति और वैभव के लगाव और झुकाव से सदा अपने को सेफ रखना, नहीं तो बाप के स्नेही बनने के बजाए, सहजयोगी बनने के बजाए कभी सहयोगी, कभी सहजयोगी, कभी वियोगी - दोनों अनुभव करते रहेंगे। कभी याद, कभी फरियाद - ऐसी अनुभूति में रहेंगे और कम्पलेन भी कभी पूरी नहीं होगी। व्यक्ति और वैभव के झुकाव की निशानी एक तो सुनाई - कभी सहजयोगी, कभी योगी, कभी फरियादी।

14.1.88 सभी अपने को सहजयोगी, राजयोगी श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? सहजयोगी अर्थात् स्वतः योगी। योग लगाने से योग लगे नहीं, तो योगी के बजाए वियोगी बन जाँ इसको सहजयोगी नहीं कहेंगे। सहजयोगी जीवन है। तो जीवन सदा होती है। योगी जीवन अर्थात् सदा के योगी, दो घण्टे, चार घण्टे योग लगाने वाले को योगी जीवन नहीं कहेंगे। जब है ही एक बाप दूसरा न कोई, तो ? एक की याद में रहना – यही सहजयोगी जीवन है। सदा के योगी अर्थात् योगी जीवन वाले। दूसरे जो योग लगाते हैं, वह जब योग लगाते हैं तब लगता है और ब्राह्मण आत्माएं सदा ही योग में रहती हैं क्योंकि जीवन बना ली है। चलते-फिरते, खाते-पीते योगी। है ही बाप और मैं। अगर दूसरा कोई छिपा हुआ होगा तो वह याद आएगा। सदा योगी जीवन है अर्थात् निरन्तर योगी हैं। ऐसे तो नहीं कहेंगे कि योग लगता नहीं, कैसे लगाएं? सिवाए बाप के जब कुछ है ही नहीं, तो लगाएँ कैसे – यह क्वेश्चन ही नहीं। जब दूसरे तरफ बुद्धि जाती है तो योग टूटता है और जब टूटता है तो लगाने की मेहनत करनी पड़ती है। लगाने की मेहनत करनी ही न पड़े, सेकण्ड में बाबा कहा और याद स्वरूप हो गए। ऐसे तो कहने की भी आवश्यकता नहीं, हैं ही – ऐसा अनुभव करना योगी जीवन है। तो सदा सहजयोगी आत्माएं हैं – इस अनुभूति से आगे बढ़ते चलो।

18.1.88... .. बापदादा जानते हैं कि बच्चों का ब्रह्मा बाप से अति स्नेह है। चाहे साकार में पालना ली, चाहे अब अव्यक्त रूप से पालना ले रहे हैं लेकिन बड़ी माँ होने के कारण माँ से बच्चों का प्यार स्वतः ही होता है। इस कारण बाप जानते हैं कि ब्रह्मा माँ को बहुत याद करते हैं। लेकिन स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप है – समान बनना। जितना-जितना दिल का सच्चा प्यार है, बच्चों के मन में उतना ही फ़ालो फ़ादर करने का उमंग-उत्साह दिखाई देता है। यह अलौकिक माँ का अलौकिक प्यार वियोगी बनाने वाला नहीं है, सहजयोगी राजयोगी अर्थात् राजा बनाने वाला है। अलौकिक माँ की बच्चों के प्रति अलौकिक ममता है कि हर एक बच्चा राजा बने। सभी राजा बच्चे बनें, प्रजा नहीं। प्रजा बनाने वाले हो, प्रजा बनने वाले नहीं हो।

30.1.88... .. माताओं के लिए बापदादा ने सहज मार्ग कौन सा बताया है जिससे सहज ही बाप की याद का अनुभव कर सको, मेहनत न करनी पड़े? याद को भी सहज बनाने का साधन क्या है? दिल से कहो – “मेरा बाबा”। जहाँ मेरा कहते हो वहाँ सहज याद आती है। सारे दिन में, जो मेरा है वही याद आता है ना। कोई भी मेरा हो – चाहे व्यक्ति, चाहे वस्तु... जहाँ मेरा-पन होगा वही याद आयेगा। ऐसे यदि बाप को मेरा कहते हो, मेरा समझते हो तो बाप की याद आयेगी। तो बाप को याद करने का सहज तरीका है – दिल से कहो “मेरा बाबा”। सिर्फ़ मुख से मेरा-मेरा नहीं करना, अधिकार से कहना। यही सहज पुरुषार्थ कर आगे बढ़ते चलो। सदा ही इस विधि से सहजयोगी बनो। मेरा कहो और बाप के खज़ानों के मालिक बनो।

3.2.88... .. प्रश्न – सहजयोगी सदा रहें, उसकी सहज विधि कौन-सी है? उत्तर – बाप ही संसार है - इस स्मृति में रहो तो सहजयोगी बन जायेंगे। क्योंकि सारा दिन संसार में ही बुद्धि जाती है। जब बाप ही संसार है तो

बुद्धि कहाँ जायेगी? संसार में ही जाएगी ना, जंगल में तो नहीं जाएगी! तो जब बाप ही संसार हो गया तो सहजयोगी बन जायेंगे। नहीं तो मेहनत करनी पड़ेगी - यहाँ से बुद्धि हटाओ, वहाँ से जुड़ाओ। सदा बाप के स्नेह में समाए रहो तो वह भूल नहीं सकता। अच्छा

12.3.88... स्नेही सभी हैं, लेकिन सर्व सम्बन्ध का स्नेह समय प्रमाण अनुभव करने वाले सदा ही इसी अनुभव में इतने बिज़ी रहते, हर सम्बन्ध के भिन्न-भिन्न प्राप्तियों में इतना लवलीन रहते, मग्न रहते जो किसी भी प्रकार का विघ्न अपने तरफ़ झुका नहीं सकता है। इसलिए स्वतः ही सहज योगी स्थिति का अनुभव करते हैं। इसको कहा जाता है – नम्बरवन यथार्थ स्नेही आत्मा।

31.3.88... मन्सा शक्तिशाली अर्थात् याद की शक्ति भी श्रेष्ठ होगी, शक्तिशाली होगी, सहजयोगी होंगे। सिर्फ़ सहज-योगी भी नहीं लेकिन सहज-कर्मयोगी होंगे।

7.11.89... सहज चलना दो प्रकार का है—एक है वरदानों से सहज जीवन और दूसरी है लापरवाही, डोंट-केयर (Don't care) – इससे भी सहज चलते हैं। वरदानों से वा रूहानी पालना से सहज चलने वाली आत्मायें केयरफुल होंगी, डोंट-केयर नहीं होंगी। लेकिन अटेन्शन का टेन्शन नहीं होगा। ऐसी केयरफुल आत्माओं का समय, साधन और सरकमस्टांश प्रमाण ब्राह्मण परिवार का साथ, बाप की विशेष मदद सहयोग देती है। इसलिए सब सहज अनुभव होता है। तो चेक करो—यह सब बातें मेरी सहयोगी हैं? इन सब बातों का सहयोग ही सहजयोगी बना देता है। नहीं तो कभी छोटा सा सरकमस्टांश, साधन, समय, साथी आदि भले होते चींटी समान हैं लेकिन छोटी चींटी महारथी को भी मूर्च्छित कर देती है। मूर्च्छित अर्थात् वरदानों की सहज पालना की श्रेष्ठ स्थिति से नीचे गिरा देती है। मजबूर और मेहनत—यह दोनों मूर्च्छित की निशानी हैं। तो इस विधि से अपनी जन्मपत्री को चेक करो। समझा क्या करना है?

11.11.89... इस ड्रामा के अन्दर विशेष पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मायें हैं – ऐसे अनुभव करते हो? जब अपने को विशेष आत्मा समझते हैं तो बनाने वाला बाप स्वतः याद रहता है, याद सहज लगती है। क्योंकि 'सम्बन्ध' याद का आधार है। जहाँ सम्बन्ध होता है वहाँ याद स्वतः सहज हो जाती है। जब सर्व सम्बन्ध एक बाप से हो गये तो और कोई रहा ही नहीं। एक बाप सर्व सम्बन्धी है – इस स्मृति से सहजयोगी बन गये।

5.12.89... कोई भी बात आ जाए, हिमालय पहाड़ से भी बड़ी हो लेकिन बाबा कहा और पहाड़ रूई बन जायेगा। राई भी नहीं, रूई। राई भी थोड़ी मज़बूत कड़क होती है और रूई बहुत नर्म और हल्की होती है। तो कितना भी बड़ा पहाड़ रूई बन जायेगा। दुनिया वाले देखेंगे तो कहेंगे - यह कैसे होगा और आप कहेंगे - यह ऐसे होगा। बुद्धि में "बाबा" कहा और टच होगा कि यह ऐसे होगा। हर बात सहज लगेगी, क्योंकि सहज योगी जीवन है। जिसकी जीवन ही सहज है उसके सामने कोई भी बात आयेगी तो सहज हो जायेगा। मुश्किल

के दिन खत्म हो गये। न ब्राह्मण-जीवन में मुश्किल शब्द है, न देवता-जीवन में। इसलिए बाप की महिमा में कहते हो - मुश्किल को सहज बनाने वाले, तो जो बाप की महिमा वह आपकी भी महिमा है।

4.12.91... .. सदा अपने को सहजयोगी, सहज ज्ञानी समझते हो? सहज है या मेहनत है? जब माया बड़े रूप में आती है तो मुश्किल नहीं लगता? मधुबन में बैठे हो तो सहज है, वहाँ प्रवृत्ति में रहते जब माया आती है फिर मुश्किल लगता है? कभी-कभी क्यों लगता है, उसका कारण? मार्ग कभी मुश्किल, कभी सहज है - ऐसे नहीं कहेंगे। मार्ग सदा सहज है, लेकिन आप कमजोर हो जाते हो इसीलिए सहज भी मुश्किल लगता है। कमजोर के लिए कोई छोटा सा भी कार्य भी मुश्किल लगता है। अपनी कमजोरी मुश्किल बना देती है, बाकी मुश्किल है नहीं। कमजोर क्यों होते हैं? क्योंकि कोई न कोई विकारों के संग दोष में आ जाते हैं। सत का संग किनारे हो जाता है और दूसरा संग दोष लग जाता है। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं कि सदा सतसंग में रहो। सतसंग अर्थात् सत बाप के संग में रहना। तो आप सदा सतसंग में रहते हो या और संग में भी चक्कर लगाते हो? सतसंग की कितनी महिमा है! और आप सबके लिए सत बाप का संग अति सहज है। क्योंकि समीप का सम्बन्ध है। सबसे समीप सम्बन्ध है बाप और बच्चे का। यह सम्बन्ध सहज भी है और साथ-साथ प्राप्ति कराने वाला भी है। तो आप सभी सदा सतसंग में रहने वाले सहज योगी, सहज ज्ञानी है। सदैव यह सोचो कि हम औरों की भी मुश्किल को सहज करने वाले हैं। जो दूसरों की मुश्किल को सहज करने वाला होता वह स्वयं मुश्किल में नहीं आ सकता।

13.2.92... .. ऐसे नहीं समझो कि कर्मयोगी जीवन में लवलीन अवस्था नहीं हो सकती। होती है। साथ का अनुभव अर्थात् लव का प्रैक्टिकल सबूत साथ है। तो सहजयोगी सदा के योगी हो गये ना ! लवर अर्थात् सदा सहजयोगी।

3.10.92... .. बाप का खजाना मेरा खजाना है। जब मेरा खजाना है तो मांगने की क्या दरकार है। तो अधिकारी जीवन का अनुभव करने वाले हो ना। अनेक जन्म भिखारी बने, अभी अधिकारी बने हो। सदा इसी अधिकार के नशे में रहो। परमात्मप्यार के अनुभव आत्माएं हो। तो सदा इसी अनुभव से सहजयोगी बन उड़ते चलो। अधिकारी आत्मायें स्वप्न में भी मांग नहीं सकतीं। बालक सो मालिक हो।

13.10.92... .. जिसकी नेचर ही ज्ञानी-योगी की होगी उसकी धारणा भी नेचुरल होगी। नेचुरल स्वभाव-संस्कार ही धारणास्वरूप होंगे। बार-बार पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा कि इस गुण को धारण करूँ, उस गुण को धारण करूँ। लेकिन पहले फाउन्डेशन के समय ही ज्ञान, योग और धारणा को अपनी जीवन बना दी। इसलिए यह तीनों सब्जेक्ट ऐसी आत्मा की स्वतः और स्वाभाविक अनुभूतियां बन जाती हैं। इसलिए ऐसी आत्माओं को सहज योगी, सहज ज्ञानी, सहज धारणा-मूर्त कहा जाता है। तीनों सब्जेक्ट का कनेक्शन है। जिसके पास इतनी अनुभूतियों का खजाना सम्पन्न होगा, ऐसी सम्पन्न मूर्तियां स्वतः ही मास्टर दाता बन जाती हैं।

21.11.92... .. अगर कभी किसी को भी मेहनत करनी पड़ती है, तो उसका कारण है अपनी कमजोरी। कमजोर को सहज काम भी मुश्किल लगता है और जो बहादुर होता है उसको मुश्किल काम भी सहज लगता है। कमजोरी मुश्किल बना देती है, है सहज। तो बाप क्या चाहते हैं? सदा सहजयोगी बनकर चलो। सदा सहजयोगी अर्थात् सदा खुश रहने वाले। सहजयोगी जीवन अर्थात् ब्राह्मण जीवन। पक्के ब्राह्मण हो ना। सबसे भाग्यवान आत्माएं हैं—यह खुशी रहती है? आप जैसा खुश और कोई संसार में होगा? तो सदा क्या गीत

गाते हो? “वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य!”—यह गीत गाना सभी को आता है। क्योंकि मन का गीत है ना। तो कोई भी गा सकता है और सदा गा सकता है। “वाह मेरा भाग्य!” कहने से भाग्यविधाता बाप स्वतः ही याद आता है। तो भाग्य और भाग्यविधाता—इसी को ही कहा जाता है सहज याद। सहज-सहज करते मंजिल पर पहुँच जायेंगे।

20.12.92... .. अब बाप कहते हैं—मेहनत छोड़ मोहब्बत में रहो, लवलीन रहो। जो लव में लीन होता है उसको मेहनत नहीं करनी पड़ती है। ब्राह्मण माना मौज, ब्राह्मण माना मेहनत नहीं। बाप ने कहा और बच्चों ने किया—इसमें मेहनत की क्या बात है! बच्चों का काम है करना, सोचना नहीं। **सहज योगी हो ना। सदा विजयी रत्न हो ना।** यह रूहानी निश्चय चाहिए कि हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे! इतना अटल निश्चय हो। जब फालो फादर कर रहे हो तो कौन बनेंगे। वही बनेंगे ना। निश्चय तो निश्चय ही हुआ ना। अगर निश्चय में 10 %, 20% कम हुआ तो निश्चय नहीं कहेंगे

9.1.93... .. दुनिया वाले तो बहुत कठिन तप करते हैं मुक्ति प्राप्त करने को। और आपको सहज मिला ना! ‘मेरा बाबा’ कहा और बंधन खत्म। तो जो सहज होता है, उसको सदा अपनाया जाता है। जो मुश्किल होता है उसे सदा नहीं कर सकते हैं। तो सदा सहज है या कभी-कभी थोड़ा मुश्किल लगता है? तो यही याद रखना कि हम ब्राह्मण जीवन-मुक्त आत्मा हैं। **सहजयोगी अर्थात् सफलतामूर्त।**

18.2.93... .. संगम का हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा है – इस निश्चय से सहजयोगी बनो क्वेश्चन तब उठता है जब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा। **इससे सदा सहज-योगी जीवन का अनुभव करेंगे!**

7.3.93... .. सभी अपने को सहजयोगी अनुभव करते हो? जो सहज बात होती है वो सदा सहज होती है। या कभी-कभी मुश्किल होती है? योग मुश्किल है या आप मुश्किल कर देते हो? तो मुश्किल क्यों करते हो? अच्छा लगता है मुश्किल? जब अपने में कोई न कोई कमजोरी लाते हो, तो मुश्किल हो जाता है। कमजोरी मुश्किल बनायेगी। तो कमजोरी आने क्यों देते हो? बच्चे किसके हो? थो बाप कमजोर है? तो आप क्यों कमजोर हो? आप अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान कहलाते हो या मास्टर कमजोर? मास्टर सर्व-शक्तिवान! फिर कमजोर क्यों? अगर कमजोरी आ जाती है, चाहते नहीं हो लेकिन आ जाती है—तो आने-जाने का कारण क्या है? चेकिंग ठीक नहीं है। चलते-चलते कहाँ न कहाँ किसी बात में अलबेलापन आ जाता है, तब कमजोरी आ जाती है। तो सदा अटेन्शन रखो कि कहाँ भी, कभी भी अलबेलापन नहीं हो। अलबेलापन अनेक प्रकार से आता है। सबसे रॉयल रूप अलबेलेपन का है पुरुषार्थ कर रहे हैं, हो जायेगा, समय पर जरूर करके ही दिखायेंगे। पुरुषार्थ करते हैं लेकिन समय पर आधार रखते हैं, ‘स्वयं’ पर आधार नहीं रखते तो—अलबेले हो जाते हैं। तो आप कौन हो? अलबेले हो या तीव्र पुरुषार्थी? सदैव यह स्मृति में रहे कि हर समय एवररेडी रहना है। किसी भी समय कोई भी परिस्थिति आ जाये लेकिन हम सदा एवररेडी रहेंगे।

7.3.93... .. सदा ये स्मृति में रखो कि—है ही एक बाप, दूसरा कुछ है ही नहीं। अगर वन बाप है तो विन जरूर है। सहज योगी हो ना। मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे माया की हिम्मत नहीं जो वार कर सके। और ही माया सरेन्डर होगी, वार नहीं करेगी। जब सर्वशक्तिवान बाप साथ है तो सदा ही जहाँ बाप है वहाँ विजय है ही है। कल्प-कल्प के विजयी हैं, अभी भी हैं और सदा रहेंगे। ये स्मृति है ना। कितनी बार विजयी बने हो? तो अनेक

बार किया हुआ कार्य फिर से करना, उसमें क्या मुश्किल है! नई बात तो नहीं है ना। तो नशे से कहो कि हम सहज योगी नहीं होंगे तो कौन होगा! ऐसा नशा है? संगमयुग को विशेष वरदान है ही सहज प्राप्ति का। याद करना मुश्किल लगता है या सहज लगता है? तो जो सहज होता है वो स्वतः ही निरन्तर होता है। तो निरन्तर सहजयोगी हो ना। जब बाप साथ है और बाप से प्यार है, तो जिससे प्यार होता है उसका साथ छोड़ा जाता है क्या? तो साथ क्यों छोड़ते हो? तो सदा साथ रहना है। सदा साथ रहने से मायाजीत भी सदा सहज होंगे। वायदा क्या करते हो कि—कभी आपको नहीं छोड़ेंगे, कभी नहीं भूलेंगे। तो फिर क्यों छोड़ते हो? तो जो वायदा किया है उसको सदा स्मृति में रखो। क्योंकि ड्रामानुसार समय भी वरदानी मिला है। तो समय भी सहयोगी है। बापदादा आते ही हैं सब सहज करने। तो जो भी कदम उठाते हो, हर कदम में सहज का अनुभव करना—यही ब्राह्मण जीवन है।

26.3.93... .. सहयोगियों का सहयोग किसी भी विधि से बढ़ाते चलो तो स्वतः ही सेवा में सहयोगी बनने से सहज योगी बन जायेंगे। कई ऐसी आत्मायें होती हैं जो सीधा सहजयोगी नहीं बनेंगी लेकिन सहयोग लेते जाओ, सह योगी बनाते जाओ। तो सहयोग में आगे बढ़ते-बढ़ते सहयोग उन्हीं को योगी बना देता है। तो सहयोगी आत्माओं को और स्टेज पर लाओ, उन्हीं का सहयोग सफल करो। समझा, क्या करना है? कोई एक आत्मा भी सहयोगी बनती है तो वह आत्मा प्रैक्टिकल में सहयोग लेने से, देने से, प्रत्यक्ष दुआओं से सहज आगे बढ़ती है और अनेकों की सेवा के निमित्त बनती है।

3.4.97... .. जो कहते हो, जो अच्छा-अच्छा सोचते हो वह करना ही है। उसकी सहज विधि सुनाई कि ओरीजिनल निजी संस्कार को इमर्ज करो। संस्कार से स्वतः ही कर्म हो ही जाता है। मेहनत कम सफलता ज्यादा होती है, मेहनत से बच जायेंगे। जैसे आधाकल्प जब विश्व के मालिक बनते हो तो कई प्रकार की मेहनत से स्वतः ही छूट जाते हो। ऐसे इस समय निजी संस्कार बनाने से सहज मेहनत से छूट जायेंगे। समय प्रति समय कमान उठाने की, युद्ध करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। निरन्तर योगी, सहज योगी, कर्मयोगी, राजयोगी स्वतः ही बन जायेंगे। योग लगाना नहीं पड़ेगा लेकिन हर सेकण्ड, हर समय योगी जीवन स्वतः ही होगी। तो ऐसे ही चाहते हो ना?

31.12.97... .. अभी ऐसा तैयार करो जो भारत के महात्मायें ब्रह्मचर्य में रहना असम्भव वा मुश्किल समझते हैं, उन्हीं को यह यूथ अपने अनुभव से सुनावें कि मुश्किल नहीं है, सहज है और हम सहज योगी, सहज ब्रह्मचारी बने हैं। तो ऐसे पक्के ब्रह्मचारी योगी आत्मायें इन्हीं का प्रभाव, उन्हीं पर भी पड़ेगा। यह भी प्रत्यक्षता का एक निमित्त दृश्य बनेगा।

24.2.98... .. अभी बापदादा सभी बच्चों के चेहरे पर सदा फरिश्ता रूप, वरदानी रूप, दाता रूप, रहमदिल, अथक, सहज योगी वा सहज पुरुषार्थी का रूप देखने चाहते हैं। यह नहीं कहो बात ही ऐसी थी ना। कैसी भी बात हो लेकिन रूप मुस्कराता हुआ, शीतल, गम्भीर और रमणीकता दोनों के बैलेन्स का हो। कोई भी अचानक आ जाए और आप समस्या के कारण वा कार्य के कारण सहज पुरुषार्थी रूप में नहीं हो तो वह क्या देखेगा? आपका चित्र तो वही ले जायेगा। कोई भी समय, कोई भी किसी को भी चाहे एक मास का हो, दो मास का हो, अचानक भी आपके फेस का चित्र निकाले तो ऐसा ही चित्र हो जो सुनाया। दाता बनो। लेवता नहीं, दाता। कोई कुछ भी दे, अच्छा दे वा बुरा भी दे लेकिन आप बड़े ते बड़े बाप के बच्चे बड़ी दिल वाले हो अगर बुरा भी दे

दिया तो बड़ी दिल से बुरे को अपने में स्वीकार न कर दाता बन आप उसको सहयोग दो, स्नेह दो, शक्ति दो। कोई न कोई गुण अपने स्थिति द्वारा गिफ्ट में दे दो। इतनी बड़ी दिल वाले बड़े ते बड़े बाप के बच्चे हो। रहम करो। दिल में उस आत्मा के प्रति और एकस्ट्रा स्नेह इमर्ज करो। जिस स्नेह की शक्ति से वह स्वयं परिवर्तित हो जाए। ऐसे बड़ी दिल वाले हो या छोटी दिल है? समाने की शक्ति है? समा लो। सागर में कितना किचड़ा डालते हैं, डालने वाले को, वह किचड़े के बदले किचड़ा नहीं देता। आप तो ज्ञान के सागर, शक्तियों के सागर के बच्चे हो, मास्टर हो।

30.3.98... .. बापदादा इस वर्ष के बाद हर बच्चे को जीवन-मुक्त स्थिति में देखेंगे। भविष्य में जीवनमुक्त होंगे लेकिन संस्कार जीवनमुक्त के अभी से ही इमर्ज करने हैं। और **निरन्तर कर्मयोगी, निरन्तर सहज योगी, निरन्तर मुक्त आत्मा के संस्कार अभी से अनुभव में लाओ**, क्यों? बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि समय का परिवर्तन आप विश्व परिवर्तक आत्माओं के लिए इन्तजार कर रहा है। प्रकृति आप प्रकृतिपति आत्माओं का विजय का हार लेके आवाहन कर रही है। समय विजय का घण्टा बजाने के लिए आप भविष्य राज्य अधिकारी आत्माओं को देख रहे हैं कि कब घण्टा बजायें, भक्त आत्मायें वह दिन सदा याद कर रही हैं कि कब हमारे पूज्य देव आत्मायें हमारे ऊपर प्रसन्न हो हमें मुक्ति का वरदान देंगी! दुःखी आत्मायें पुकार रही हैं कि कब दुःख हर्ता सुख कर्ता आत्मायें प्रत्यक्ष होंगी! इसलिए यह सब आपके लिए इन्तजार वा आवाहन कर रहे हैं। इसलिए हे रहमदिल, विश्व कल्याणकारी आत्मायें अभी इन्हीं के इन्तजार को समाप्त करो। आपके लिए सब रुके हैं। आप सब मुक्त हो जाओ तो सर्व आत्मायें, प्रकृति, भगत मुक्त हो जाएं। तो मुक्त बनो, मुक्ति का दान देने वाले मास्टर दाता बनो। अभी विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी के ताजधारी आत्मायें बनो।

18.1.99... .. इस वर्ष चारों ओर बड़े-बड़े प्रोग्राम किये और सेवा से सहयोगी आत्मायें भी बहुत बने हैं, समीप आये हैं, सम्पर्क में आये हैं, लेकिन क्या सिर्फ सहयोगी बनाना है? यहाँ तक रखना है क्या? सहयोगी आत्मायें अच्छी-अच्छी हैं, अब उन सहयोगी क्वालिटी वाली आत्माओं को और सम्बन्ध में लाओ। अनुभव कराओ, जिससे सहयोगी से सहज योगी बन जाएँ। इसके लिए एक तो साधना का वायुमण्डल और दूसरा **बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो इससे सहज सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे**। उन्हीं की सेवा भले करते रहो लेकिन साथ में साधना, तपस्या का वायुमण्डल आवश्यक है।

30.11.99... .. मास्टर सर्वशक्तवान और मुश्किल? **टाइटल अपने को क्या देते हो? मुश्किल योगी या सहज योगी? नहीं तो अपना टाइटल चेंज करो कि हम सहज योगी नहीं हैं**। कभी सहजयोगी हैं, कभी मुश्किल योगी? और योग है ही क्या? बस, याद करना है ना। और पावरफुल योग के सामने मुश्किल हो ही नहीं सकती। योग लगन की अग्नि है। अग्नि कितना भी मुश्किल चीज़ को परिवर्तन कर देती है। लोहा भी मोल्ड हो जाता है। यह लगन की अग्नि क्या मुश्किल को सहज नहीं कर सकती है?

तो आज क्या करेंगे? **जमा का खाता बढ़ाओ**। तो जो कहते हो सहज योगी, वह अनुभव करेंगे। कभी मुश्किल कभी सहज, इसमें मजा नहीं है। ब्राह्मण जीवन है मजे की। संगमयुग है मजे का युग। बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है। तो चेक करो, अपने तकदीर की तस्वीर नॉलेज के आइने में अच्छी तरह से देखो। आइना तो है ना? या नहीं है? टूट तो नहीं गया है ना? सभी को आइना मिला है? मातायें, आइना मिला है या चोरी हो गया है? पाण्डव तो सम्भालने में होशियार हैं ना? आइना है? हाथ तो अच्छा उठाया। अच्छा है।

तकदीर की तस्वीर देखो और सदा अपने तकदीर की तस्वीर देख वाह-वाह का गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा परिवार! परिवार भी वाह-वाह है! ऐसे नहीं यह तो बहुत वाह-वाह है, यह थोड़ा ऐसा है! नहीं। वाह मेरा परिवार! वाह मेरा भाग्य! और वाह मेरा बाबा! ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह! हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह! यह भी बोझ उतरता है।

18.1.2000... .. ब्रह्मा की तपस्या का फल आप बच्चों को मिल रहा है। तपस्या का प्रभाव इस मधुबन भूमि में समाया हुआ है। साथ में बच्चे भी हैं, बच्चों की भी तपस्या है लेकिन निमित्त तो ब्रह्मा बाप कहेंगे। **जो भी मधुबन तपस्वी भूमि में आते हैं तो ब्राह्मण बच्चे भी अनुभव करते हैं कि यहाँ का वायुमण्डल, यहाँ के वायुब्रेशन सहजयोगी बना देते हैं।** योग लगाने की मेहनत नहीं, सहज लग जाता है और कैसी भी आत्मायें आती हैं, वह कुछ न कुछ अनुभव करके ही जाती हैं। ज्ञान को नहीं भी समझते लेकिन अलौकिक प्यार और शान्ति का अनुभव करके ही जाते हैं। कुछ न कुछ परिवर्तन करने का संकल्प करके ही जाते हैं। यह है ब्रह्मा और ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव।

20.2.2001... .. अभी भिन्न-भिन्न स्थानों पर सहयोगी आत्मायें अच्छी निमित्त बनी हैं। सहयोगी तो बहुत अच्छे हैं, **एक कदम सहयोग का है, एक पाँव तो बढ़ाया है लेकिन दूसरा पाँव है - सहजयोगी, कर्मयोगी।** कर्मयोगी या सहजयोगी भी कुछ कुछ बन गये हैं, यह भी स्टेज दूसरी है। अभी ऐसी आत्मायें प्रैक्टिकल स्वरूप से स्टेज पर पार्ट बजायें। माइक स्टेज पर होता है ना! तो माइक बन सेवा की स्टेज पर प्रत्यक्ष स्वरूप में भी आयेंगे जरूर। आप माइट हो, वह माइक। जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूप में माइट है, और आप बच्चों को माइक बनाया, ऐसे आप माइट बनो और ऐसे माइक तैयार करो।

25.9.2000(अव्यक्त सन्देश)... .. बाबा ने कहा कि बच्ची, यह सभी जो “सहयोगी आत्मायें” आयी हैं, इन्हों को कहना कि आपके मीठे ते मीठे, प्यारे ते प्यारे पिता परमात्मा ने कहा है कि सहयोगी तो आप हो, यह सहयोग का एक कदम बढ़ाके आप यहाँ पहुँचे हो लेकिन अगर आगे बढ़ना है तो एक कदम से तो आगे नहीं बढ़ सकते हैं, दूसरा कदम मिलाना पड़ता है तब आगे बढ़ते हैं। तो **पहला कदम है - सहयोगी बनना और दूसरा कदम है - सहजयोगी बनना।** तो बाबा ने कहा कि बच्चों को कहना कि कदम आगे बढ़ाना माना आगे बढ़ना।

15.12.2001... .. रूहानी कर्म सहज स्वयं को भी कर्मयोगी स्थिति का अनुभव कराते हैं और दूसरों को भी कर्मयोगी बनाने के सैम्पुल बन जाते हैं। **जो भी उनके सम्पर्क में आते हैं वह सहजयोगी, कर्मयोगी जीवन का अनुभवी बन जाते हैं।**

3.4.2002(अव्यक्त सन्देश)... .. बापदादा को वर्तमान समय का वातावरण सुनाया। बापदादा बोले, बच्ची हर एक बच्चा वर्तमान वायुमण्डल को तो जानता ही है कि अब समय, प्रकृति अति में जानी ही है, वह जा रही है इसलिए हर बच्चे को सेवा में बाहर आना-जाना और अपने स्थान पर रहने लिए अब बहुत योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवा की विधि अपनाना आवश्यक है। मधुबन में आने-जाने या कहाँ भी आने-जाने की मना नहीं है लेकिन जिस समय निकलते हैं उस समय वायुमण्डल को देख बाप की टचिंग द्वारा कदम उठायें। बाकी सेवाकेन्द्र और सेवा को बहुत शक्तिशाली और सेफ्टी से चलाना है। **डरना नहीं है सिर्फ निरन्तर सहज योगी शक्तिशाली स्वरूप में स्थित रह कदम उठाना है।**

31.12.2002... सहज योगी का यह मतलब नहीं है कि अलबेलेपन का पुरुषार्थ हो। श्रेष्ठ भी हो और सहज भी हो। तो पाण्डव सहज योगी हैं? सहजयोगी जो हैं वह हाथ उठाओ। देखना टी.वी. में आ रहा है। मुबारक हो। तो यह वर्ष कोई के आगे कोई मुश्किलात नहीं आयेगी क्योंकि सहज योगी हो। अलबेले नहीं बनना। समय प्रमाण इस नये वर्ष में सभी को विशेष यह लक्ष्य रखना है कि जो भी खज़ाने प्राप्त हैं - समय है, संकल्प हैं, गुण हैं, ज्ञान है, शक्तियां हैं... सबसे बड़ा खज़ाना संकल्प है - श्रेष्ठ संकल्प, शुद्ध संकल्प। इन सभी खज़ानों को हर रोज़ सफल करना है। ख़ूब बांटो। दाता के बच्चे मास्टर दाता बनो। ख़ूब बांटों। क्यों? सफल करना अर्थात् सफलता को प्राप्त करना।

हर एक सारे दिन में कितने बार यह ड्रिल करते हो? यह नोट करो। यह मन की ड्रिल जितना बार करेंगे उतना ही सहज योगी, सरल योगी बनेंगे। एक तरफ मन्सा सेवा दूसरे तरफ मन्सा एक्सरसाइज़। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फ़रिश्ता। ब्रह्मा बाप आप फ़रिश्तों का आह्वान कर रहे हैं। फ़रिश्ता बनके ब्रह्मा बाप के साथ अपने घर निराकार रूप में चलना। फिर देवता बन जाना।

18.1.2003... बापदादा ने देखा हर एक बच्चे में स्नेह की शक्ति अटूट है। यह स्नेह की शक्ति हर बच्चे को सहजयोगी बना रही है। स्नेह के आधार पर सर्व आकर्षणों से उपराम हो आगे से आगे बढ़ रहे हैं।

15.11.2003... मधुबन में बापदादा तो मिलते ही हैं लेकिन और कितनी प्राप्तियां होती हैं? अगर लिस्ट निकालो तो कितनी प्राप्ति है? सबसे बड़े ते बड़ी प्राप्ति सहज योग, स्वतः योग रहता है। मेहनत नहीं करनी पड़ती। अगर कोई मधुबन के वायुमण्डल का महत्व रखे, तो मधुबन का वायुमण्डल, मधुबन की दिनचर्या सहजयोगी स्वतःयोगी बनाने वाली है। क्यों? मधुबन में बुद्धि में सिर्फ एक ही काम है, सेवाधारी गुप आता है वह अलग बात है लेकिन जो रिफ्रेश होने के लिए आते हैं तो मधुबन में क्या काम है? कोई जिम्मेवारी है क्या? खाओ, पिओ, मौज करो, पढ़ाई करो। तो मधुबन, मधुबन ही है। फिर भी देखो भक्ति में भी गायन क्या है? मधुबन में मुरली बाजे। यह नहीं है लण्डन में मुरली बाजे। कहाँ भी हो, मधुबन की महिमा का महत्व जानना अर्थात् स्वयं को महान बनाना।

2.2.2004... निमित्त भाव, यह गुणों की खान है। सिर्फ हर समय निमित्त भाव आ जाए तो और सभी गुण सहज आ सकते हैं क्योंकि निमित्त भाव में मैं पन नहीं है और मैं पन ही हलचल में लाता है। निमित्त बनने से मेरा पन भी खत्म, तेरा, तेरा हो जाता है। सहजयोगी बन जाते हैं।

2. राजयोगी

30.6.73.....राजयोग का अर्थ क्या सुनाते हो? सर्वश्रेष्ठ अर्थात् सभी योगों का राजा है और इससे राजाई प्राप्त होती है। राजाओं का राजा बनने का योग है। आप सभी **राजयोगी** हो या राजाई भविष्य में प्राप्त करनी है? अभी संगमयुग में भी राजा हो या सिर्फ भविष्य में बनने वाले हो? जो संगमयुग में राज्य पद नहीं पा सकते वह भविष्य में क्या पा सकते हैं? तो जैसे सर्वश्रेष्ठ योग कहते हो, ऐसा ही सर्वश्रेष्ठ योगी जीवन तो होना चाहिये न? क्या पहले अपनी कर्मेन्द्रियों के राजा बने हो? जो स्वयं के राजा नहीं वह विश्व के राजा कैसे बनेंगे? क्या स्थूल कर्मेन्द्रियों व आत्मा की श्रेष्ठ शक्तियाँ मन, बुद्धि, संस्कार अपने कन्ट्रोल (Control) में हैं? अर्थात् उन्हीं के ऊपर राजा बनकर राज्य करते हो? **राजयोगी अर्थात्** अभी राज्य चलाने वाले बनते हो। राज्य करने के संस्कार व शक्ति अभी से धारण करते हो। भविष्य 21 जन्म में राज्य करने की धारणा प्रैक्टिकल रूप में अभी आती है। सहज ज्ञान और राजयोग तीसरी स्टेज तक आया है? संकल्प को ऑर्डर (Order) करो स्टॉप (एूदज) तो स्टॉप कर सकते हो? बुद्धि को डाइरेक्शन (Direction) दो कि शुद्ध संकल्प व अव्यक्त स्थिति व बीज रूप स्थिति में स्थित हो जाओ तो क्या स्थित कर सकते हो? ऐसे राजा बने हो? **ऐसे राजयोगी जो हैं** उनको कहा जाता है – ‘फालो फादर।

24.6.74.....**राजयोगी** का अगर पॉवरफुल योग है, तो ही उसको **राजयोगी** कहेंगे अन्यथा उसको योगी ही कहेंगे, लेकिन राजयोगी नहीं कहेंगे। ’

5.2.77.....इसी प्रकार **सहज राजयोगी** का लक्षण क्या होगा? योगी अर्थात् योगयुक्त अर्थात् युक्तियुक्त। वह संकल्प और कर्म की समानता की सिद्धि-स्वरूप होगा।

14.6.77.....जैसे कल्प पहले की यादगार में भी रावण राज्य की विशेषता सर्व तत्त्वों को अपने वशीभूत करना गाया हुआ है – कल्प पहले माफ़िक इसी कार्य में विदेशी आत्माएं लगी हुई हैं। साथ-साथ विज्ञानी आत्माएं आप योगी आत्माओं के लिए, आपके श्रेष्ठ योग की जो प्रालब्ध स्वर्ग के राज्य भाग की प्राप्ति होनी है; उस आने वाले राज्य में सर्व सुखों के साधन **आप राजयोगी** आत्मों को प्राप्त हों, ऐसे साधन न जानते हुए भी बनाने में खूब व्यस्त हैं। अर्थात् आप होवनहार देवताओं के लिए प्रकृति के सतोप्रधान श्रेष्ठ साधनों की इन्वेंशन करने में आपकी ही सेवा में लगे हुए हैं।

13.1.78.....कर्मयोगी की या सहज **राजयोगी** की परिभाषा बड़ी गुह्य है। कर्मयोगी या सहज राजयोगी का हर संकल्प बाप के स्नेह के वायब्रेशन फैलाने वाले होंगे जैसे जड़ चित्र भी शान्ति के अल्पकाल के सुख के वायब्रेशन अब तक भी आत्माओं को देने का कार्य कर रहे हैं तो अवश्य चैतन्य रूप में संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा

विश्व में सदा सुख-शान्ति बाप के स्नेह के वायब्रेशन फैलाने का कर्त्तव्य किया है। तब जड़ चित्रों में भी शान्ति है। जब साइन्स का यंत्र गर्मी का या सर्दी का वायब्रेशन वायुमण्डल बना सकते हैं तो मास्टर सर्वशक्तिवान अपने साइलेन्स अर्थात् याद की शक्ति से अपने लग्न की स्थिति द्वारा जो वायुमण्डल या वायब्रेशन फैलाना चाहें वह सब बना सकते हैं। ऐसी प्रैक्टिकस करो।

स्वयं प्रति शान्ति का या शक्ति का अनुभव किया यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन अपने याद की शक्ति द्वारा अब विश्व में वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाओ। तब कहेंगे नम्बरवन **सहज राजयोगी**। सिर्फ स्वयं सन्तुष्ट न रह जाओ। सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना है। यह है योगी का कर्त्तव्य।

जैसे हृद की ज़िम्मेदारी निभाने में समय- शक्ति देनी पड़ती है ना। तो बाप की यह शुभ कामना भी पूरी करनी ही है। अब राजयोगी बनना है। **राजयोगी राजराजेश्वर** बनेंगे। तो पहली स्टेज है राजयोगी की। राजयोगी बनना कठिन नहीं है। घरबार छोड़ने वाला योगी बनना कठिन होता है।

28.12.78.....अब तक की रिज़ल्ट में **राजयोगी आत्माएँ** श्रेष्ठ हैं, राजयोग श्रेष्ठ है, कर्त्तव्य श्रेष्ठ है, परिवर्तन श्रेष्ठ है। यह प्रत्यक्ष हुआ है लेकिन सिखाने वाला डायरेक्ट आलमाइटी है – ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है यह अभी गुप्त है – परमात्म बाम्ब की रिज़ल्ट क्या होगी!

21.11.79.....जब द्वापर के रजोगुणी ऋषि-मुनि भी अपने तत्व योग की शक्ति से अपने आसपास शान्ति के वायब्रेशन्स फैला सकते थे यह भी आपकी रचना हैं। आप सब मास्टर रचयिता हो। वह हृद के जंगल को शान्त करते थे आप **राजयोगी** क्या बेहद के जंगल में शान्ति व शक्ति व आनन्द के वायब्रेशन्स नहीं फैला सकते हो? अब इस अभ्यास का दृढ़ संकल्प, निरन्तर का संकल्प करो। हर मास के इन्टरनेशनल योग का अभ्यास तो शुरू किया है लेकिन अब यही अभ्यास ज़्यादा बढ़ाओ।

26.12.79.....बाप-दादा आज तिलकधारी बच्चों को देख रहे हैं। हरेक के मस्तक पर **राजयोगी** अर्थात् 'स्मृति भव' का तिलक और साथ-साथ विश्व-राज्य-अधिकारी का राज-तिलक। राजयोगी तिलक और राजतिलक दोनों तिलक देख रहे हैं। आप सभी भी अपने दोनों तिलक को सदा देखते रहते हो। बाप-दादा सभी के मस्तक पर विशेष राजयोगी तिलक की विशेषता देख रहे हैं। विशेषता देखते हुए अन्तर क्या देखा? किसी **राजयोगी के मस्तक** पर तीन बिन्दियों का तिलक है। किसी के मस्तक पर दो बिन्दियों का तिलक है और किसी पर एक बिन्दी का भी तिलक है। वास्तव में नालेजफुल बाप द्वारा विशेष तीन स्मृतियों का तीन बिन्दियों के रूप में तिलक दिया हुआ है। उन तीन स्मृतियों को त्रिशूल के रूप में यादगार बनाया है।

तीनों स्मृतियों की संगमयुग पर विशेषता है। इसलिए राजयोगी-तिलक तीन स्मृतियों का अर्थात् तीन बिन्दी के रूप में हरेक के मस्तक पर चमकता है। जैसे – त्रिशूल से अगर एक भाग खत्म हो जाए तो यथार्थ शस्त्र नहीं कहा जावेगा।

16.1.80.....सारे कल्प के अन्दर सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मणों की व राजयोगी सभा देख रहे हैं। एक तरफ है आजकल के अल्प काल के राज्य की राज्य सभा व लोक सभा। दूसरी तरफ है आलमाइटी अथार्टी द्वारा बनी हुई राजयोगी सभा, लोक पसन्द सभा। दोनों ही सभायें अपना-अपना कार्य कर रही हैं। हद की लोकसभा हद के लॉ एण्ड आर्डर बनाती है और लोक पसन्द ब्राह्मण सभा अविनाशी लॉ एण्ड आर्डर का राज्य बना रहे हैं। जैसे उस लोक सभा व राज्य सभा में नेतायें अपनी-अपनी अल्प बुद्धि और अल्पकाल के भिन्न-भिन्न विचार निकालते हैं वैसे ब्राह्मणों की राज्य सभा व राजयोगी सभा विश्व-कल्याण के भिन्न-भिन्न विचार निकालती रहती है। वह है स्वार्थ अर्थ और यह है विश्वकल याण अर्थ। इसलिए ही लोक-पसन्द बनते हो। स्वार्थ है तो मन पसन्द कहेंगे और विश्व कल्याणार्थ विचार हैं तो लोक-पसन्द व प्रभुपसन्द हो जाते।

17.3.81.....सागर को उठाना मुश्किल है, गागर उठाना मुश्किल नहीं। आपको तो सागर को गागर में समा करके सिर्फ गागर दी है, बस। दो शब्दों में ज्ञान और योग आ जाता है – “आप और बाप”। तो याद भी आगया और ज्ञान भी आ गया, तो दो शब्दों को धारण करना कितना सहज है। इसीलिए टाइटिल ही है – सहज राजयोगी।

19.10.81.....जो सदा के राजयोगी हैं वही सदा के राजे हैं। अधिकार तो अविनाशी और सदाकाल का है। जितना समय बाप ने गैरन्टी दी है, आधाकल्प उसमें सदाकाल राज्य पद की प्राप्ति कर सकते हो। लेकिन राजयोगी नहीं तो राज्य भी नहीं। जब चांस सदा का है तो थोड़े समय का क्यों लेते।

16.1.84.....स्वराज्य आप सभी का अनेक बार का बर्थ राइट है। अब का नहीं। लेकिन बहुत-बहुत पुराना अनेक बार प्राप्त किया हुआ अधिकार याद है। याद है ना! अनेक बार स्वराज्य द्वारा विश्व का राज्य प्राप्त किया है। डबल राज्य अधिकारी हो। स्वराज्य और विश्व का राज्य। स्वराज्य सदा के लिए राजयोगी सो राज्य अधिकारी बना देता है। स्वराज्य त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के नालेजफुल अर्थात् त्रिलोकीनाथ बना देता है। स्वराज्य सारे विश्व में कोटों में कोई, कोई में भी कोई विशेष आत्मा बना देता है। स्वराज्य बाप के गले का हार बना देता है। भक्तों के सिमरण की माला बना देता है। स्वराज्य बाप के तख्तनशीन बना देता है। स्वराज्य सर्व प्राप्तियों के खजाने का मालिक बना देता है। अटल, अचल, अखण्ड सर्व अधिकार प्राप्त करा देता है। ऐसे स्वराज्य अधिकारी श्रेष्ठ आत्मायें हो ना!

26.2.84.....अभी चाइना में सेनटर खोलने का संकल्प करना चाहिए। सारे चाइना में अभी कोई केन्द्र नहीं है। उनहों को कनेक्शन में लाते हुए अनुभव कराओ। हिम्मत में आकर संकल्प करो तो हो जायेगा। राजयोग से प्रभु प्रेम, शान्ति, शक्ति का अनुभव कराओ, तो आत्मायें आटोमेटिकली परिवर्तन हो जायेंगी। राजयोगी बनाओ, डीटी नहीं बनाओ, राजयोगी डीटी आपेही बन जायेंगे।

8.4.84.....राजयोगी अर्थात् स्व के राजे। राजयोगी दरबार अर्थात् स्वराज्य दरबार। आप सभी भी राजनेता बन गये ना। वह हैं देश के राजनेता और आप हो स्वराज्य-नेता। नेता अर्थात् नीति प्रमाण चलने वाले। तो आप धर्मनीति, स्वराज्य नीति प्रमाण चलने वाले स्वराज्य नेता हो। यथार्थ श्रेष्ठ नीति अर्थात् श्रीमत। 'श्रीमत' ही यथार्थ नीति है। इस नीति पर चलने वाले सफल नेता हैं।

11.5.84.....आप श्रेष्ठ आत्माओं का इस समय का सहजयोगी-राजयोगी जीवन का हर कदम, हर कर्म नये विश्व का विधान बन जाता है। ब्राह्मणों की विधि सदा के लिए विधान बन जाती है। इसलिए दाता के बच्चे दाता, विधाता और विधि-विधाता बन जाते हैं।

12.12.84.....जैसे स्थूल वृक्ष जब पूरा विस्तार को प्राप्त कर लेता, जड़जड़ीभूत अवस्था तक पहुँच जाता है तो फलदायक नहीं बन सकता है। लेकिन छाया देने वाला बन जाता है। ऐसे भक्ति का वृक्ष भी दिल खुश करने की छाया ज़रूर दे रहा है। गुरु कर लिया, मुक्ति मिल जायेगी। तीर्थयात्रा दान-पुण्य किया, प्राप्ति हो जायेगी। यह दिल खुश करने के दिलासे की छाया अभी रह गई है। "अभी नहीं तो कभी मिल जायेगा!" इसी छाया में बिचारे भोले भक्त आराम कर रहे हैं लेकिन फल नहीं है। इसलिए सबके आत्म-निर्वाह के खाते खाली हैं। तो ऐसे समय पर आप भरपूर आत्माओं का फर्ज है अपने जमा किये हुए हिस्से से ऐसी आत्माओं को हिम्मत हुल्लास दिलाना। जमा है या अपने प्रति ही कमाया और खाया! कमाया और खाया उसको राजयोगी नहीं कहेंगे। स्वराज्य अधिकारी नहीं कहेंगे। राजा के भण्डारे सदा भरपूर रहते हैं। प्रजा के पालना की ज़िम्मेवारी राजा पर होती है। स्वराज्य अधिकारी अर्थात् सर्व खज़ाने भरपूर। अगर खज़ाने भरपूर नहीं तो अब भी प्रजा- योगी हैं। राजयोगी नहीं। प्रजा कमाती और खाती है। साहूकार प्रजा थोड़ा बहुत जमा रखती है। लेकिन राजा खज़ानों का मालिक है। तो राजयोगी अर्थात् स्वराज्य अधिकारी आत्मायें। किसी भी खज़ाने में जमा का खाता खाली नहीं हो सकता।

1.1.86.....हर कर्म फलदायक हो। चाहे स्व के प्रति, चाहे दूसरों के प्रति। तो आपस में भी हर रूप में रूहानी प्रभावशाली बनो। सेवा में भी रूहानी प्रभावशाली बनो। मेहनत अच्छी करते हो। दिल से करते हो। यह तो सब कहते हैं लेकिन यह राजयोगी फ़रिश्ते हैं, रूहानियत है तो यहाँ ही है, परमात्म कार्य यही है, ऐसा बाप को प्रत्यक्ष करने का प्रभाव हो। जीवन अच्छी है, कार्य अच्छा है यह भी कहते हैं लेकिन परमात्म कार्य है, परमात्म बच्चे हैं,

यही सम्पन्न जीवन सम्पूर्ण जीवन है। यह प्रभाव हो। सेवा में और प्रभावशाली होना है, अभी यह लहर फैलाओ जो कहें कि हम भी अच्छा बनें।

स्वयं को राजयोगी श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? राजयोगी अर्थात् राज्य अधिकारी तो राजा बने हो? या कभी राजा का राज्य, कभी प्रजा का? राजयोगी माना सदा राजा बन राज्य चलाने वाले। कभी भी अधीन बनने वाले नहीं। राजयोगी कभी प्रजायोगी नहीं बन सकते। योगी का अर्थ ही है – निरन्तर याद में रहने वाले। तो योगी भी हो और राजा भी हो। योगी जीवन का अर्थ है याद कभी भूल नहीं सकती। योग लगाने वाले योगी नहीं। योगी जीवन वाले योगी हो। लगाने वाले का कब लगेगा कब नहीं लेकिन 'जीवन' सदा रहती है। खाते-पीते, चलते जीवन होती है। या सिर्फ जब बैठते हो तब जीवन है चलते हो तब जीवन है? हर कार्य करते जीवन है। तो यही स्मृति रहे कि हम 'योगी-जीवन' वाले हैं। अभी के भी राजे हैं और जन्म-जन्म के भी राजे हैं। अभी राजे नहीं तो भविष्य में भी नहीं।

11.4.86.....सदा अपने को राजयोगी श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? राजयोगी अर्थात् सर्व-कर्म-इन्द्रियों के राजा। राजा बन कर्म-इन्द्रियों को चलाने वाले, न कि कर्म-इन्द्रियों के वश चलने वाले। जो कर्म-इन्द्रियों के वश चलने वाले हैं उनको प्रजायोगी कहेंगे, राजयोगी नहीं। जब ज्ञान मिल गया कि यह कर्म-इन्द्रियाँ मेरे कर्मचारी हैं, मैं मालिक हूँ, तो मालिक कभी सेवाधारियों के वश नहीं हो सकता। कितना भी कोई प्रयत्न करे लेकिन राजयोगी आत्मायें सदा श्रेष्ठ रहेंगी। सदा राज्य करने के संस्कार अभी राजयोगी जीवन में भरने हैं। कुछ भी हो जाए – यह टाइटिल अपना सदा याद रखना कि – 'मैं राजयोगी हूँ'। सर्वशक्तिवान का बल है, भरोसा है तो सफलता अधिकार रूप में मिल जाता है। अधिकार सहज प्राप्त होता है, मुश्किल नहीं होता। सर्व शक्तियों के आधार से हर कार्य सफल हुआ ही पड़ा है। सदा फ़खुर रहे कि मैं दिलतख़्तनशीन आत्मा हूँ। यह फ़खुर अनेक फ़िकरों से पार कर देता है। फ़खुर नहीं तो फ़िकर ही फ़िकर है। तो सदा फ़खुर में रह वरदानी बन वरदान बाँटते चलो। स्वयं सम्पन्न बन औरों को सम्पन्न बनाना है। औरों को बनाना अर्थात् स्वर्ग के सीट का सर्टीफ़िकेट देते हो। कागज का सर्टीफ़िकेट नहीं, अधिकार का!

5.10.87.....राजयोगी, श्रेष्ठ योगी आत्मायें हो ना? साधारण जीवन से सहजयोगी, राजयोगी बन गये। ऐसी श्रेष्ठ योगी आत्मायें सदा ही अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलती हैं। हठयोगी योग द्वारा शरीर को ऊँचा उठाते हैं और उड़ने का अभ्यास करते हैं। वास्तव में आप राजयोगी ऊँची स्थिति का अनुभव करते हो। इसको ही कापी करके वो शरीर को ऊँचा उठाते हैं। लेकिन आप कहाँ भी रहते ऊँची स्थिति में रहते हो, इसलिए कहते हैं – योगी ऊँचा रहते हैं। तो मन की स्थिति का स्थान ऊँचा है। क्योंकि डबल लाइट बन गये हो। वैसे भी फ़रिश्तों के लिए कहा जाता कि फ़रिश्तों के पाँव धरती पर नहीं होते। फ़रिश्ता अर्थात् जिसका बुद्धि रूपी पाँव धरती पर न हो, देहभान में न हो। देहभान से सदा ऊँचे – ऐसे फ़रिश्ते अर्थात् राजयोगी बन गये। अभी इस पुरानी दुनिया से

कोई लगाव नहीं। सेवा करना अलग चीज़ है लेकिन लगाव न हो। योगी बनना अर्थात् बाप और मैं, तीसरा न कोई। तो सदा इसी स्मृति में रहो कि हम राजयोगी, सदा फ़रिश्ता हैं। इस स्मृति से सदा आगे बढ़ते रहेंगे। राजयोगी सदा बेहद का मालिक हैं, हद के मालिक नहीं। हद से निकल गये। बेहद का अधिकार मिल गया - इसी खुशी में रहो। जैसे बेहद का बाप है, वैसे बेहद की खुशी में रहो, नशे में रहो।

9.10.87.....वैसे लौकिक परिवार में हर एक बाप बच्चों को कहते हैं कि यह मेरा बच्चा 'राजा' बेटा है वा इच्छा रखते हैं कि मेरा हर एक बच्चा 'राजा' बने। लेकिन सभी बच्चे राजा बन ही नहीं सकते। यह कहावत परमात्म बाप की कापी की है। इस समय बापदादा के सब बच्चे राजयोगी अर्थात् स्व के राजे नम्बरवार जरूर हैं लेकिन हैं सभी राज-योगी, प्रजा योगी कोई नहीं है। तो बापदादा बेहद की राज्यसभा देख रहे थे।

25.10.87.....तपस्या करने वालों को **राजयोगी** कहते हैं। तो आप सभी राजयोगी हो। कभी किसी भी परिस्थिति से विचलित होने वाले तो नहीं? तो सदा अपने को इसी रीति से चेक करो और चेक करने के बाद चेंज करो। सिर्फ चेक करने से भी दिलशिकस्त हो जायेंगे, सोचेंगे कि हमारे में यह भी कमी है, यह भी है, पता नहीं ठीक होगा या नहीं। तो चेक भी करो और चेक के साथ चेन्ज भी करो।

29.10.87.....तो इस अलौकिक जीवन में चारों शक्तियों की प्राप्ति वरदान रूप में, वर्से के रूप में है। जहाँ चारों प्रकार की शक्तियां प्राप्त हैं, उसकी हर समय की स्थिति कैसी होगी? सदा मास्टर सर्वशक्तिवान। इसी स्थिति की सीट पर सदा स्थित हो? इसी को ही दूसरे शब्दों में स्व के राजे वा **राजयोगी** कहा जाता है। राजाओं के भण्डार सदा भरपूर रहते हैं। तो **राजयोगी** अर्थात् सदा शक्तियों के भण्डार भरपूर रहते, समझा? इसको कहा जाता है - श्रेष्ठ ब्राह्मण अलौकिक जीवन। सदा मालिक बन सर्व शक्तियों को कार्य में लगाओ। यथाशक्ति के बजाए सदा शक्तिशाली बनो। अर्जी करने वाले नहीं, सदा राज़ी रहने वाले बनो।

27.12.87.....स्वयं को स्वराज्य अधिकारी, **राजयोगी** श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? स्वराज्य मिला है वा मिलना है? स्वराज्य अधिकारी अर्थात् राजयोगी आत्मा सदा ही स्वराज्य की अधिकारी होने के कारण शक्तिशाली है। राजा अर्थात् शक्तिशाली। अगर राजा हो और निर्बल हो, तो शक्तिहीन को राजा कौन मानेगा? प्रजा उनके ऊपर और ही राज्य करेगी। तो स्वराज्य अधिकारी अर्थात् सदा शक्तिशाली आत्मा ही कर्मन्द्रियों पर अर्थात् अपने कर्मचारियों के ऊपर राज्य कर सकती है, जैसे चाहे चला सकती है। नहीं तो प्रजा, राजा को चलायेगी। प्रजा, राजा को चलाये तो प्रजा ही राजा हो गई ना। नियम प्रमाण राजा, प्रजा को चलाता है। अगर प्रजा का राज्य है तो राजा नहीं कहेंगे, प्रजा का प्रजा पर राज्य कहेंगे। किन्तु बाप आकर राजयोगी बनाता है, प्रजा का प्रजा पर राज्य नहीं सिखाता है। तो सभी राज्य अधिकारी हो ना? कभी अधीन, कभी अधिकारी - ऐसे तो नहीं?

सदा अधिकारी, एक भी कर्मेन्द्रिय धोखा न दे। इसको कहते हैं – ‘राजयोगी वा राज्य अधिकारी।’ तो सदा इस स्वमान में स्थित रहो कि हम अधिकारी हैं, अधीन होने वाले नहीं!

14.1.88.....सभी अपने को सहजयोगी, राजयोगी श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? सहजयोगी अर्थात् स्वतः योगी। योग लगाने से योग लगे नहीं, तो योगी के बजाए वियोगी बन जाएँ इसको सहजयोगी नहीं कहेंगे। सहजयोगी जीवन है। तो जीवन सदा होती है। योगी जीवन अर्थात् सदा के योगी, दो घण्टे, चार घण्टे योग लगाने वाले को योगी जीवन नहीं कहेंगे। जब है ही एक बाप दूसरा न कोई, तो एक ही याद आएगा ना? एक की याद में रहना – यही सहजयोगी जीवन है। सदा के योगी अर्थात् योगी जीवन वाले। दूसरे जो योग लगाते हैं, वह जब योग लगाते हैं तब लगता है और ब्राह्मण आत्माएं सदा ही योग में रहती हैं क्योंकि जीवन बना ली है। चलते-फिरते, खाते-पीते योगी। है ही बाप और मैं। अगर दूसरा कोई छिपा हुआ होगा तो वह याद आएगा। सदा योगी जीवन है अर्थात् निरन्तर योगी हैं।

22.1.88.....अलौकिक बाप की स्मृति समर्थी अर्थात् शक्ति दिलाती है। चाहे कोई-कोई बच्चे दिल का स्नेह नयनों के मोतियों द्वारा भी प्रगट करते हैं लेकिन दुःख के आँसू नहीं, वियोग के आँसू नहीं, यह स्नेह के मोती हैं। दिल के मिलन का स्नेह है। वियोगी नहीं लेकिन राजयोगी हैं। क्योंकि दिल का सच्चा स्नेह शक्ति दिलाता है कि जल्दी-से-जल्दी पहले मैं बाप का रिटर्न दूँ। रिटर्न देना अर्थात् समान बनना। इस विधि से ही अपने स्नेही बापदादा के साथ स्वीट होम में रिटर्न होंगे अर्थात् साथ वापस जायेंगे।

8.4.92.....सभी अपने को राजयोगी अनुभव करते हो? योगी सदा अपने आसन पर बैठते हैं तो आप सबका आसन कौन सा है? आसन किसको कहेंगे? भिन्न-भिन्न स्थितियाँ भिन्न-भिन्न आसन हैं। कभी अपने स्वमान की स्थिति में स्थित होते हो तो स्वमान की स्थिति आसन है। कभी बाप के दिलतख्तनशीन स्थिति में स्थित होते तो वह दिलतख्त स्थिति आसन बन जाती है। जैसे आसन पर सथित होते हैं, एकाग्र होकर बैठते हैं, ऐसे आप भी भिन्न-भिन्न स्थिति के आसन पर सथित होते हो। तो वेरायटी अच्छा लगता है ना। एक ही चीज कितनी भी बढ़िया हो, लेकिन वही चीज बार बार अगर यूज करते रहो तो इतनी अच्छी नहीं लगेगी, वेरायटी अच्छी लगेगी। तो बापदादा ने वेरायटी स्थितियों के वेरायटी आसन दे दिये हैं। सारे दिन में भिन्न-भिन्न स्थितियों का अनुभव करो। कभी फरिश्ते स्थिति का, तो कभी लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति का, कभी प्यार स्वरूप स्थिति अर्थात् लवलीन स्थिति के आसन पर बैठ जाओ। ओर अनुभव करते रहो। इतना अनुभवी बन जाओ, बस संकल्प किया फरिश्ता, सेकेण्ड में स्थित हो जाओ। ऐसे नहीं, मेहनत करनी पड़े। सोचते रहो मैं फरिश्ता हूँ, और बार बार नीचे आ जाओ। ऐसी प्रैक्टिस है? संकल्प किया और अनुभव हुआ। जैसे स्थूल में जहाँ चाहते हो बैठ जाते हो ना। सोचा और बैठा कि युद्ध करनी पड़ती है - बैठें या न बैठें? तो यह मन बुद्धि की बैठक भी ऐसी इज़ी होनी चाहिए। जब चाहो तब टिक जाओ। इसको कहा जाता है - राजयोगी राजा। राजा बनने का युग है। राजा क्या करता है? आर्डर करता है ना? राजयोगी जैसे मन-बुद्धि को आर्डर करे, वैसे अनुभव करें। ऐसे नहीं कि मन-बुद्धि को आर्डर करो, फरिश्ता बनो और नीचे आ जाए। तो राजा का आर्डर नहीं माना ना। तो राजा वह जिसका प्रजा आर्डर

माने। नहीं तो योग्य राजा नहीं कहा जायेगा। काम का राजा नहीं, नाम का राजा कहा जायेगा। तो आप कौन हो? सच्चे राजा हो। कर्मेन्द्रियाँ आर्डर मानती हैं? मन-बुद्धि संस्कार सब अपने आर्डर में हों। ऐसे नहीं, क्रोध काना नहीं चाहता लेकिन हो गया। बॉडी कान्सेस होना नहीं चाहता लेकिन हो जाता हूँ तो उसाके ताकत वाला राजा कहेंगे या कमजोर? तो सदैव यह चैक करो कि मैं **राजयोगी** आत्मा, राज्य अधिकारी हूँ? अधिकार चलता है? कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा नहीं देवे। आज्ञाकारी हों।

12.11.92.....संगमयुग की राजनीति अर्थात् हर एक ब्राह्मण आत्मा स्व का राज्य अधिकारी बनता है। हर एक राजयोगी है। सभी राजयोगी हो। या प्रजा-योगी हो? राजयोगी हो ना। तो राजयोगी अर्थात् राजा बनने वाले योगी। स्वराज्य अधिकारी आत्माओं की विशेष नीति है—जैसे राजा अपने सेवा के साथियों को, प्रजा को जैसा, जो आर्डर करते हैं, उस आर्डर से, उसी नीति प्रमाण साथी वा प्रजा कार्य करते हैं। ऐसे आप स्वराज्य अधिकारी आत्माएं अपनी योग की शक्ति द्वारा हर कर्मेन्द्रिय को जैसा आर्डर करती हो, वैसे हर कर्मेन्द्रिय आपके आर्डर के अन्दर चलती है। न सिर्फ यह स्थूल शरीर की सर्व कर्मेन्द्रियां लेकिन मन, बुद्धि, संस्कार भी आप राज्य-अधिकारी आत्मा के डायरेक्शन प्रमाण चलते हैं। जब चाहो, जैसे चाहो—वैसे मन अर्थात् संकल्प शक्ति को वहाँ स्थित कर सकत हो। अर्थात् मन, बुद्धि, संस्कार के भी राज्य-अधिकारी। संस्कारों के वश नहीं लेकिन संस्कार को अपने वश में कर श्रेष्ठ नीति से कार्य में लगाते हो, श्रेष्ठ संस्कार प्रमाण सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो। तो स्वराज्य की नीति है—मन, बुद्धि, संस्कार और सर्व कर्मेन्द्रियों के ऊपर स्व अर्थात् आत्मा का अधिकार।

30.11.92.....**राजयोगी** वह जो अपनी कर्मेन्द्रियों को ईश्वरीय लॉ एण्ड आर्डर पर चलाये आजकल तो कोई राजा ही नहीं है, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। इसलिए कोई किसका मानता ही नहीं है। लेकिन आप लोग तो **राज-योगी हो ना**। आपके यहाँ प्रजा का प्रजा पर राज्य नहीं है ना। राजा का राज्य है ना। तो बाप कहते हैं—“हे राजे! आपके कन्ट्रोल में आपकी प्रजा है? या कभी कन्ट्रोल से बाहर हो जाती है? रोज राज्य-दरबार लगाते हो?” रोज रात्रि को राज्य दरबार लगाओ। अपने राज्य कारोबारी कर्मेन्द्रियों से हालचाल पूछो। जैसे राजा राज्य-दरबार लगाता है ना। तो आप अपनी राज्य-दरबार लगाते हो? या भूल जाते हो, सो जाते हो? राज्य-दरबार लगाने में कितना टाइम लगता है? उन्हों के राज्य-दरबार में तो खिटखिट होती है। यहाँ तो खिटखिट की बात ही नहीं है। अपोजिशन तो नहीं है ना। एक का ही कन्ट्रोल है। कभी-कभी अपने ही कर्मचारी अपोजिशन करने लग पड़ते हैं। तो राजयोगी अर्थात् मास्टर सर्वशक्तवान राजा आत्मा, एक भी कर्मेन्द्रिय धोखा नहीं दे सकती। स्टॉप कहा तो स्टॉप। आर्डर पर चलने वाले हैं ना। क्योंकि भविष्य में लॉ और आर्डर पर चलने वाला राज्य है। तो स्थापना यहाँ से होनी है ना।

18.1.93.....**राजयोगी** वह जो अपनी कर्मेन्द्रियों को आर्डर में चलाये सभी एक सेकेण्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव कर सकते हो? या टाइम लगेगा? आप राजयोगी हो, राजयोगी का अर्थ क्या है? राजा हो ना। तो शरीर आपका क्या है? कर्मचारी है ना! तो सेकेण्ड में अशरीरी क्यों नहीं हो सकते? आर्डर करो—अभी शरीर-भान में नहीं आना है; तो नहीं मानेगा शरीर? **राजयोगी अर्थात्** मास्टर सर्वशक्तवान। मास्टर सर्वशक्तवान कर्मबन्धन को भी नहीं तोड़ सकते तो मास्टर सर्वशक्तवान कैसे कहला सकते? कहते तो यही हो ना कि हम मास्टर सर्वशक्तवान हैं। तो इसी अभ्यास को बढ़ाते चलो। राजयोगी अर्थात् राजा बन इन कर्मेन्द्रियों को अपने आर्डर में चलाने वाले। क्योंकि अगर ऐसा अभ्यास नहीं होगा तो लास्ट टाइम ‘पास विद् ऑनर’ कैसे बनेंगे! धक्के से पास होना है या ‘पास विद् ऑनर’ बनना है? जैसे शरीर में आना सहज है, सेकेण्ड भी नहीं लगता है!

क्योंकि बहुत समय का अभ्यास है। ऐसे शरीर से परे होने का भी अभ्यास चाहिए और बहुत समय का अभ्यास चाहिए। लक्ष्य श्रेष्ठ है तो लक्ष्य के प्रमाण पुरुषार्थ भी श्रेष्ठ करना है।

3.4.97.....जैसे आधाकल्प जब विश्व के मालिक बनते हो तो कई प्रकार की मेहनत से स्वतः ही छूट जाते हो। ऐसे इस समय निजी संस्कार बनाने से सहज मेहनत से छूट जायेंगे। समय प्रति समय कमान उठाने की, युद्ध करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। निरन्तर योगी, सहज योगी, कर्मयोगी, **राजयोगी** स्वतः ही बन जायेंगे। योग लगाना नहीं पड़ेगा लेकिन हर सेकण्ड, हर समय योगी जीवन स्वतः ही होगी। तो ऐसे ही चाहते हो ना?

15.12.99.....बाप कहते हैं ना चार्ट रखो तो कहते हैं चार्ट रखने की कोशिश की, उस दिन चार्ट ही खराब था इसलिए लिखा ही नहीं। है तो बहाना। अच्छा चार्ट खराब है और ही लिखने से सुधरेगा ना। बातें बनाने में तो होशियार हैं। तो समझा। डाक्टर्स को फ़र्स्ट नम्बर आना है या पीछे पीछे आना है। फ़र्स्ट आयेंगे ना। तो फ़र्स्ट आने के लिए यह अटेन्शन रखो, मार्क्स बढ़ाओ क्योंकि वहाँ सतयुग में तो डाक्टर्स बनना ही नहीं है। राजा बनना है ना। **राजयोगी हो। तो राजयोगी हो**, राजा बनना है तो अटेन्शन भी रखना पड़ेगा।

17.10.2003.....सभी राजा हो ना, प्रजा तो नहीं! राजयोगी हो या कोई-कोई प्रजायोगी भी है? है कोई प्रजा योगी, पीछे वाले **राजयोगी** हो? प्रजायोगी कोई नहीं है ना! पक्का? सोच के हाँ करना! राज अधिकारी अर्थात् सर्व सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों के अधिकारी क्योंकि स्वराज्य है ना? तो कभी-कभी राजे बनते हो या सदा राजे रहते हो? मूल है अपने मन-बुद्धि-संस्कार के भी अधिकारी हो? सदा अधिकारी हो या कभी-कभी? स्व राज्य तो सदा स्वराज्य होता है या एक दिन होता है दूसरे दिन नहीं होता है। राज्य तो सदा होता है ना? तो सदा स्वराज्य अधिकारी अर्थात् सदा मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर अधिकार। सदा है? सदा में हाँ नहीं करते? कभी मन आपको चलाता है या आप मन को चलाते? कभी मन मालिक बनता है? बनता है ना! तो सदा स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी।

15.12.2003.....अभी स्व-राज्य है, **राजयोगी** स्वराज्य अधिकारी हो और भविष्य का राज्य भाग्य तो अविनाशी है ही। इससे बड़ा पद कोई होता नहीं। शिक्षक द्वारा शिक्षा भी त्रिकालदर्शी की है और पद भी दैवी राज्य पद है। ऐसा शिक्षक का संबंध सिवाए ब्राह्मण जीवन के न किसका हुआ है, न हो सकता है। साथ में सतगुरु का सम्बन्ध, सतगुरु द्वारा श्रीमत, जिस श्रीमत का गायन आज भी भक्ति में हो रहा है। आप निश्चय से कहते हो हमारा हर कदम किसके आधार से चलता है? श्रीमत के आधार से हर कदम चलता है।

17.02.2004.....द्वार से कलियुग अन्त तक पूज्य, पूजन के अधिकारी – इन तीनों रूपों में हर बच्चे को बापदादा देखते हैं। साधारण नहीं देखते हैं। आप कैसे भी हो लेकिन बापदादा हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चा देखते हैं। राजयोगी हो ना! कोई इसमें प्रजा योगी है क्या? प्रजायोगी है? नहीं। सब **राजयोगी** हैं। तो **राजयोगी** अर्थात् राजा। ऐसे स्वराज्य अधिकारी बच्चों का बर्थ डे मनाने स्वयं बाप आये हैं। देखो, आप डबल विदेशी तो विदेश से आये हो, बर्थ डे मनाने। हाथ उठाओ डबल विदेशी। तो ज्यादा में ज्यादा दूरदेश कौन सा है? अमेरिका या उससे भी दूर है? और बापदादा कहाँ से आया है? बापदादा तो परमधाम से आये हैं। तो बच्चों से प्यार है ना! तो जन्म दिन कितना श्रेष्ठ है, जो भगवान को भी आना पड़ता है। हाँ यह (बर्थ डे का एक बैनर सभी भाषाओं का बनाया हुआ दिखा रहे हैं) अच्छा बनाया है, सभी भाषाओं में लिखा है। बापदादा सभी देश के सभी भाषाओं वाले बच्चों को बर्थ डे की मुबारक दे रहे हैं। देखो, बाप की शिव जयन्ती मनाते हैं लेकिन बाप है क्या? बिन्दी। बिन्दी की जयन्ती, अवतरण मना रहे हैं।

3. निरंतर योगी

26.11.79.....बाप की श्री मत पर चलने वाले तो जो चाहें वह कर सकते हैं। तो विघ्नों को दूर करने का बहुत समय का अभ्यास चाहिए। पुरुषार्थ तो सब कर रहे हो लेकिन पुरुषार्थ की स्पीड कौन-सी है? पुरुषार्थी हूँ, इसमें खुश नहीं होना लेकिन किस स्पीड का पुरुषार्थ है? काम हो एक सेकेण्ड का आप करो दो घंटे में, तो टाइम तो पूरा हो जायेगा ना। प्रश्नों का उत्तर ठीक दे लेकिन टाइम पर न दे तो पास होंगे या फेल? चल रहे हैं, कर रहे हैं इससे अभी काम नहीं चलेगा। इसमें भी खुश हो जाना कि रोज़ क्लास तो करते हैं, रेगुलर पन्क्चुअल हैं, सेवा भी करते हैं लेकिन जो बाप का डायरेक्शन है – निरंतर योगी, सहजयोगी – उसमें रेगुलर और पन्क्चुअल बनो। बाप के पास वह प्रेजेन्ट मार्क पड़ेगी ना। उसकी भी मार्क्स मिलती हैं लेकिन नम्बर आगे तो इसी प्रेजेन्ट मार्क से बनेंगे।

26.11.79..... बाप कहते हैं – सबको वर्से में सर्व प्राप्ति का खजाना मिला है, अधिकारी हो, नैचुरल योगी हो, नैचुरल स्वराज्यधारी हो। बाप के खजाने के बालक सो मालिक हो। तो इतनी मेहनत क्यों करते हो? मास्टर रचता और नौकर के समान मेहनत करें यह क्यों? जैसे वह 200 कमाते और 200 खाते। दो हजार कमाते और दो हजार खाते जैसे दो घण्टा योग लगाते और दो घण्टा उसका फल लेते। आज 6 घण्टा योग लगा आज 4 घण्टा योग लगा यह क्यों? वारिस कभी भी यह नहीं कहता कि दो दिन की राजाई है, 4 दिन की राजाई है। सदा बाप के बच्चे हैं और सदा खजाने के मालिक हैं। कहना बाबा और करना याद की मेहनत, दोनों बाते एक दो के विपरीत हैं। तो सदा यह सलोगन याद रखो – कि मैं एक श्रेष्ठ आत्मा बालक सो मालिक हूँ। सर्व खजाने की अधिकारी हूँ। खोया – पाया, खोया – पाया यह खेल नहीं करो। जो पाना था वह पा लिया फिर खोना और पाना क्यों! नहीं तो यह गीत को बदली करो। पा रहा हूँ, पा रहा हूँ यह अधिकारी के बोल नहीं। सम्पन्न बाप के बालक हो सागर के बच्चे हो। अब क्या करेंगे? निरंतर योगी बनो – मैं कौन हूँ? हम सो ब्राह्मण सो देवता हैं व हम सो क्षत्रिय सो देवता हैं? बाप-दादा को बच्चों की मेहनत देख तरस पड़ता है। राजा के बच्चे नौकरी करें, यह शोभता है? सब मालिक बनो।

9.3.81..... तो सदा यह सलोगन याद रखो – कि मैं एक श्रेष्ठ आत्मा बालक सो मालिक हूँ। सर्व खजाने की अधिकारी हूँ। खोया – पाया, खोया – पाया यह खेल नहीं करो। जो पाना था वह पा लिया फिर खोना और पाना क्यों! नहीं तो यह गीत को बदली करो। पा रहा हूँ, पा रहा हूँ यह अधिकारी के बोल नहीं। सम्पन्न बाप के बालक हो सागर के बच्चे हो। अब क्या करेंगे? निरंतर योगी बनो – मैं कौन हूँ? हम सो ब्राह्मण सो देवता हैं व हम सो क्षत्रिय सो देवता हैं? बाप-दादा को बच्चों की मेहनत देख तरस पड़ता है। राजा के बच्चे नौकरी करें, यह शोभता है? सब मालिक बनो।

21.2.83..... सदा इसी स्मृति में रहो कि बाप को जानने वाली, बाप को पाने वाली कोटो में कोई जो गाई हुई आत्मायें हैं, वह हम हैं। इसी खुशी में रहो तो आपके यह चेहरे चलते फिरते सेवा-केन्द्र हो जायेंगे। जैसे सर्विस सेन्टर पर आकर बाप का परिचय लेते हैं जैसे आपके हर्षित चेहरे से बाप का परिचय मिलता रहेगा। बापदादा हर

बच्चे को ऐसा ही योग्य समझते हैं। इतने सब सेवा-केन्द्र बैठे हैं। तो सदा ऐसे समझो, चलते फिरते खाते पीते हमको बाप की सेवा, अपनी चलन से व चेहरे से करनी है। तो सहज ही निरंतर योगी बन जायेंगे।

24.12.84..... सदा अपने को इस पुरानी दुनिया की आकर्षण से न्यारे और बाप के प्यारे, ऐसे अनुभव करते हो? जितना न्यारे होंगे उतना स्वतः ही प्यारे होंगे। न्यारे नहीं तो प्यारे नहीं। तो न्यारे हैं और प्यारे हैं या कहाँ न कहाँ लगाव है? जब किसी से लगाव नहीं तो बुद्धि एक बाप तरफ स्वतः जायेगी। दूसरी जगह जा नहीं सकती। सहज और निरंतर योगी की स्थिति अनुभव होगी। अभी नहीं सहजयोगी बनेंगे तो कब बनेंगे? इतनी सहज प्राप्ति है, सतयुग में भी अभी की प्राप्ति का फल है। तो अभी सहजयोगी और सदा के राज्य भाग्य के अधिकारी सहजयोगी बच्चे सदा बाप के समान समीप हैं। तो अपने को बाप के समीप साथ रहने वाले अनुभव करते हो? जो साथ हैं उनको सहारा सदा है।

16.1.85..... सदा सहयोगी, कर्मयोगी, स्वतः योगी, निरन्तर योगी – ऐसी स्थिति का अनुभव करते हो? जहाँ सहज है वहाँ निरन्तर है। सहज नहीं तो निरन्तर नहीं। तो निरन्तर योगी हो या अन्तर पड़ जाता है? योगी अर्थात् सदा याद में मगन रहने वाले। जब सर्व सम्बन्ध बाप से हो गये तो जहाँ सर्व सम्बन्ध हैं वहाँ याद स्वतः होगी और सर्व सम्बन्ध हैं तो एक की ही याद होगी। है ही एक तो सदा याद रहेगी ना।

4. प्रयोगी

15.1.83.....बापदादा आज तीन प्रकार के बच्चे देख रहे थे। एक सदासहज योगी। दूसरे हर विधि को बार-बार प्रयोग करने वाले **प्रयोगी**। तीसरे सहयोगी। वैसे हैं तीनों ही योगी लेकिन भिन्न-भिन्न स्टेज के हैं। सहजयोगी, समीप सम्बन्ध और सर्व प्राप्ति के कारण सहज योग का सदा स्वतः अनुभव करता है। सदा समर्थ स्वरूप होने के कारण इसी नशे में सदा अनुभव करता कि मैं हूँ ही बाप का।

प्रयोग करने वाले **प्रयोगी** सदा हर स्वरूप के, हर पाइंट के, हर प्राप्ति स्वरूप के प्रयोग करते हुए उस स्थिति को अनुभव करते हैं। लेकिन कभी सफलता का अनुभव करते, कभी मेहनत अनुभव करते। लेकिन प्रयोगी होने के कारण, बुद्धि अभ्यास की प्रयोगशाला में बिजी रहने के कारण 75% माया से सेफ रहते हैं। कारण? **प्रयोगी आत्मा** को शौक रहता है कि नये ते नये भिन्न-भिन्न अनुभव करके देखे। इसी शौक में लगे रहने के कारण माया से प्रयोगशाला में सेफ रहते हैं। लेकिन एकरस नहीं होते। कभी अनुभव होने के कारण बहुत उमंग उत्साह में डूबते और कभी विधि द्वारा सिद्धि की प्राप्ति कम होने के कारण उमंग उत्साह में फर्क पड़ जाता है। उमंग उत्साह कम होने के कारण मेहनत अनुभव होती है। इसलिए कभी सहजयोगी, कभी मेहनत वाले योगी। “हूँ ही” के बजाय “हूँ हूँ”। “आत्मा हूँ” बच्चा हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ” – इस स्मृति द्वारा सिद्धि को पाने का बार-बार प्रयत्न करना पड़ता है। इसलिए कभी तो इस स्टेज परस्थित होते जो सोचा और अनुभव हुआ। कभी बार-बार सोचने द्वारा स्वरूप की अनुभूति करते हैं। इसको कहा जाता है – प्रयोगी आत्मा। अधिकार का स्वरूप है सहजयोगी। बार-बार अध्ययन करने का **स्वरूप है प्रयोगी आत्मा**। तो आज देख रहे थे— सहज योगी कौन और प्रयोगी कौन है? **प्रयोगी भी कभी-कभी** सहजयोगी बन जाते हैं। लेकिन सदा नहीं। जिस समय जो पोजीशन होती है, उसी प्रमाण स्थूल चेहरे के पोज भी बदलते हैं। मन की पोजीशन को भी देखते हैं। और पोज को भी देखते हैं। सारे दिन में कितनी पोज बदलते हो। अपने भिन्न-भिन्न पोज को जानते हो? स्वयं को साक्षी होकर देखते हो? बापदादा सदा यह बेहद का खेल जब चाहे तब देखते रहते हैं।

18.12.91.....तपस्वी अर्थात् यह सब ऑनेस्टी की विशेषतायें हर कर्म में **प्रयोग** में आवे। ऐसे नहीं कि समाया हुआ तो सब हैं, जानते भी सब हैं। लेकिन नहीं, तपस्या, योग का अर्थ ही है प्रयोग में लाना। अगर इन विशेषताओं को प्रयोग में नहीं लाते तो प्रयोगी नहीं, तो योगी भी नहीं। यह सब खजाने बापदादा ने प्रयोग करने के लिए दिये हैं। और जितना प्रयोगी बनेंगे, तो प्रयोगी की निशानी है प्रगति। अगर प्रगति नहीं होती है तो **प्रयोगी** नहीं। कई आत्मायें ऐसे अपने अन्दर समझती भी हैं कि न आगे बढ़ रहे हैं, न पीछे हट रहे हैं। जैसे हैं, वैसे ही हैं। और कई ऐसे भी कहते हैं कि शुरु में बहुत अच्छे थे, बहुत नशा था अभी नशा कम हो गया है। तो प्रगति हुई या क्या हुआ? उड़ती कला हुई या ठहरती कला हुई तो **प्रयोगी बनो**। ऑनेस्टी का अर्थ ही है प्रगति करने वाला प्रयोगी। ऐसे प्रयोगी बने हो या अन्दर समाकर रखते हो-खजाना अन्दर ही रहे? ऐसे ऑनेस्ट हो?

15.12.1999.....बापदादा फिर से अण्डरलाइन करा रहा है कि अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा - यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा करायेगी। इसीलिए संकल्प शक्ति के ऊपर और अटेन्शन दो। बचाओ, जमा करो। बहुत काम में आयेगी। प्रयोगी इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे। साइंस का महत्त्व क्यों है? प्रयोग में आती है तब सब समझते हैं हाँ साइंस अच्छा काम करती है। तो साइलेन्स की पावर का प्रयोग करने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता का मूल आधार है - मन की कण्ट्रोलिंग पावर, जिससे मनोबल बढ़ता है।

5. ज्ञानयोगी

24.6.74... ..जो ज्ञान में सदा नहीं रहता तो उसको ज्ञानयोगी नहीं कहेंगे।

1.4.92... .. सिर्फ भावुक नहीं बनो, ज्ञानी भी बनो। प्रकृति के भी ज्ञानी बनो। ज्ञान सिर्फ आत्मा का नहीं। आत्मा, परम आत्मा और प्रकृति। उसमें डामा भी आ जाता है। तीनों का ज्ञान चाहिए। कहाँ जा रहे हैं और अपने लिए क्या अटेन्शन चाहिए, यह प्रकृति का भी अगर नॉलेज नहीं है तो नॉलेजफुल नहीं है। स्थान का, व्यक्ति का, स्थिति तीनों का ज्ञान रखो। सिर्फ भावुक नहीं बनो, जाना ही है, लाना ही है..। ज्ञान स्वरूप माना दूरादेशी, त्रिकालदर्शी, तीनों का ज्ञान अगर स्पष्ट है तो सफलता मिलती है। अगर कोई अपनी गलती से बार-बार बीमार होता है तो बापदादा उसको ज्ञान योगी नहीं कहते। ज्ञान का अर्थ है समझ।

अपनी स्थिति को भी समझो, अपने शरीर को भी समझो। आत्मा की स्थिति, शरीर की स्थिति, वायुमण्डल का सब ज्ञान बुद्धि में है तो नॉलेजफुल हैं। इसीलिए सिर्फ भावना पर राज़ी नहीं हो जाओ।

6. बुद्धि योग

2.2.69....अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रूहान करो। तो अनु-भव करेंगे कि सचमुच बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं। और इसी रूह-रूहान में जैसे सन्देश-शियों को कई दृश्य दिखाते हैं वैसे ही बहुत गुह्य, गोपनीय रहस्य बुद्धियोग से अनुभव करेंगे।

13.3.69....जैसे शुरू में तुम अलग-अलग जाकर बैठते थे, सागर के किनारे, कोई कहाँ, कोई कहाँ जाकर बैठते थे। ऐसी प्रैक्टिस कराओ। छतें तो यहाँ बहुत बड़ी-बड़ी हैं। फिर शाम के समय भी 7 से 7.30 तक यह समय विशेष अच्छा होता है। जैसे अमृतवेले का सतोगुणी टाइम होता है वैसे यह शाम का टाइम भी सतोगुणी है। सैर पर भी इसी टाइम निकलते हैं। उसी समय संगठन में योग कराओ और बीच-बीच में अव्यक्ति रूप से बोलते रहो, कोई का बुद्धियोग यहाँ वहाँ होगा तो फिर अटेंशन खेंचेगा। योग की सबजेक्ट में बहुत कमी है। जैसे बापदादा सैर करने आते हैं वैसे बुद्धियोग बल से तुम सैर कर सकती हो

25.10.69..एकता के साथ-साथ अब दूसरा शब्द भी एड करना है। एकता के साथ एकांतप्रिय बनना है। जैसे एकता में नम्बरवन हैं वैसे एकान्त में भी नम्बर वन आना है। यह धारण कर लो तो यह ग्रुप बहुतों से आगे जा सकता है। एकता के साथ एकान्तवासी कैसे बनें यह भी अपने में भरना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिनका अनेक तरफ से बुद्धि योग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा। एक प्रिय होने कारण एक ही की याद में रह सकता। अनेक के प्रिय होने के कारण एक ही याद में रह नहीं सकता, अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ हो। एक तरफ जुटा हुआ हो अर्थात् एक के सिवाय दूसरा न कोई – ऐसी स्थिति वाला जो होगा वह एकान्त प्रिय हो सकता है। नहीं तो एकान्त में बैठने का प्रयत्न करते हुए भी अनेक तरफ बुद्धि भटकेगी। एकान्त का आनंद अनुभव कर नहीं सकेंगे। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएं एक से लेने वाला ही एकान्त-प्रिय हो सकता है।

8.7.73..मेले से बाहर निकल जाते हो तो परेशान हो जाते हो और जब हाथ छोड़ देते हैं तो भी परेशान हो। ऐसे ही तुम यहाँ भी बाप का हाथ छोड़ देते हो। 'हाथ छोड़ देना' क्या इसका अर्थ समझते हो? बाप का स्थूल हाथ तो है नहीं। 'श्रीमत' है हाथ और 'बुद्धि-योग' है साथ। तो मेले में जब हाथ और साथ दोनों ही छोड़ देते हो अर्थात् बाप से किनारा कर देते हो तब भी परेशान होते हो। हाथ और साथ अगर न छोड़ो तो सदा खुशी में रहेंगे इसलिए अब सदैव मेला और खेला समझकर ही अपने पार्ट और दूसरे के पार्ट को देखो।

21.7.73..जैसे तराजू की सही परख तब होती है जब काँटा एकाग्र हो जाता है, हलचल बन्द हो जाती है और दोनों तरफ समान हो जाती है। ऐसे ही जिसका बुद्धि-योग रूपी काँटा एकाग्र है, जिसकी बुद्धि में कोई हलचल नहीं और निर्विकल्प स्टेज व स्थिति है और जिसके बोल और कर्म में, लव और लॉ में, और स्नेह और शक्ति में

अर्थात् इन दोनों का बैलेन्स है, तो ऐसा जस्टिस यथार्थ जज़मेन्ट दे सकता है। ऐसी आत्मा सहज ही किसी को परख सकती है। क्या ऐसी परखने की शक्ति व जज़मेन्ट करने की शक्ति अपने में अनुभव करते हो?

24.6.74..जैसे योग की महिमा करते हैं कि वह सहजयोग, निरन्तर योग, कर्म योग, व ज्ञान योग और बुद्धियोग है। फिर उसकी भी उपमा करते हैं न? जैसे कि डाक्टर्स में और मिलिट्री में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के ग्रेड्स होते हैं। उसी रीति यहाँ भी योगियों में कर्मयोगी और बुद्धियोगी हैं। यहाँ भी कोई तो सभी लक्षणधारी हैं और कोई एक या दो, लेकिन सब नहीं। जैसे कि किसी का बुद्धि का योग है लेकिन उसका कर्मयोग नहीं है या फिर किसी का कर्मयोग है तो वह सहजयोगी नहीं। या जो ज्ञान में सदा नहीं रहता तो उसको ज्ञानयोगी नहीं कहेंगे। यहाँ भी एक ही टाइटल मिलेगा तो आप जो योग की महिमा औरों को सुनाते हो, तो वह स्वयं में धारण करो।

4.2.75..जैसे शारीरिक रोग व कर्ज बुद्धि को एकाग्रचित नहीं करने देता, न चाहते हुए भी अपनी तरफ बार-बार खींच लेता है, ऐसे ही यह मानसिक कर्ज का मर्ज बुद्धि-योग को एकाग्र नहीं करने देता। बल्कि विघ्न रूप बन जाता है।

14.9.75..जैसे इस समय साक्षात्कार में जाने वाले साक्षात्कार के आधार पर अनुभव करते हैं कि मैं आत्मा इस आकाश तत्व से भी पार उड़ती हुई जा रही हूँ, ऐसे ही ज्ञानी एवं योगी आत्मायें ऐसा अनुभव करेंगी। उस समय ट्रान्स की मदद नहीं मिलेगी। ज्ञान और योग का आधार चाहिए। इसके लिये अब से अकाल-तख्त-नशीन होने का अभ्यास चाहिए। जब चाहे अशरीरीपन का अनुभव कर सकें, बुद्धियोग द्वारा जब चाहे तब शरीर के आधार में आयें। “अशरीरी भव!” का वरदान अपने कार्य में अब से लगाओ।

1.10.75..हर श्वास, हर संकल्प में सदा बाप के सर्व-सम्बन्धों में बुद्धि मग्न रहनी चाहिए। कई बच्चों की कम्प्लेन्ट (ण्डर्स्टैंड) है कि व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं, बुद्धि बाप की तरफ लगती नहीं है। न चाहते हुए भी कहीं-न-कहीं बुद्धि का लगाव चला जाता है वा स्थूल प्रवृत्ति की जिम्मेवारी बुद्धियोग को एकाग्र बनने नहीं देती। पुरानी दुनिया का सम्पर्क व वातावरण वृत्ति को चंचल बना देता है। जितना तीव्र पुरुषार्थ करना चाहते हैं उतना कर नहीं पाते हैं, हाई-जम्प दे नहीं पाते। सारे दिन में इसी प्रकार की कम्प्लेन्ट्स बाप-दादा के पास बहुत आती हैं।

11.10.75.....जैसे अब साकार रूप में जैसे यमुना किनारे निवास करते हो, वैसे बुद्धियोग द्वारा स्वयं को इस देह और देह की पुरानी दुनिया की स्मृति से किनारा किया हुआ अनुभव करो। संगमयुगी अर्थात् कलियुगी दुनिया से किनारा कर देना। किनारा अर्थात् न्यारा हो जाना। पुरानी दुनिया से न्यारे हो गये हो कि अब भी उसके प्यारे हो?

13.10.75....जो यहाँ अपने जीवन में, जीवन के आदि से अन्त तक बाप के साथ रहे हैं अर्थात् बुद्धियोग से साथ रहे हैं – साकार रूप में साथ रहना यह तो लक्क है। लेकिन साकार के साथ होते हुए भी बुद्धि का साथ यदि

सदा रहा है, जीवन के आदि से अन्त तक साथ रहे हैं, वही वहाँ भी हर जीवन के आयु के भिन्नभिन्न पार्ट में, बचपन में भी साथ रहेगे, पढ़ाई में भी साथ रहेगे, खेलने में भी और फिर राज्य करने में भी साथ रहेगे। तो यहाँ सदा साथ रहने वाले वहाँ भी सदा साथ रहेगे।

जो यहाँ संगमयुग में बुद्धियोग से बाप के सदा साथ रहते हैं वही सारे कल्प में, जीवन के भिन्न-भिन्न पार्ट में भी साथ रहेगे।

यथार्थ बुद्धि-योग का अभ्यास अभी तुम सीख रहे हो। वह हठ कर्मयोगी वह जो सदा बुद्धि पर अटेन्शन का पहरा देता है।से करते, आप अधिकार से करते हो। इसलिये वह मुश्किल है, यह सहज है। अभी उसके अभ्यास को बढ़ाते जाओ। एक सेकेण्ड में सब एक मत हो जायें। जब संगठन का एक संकल्प, एक स्मृति होगी, और सबका एक स्वरूप होगा तब इस संगठन की जय-जयकार का नाम बाला होगा।

10.6.77.. वर्तमान समय प्रमाण मुख्य कारण क्या देखे? एक तो जो पहले-पहले महामंत्र – ‘मन्मनाभव’ का वा ‘हम सो देवता’ का बाप-दादा द्वारा मिला, उस मंत्र को सदा स्मृति में नहीं रखते हो। भक्ति मार्ग में भी मंत्र को कभी नहीं भूलते। मंत्र भूलना अर्थात् गुरु से किनारे होना, यह डर रहता है। लेकिन बच्चे बनने के बाद क्या कर लिया? भक्तों माफ़िक डर तो निकल गया और ही पुरुषार्थ में अधिकारी समझने का एडवांटेज ले बाप के दिए हुए मंत्र को वा ‘श्रीमत’ को पूर्ण रीति से प्रैक्टिकल में नहीं लाते। एक तो मंत्र को भूल जाते, दूसरा मायाजीत बनने के जो अनेक प्रकार के मंत्र देते हैं उन मंत्रों को समय पर कार्य में नहीं लाते। अगर ये दोनों बातें – ‘मंत्र और यंत्र’ प्रैक्टिकल जीवन के लिए यंत्र और बुद्धियोग लगाने के लिए वा बुद्धि को एकाग्र करने के लिए मंत्र को स्मृति में रखो तो ‘अन्तर’ समाप्त हो जाएगा।

16.2.78.. सर्विसएबल हो ना। सर्विसएबल अर्थात् हर संकल्प, बोल और कर्म सर्विस में साथ-साथ लगा हुआ हो। त्रिमूर्ती बाप के बच्चे हो ना तो तीनों ही सर्विस साथसाथ होनी चाहिए। एक ही समय तीनों सर्विस हो तो प्रत्यक्ष फल निकल सकता है। तो तीनों सर्विस साथ-साथ चलती है ? मन्सा द्वारा आत्माओं को बाप से बुद्धियोग लगाने की सेवा, वाणी द्वारा बाप का परिचय देने की सेवा और कर्म द्वारा दिव्यगुण मूर्त बनाने की सेवा।

18.1.79.. हरेक बच्चा ब्रह्मा बाप के लव में लवलीन थे। चारों ओर दिल के दिलरुबा की आवाज बापदादा के पास पहुँच रही थी – हरेक के मन से बाप की महिमा के सुन्दर आलाप साजों के समान वतन में गूँज रहे थे। हरेक के आशाओं के दीपक जगे हुए, वतन को जगमगा रहे थे। बापदादा बच्चों के स्नेह को देख मुस्करा रहे थे। विदेशी वा देशवासी बच्चे अपने बुद्धियोग द्वारा वतन में भी पहुँचे हुए थे।

1.2.79.. आज बापदादा ने विशेष कारण देखे। मूल कारण है जो चाहते नहीं हो लेकिन परवश हो जाते। किसके वश हो जाते हो – उसको भी अच्छी तरह से जानते हो। जानते हुए बचने का प्रयत्न करते हुए भी फिर चक्कर में

आ जाते हो – क्योंकि माया भी जानी जाननहार रूप में आती है – वह भी जानती है कि इन ब्राह्मण आत्माओं का मुख्य आधार बुद्धि योग है – दिव्यबुद्धि द्वारा ही बाप से मिलन मना सकते तो माया भी पहले-पहले बुद्धि में वार करती है।

19.10.81.. ब्रह्मा बाप वा चन्द्रमा आज चारों ओर विश्व के कोने-कोने में चम-कते हुए अपने सितारों को देख-देख खुशी में विशेष झूम रहे थे। ज्ञान सूर्य बाप को हर सितारे की आवश्यकता और विशेषता सुनाते हुए इतना हर्षित हो रहे थे कि बात मत पूछो। उस समय का चित्र बुद्धियोग की कैमरा से खींच सकते हो।

18.11.81.. जिसकी निशानी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा-सदा अपने सम्पूर्ण स्टेज और भविष्य प्रालब्ध अर्थात् फ़रिश्ता स्वरूप और देवपद स्वरूप दोनों ही सदा ऐसे स्पष्ट स्मृति में रहते थे जो सामने जाने वाले भी पुरुषार्थी स्वरूप होते हुए भी फ़रिश्ता रूप और भविष्य श्रीकृष्ण का रूप देखते और वर्णन करते थे। ऐसे बच्चों में भी सम्पूर्णता के समीप आने की निशानी स्वयं भी समीपता का अनुभव करेंगे और औरों को भी अनुभव होगा। व्यक्त में होते अव्यक्त रूप की अनुभूति करेंगे। जिससे सामने आने वाली आत्मायें व्यक्त भाव को भूल अव्यक्त स्थिति का अनुभव करेंगी। यह है समीपता की निशानी। और कई बच्चों को अभी सम्पूर्णता स्पष्ट और समीप नहीं अनुभव होती, उनकी निशानी क्या होगी? जो स्पष्ट चीज़ होती है और समीप चीज़ होती है उसको अनुभव करना सहज होता है। और दूर की चीज़ को अनुभव करना, उसमें विशेष बुद्धि लगानी पड़ती है। ऐसे ही ऐसी आत्माएं भी नालेज के आधार से बुद्धियोग द्वारा सम्पूर्ण स्टेज को खींचकर मेहनत से उसमें स्थित रह सकती हैं।

27.3.82.. जैसे भक्तों को वा आत्मज्ञानियों का व कोई- कोई परमात्म-ज्ञानियों को दिव्य दृष्टि द्वारा ज्योति बिन्दु आत्मा का साक्षात्कार होता है, तो साक्षात्कार अल्पकाल की चीज़ है, साक्षात्कार कोई अपने अभ्यास का फल नहीं है। यह तो ड्रामा में पार्ट वा वरदान है। लेकिन एवररेडी अर्थात् साथ चलने के लिए समान बनी हुई आत्मा साक्षात्कार द्वारा आत्मा को नहीं देखेंगी लेकिन बुद्धियोग द्वारा सदा स्वयं को साक्षात् 'ज्योति बिन्दु आत्मा' अनुभव करेगी।

ऐसी समान आत्मा अर्थात् एवररेडी आत्मा – साकारी दुनिया और साकारी शरीर में होते हुए भी बुद्धियोग की शक्ति द्वारा सदा ऐसा अनुभव करेगी कि मैं आत्मा चाहे सूक्ष्मवतन में, चाहे मूलवतन में, वहाँ ही बाप के साथ रहती हूँ। सेकण्ड में सूक्ष्मवतन वासी, सेकण्ड में मूलवतनवासी, सेकण्ड में साकार वतन वासी हो कर्मयोगी बन कर्म का पार्ट बजाने वाली हूँ लेकिन अनेक बार अपने को बाप के साथ सूक्ष्मवतन और मूलवतन में रहने का अनुभव करेंगे।

8.4.82.. बाप की मुख्य विशेषता ही है – 'जितना प्यारा उतना न्यारा'। ऐसे बाप समान सेवा में प्यारे और बुद्धियोग से सदा एक बाप के प्यारे सर्व से न्यारे। इसको कहा जाता है – 'बाप समान सेवाधारी'। तो शिक्षक बनना अर्थात् बाप की विशेष इस विशेषता को फालो करना। सेवा में तो सभी बहुत अच्छी मेहनत करते हो लेकिन कहाँ न्यारा बनना है और कहाँ प्यारा बनना है – इसके ऊपर विशेष अटेंशन।

26.4.82.. “आज ज्ञान गंगाओं और ज्ञान सागर का मिलन मेला है। जिस मेले में सभी बच्चे बाप से रूहानी मिलन का अनुभव करते। बाप भी रूहानी बच्चों को देख हर्षित होते हैं और बच्चे भी रूहानी बाप से मिल हर्षित होते हैं। क्योंकि कल्पकल्प की पहचानी हुई रूहानी रूह जब अपने बुद्धियोग द्वारा जानती हैं कि हम भी वो ही कल्प पहले वाली आत्माएं हैं और उसी बाप को फिर से पा लिया है तो उसी आनन्द, सुख के, प्रेम के, खुशी के झूले में झूलने का अनुभव करती हैं। ऐसा अनुभव कल्प पहले वाले बच्चे फिर से कर रहे हैं। वो ही पुरानी पहचान फिर से स्मृति में आ गई। ऐसे स्मृति स्वरूप स्नेही आत्मायें इस स्नेह के सागर में समाई हुई लवलीन आत्मायें ही इस विशेष अनुभव को जान सकती हैं।

21.4.83.. मैं बाप का, बाप मेरा यही ज्ञान है ना! यही एक बात याद रखनी है। सदा मन में यही गीत चलता रहे – जो पाना था वह पा लिया। मुख का गीत तो एक घण्टा भी गायेंगे तो थक जायेंगे; लेकिन यह गीत गाने में थकावट नहीं होती। बाप का बनने से सब कुछ बन जाते हो, डांस करने वाले भी, गीत गाने वाले भी, चित्रकार भी, प्रैक्टिकल अपना फ़रिश्ते का चित्र बना रहे हो! बुद्धियोग द्वारा कितना अच्छा चित्र बना लेते हो।

3.5.84.. संगमयुग, ब्राह्मण जीवन दिलाराम की दिल पर आराम करने का समय है। दिल पर आराम से रहो। ब्रह्मा भोजन खाओ। ज्ञान-अमृत पियो। शक्तिशाली सेवा करो और आराम मौज से दिलतख्त पर रहो। हैरान क्यों होते हो। हे राम नहीं कहते। हे बाबा या हे दादी-दीदी तो कहते हो ना! हे बाबा, हे दादी-दीदी कुछ सुना। कुछ करो। यह हैरान होना है। आराम से रहने का युग है। रूहानी मौज करो। रूहानी मौजों में यह सुहावने दिन बिताओ। विनाशी मौज नहीं करना। गाओ, नाचो, मुरझाओं नहीं। परमात्म मौजों का समय अब नहीं मनाया तो कब मनायेंगे! रूहानी शान में बैठो। परेशान क्यों होते हो? बाप को आश्चर्य लगता है – छोटी-सी चींटी से परेशान हो जाते हो। क्योंकि शान से परे हो जाते तो चींटी बुद्धि तक चली जाती है। बुद्धियोग विचलित कर देती है।

21.1.87.. जैसे आजकल के ज़माने में राजा के साथ महामन्त्री वा विशेष मन्त्री होते हैं, उन्हीं के सहयोग से राज्य कारोबार चलती है। सतयुग में मन्त्री नहीं होंगे लेकिन समीप के सम्बन्धी, साथी होंगे। किसी भी रूप में, साथी समझो वा मन्त्री समझो। लेकिन यह चेक करो – यह तीनों स्व के अधिकार से चलते हैं? इन तीनों पर स्व का राज्य है वा इन्हीं के अधिकार से आप चलते हो? मन आपको चलाता है या आप मन को चलाते हैं? जो चाहो, जब चाहो वैसा ही संकल्प कर सकते हो? जहाँ बुद्धि लगाने चाहो, वहाँ लगा सकते हो वा बुद्धि आप राजा को भटकाती है? संस्कार आपके वश हैं या आप संस्कारों के वश हो? राज्य अर्थात् अधिकार। राज्य-अधिकारी जिस शक्ति को जिस समय जो आर्डर करे, वह उसी विधिपूर्वक कार्य करते वा आप कहो एक बात, वह करें दूसरी बात? क्योंकि निरन्तर योगी अर्थात् स्वराज्य अधिकारी बनने का विशेष साधन ही मन और बुद्धि है। मन्त्र ही ‘मन्मनाभव’ का है। योग को बुद्धियोग कहते हैं।

31.12.91.. बाप का हाथ और दिव्य बुद्धि योग रुपी साथ- सदा अनुभव कर समर्थ बन सदा पास विथ ऑनर बनते

चलो। सदा स्नेह-मूर्त भव के वरदान को स्मृति स्वरूप में याद रख, ऐसे सर्व स्नेही मूर्तियों को सदा मास्टर दाता आत्माओं को मातपिता का शक्ति सम्पन्न याद प्यार और नमस्ते।

25.9.2000.. बाबा ने एक चुटकी बजाई तो जैसे फ़रिश्ते कोई कहाँ से, कोई कहाँ से उड़ते हुए पहुँच गये और फ़रिश्तों के पंख जो थे - वो थे उमंग-उत्साह के। ऐसे-ऐसे आते गये जैसे तितलियाँ पहाड़ पर नज़र आती हैं। ऐसे लग रहा था जैसे फ़रिश्ते पहाड़ी पर पहुँच गये हैं। मैंने कहा बाबा मैं क्या यादप्यार दूँ, ये तो अपने आप पहुँच गये हैं। **सीन तो वहाँ की वण्डरफुल होती ही है, आप भी बुद्धियोग से इमर्ज कर सकते हैं।** तो बाबा ने मीठी-मीठी दृष्टि से सभी का यादप्यार लिया भी और यादप्यार दिया भी।

21.9.2000.. बाबा कहते हैं वर्तमान समय के अनुसार एकानामी का पाठ पक्का करो। जो भी हमारे खजाने हैं चाहे संकल्प हैं, बोल हैं, कर्म हैं... चाहे स्थूल चीज़ें हैं सबकी एकानामी आजकल बहुत ज़रूरी है। बिना एकानामी के एकनामी बन नहीं सकते। एकानामी अर्थात् वेस्ट को बेस्ट में चेंज करना, थोड़े में ज़्यादा फायदा लेना... इसको कहा जाता है एकानामी। इसलिए बाबा का वर्तमान समय यही इशारा है कि सब रूप से एकानामी करो। एकानामी करने से मन-बुद्धि फ़्री होंगे। नहीं तो आयेगा अभी यह चाहिए, यह होना चाहिए... **उससे हमारा बुद्धियोग उसी में चला जाता है।**

21.9.2001(अव्यक्त सन्देश).. .. बाबा का वर्तमान समय यही इशारा है कि सब रूप से एकानामी करो। एकानामी करने से मन-बुद्धि फ़्री होंगे। नहीं तो आयेगा अभी यह चाहिए, यह होना चाहिए... **उससे हमारा बुद्धियोग उसी में चला जाता है।** तो बाबा ने एकनामी और एकॉनामी इस पर विशेष अन्डरलाइन कराया है, इस पाठ को पक्का करो। एकानामी है तो उसका प्रूफ है एकनामी सहज बन जायेंगे। अगर एकनामी नहीं बन सकते हैं तो इसका अर्थ है ज़रूर कोई-नकोई स्थूल या सूक्ष्म खज़ाना कहाँ न कहाँ लीकेज है। तो हर एक अपनी अवस्था में यह प्रूफ तो देख ही सकते हैं।

7. कर्मयोगी

30.6.73.....फॉलो फादर का यह अर्थ नहीं कि सिर्फ ईश्वरीय सेवाधारी बन गये। लेकिन फॉलो फादर अर्थात् हर कदम पर, व हर संकल्प में फॉलो फादर। क्या ऐसे फॉलो फादर हो? जैसे बाप के ईश्वरीय संस्कार, दिव्य स्वभाव, दिव्य वृत्ति व दिव्य दृष्टि सदा है, क्या वैसे ही वृत्ति, दृष्टि, स्वभाव व संस्कार बने हैं? ऐसे ईश्वरीय सीरत वाली सूरत बनी है? जिस सूरत द्वारा बाप के गुणों और कर्तव्यों की रूप-रेखा दिखाई दे इसको कहा जाता है – 'फालो फादर।' जैसे बाप के गुणगान करते हो या चरित्र वर्णन करते हो क्या वैसे ही अपने में वह सर्वगुण धारण किये हैं? अपने हर कर्म को चरित्र समान बनाया है? हर कर्म याद में स्थित रह करते हो? जो कर्म याद में रह कर करते हैं, वह कर्म यादगार बन जाता है। क्या ऐसे यादगार-मूर्त्त अर्थात् कर्मयोगी बने हो? कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म योग-युक्त, युक्ति-युक्त, शक्ति-युक्त हो। क्या ऐसे कर्मयोगी बने हो? या बैठने वाले योगी बने हो? जब विशेष रूप से योग में बैठते हो, उस समय योगी जीवन है अर्थात् योग-युक्त है या हर समय योग-युक्त है? जो वर्णन में है कर्मयोगी, निरन्तर योगी और सहजयोगी, क्या वही प्रैक्टिकल (Prac-tical) में है? अर्थात् एवर लास्टिंग है? क्या कर्मयोगी को कर्म आकर्षित करता है या योगी अपनी योगशक्ति से कर्मइन्द्रियों द्वारा कर्म कराता है? अगर कर्म योगी को कर्म अपनी तरफ आकर्षित कर ले तो क्या ऐसे को योगी कहा जाय? जो कर्म के वश होकर चलने वाले हैं उन को क्या कहते हो? 'कर्मभोगी' कहेंगे ना? जो कर्म के भोग के वश हो जाते हैं अर्थात् कर्म के भोग भोगने में अच्छे वा बुरे में कर्म के वशीभूत हो जाते हैं। आप श्रेष्ठ आत्माएं कर्मातीत अर्थात् कर्म के अधीन नहीं, कर्मों के परतन्त्र नहीं। स्वतन्त्र हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराते हो? जब कोई भी आप लोगों से पूछते हैं कि क्या सीख रहे हो या क्या सीखने के लिये जाते हो तो क्या उत्तर देते हो? सहज ज्ञान और राजयोग सीखने जा रहे हैं। यह तो पक्का है न कि यही सीख रहे हो। जब सहज ज्ञान कहते हो तो सहज वस्तु को अपनाना और धारण करना सहज है तब तो सहज ज्ञान कहते हो न? तो सदा ज्ञान स्वरूप बन गये हो? जब सहज ज्ञान है तो सदा ज्ञान स्वरूप बनना क्या मुश्किल है? **सदा ज्ञान स्वरूप बनना यही ब्राह्मणों का धन्धा है।**

24.6.74जैसे योग की महिमा करते हैं कि वह सहजयोग, निरन्तर योग, कर्म योग, व ज्ञान योग और बुद्धियोग है। फिर उसकी भी उपमा करते हैं न? जैसे कि डाक्टर्स में और मिलिट्री में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के ग्रेड्स होते हैं। उसी रीति यहाँ भी योगियों में कर्मयोगी और बुद्धियोगी हैं। यहाँ भी कोई तो सभी लक्षणधारी हैं और कोई एक या दो, लेकिन सब नहीं। जैसे कि किसी का बुद्धि का योग है लेकिन उसका कर्मयोग नहीं है या फिर किसी का कर्मयोग है तो वह सहजयोगी नहीं। या जो ज्ञान में सदा नहीं रहता तो उसको ज्ञानयोगी नहीं कहेंगे। यहाँ भी एक ही टाइटल मिलेगा तो आप जो योग की महिमा औरों को सुनाते हो, तो वह स्वयं में धारण करो। जैसे राजयोग अर्थात् जो कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर उन पर राज्य करता है, तो वह भविष्य में भी श्रेष्ठ पद को पाता

है। राजयोगी का अगर पॉवरफुल योग है, तो ही उसको राजयोगी कहेंगे अन्यथा उसको योगी ही कहेंगे, लेकिन राजयोगी नहीं कहेंगे। अब तो यह चैक करो कि क्या मैं सभी टाइटल धारण करने वाला योगी बना हूँ? कोई के आठ-दस, तो कोई के एक-दो। जो महारथी हैं अर्थात् 'पास विद ऑनर' होने वाले हैं, तो उनकी नींद का टाइम भी योग-युक्त स्थिति में गिना जाता है। उनकी स्टेज ऐसी होगी, जैसे कि पार्ट समाप्त कर वह स्वयं परमधाम में हैं और उनको योग की ही महसूसता होगी। जैसे गायन है ना कि ब्रह्मा से ब्राह्मण बने। यहाँ तो ब्राह्मण से देवता बनते हैं। लेकिन यह ब्रह्मा से ब्राह्मण अर्थात् रात को सोते समय बस यही संकल्प होगा, कि अब मैं अपना पार्ट पूरा कर कर्मइन्द्रियों से अलग होकर जाता हूँ अपने पारब्रह्म में और जब अमृत वेले उठेंगे, तो महसूस करेंगे कि मैंने यह आधार लिया है, पार्ट बजाने के लिए, तो गोया ब्रह्म से ब्राह्मण बनकर आये हैं। यहाँ से तो जाकर वे सीधे देवता बनेंगे। लेकिन यह इस समय के ही अष्ट रत्नों का गायन है। जैसे साकार में बाप और माँ सरस्वती को देखा—उन्हें फर्स्ट, सेकेण्ड नम्बर किस आधार पर मिला? उनकी ज्यादा समय की कमाई तो नींद की ही जमा हुई ना? भले वे सोते भी थे, लेकिन ऐसा अनुभव करते थे कि नींद में नहीं हैं बल्कि हम तो जाग रहे हैं और फिर उनकी थकावट भी दूर हो जाती थी क्योंकि जब आत्मा कमाई में जागृत होती है, तो उसे थकावट भी नहीं होती। तो जैसे मां-बाप ने नींद को योग में बदला तो आप भी फर्स्ट ग्रेड के महारथियों को ऐसा ही फॉलो करना है। अब ऐसा अनुभव तो करते हो कि नींद कम होती जाती है, लेकिन ऐसी अवस्था बनानी है। नींद को योग में बदलो और फॉलो फादर करो। सारा दिन तो वे आपके समान ही साधारण थे ना? यह है फर्स्ट ग्रेड की निशानी—अष्ट रत्नों में आने वालों की। दूसरे हैं सौ वाले और फिर तीसरे हैं 16108 में आने वाले। लेकिन यहाँ महारथी तो सभी हैं, घोड़े सवार कोई नहीं है। लेकिन फर्स्ट, सेकेण्ड और थर्ड नम्बर होते हैं। इसी प्रकार, जैसे किसी ने कर्मइन्द्रियों को ऑर्डर दिया और उसने वैसा ही किया, तो मानो कि वह कर्मयोगी है लेकिन जो सेकेण्ड ग्रेड वाले होंगे, तो उन्हें इसमें कभी-कभी सफलता वा कर्मयोगी की महसूसता आयेगी और कभी-कभी नहीं और बाकी थर्ड ग्रेड वाले को तो तुम जान ही सकते हो। तो जब आपने फर्स्ट ग्रेड का बनना है, तो पहले लिस्ट निकालो कि ज्ञानयोग के कितने टाइटल्स हैं और आपने उनमें से कितने धारण किये हैं? यह क्लास कराना। ब्रह्माकुमार व ब्रह्माकुमारी का टाइटल तो सबको मिल गया पर इसमें ही खुश न होना है, बल्कि सब टाइटल्स को पूरा-पूरा धारण करना है।

11.2.75ड्रामा प्रमाण जितना सहजयोगी, श्रेष्ठ योगी और सफलतामूर्त बनने की सेल्वेशन (Salvation) प्राप्त है, उतना ही रिटर्न (Return) दिया है? वातावरण की भी सेल्वेशन है तो इसका रिटर्न वातावरण को पॉवरफुल बनाकर रखने में, सहयोगी बनने में रिटर्न दो। साथ-साथ श्रेष्ठ संग है, यह भी सेल्वेशन है तो जो भी आत्मायें अपना भाग्य प्राप्त करने के लिए आती हैं उन्हीं को भी अपने संग की श्रेष्ठता का अनुभव हो। यह है रिटर्न। सब अनुभव करें कि यह सब आत्मायें संग के रंग में रंगी हुई हैं। श्रेष्ठ बनेंगे रूहानी संग से और अपने चरित्रों द्वारा। अपने कर्मयोगी की स्टेज द्वारा और अपने गुणमूर्त स्वरूप द्वारा आने वाली आत्माओं का इग्जॉम्पल बन, साधन बन उनकी सहज प्राप्ति का साधन बन जाओ। आपका प्रैक्टिकल साकार स्वरूप का सैम्पल

देख उनमें विशेष उमंग उत्साह रहे। सदैव हर बात में यही संकल्प रखना चाहिए कि हर कार्य में, हर प्रैक्टिकल सबूत के पहले हम सैम्पल है। हर बात में हम सैम्पल हैं। जब ऐसा लक्ष्य आगे रखेंगे तब ही पुरुषार्थ की गति को तीव्र कर सकेंगे।

3.8.75वर्तमान समय-प्रमाण संकल्प, वाणी और कर्म ये तीनों ही युक्तियुक्त चाहिए। तब ही सम्पन्न व सम्पूर्ण बन सकेंगे। चारों तरफ का वातावरण योग-युक्त और युक्तियुक्त हो। जैसे युद्ध के मैदान में जब योद्धे युद्ध के लिये दुश्मन के सामने खड़े हुए होते हैं तो उनका अपने ऊपर और अपने शस्त्रों के ऊपर अर्थात् अपनी शक्तियों के ऊपर कितना अटेन्शन रहता है। अभी तो समय समीप आता जा रहा है, यह मानो युद्ध के मैदान में सामने आने का समय है। ऐसे समय में चारों ओर सर्व-शक्तियों का स्वयं में अटेन्शन चाहिए। अगर जरा भी अटेन्शन कम होगा तो जैसे-जैसे समय-प्रमाण चारों ओर टेन्शन (तनाव;tension) बढ़ता जाता है ऐसे ही चारों ओर टेन्शन के वातावरण का प्रभाव, युद्ध में उपस्थित हुए रूहानी पाण्डव सेना में भी पड़ सकता है। दिन-प्रतिदिन जैसे सम्पूर्णता का समय नजदीक आता जायेगा तो दुनिया में टेन्शन और भी बढ़ेगा, कम नहीं होगा। खींचातान के जीवन का चारों ओर अनुभव होगा जैसे कि चारों ओर से खींचा हुआ होता है। एक तरफ से प्रकृति की छोटी-छोटी आपदाओं का नुकसान का टेन्शन, दूसरी तरफ इस दुनिया की गवर्नमेन्ट के कड़े लॉज (laws) का टेन्शन, तीसरी तरफ व्यवहार में कमी का टेन्शन, और चौथी तरफ जो लौकिक सम्बन्धी आदि से स्नेह और फ्रीडम (Freedom) होने के कारण खुशी की भासना अल्प काल के लिये रहती है वह भी समाप्त हो कर भय की अनुभूति के टेन्शन में, चारों ओर का टेन्शन लोगों में बढ़ना है। चारों ओर के टेन्शन में आत्मायें तड़फेंगी। जहाँ जायेंगी वहाँ टेन्शन। जैसे शरीर में भी कोई नस खिंच जाती है तो कितनी परेशानी होती है। दिमाग खिंचा हुआ रहता है। ऐसे ही यह वातावरण बढ़ता जायेगा। जैसे कि कोई ठिकाना नजर नहीं आयेगा कि क्या करें? अगर हाँ करे तो भी खिंचावट – ना करें तो भी खिंचावट – कमायें तो भी मुश्किल, न कमायें तो भी मुश्किल। इकट्ठा करें तो भी मुश्किल, न करे तो भी मुश्किल। ऐसा वातावरण बनता जायेगा। ऐसे टाइम पर चारों ओर के टेन्शन का प्रभाव रूहानी पाण्डव सेना पर न हो। स्वयं को टेन्शन में आने की समस्यायें न भी हों, लेकिन वातावरण का प्रभाव कमजोर आत्मा पर सहज ही हो जाता है। भय का सोच कि क्या होगा? कैसे होगा? इन बातों का प्रभाव न हो – उसके लिये कोई-न-कोई बीच-बीच में ईश्वरीय याद की यात्रा का विशेष प्रोग्राम मधुबन द्वारा ऑफिशियल जाते रहना चाहिए। जिससे कि आत्माओं का किला मजबूत रहेगा। ब्राह्मण बच्चों की साधारण रीति से दिनचर्या बीते वह आजकल के समय प्रमाण न होना चाहिये, नहीं तो वह प्रभाव बढ़ जायेगा। इसलिये विशेष रीति से वातावरण को याद की यात्रा से पावरफुल बनाने में सब बच्चों का अटेन्शन खिंचवाना चाहिए। अपने को उस दुनिया के वातावरण से कैसे बचा सकें? वह स्टेज क्या है? कर्म योगी होते हुए भी योगीपन की स्टेज किसको कहा जाता है? इसी प्रकार की प्वाइण्ट्स के ऊपर अब विशेष अटेन्शन देना है। क्योंकि अब ड्रामानुसार चारों ओर बड़ी-बड़ी सर्विस करने का टाइम कुछ समय के लिये मर्ज है ना। बड़े-बड़े

प्रोग्रामस बाहर के नहीं कर पाते हो-तो टीचर्स फ्री हुई-बाहर की सर्विस नहीं तो बाकी रही सेन्टर्स पर आने वालों की सेवा। बाहर की सर्विस से बुद्धि फ्री है। नहीं तो कहते हैं बहुत बिजी रहते हैं – प्लैन्स बनाना, मंथन करना। लेकिन अब तो वह भी नहीं है। तो अब याद की यात्रा की सब्जेक्ट के ऊपर ज्यादा अटेंशन देना है। कोई-न-कोई प्रोग्राम हर सेन्टर पर चलना चाहिए-जो आने वालों में बल भर जाये। ऐसे समय पर वह भी न्यारे रहे, साक्षी होकर समस्या का सामना करें। उसके लिये याद का बल चाहिए। तो जब तक बाहर की सर्विस का, नये-नये प्लैन्स का फोर्स कम है तो कोई प्वाइन्ट का जोर होना चाहिए। नहीं तो फ्री होकर फिर व्यर्थ का साइड ज्यादा हो जायेगा। सर्विस में बिजी रहने से व्यर्थ की बातों से बचे रहते हैं। अभी वह सर्विस का स्कोप कम है, तो ज़रूर समय बचेगा-वह फिर व्यर्थ वातावरण में समय जायेगा। इसलिये ब्राह्मणों को खबरदार, होशियार करने के लिये व स्वयं की सेफ्टी (Safety) के लिये कुछ ऐसी प्वाइन्ट्स व क्लासेज के प्रोग्राम्स बनाओ, जिससे वह यह समझें कि हमें मधुबन लाइट हाऊस से विशेष लाइट आ रही है।

1.9.75सभी स्वयं को कर्मातीत अवस्था के नज़दीक अनुभव करते जा रहे हो? कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचने की निशानी जानते हो? समीपता की निशानी समानता है। किस बात में? आवाज में आना व आवाज से परे हो जाना, साकार स्वरूप में कर्मयोगी बनना और साकार स्मृति से परे न्यारे निराकारी स्थिति में स्थित होना, सुनना और स्वरूप होना, मनन करना और मग्न रहना, रूह- रूहान में आना और रूहानियत में स्थित हो जाना, सोचना और करना, कर्मेन्द्रियों में आना अर्थात् कर्मेन्द्रियों का आधार लेना और कर्मेन्द्रियों से परे होना, प्रकृति द्वारा प्राप्त हुए साधनों को स्वयं प्रति कार्य में लगाना और प्रकृति के साधनों से समय प्रमाण निराधार होना, देखना, सम्पर्क में आना और देखते हुए न देखना, सम्पर्क में आते कमल-पुष्प के समान रहना, इन सभी बातों में समानता। उसको कहा जाता है-कर्मातीत अवस्था की समीपता।

16.10.75 सदा बाप-समान निराकारी स्थिति में स्थित होते हुए इस साकार शरीर का आधार लेकर इस कर्म-क्षेत्र पर कर्मयोगी बनकर हर कर्म करते हो? जबकि नाम ही है 'कर्मयोगी'। यह नाम ही सिद्ध करता है कि योगी हैं अर्थात् निराकारी आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर कर्म करने वाले हैं। कर्म के बिना तो एक सेकेण्ड भी रह नहीं सकते। कर्म-इन्द्रियों का आधार लेने का अर्थ ही है-निरन्तर कर्म करना। तो जैसे कर्म के बिना रह नहीं सकते, वैसे ही याद अर्थात् योग के बिना भी एक सेकेण्ड रह नहीं सकते। इसलिए कर्म के साथ योगी नाम भी साथ-साथ ही है। जैसे कर्म स्वतः ही चलते रहते हैं, कर्मेन्द्रियों को नेचुरल (Natural) अभ्यास है। ऐसे ही बुद्धि को याद का नेचुरल अभ्यास होना चाहिए। इन कर्मेन्द्रियों का आदि-अनादि अपना-अपना कार्य है। हाथ को हिलाने व पाँव को चलाने में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, उसी प्रमाण ब्राह्मण जीवन का तथा इस संगमयुगी जीवन में बुद्धि का निजी कार्य व जन्म का कार्य याद है। जो जीवन का निजी कार्य होता है वह नेचुरल और सहज ही होता है। तो क्या ऐसे अपने को सहज कर्मयोगी अनुभव करते हो या यह मुश्किल लगता है? अपना

कार्य कभी भी मुश्किल नहीं लगता है, दूसरे का मुश्किल लगता है। यह तो कल्प-कल्प का अपना कार्य है। फिर भी यदि मुश्किल लगता है अर्थात् निरन्तर कर्मयोगी स्थिति अनुभव नहीं होती है तो इसका कारण क्या है? अगर योग नहीं लगता तो अवश्य ही इन्द्रियों द्वारा अल्पकाल के सुख प्राप्त कराने वाले और सदाकाल की प्राप्ति से वंचित कराने वाले, कोई-न-कोई भोग भोगने में लगे हुए हैं। इसलिए अपने निजी कार्य को भूले हुए हैं। जैसे आजकल के सम्पत्ति वाले वा कलियुगी राजा जब भोग-विलास में व्यस्त हो जाते हैं तो अपना निजी कार्य, राज्य करना व अपना अधिकार भूल जाते हैं, ऐसे ही आत्मा भी भोग भोगने में व्यस्त होने के कारण योग भूल जाती है अर्थात् अपना अधिकार भूल जाती है, जब तक अल्पकाल के भोग भोगने में मस्त हैं। तो जहाँ भोग है वहाँ योग नहीं। इसी कारण मुश्किल लगता है। वर्तमान समय माया ब्राह्मण बच्चों की बुद्धि पर ही पहला वार करती है। पहले बुद्धि का कनेक्शन (Connection) तोड़ देती है। जैसे जब कोई दुश्मन वार करता है तो पहले टेलीफोन, रेडियो आदि के कनेक्शन तोड़ देते हैं। लाइट और पानी का कनेक्शन तोड़ देते हैं फिर वार करते हैं, ऐसे ही माया भी पहले बुद्धि का कनेक्शन तोड़ देती है जिससे लाइट, माइट, शक्तियाँ और ज्ञान का संग ऑटोमेटिकली बन्द हो जाता है। अर्थात् मूर्छित बना देती है। अर्थात् स्वयं के स्वरूप की स्मृति से वंचित कर देती है व बेहोश कर देती है। उसके लिए सदैव बुद्धि पर अटेंशन का पहरा चाहिए। तब ही निरन्तर कर्मयोगी सहज बन पायेंगे। ऐसा अभ्यास करो जो जहाँ बुद्धि को लगाना चाहे वहाँ स्थित हो जायें। संकल्प किया और स्थित हुआ। यह रूहानी ड्रिल सदैव बुद्धि द्वारा करते रहो। अभी-अभी परम- धाम निवासी, अभी-अभी सूक्ष्म अव्यक्त फरिश्ता बन जायें और अभी-अभी साकार कर्मेन्द्रियों का आधार लेकर कर्मयोगी बन जायें। इसको कहा जाता है – संकल्प शक्ति को कंट्रोल करना। संकल्प को रचना कहेंगे और आप उसके रचयिता हो। जितना समय जो संकल्प चाहिए उतना ही समय वह चले। जहाँ बुद्धि लगाना चाहे, वहाँ ही लगे। इसको कहा जाता है – अधिकारी। यह प्रैक्टिस अभी कम है। इसलिये यह अभ्यास करो, अपने आप ही अपना प्रोग्राम बनाओ और अपने को चेक करो कि जितना समय निश्चित किया, क्या उतना ही समय वह स्टेज रही? हठयोगी अपनी किसी कर्मेन्द्रिय को, कोई टाँग को या बाँह को एकाग्र करने के लिए कोई टाइम निश्चित करते हैं कि इतना समय एक टाँग व एक हाथ नीचे करेंगे व ऊपर करेंगे, सिर नीचे करेंगे अथवा ऊपर करेंगे। लेकिन यह राँग कापी (Wrong copy) की है। बाप ने सिखाया है बुद्धि में एक संकल्प धारण करके बैठो। उसकी उल्टी कॉपी कर एक टाँग ऊपर कर लेते हैं। बाप कहते हैं कि एक संकल्प में स्थित हो जाओ, वह फिर एक टाँग पर स्थित हो जाते हैं। बाप कहते हैं कि सदा ज्ञान-सूर्य के सम्मुख रहो, विमुख न बनो। वह फिर स्थूल सूर्य की तरफ मुख कर बैठते हैं। तो उल्टी कॉपी कर ली ना? यथार्थ बुद्धि-योग का अभ्यास अभी तुम सीख रहे हो। वह हठ से करते, आप अधिकार से करते हो। इसलिये वह मुश्किल है, यह सहज है। अभी उसके अभ्यास को बढ़ाते जाओ। एक सेकेण्ड में सब एक मत हो जायें। जब संगठन का एक संकल्प, एक स्मृति होगी, और सबका एक स्वरूप होगा तब इस संगठन की जय-जयकार का नाम बाला होगा।

27.1.76ऐसी श्रेष्ठ स्टेज प्राप्त करने के लिए सदैव दो बातें याद रखो। एक – स्वयं को अकालमूर्त्त समझो, दूसरे – स्वयं को सदा 'त्रिकालदर्शी-मूर्त्त' समझो। निराकारी स्टेज में – अकालतख्त-नशीन, अकालमूर्त्त हैं; साकार कर्मयोगी की स्टेज में – त्रिकालदर्शी मूर्त्त त्रिमूर्त्ति बाप के तख्त-नशीन। हर संकल्प को स्वरूप में लाने से पहले यह दोनों बातें चेक करो। निराकारी और साकारी दोनों स्वरूप में हैं? इस स्मृति से स्वतः ही समर्थी-स्वरूप बन जायेंगे अर्थात् हेल्थ, वेल्थ और हैप्पीनेस का अनुभव हर समय होगा। चाहे शरीर का कर्मभोग सूली से कितना भी बड़े रूप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग सूली से कांटे-समान अनुभव होगा। भविष्य जन्म-जन्मान्तर कर्मभोग से मुक्त होने की खुशी इस कर्मभोग को चुक्ता करने के लिये औषधि का रूप बन जाती है। खुशी दवाई की खुराक बन जाती है।

28-4-77दूर-दूर से अपने जन्मभूमि पर आए हैं – ब्राह्मणों की जन्मभूमि 'मधुवन' है ना। ऐसे समझते हो कि अपनी जन्मभूमि पर आए हैं। जन्मभूमि का बहुत महत्व रखते हैं। और यह फिर अलौकिक जन्मभूमि है। इस अलौकिक जन्मभूमि पर आने से ही लौकिकपन स्वतः ही भूल जाता है। क्योंकि 'जैसे धरनी वैसे करनी' यह गायन है। 'जैसा संग वैसा रंग, जैसा अन्न वेसा मन' गाया हुआ है। वैसे ही, जैसे धरनी वैसी करनी। अगर कोई तमोगुणी धरनी है तो करनी भी ऐसी हो जाती है। धरनी का प्रभाव कर्म और संस्कार पर पड़ जाता है। जैसे मन्दिर में जाते हैं तो भूमि का ही प्रभाव होता है ना। अगर मन्दिर की भूमि पर किसी बुरा संकल्प आवे तो वह अपने को बहुत पापी समझेगा। वैसे अगर बुरा संकल्प आता तो बुरा समझते। तो यह है अलौकिक भूमि लौकिकता स्मृति में भी नहीं आयेगी। निरन्तर कर्मयोगी हो जायेंगे। इसलिए बाप-दादा सदैव कहते हैं कि कहाँ भी रहते हो लेकिन अपने को सदा परमधाम निवासी व मधुवन निवसी समझो। निराकार स्थिति के हिसाब से परमधाम निवासी, साकार स्थिति के हिसाब से मधुवन निवासी। मधुवन कहने से ही वैराग्य वृत्ति और मधुरता दोनों ही आ जाती है। स्थिति में बेहद की वैराग्य वृत्ति और सम्पर्क में मधुरता दोनों ही चाहिए। स्थान से स्थिति का कनेक्शन (Connection;सम्बन्ध) है।

29-5-77व्यर्थ संकल्पों का दूसरा कारण है सारे दिन की दिनचर्या में मन्सा, वाचा, कर्मणा जो बाप द्वारा मर्यादाओं सम्पन्न श्रीमत है, उसका किसी न किसी रूप से उल्लंघन करते हो। आज्ञाकारी से अवज्ञाकारी बन जाते हो। मर्यादाओं की लकीर से मन्सा द्वारा भी अगर बाहर निकलते, तो व्यर्थ संकल्प रूपी रावण, वार कर सकता है। तो यह भी चैकिंग करो, संकल्प द्वारा, वाणी, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क द्वारा ब्राह्मणों की नीति और रीति को उल्लंघन तो नहीं करते हैं? अवश्य कोई नीति व रीति मिस (Miss;गुम) है तब बुद्धि में व्यर्थ संकल्प मिक्स (Mix;मिश्रित) होते हैं। समझा दूसरा कारण? इसलिए चैकिंग अच्छी तरह होनी चाहिए। तब व्यर्थ संकल्पों की निवृत्ति हो सकती है। सारा दिन बाप द्वारा जो शुद्ध प्रवृत्ति मिली हुई है, बुद्धि की प्रवृत्ति है शुद्ध संकल्प करना, वाणी की प्रवृत्ति है जो बाप द्वारा सुना वह सुनाना, कर्म की प्रवृत्ति है कर्मयोगी बन हर कर्म करना, कमल

समान न्यारा और प्यारा बन रहना, हर कर्म द्वारा बाप के श्रेष्ठ कार्यों को प्रत्यक्ष करना तथा हर कर्म चरित्र रूप से करना। चतुराई नहीं लेकिन चरित्र, वह भी दिव्य चरित्र। सम्पर्क में प्रवृत्ति है निमित्त स्वयं सम्पर्क में आते सदा सर्व का जो बाप है, उससे सम्पर्क कराना। तो ऐसी पवित्र प्रवृत्ति में बिजी रहने से व्यर्थ संकल्पों से निवृत्ति होगी। वह लोग कहते हैं प्रवृत्ति से निवृत्ति। बाप कहते हैं 'पवित्र प्रवृत्ति से ही निवृत्ति हो।' गृहस्थी अलग है – उनको गृहस्थी नहीं कहेंगे। पवित्र प्रवृत्ति को ट्रस्टी कहेंगे न कि गृहस्थी। तो समझा निवृत्ति का आधार पवित्र प्रवृत्ति है।

10-6-77अमृतवेले की स्मृति का स्वरूप, गॉडली स्टडी (Godly Study; ईश्वरीय अध्ययन) करने की स्मृति का स्मृति स्वरूप, कर्म करते हुए कर्मयोगी रहने के स्मृति स्वरूप, ट्रस्टी बन अपने शरीर निर्वाह के व्यवहार के समय का स्मृति स्वरूप, अनेक विकारी आत्माओं के सम्पर्क में आने समय का स्मृति स्वरूप, वाइब्रेशन्स वाली आत्माओं का वाइब्रेशन परिवर्तन करने के कार्य करने समय का स्मृति स्वरूप सब डायरेक्शन मिले हुए हैं। याद हैं? जैसे भविष्य में जैसा समय होगा वैसी ड्रेस चेन्ज करेंगे। हर समय के कार्य की ड्रेस और श्रृंगार अपना अपना होगा। तो यह अभ्यास यहाँ धारण करने से भविष्य में प्रालब्ध रूप में प्राप्त होंगे। वहाँ स्थूल ड्रेस चेंज करेंगे और यहाँ जैसा समय, जैसे कार्य, वैसा स्मृति स्वरूप हो। अभ्यास है वा भूल जाता है? इस समय के आपके अभ्यास का यादगार भक्तिमार्ग में भी जो विशेष नामी-ग्रामी मन्दिर हैं वहाँ भी समय प्रमाण ड्रेस बदली करते हैं। हर दर्शन की ड्रेस अपनी-अपनी बनी हुई होती है। तो यह यादगार भी किन आत्माओं का है? जो आत्माएं इस संगमयुग पर जैसा समय वैसा स्वरूप बनने के अभ्यासी हैं।

16.6.77 सदैव संगम युग का श्रेष्ठ खजाना 'अतिइन्द्रिय सुख' है ऐसे खजाने की प्राप्ति का अनुभव करते हो? अति इन्द्रिय सुख का खजाना प्राप्त हुआ है? खजाना मिला हुआ खो क्यों जाता? पहरा कौन सा? अटेंशन। अटेंशन कम करना अर्थात् अपने प्राप्त किए हुए खजाने को खो देना। सारे कल्प में फिर यह खजाना प्राप्त होगा? तो ऐसी अमूल्य चीज़ कितनी संभाल कर रखनी होती है? स्थूल में भी बढ़िया चीज़ संभाल कर रखते हैं। जैसे वहाँ भी पहरेदार अलबेले होते तो नुकसान कर देते, यहाँ भी अलबेलापन आता तो खजाना खो जाता। बार-बार अटेंशन चाहिए। ऐसे नहीं – अमृतवेले याद में बैठे, अटेंशन दिया फिर चलते-फिरते खो दिया। अमृतवेले अटेंशन देते और समझते सब कुछ कर लिया, लेकिन चलते-फिरते भी अटेंशन देना है। अतिइन्द्रिय सुख का अनुभव अभी नहीं किया, तो कभी नहीं करेंगे। पाँच हजार वर्ष के हिसाब से यह कितना श्रेष्ठ समय है! इतनी श्रेष्ठ प्राप्ति के लिए थोड़ा समय भी अटेंशन न रखेंगे तो क्या करेंगे? कर्म और योग दोनों साथ चाहिए। योग माना ही याद का अटेंशन, जैसे कर्म नहीं छोड़ते वैसे याद भी न छूटे। इसको कहा जाता है 'कर्मयोगी।'

20.6.77 सदा सहजयोगी बनने का साधन – सदा अपने को संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा और हर कार्य द्वारा विश्व के सर्व आत्माओं के प्रति सेवाधारी समझ, सेवा में ही सब कुछ लगाओ। जो भी ब्राह्मण जीवन के खज़ाने, बाप द्वारा प्राप्त हुये हैं उन सर्व खज़ानों को आत्माओं की सेवा प्रति लगाओ। जो बाप द्वारा शक्तियों का

खजाना, गुणों का खजाना, ज्ञान का खजाना वा श्रेष्ठ कमाई के समय का खजाना प्राप्त हुआ है, वह सेवा में लगाओ अर्थात् सहयोगी बनो। अपनी वृत्ति द्वारा वायुमंडल को श्रेष्ठ बनाने का सहयोग दो। स्मृति द्वारा सर्व को मास्टर समर्थ शक्तिवान स्वरूप की स्मृति दिलाओ। वाणी द्वारा आत्माओं को स्वदर्शन चक्रधारी मास्टर त्रिकालदर्शी बनने का सहयोगी, कर्म द्वारा सदा कमल पुष्प समान रहने का वा कर्मयोगी बनने का सन्देश हर कर्म द्वारा दो।

13.1.78 सदैव स्वयं को सर्वश्रेष्ठ महान आत्मा समझते हो। महान आत्मा जिसकी स्मृति से स्वतः ही हर संकल्प और हर कर्म महान अथवा सर्वश्रेष्ठ होते हैं। जैसे आजकल की दुनिया में अल्पकाल की पोजीशन (Position) वाली आत्माएँ अपने पोजीशन की स्मृति में रहने के कारण दिन-रात स्वतः ही उसी नशे में रहती हैं वैसे बाप द्वारा प्राप्त हुई पोजीशन को स्मृति में रखना सहज और स्वतः है। जैसी पोजीशन है वैसा ही कर्म, जैसा नाम वैसा ही श्रेष्ठ कर्म भी है इसलिए वर्तमान समय सहजयोगी के साथ कर्मयोगी भी कहलायेंगे। कर्मयोगी अर्थात् हर कर्म द्वारा बाप से स्नेह और सम्बन्ध का हर आत्मा को साक्षात्कार होगा। जैसे हृद की आत्माओं से स्नेह रखने वाली आत्मा का उनके चेहरे और झलक से दिखाई देता है कि कोई से स्नेह में लवलीन है। ऐसे अपने आप से पूछो कि हर कर्म बाप के साथ स्नेही आत्मा का अनुभव कराता है। इसको ही कहा जाता है कर्मयोगी। कर्मयोगी की या सहज राजयोगी की परिभाषा बड़ी गुह्य है। कर्मयोगी या सहज राजयोगी का हर संकल्प बाप के स्नेह के वायब्रेशन (Vibration) फैलाने वाले होंगे जैसे जड़ चित्र भी शान्ति के अल्पकाल के सुख के वायब्रेशन अब तक भी आत्माओं को देने का कार्य कर रहे हैं तो अवश्य चैतन्य रूप में संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा विश्व में सदा सुख-शान्ति बाप के स्नेह के वायब्रेशन फैलाने का कर्तव्य किया है। तब जड़ चित्रों में भी शान्ति है। जब साइन्स का यंत्र गर्मी का या सर्दी का वायब्रेशन वायुमण्डल बना सकते हैं तो मास्टर सर्वशक्तिवान अपने साइलेन्स (Silence) अर्थात् याद की शक्ति से अपने लग्न की स्थिति द्वारा जो वायुमण्डल या वायब्रेशन फैलाना चाहें वह सब बना सकते हैं। ऐसी प्रैक्टिकस करो। अभी-अभी सुख का या शान्ति का वायुमण्डल या शक्ति रूप का वायुमण्डल बना सकते हो। जिस वायुमण्डल के अन्दर जो भी आत्माएँ हों वह अनुभव करें कि यहाँ दुःख से सुख के वायुमण्डल में आ गये हैं। महसूस करें कि यहाँ बहुत सुख प्राप्त हो रहा है। जैसे एयरकण्डीशन (Air condition) में सर्दी व गर्मी का अनुभव करते हैं कि सचमुच गर्मी से ठण्डी हवा में आ गये हैं। ठण्डी से गर्मी में आ गये हैं। ऐसे आपकी चलन और चेहरे द्वारा आपके संकल्प शक्ति द्वारा सुख-शान्ति और शक्ति का अनुभव करें। जैसे एक सेकेण्ड में अंधकार से रोशनी का अनुभव किया ना। ऐसे आजकल के मनुष्य अपनी शक्ति से अनुभव नहीं कर सकेंगे। लेकिन आप सबको अपनी प्राप्ति के आधार से, याद के आधार से अनुभवी बनाना पड़ेगा। यह है वास्तविक सहज राजयोग या कर्मयोग की परिभाषा।

14.2.78 विश्व कल्याणकारी का कर्म, कर्मयोगी होने के कारण हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य होता है। हर कर्म की महिमा कीर्तन करने योग्य होती। जैसे भक्त लोग कीर्तन में वर्णन करते हैं देखना अलौकिक, चलना अलौकिक, हर कार्य इन्द्रियों की महिमा अपरमपार करते रहते हैं, ऐसे हर कर्म महान अर्थात् महिमा योग्य होता है। ऐसी आत्मा को कहा जाता है बाप समान समीप आत्मा।

10.1.79 बार-बार कहेंगे सहयोग मिले तो आगे बढ़ें चान्स मिले कोई बढ़ावे तो आगे बढ़े। क्योंकि स्वयं भारी होने कारण दूसरे के सहारे द्वारा अपना बोझ हल्का करना चाहते हैं। इसलिए बापदादा भी कहते हैं बेट कम करो। इसका साधन है – जैसे शारीरिक हल्केपन का साधन है एक्सरसाइज़। वैसे आत्मिक एक्सरसाइज़ योग अभ्यास द्वारा अभी-अभी कर्मयोगी अर्थात् साकारी स्वरूपधारी बन साकार सृष्टि का पार्ट बजाना, अभी-अभी आकारी फरिश्ता बन आकारी वतनवासी अव्यक्त रूप का अनुभव करना – अभी-अभी निराकारी बन मूल वतनवासी का अनुभव करना, अभी-अभी अपने राज्य स्वर्ग अर्थात् वैकुण्ठवासी बन देवता रूप का अनुभव करना। ऐसे बुद्धि की एक्सरसाइज़ करो तो सदा हल्के हो जावेंगे।

12.1.79 कार्य करते हुए कर्मयोगी का पार्ट बजाते कर्मयोगी अर्थात् सदा बाप के साथ रहते हुए हर कार्य करने वाला कर्मयोगी के समय भी चाहे कोई भी कर्म कर रहे हो। लौकिक वा अलौकिक लेकिन आलमाइटी अर्थात् आपका साथी अर्थात् फ्रैन्ड बनकर हर समय साथ निभाते हैं। ऐसा फ्रैन्ड फिर कभी मिल नहीं सकता। कभी फ्रैन्डशिप निभाते हैं – कभी कम्बाइन्ड युगल रूप निभाते हैं – ऐसा कम्बाइन्ड स्वरूप विचित्र युगल रूप जो सदा आपको कहते हैं – सारा बोझ हमें दे दो – और तुम सदा हल्के रहो – जहाँ भी कोई मुश्किल कार्य आये तो वह मुझे अर्पण कर दो तो मुश्किल सहज हो जावेगा। ऐसे कर्मयोग के पार्ट में सदा साथी पन के खजाने को वा सदा साथ के खुशी को यूज करो – और आगे चलो –

30.1.79 सदा कर्म करते हुए भी न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करेंगे ऐसी न्यारी और प्यारी आत्मायें अभी भी अनेक आत्माओं के सामने दृष्टान्त अर्थात् एक्जैम्पल बनते हैं – जिसको देखकर अनेक आत्मायें स्वयं भी कर्मयोगी बन जाती हैं और भविष्य में भी पूज्यनीय बन जाती हैं।

19-11-79 धर्म – ब्राह्मण चोटी के हो। बुद्धि की लाइन विशाल और त्रिकालदर्शी लाइन है। अब सोचो इससे अधिक भाग्य की रेखायें और किसी की श्रेष्ठ हो सकती हैं। कर्म-रेखा में निरन्तर कर्मयोगी, सहजयोगी, राजयोगी – यह रेखा बाप ने स्पष्ट खींच ली है। भाग्य के सितारों में ताज और तख्त दिखाई देता है। इससे श्रेष्ठ भाग्य और क्या होगा?

26.11.79 कई बच्चों का एक संकल्प पहुँचता है कि बाप तो निर्बन्धन हैं और हमें तो देह का बन्धन है, कर्म का बन्धन है। लेकिन बाप-दादा यह क्वेश्चन पूछते हैं अब तक क्या देह सहित त्याग नहीं किया है?

पहला-पहला वायदा है सब बच्चों का कि तन-मन-धन तेरा न कि मेरा। जब तेरा है, मेरा है ही नहीं तो फिर बन्धन काहे का? यह तो लोन पर बापदादा ने दिया है। आप ट्रस्टी हो, न कि मालिक। जब मरजीवा बन गये तो 83 जन्मों का हिसाब समाप्त हो गया। अब यह नया 84वाँ जन्म है। इस जन्म की तुलना और जन्मों से कर ही नहीं सकते हो। इस दिव्य जन्म का बन्धन नहीं, सम्बन्ध है। कर्म बन्धनी जन्म नहीं, यह कर्मयोगी जन्म हैं। इस अलौकिक दिव्य जन्म में ब्राह्मण आत्मा स्वतन्त्र है न कि परतन्त्र। तेरे को मेरे में लाते हो, तब परतन्त्र होते हो। मेरा पहला हिसाब, मेरा पहला संस्कार आया कहाँ से? अगर ऐसे स्वतन्त्र होकर रहो कि यह लोन मिली हुई देह है तो सेकेण्ड में उड़ सकते हो। जो वायदे करते हो कि जहाँ बिठायेंगे वहाँ बैठेंगे, जो कहेंगे वह करेंगे। तो बाप की बन्धनी आत्मा हो या कर्म बन्धनी आत्मा हो? यह भी बाप ने डायरेक्शन दिया है कि कर्म करो। आप स्वतन्त्र हो, चलाने वाला चला रहा है, आप चल रहे हो। आपकी सरस्वती माँ की यह विशेष धारणा थी 'हूकमी हुक्म चलाये रहा' तब नम्बर आगे ले लिया। फॉलो फादर और मदर।

26.11.79 'कर्मभोग है', 'कर्मबन्धन है', 'संस्कारों का बन्धन है', 'संगठन का बन्धन है' – इस व्यर्थ संकल्प रूपी जाल को अपने आप ही इमर्ज करते हो और अपने ही जाल में स्वयं फँस जाते हो, फिर कहते हैं कि अभी छुड़वाओ। बाप कहते हैं कि तुम हो ही छूटे हुए। छोड़ो तो छूटो। अब निर्बन्धनी हो या बन्धनी हो। पहले ही शरीर छोड़ चुके हो, मरजीवा बन चुके हो। यह तो सिर्फ विश्व की सेवा के लिए शरीर रहा हुआ है, पुराने शरीरों में बाप शक्ति भर कर चला रहे हैं। ज़िम्मेवारी बाप की है, फिर आप क्यों ले लेते हो। ज़िम्मेवारी सम्भाल भी नहीं सकते हो लेकिन छोड़ते भी नहीं हो। ज़िम्मेवारी छोड़ दो अर्थात् मेरा-पन छोड़ दो। मेरा पुरुषार्थ, मेरा इन्वेन्शन, मेरी सर्विस, मेरी टर्चिंग, मेरे गुण बहुत अच्छे हैं, मेरी हैन्डलिंग-पॉवर बहुत अच्छी है। मेरी निर्णय शक्ति बहुत अच्छी है। मेरी समझ ही यथार्थ है। बाकी सब मिसअन्डरस्टैन्डिंग में हैं। यह मेरा-मेरा आया कहाँ से? यही रॉयल माया है, इससे मायाजीत बन जाओ तो सेकेण्ड में प्रकृति जीत बन जावेंगे। प्रकृति का आधार लेंगे लेकिन अधीन नहीं बनेंगे। प्रकृतिजीत ही विश्व जीत व जगतजीत है। फिर एक सेकेण्ड का डायरेक्शन अशरीरी भव का सहज और स्वतः हो जावेगा। खेल क्या देखा। तेरे को मेरे बनाने में बड़े होशियार हैं। जैसे जादू मन्त्र से जो कोई कार्य करते हैं तो पता नहीं पड़ता कि हम क्या कर रहे हैं। यह रॉयल माया भी जादू-मन्त्र कर देती हैं जो पता ही नहीं पड़ता कि हम क्या कह रहे हैं। अब क्या करेंगे? अब कर्म बन्धनी से कर्म योगी समझो। अनेक बन्धनों से मुक्त एक बाप के सम्बन्ध में समझो तो सदा एवर-रेडी रहेंगे। संकल्प किया और अशरीरी बना, यह प्रैक्टिस करो। कितना भी सेवा में बिज़ी हों, कार्य की चारों ओर की खींचतान हो, बुद्धि सेवा के कार्य में अति बिज़ी हो – ऐसे टाइम पर अशरीरी बनने का अभ्यास करके देखो। यथार्थ सेवा का कभी बन्धन होता ही नहीं। क्योंकि योग युक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी सदा सेवा करते भी उपराम रहते हैं। ऐसे नहीं कि सेवा ज़्यादा है इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। याद रखो मेरी सेवा नहीं बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। 'ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ' ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो तब कहेंगे तेरे को मेरे में नहीं लाया है।

अमानत में ख्यानात नहीं की है समझा, अभी का अभ्यास क्या करना है? जैसे बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफ़िक का कन्ट्रोल करते हो जैसे अति के समय अन्त की स्टेज का अनुभव करो तब अन्त के समय पास विद् आनर बन सकेंगे।

24.12.79 अमृतबेले जहान के नूर को बाप-दादा देखते हैं कि जहान के नूर हिल रहे हैं या एकाग्र हैं। अनेक प्रकार की रूप रेखायें देखते हैं। वह तो आप सब जानते हो ना? वर्णन भी क्या करें। बीती सो-बीती। अब से अपने महत्व को जान कर्तव्य को जान सदा जागती ज्योति बनकर रहो। सेकेण्ड में स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन कर सकते हो। इसकी प्रैक्टिस करो अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज। जैसे पुरानी दुनिया का दृष्टान्त देते हैं। आपकी रचना कछुआ सेकेण्ड में सब अंग समेट लेता है। समेटने की शक्ति रचना में भी है। आप मास्टर रचता समेटने की शक्ति के आधार से सेकेण्ड में सर्व संकल्पों को समाकर एक संकल्प में सेकेण्ड में स्थित हो सकते हो।

14.1.80 वास्तव में गृहस्थ व्यवहार शब्द चेन्ज करो। गृहस्थ शब्द बोलते ही गृहस्थी बन जाते हो। इसलिए गृहस्थी नहीं हो, ट्रस्टी हो। गृहस्थ व्यवहार नहीं, ट्रस्ट व्यवहार है। गृहस्थी बनते हैं तो क्या करते हैं? गृहस्थियों का कौन-सा खेल है? गृहस्थी बनते हो तो बहाने बाज़ी बहुत करते हो। ऐसे और वैसे की भाषा बहुत बोलते हो। ऐसे हैं ना, वैसे हैं ना। बात को भी बढ़ाने लग जाते हैं। यह तो आप जानते हो करना ही पड़ेगा, यह तो ऐसे ही है, वैसे ही है – यह पाठ बाप को भी पढ़ाने लग जाते हो। ट्रस्टी बन जाओ तो बहाने बाज़ी खत्म हो चढ़ती कला की बाज़ी शुरू हो जायेगी। तो आज से अपने को गृहस्थ व्यवहार वाले नहीं समझना। ट्रस्ट व्यवहार है। जिम्मेवार और है, निमित्त आप हो। जब ऐसे संकल्प में परिवर्तन करेंगे तो बोल और कर्म में परिवर्तन हो ही जाएगा। तो यही ग्रुप एक-एक बहुत कमाल कर सकते हैं। कर्मयोगी, सहजयोगी का हरेक सैम्पल अनेक आत्माओं को श्रेष्ठ सौदा करने के निमित्त बना सकते हैं। और जो भी हृद के गुरु होते हैं उनका एक गद्दी नशीन शिष्य अपने गुरु का नाम बाला करता है और यहाँ सतगुरु के इतने सब तख्त नशीन बच्चे हो – एक-एक बच्चा कितना श्रेष्ठ कार्य कर सकते हैं!

19.3.81 दीदी-दादी को देख – वायरलेस सेट आपके पास हैं ना। जो सेकेण्ड से भी जल्दी जहाँ कर्तव्य कराना हो वहाँ वायरलेस द्वारा डाय-रेक्शन दे सकते। क्योंकि जितनी सेवा वृद्धि को प्राप्त होती जायेगी तो फिर यह पत्र व्यवहार या टेलीग्राम, टेलीफोन आदि क्या कर सकेंगे। आज यह तो ठीक हैं, कल नहीं। फिर सारी सेवा कैसे हैंडल करेंगे? इसका भी साधन अपना पड़े। हाल भी बनायेंगे, भण्डारा भी बना दिया यह तो जो आयेंगे उन्हीं के लिए ठीक हैं लेकिन चारों ओर के सेवाकेन्द्रों के इतने विस्तार को कैसे हैंडल करेंगे? सबको यहाँ बुलायेंगे? क्यू तो प्रजा की होगी वारिस तो क्यू में नहीं आयेंगे ना। इसलिए विशेष सेकेण्ड में कर्मातीत स्टेज के आधार से आपने संकल्प किया और वहाँ ऐसे पहुँचेगा जैसे आप कहते जा रहे हैं और पहुँच रहा है। ऐसे

भी अनुभव बहुत होते रहेंगे जो समाचार में भी आयेंगे कि आज ऐसा अनुभव हुआ। साक्षात्कार भी होंगे और संकल्पों की सिद्धि भी होगी। अभी यह विशेष- षता आती जायेगी। महारथियों का पुरुषार्थ अभी विशेष इसी अभ्यास का ही है। अभी-अभी कर्म योगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज। एक स्थान पर खड़े होते भी चारों ओर संकल्प की सिद्धि द्वारा सेवा में सहयोगी बन सकते हो।

5.4.81जैसे साकार में आना और जाना सहज हो गया है, अभी-अभी आये, अभी- अभी गये, तो जैसे साकार में सहज प्रैक्टिस हो गई है आने-जाने की, वैसे आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस है? अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आना, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में रहना, इसका भी अनुभव सहज होता है? जैसे लक्ष्य रखते हो मधुबन जाना है, फिर तैयारी कर पहुँच जाते वैसे यह भी सदा लक्ष्य रहे कि कर्मातीत अवस्था में रहना है, निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत। कर्मातीत – इसके लिए तैयारी कौन-सी करनी है? डबल लाइट बनो। तो डबल लाइट बनना आता है ना। ट्रस्टी समझाना अर्थात् लाइट बनना। दूसरा – आत्मा समझना अर्थात् लाइट होना। तो यह तैयारी करने तो आती है ना। यही अटेंशन रखने से फिर सेकेण्ड में कर्मातीत, सेकेण्ड में कर्मयोगी। जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है। वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए। यही तो अभ्यास है ना। जो सदा याद और सेवा में रहने वाले हैं उन्हीं को प्रत्यक्षफल सहज प्राप्त होता है। सोचेंगे भी नहीं कि ऐसा हो सकता है! लेकिन सहज अनुभव होते रहेंगे। चलते-चलते ऐसे अनुभव करेंगे जैसे भक्ति मार्ग में कहावत है, “भगवान छप्पर फाड़कर देते हैं।” तो यहाँ भी मेहनत का छप्पर फाड़कर सहज अनुभूति होगी। जब सर्वशक्तिवान के बच्चे बन गये तो मेहनत रही क्या? सभी सहजयोगी हो ना।

15.4.81सभी तीव्र पुरुषार्थी हो ना? नये सो कल्प-कल्प के पुराने, पुराने समझने से अपना अधिकार ले लेंगे। ऐसे समझते हो कि हम कल्प-कल्प के अधिकारी हैं। लास्ट आते भी फास्ट जाना है, उसके लिए सहज साधन है— निरंतर याद। याद में अन्तर नहीं आना चाहिए। सदा कर्मयोगी। कर्म भी करो और याद में भी रहो। जो सदा कर्मयोगी की स्टेज पर रहते हैं वह सहज ही कर्मातीत हो सकते हैं। जब चाहें कर्म में आयें और जब चाहें न्यारे।

14-10-81सदा कर्मयोगी बन हर कर्म करते हो? कर्म और योग दोनों कम्बाइन्ड रहता है? जैसे शरीर और आत्मा दोनों कम्बाइन्ड होकर कर्म कर ही है, ऐसे कर्म और योग दोनों कम्बाइन्ड रहते हैं? कर्म करते याद न भूले और याद में रहते कर्म न भूले। कई ऐसे करते हैं कि जब कर्मक्षेत्र पर जाते हैं तो याद भूल जाती है। तो इससे सिद्ध है कि कर्म और याद अलग हो गई। लेकिन यह दोनों कम्बा- इन्ड हैं। टाइटल ही है – कर्मयोगी। कर्म करते याद में रहने वाले सदा न्यारे और प्यारे होंगे, हल्के होंगे, किसी भी कर्म में बोझ अनुभव नहीं करेंगे। कर्मयोगी को ही दूसरे शब्दों में कमल पुष्प कहा जाता है।

17-10-81बाप के बने अर्थात् पुरानी देह और देह की दुनिया का सम्बन्ध समाप्त हुआ। इसीलिए इसको मरजीवा जीवन कहते हो। तो पुराने कर्मों का खाता समाप्त हुआ, नया ब्राह्मण जीवन का खाता शुरू हुआ। यह तो सभी जानते और मानते हो ना, कि मरजीवा बने हैं। बने हो, वा बन रहे हो? क्या कहेंगे? मर रहे हैं या मर रहे हैं? जब मर गये, पिछला हिसाब समाप्त हुआ। ब्राह्मण जीवन कर्मबन्धन का जीवन नहीं होता। कर्मयोगी का जीवन होता। मालिक बन कर्म करते तो कर्मबन्धन नहीं हुआ लेकिन कर्मेन्द्रियों के मालिक बन जो चाहो, जैसा कर्म चाहों, जितना समय कर्म करने चाहो वैसे कर्मेन्द्रियों से कराने वाले होंगे। तो ब्राह्मण अर्थात् फ़रिश्ता। कर्मबन्धनी आत्मा नहीं लेकिन सेवा के शुद्ध बन्धन वाली। यह देह सेवा के अर्थ मिली है। आपके कर्मबन्धन के हिसाब किताब के जीवन का हिसाब समाप्त हुआ। यह नया जीवन है।

24-10-81तो हे आशिको, सदा माशूक समान सम्पन्न और सदा चमकीले-स्वरूप में अर्थात् सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित रहो! माशूक को और भी एक बात की मेहनत करनी पड़ती है। जानते हो किस बात की मेहनत करनी पड़ती है? वह भी रमणीक बात है। जो वादा किया है माशूक ने आशिकों के साथ, कि “साथ ले जायेंगे”। तो क्या करते हैं? माशूक है बहुत हल्का और आशिक इतने भारी बन जाते, जो माशूक को ले जाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। तो यह भी जोड़ी अच्छी लगेगी? माशूक कहते हैं – हल्के बन जाओ। तो क्या करते हैं? हल्के होने का साधन जो एक्सरसाइज है, वह करते नहीं। तो हल्के कैसे बने? रूहानी एक्सरसाइज तो जानते हो ना! अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी अव्यक्त फ़रिश्ता, अभी-अभी साकारी कर्मयोगी। अभी-अभी विश्व सेवाधारी। सेकेण्ड में स्वरूप बन जाना, यह है रूहानी एक्सरसाइज। और कौन-सा बोझ अपने ऊपर रखते हैं? वेस्ट की वेट बहुत है इसलिए हल्के नहीं हो सकते। कोई समय के वेस्ट के वेट में है, कोई संकल्पों के और कोई शक्तियों को वेस्ट करते हैं। कोई सम्बन्ध और सम्पर्क वेस्ट अर्थात् व्यर्थ बना लेते हैं। ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकार के वेट बढ़ने के कारण माशूक समान डबल लाइट बन नहीं सकते। सच्चे आशिक की निशानी है – “माशूक के समान” अर्थात् माशूक जो है, जैसा है वैसे समान बनना। तो सभी कौन हो? आशिक तो हो ही लेकिन माशूक समान आशिक हो? समानता ही समीपता लाती है! समानता नहीं तो समीप भी नहीं हो सकते। गायन भी करते हैं कि 16 हज़ार पटरानियाँ थीं। 16 हज़ार में भी नम्बर तो होंगे ना! एक माशूक के इतने आशिक दिखाये तो हैं लेकिन अर्थ नहीं समझते हैं। रूहानियत को भूल गये हैं। तो आज रूहानी माशूक, आशिकों को कहते हैं – “समान बनो” अर्थात् समीप बनो।

29-12-81अभी आवश्यकता है पॉइन्ट रूप बन पॉइन्ट देने की। पॉइन्ट द्वारा पॉइन्ट बताना यह समय अभी नहीं है। लेकिन पॉइन्ट रूप बनकर पॉइन्ट शार्ट में देनी है। तो ऐसा स्वयं को भी शक्तिशाली स्टेज पर सदा लाओ और दूसरों को भी ऐसी स्टेज पर खींचो। जो आपके सामने आते हैं ऐसे अनुभव करे कि किसी ऐसे स्थान पर पहुँच गये हैं, जहाँ जो प्राप्ति चाहिए वह होगी। जैसे स्थूल डाक्टरी द्वारा पेशन्ट को फेथ में लाते हो ना कि

यह डाक्टर बड़ा अच्छा है, यहाँ से शफा मिल जायेगी। ऐसे रूहानी डाक्टरी में भी ऐसी शक्ति-शाली स्टेज हो जो सबका फेथ हो जाए कि यहाँ पहुँचे हैं तो प्राप्ति अवश्य होगी। दोनों ही बातें निकाली हैं ना? दोनों का बैलेन्स हो। वह भी जरूरी है- क्योंकि आजकल के समय अनुसार जो बहुत जन्मों के हिसाब-किताब अर्थात् कर्मभोग हैं वह समाप्त भी जरूर होने हैं। कर्मभोग का हिसाब खत्म करने के लिए स्थूल दवाई और कर्मयोगी बनाने के लिए यह रूहानी दवाई। अभी सब भोग कर खत्म करेंगे। चाहे मंसा द्वारा, चाहे शरीर द्वारा। सभी आत्मायें मुक्तिधाम में जायेंगी ना! अभी न रोगी रहेंगे, न डाक्टर रहेंगे। इसकी प्रैक्टिस अन्त में भी होगी। जो डाक्टर होंगे लेकिन कुछ कर नहीं सकेंगे, इतने पेशन्ट होंगे। बस उस समय सिर्फ अपनी दृष्टि द्वारा, वायब्रेशन द्वारा, उनको टैम्पेरी वरदान द्वारा शान्ति दे सकते हो। मरेंगे भी बहुत। मरने वालों के लिए जलाने का ही समय नहीं होगा। क्योंकि अति में जाना है ना अभी। अति में जाकर अन्त हो जायेगी। अभी के समाचारों के अनुसार भी देखों कोई नई बीमारी फैलती है तो कितनी फास्ट फैलती है। जब तक डाक्टर उस नई बीमारी की दवाई निकाले- तब तक कई खत्म हो जाते हैं। क्योंकि अति में जा रहा है। और जब ऐसा हो तब तो डाक्टर भी समझें कि हमसे भी कोई श्रेष्ठ चीज़ है। अभी तो अभिमान के कारण कहते हैं, आत्मा वगैरा कुछ नहीं है। डाक्टरी ही सब कुछ है। फिर वह भी अनुभव करेंगे। जब कुछ भी कन्ट्रोल नहीं कर पायेंगे तो कहाँ नज़र जायेगी? अभी तो नई-नई बीमारियाँ कई आने वाली हैं। लेकिन यह नई बीमारियाँ नया परिवर्तन लायेगी।

20-1-82प्रीत की रीत क्या है, जानते हो ना? सिर्फ दो बातों की रीत है। और वह भी इतनी सरल है जो सब जानते भी हैं और सब कर भी सकते हैं। वह दो बातें हैं – ‘गीत गाना और नाचना’। इसके सब अनुभवी हो ना? गाना और नाचना तो सबको पसन्द है ना? तो यहाँ करना ही क्या है? अमृतवेले से गीत गाना शुरू करते हो। दिनचर्या में भी उठते ही गीत से हो। तो बाप के वा अपने श्रेष्ठ जीवन की महिमा के गीत गाओ। ज्ञान के गीत गाओ। सर्व प्राप्तियों के गीत गाओ। यह गीत गाना नहीं आता? आता है ना? तो गीत गाओ और खुशियों में नाचो। खुशियों में नाचते-नाचते हर कर्म करो। जैसे स्थूल डांस में भी सारे शरीर की डांस हो जाती है। ड्रिल हो जाती है। भिन्न-भिन्न पोज से डांस करते हो। वैसे खुशी के डांस में भिन्न-भिन्न कर्मों के पोज करते। कभी हाथ से कोई कर्म करते, कभी पाँव से करते हो तो यह काम नहीं करते हो लेकिन भिन्न-भिन्न डांस के पोज करते हो। कभी हाथ की डांस करते हो, कभी पाँव को नचाते हो। तो कर्मयोगी बनना अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार की खुशी में नाचते चलो। बापदादा को वा शमा को वही परवाना पसन्द है जो गाना और नाचना जानता हो। यही प्रीत की रीत है।

22-1-82..... सेवाधारियों को मधुबन से क्या सौगात मिली? प्रत्यक्षफल भी मिला और भविष्य प्रालब्ध भी जमा हुई। तो डबल सौगात हो गई। खुशी मिली, निरन्तर योग के अभ्यासी बने, यह प्रत्यक्षफल मिला। लेकिन इसके साथसाथ भविष्य प्रालब्ध भी जमा हुई। तो डबल चांस मिला। यहाँ रहते सहजयोगी, कर्मयोगी,

निरन्तर योगी का अभ्यास हो गया है। यही संस्कार अब ऐसे पक्के करके जाओ जो वहाँ भी यही संस्कार रहें। जैसे पुराने संस्कार न चाहते भी कर्म में आ जाते हैं ऐसे यह संस्कार भी पक्के करो। तो संस्कारों के कारण यह अभ्यास चलता ही रहेगा। फिर माया विघ्न नहीं डालेगी क्योंकि संस्कार बन गये। इसलिए सदा इन संस्कारों को अन्डरलाइन करते रहना। फ्रेश करते रहना। यहाँ रहते निर्विघ्न रहे? कोई विघ्न तो नहीं आया? कोई मन से भी आपस में टक्कर वगैरा तो नहीं हुआ? संगठन में भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हुए भी “सी फादर” किया या सी ब्रदर-सिस्टर भी हो गया? जो सदा सी फादर करने वाले हैं वे बापदादा के समीप बच्चे हैं। और जो सी फादर के साथ- सी सिस्टर-ब्रदर कर देते वह समीप के बच्चे नहीं, दूर के हैं। तो आप सब कौन हो? समीप वाले हो ना? तो सदा इसी स्मृति में चलते चलो। बाहर रहते हुए भी यही पाठ पक्का करो – “सी फ़ादर या फ़ालो फ़ादर”, फ़ालो फ़ादर करने वाले कभी भी किसी परिस्थिति में डगमग नहीं होंगे क्योंकि फ़ादर कभी डगमग नहीं हुआ है ना। तो सी फ़ादर करने वाले अचल, अडोल, एकरस रहेंगे।

27-3-82.....समान आत्मा अर्थात् एवररेडी आत्मा – साकारी दुनिया और साकारी शरीर में होते हुए भी बुद्धियोग की शक्ति द्वारा सदा ऐसा अनुभव करेगी कि मैं आत्मा चाहे सूक्ष्मवतन में, चाहे मूलवतन में, वहाँ ही बाप के साथ रहती हूँ। सेकण्ड में सूक्ष्मवतन वासी, सेकण्ड में मूलवतनवासी, सेकण्ड में साकार वतन वासी हो कर्मयोगी बन कर्म का पार्ट बजाने वाली हूँ लेकिन अनेक बार अपने को बाप के साथ सूक्ष्मवतन और मूलवतन में रहने का अनुभव करेंगे। फुर्सत मिली और सूक्ष्मवतन व मूलवतन में चले गये। ऐसे सूक्ष्मवतन वासी, मूलवतनवासी की अनुभूति करेंगे जैसे कार्य से फुर्सत मिलने के बाद घर में चले जाते हैं। दफ्तर का काम पूरा किया तो घर में जायेंगे वा दफ्तर में ही बैठे रहेंगे! ऐसे एवररेडी आत्मा बार-बार अपने को अपने घर के निवासी अनुभव करेंगी। जैसे कि घर सामने खड़ा है। अभी-अभी यहाँ, अभी-अभी वहाँ। साकारी वतन के कमरे से निकल मूलवतन के कमरे में चले गये।

13-4-82प्रश्न:- कर्म करते भी कर्म बन्धन से मुक्त रहने की युक्ति क्या है?

उत्तर:- कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। लवलीन आत्मा कर्म करते भी न्यारी रहेगी। कर्मयोगी अर्थात् याद में रहते हुए कर्म करने वाला सदा कर्मबन्धन मुक्त रहता है। ऐसे अनुभव होगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। किसी भी प्रकार का बोझ वा थकावट महसूस नहीं होगी। तो कर्मयोगी अर्थात् कर्म को खेल की रीति से न्यारे होकर करने वाला। ऐसे न्यारे बच्चे कर्मेन्द्रियों द्वारा कार्य करते बाप के प्यार में लवलीन रहने के कारण बन्धनमुक्त बन जाते हैं।

18-4-82कर्म बन्धन से मुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए कर्मयोगी बनो:- सदा हर कर्म करते, कर्म के बन्धनों से न्यारे और बाप के प्यारे – ऐसी न्यारी और प्यारी

आत्मायें अपने को अनुभव करते हो? कर्मयोगी बन, कर्म करने वाले कभी भी कर्म के बन्धन में नहीं आते हैं, वे सदा बन्धनमुक्त-योगयुक्त होते। कर्मयोगी कभी अच्छे वा बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आते। ऐसा नहीं कि कोई अच्छा कर्म करने वाला कनेक्शन में आये तो उसकी खुशी में आ जाओ और कोई अच्छा कर्म न करने वाला सम्बन्ध में आये तो गुस्से में आ जाओ – या उसके प्रति ईर्ष्या वा घृणा पैदा हो। यह भी कर्मबन्धन है। कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाए – स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा, इसका यह पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता। कभी किसी रस में होगा कभी किसी रस में। इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी हो देखो। इसको कहा जाता है – ‘कर्मबन्धन से न्यारे’। क्योंकि ज्ञान का अर्थ है समझ। तो समझ किस बात की? कर्म के बन्धनों से मुक्त होने की समझ को ही ज्ञान कहा जाता है। ज्ञानी कभी भी बन्धनों के वश नहीं होंगे। सदा न्यारे। ऐसे नहीं कभी न्यारे बन जाओ तो कभी थोड़ा सा सेक आ जाए। सदा विकर्माजीत बनने का लक्ष्य रखो। कर्मबन्धन जीत बनना है। यह बहुतकाल का अभ्यास बहुतकाल की प्रालब्ध के निमित्त बनायेगा। और अभी भी बहुत विचित्र अनुभव करेंगे। तो सदा के न्यारे और सदा के प्यारे बनो। यही बाप समान कर्मबन्धन से मुक्त स्थिति है।

27.3.83.....कर्मभोग पर कर्मयोग की विजय – कर्मभोग पर विजय पाने वाले विजयी रत्न हो ना! वे कर्मभोग भोगने वाले होते और आप कर्मयोगी हो। भोगने वाले नहीं हो लेकिन सदा के लिए भस्म करने वाले हो। ऐसा भस्म करते हो जो 21 जन्म कर्मभोग का नाम निशान न रहे। आयेगा तब तो भस्म करेंगे? आयेगा ज़रूर लेकिन आता है भस्म होने के लिए, न कि भोगना के लिए। विदाई लेने के लिए आता है। क्योंकि कर्मभोग को भी पता है कि हम अभी ही आ सकते हैं फिर नहीं आ सकते। इसलिए थोड़ा थोड़ा बीच में चाँस लेता है। जब देखते यहाँ तो दाल गलने वाली नहीं है तो वापस चला जाता।

3.4.83महावीर बच्चे सदा ही तन्दुरुस्त हैं। क्योंकि मन तन्दुरुस्त है, तन तो एक खेल करता है। मन में कोई रोग होगा तो रोगी कहा जायेगा अगर मन निरोगी है तो सदा तन्दुरुस्त है। सिर्फ शेष शैया पर विष्णु के समान ज्ञान का सिमरण कर हर्षित होते। यही खेल है। जैसे साकार बाप विष्णु समान टांग पर टांग चढ़ाए खेल करते थे ना। ऐसे कुछ भी होता है तो यह भी निमित्त मात्र खेल करते। सिमरण कर मनन शक्ति द्वारा और ही सागर के तले में जाने का चाँस मिलता है। जब सागर में जायेंगे तो ज़रूर बाहर से मिस होंगे। तो कमरे में नहीं हो लेकिन सागर के तले में हो। नये-नये रत्न निकालने के लिए तले में गये हो। कर्मभोग पर विजय प्राप्त कर कर्मयोगी की स्टेज पर रहना इसको कहा जाता है – ‘विजयी रत्न’। सदा यही स्मृति रहती कि यह भोगना नहीं

लेकिन नई दुनिया के लिए योजना है। फुर्सत मिलती है ना, फुर्सत का काम ही क्या है? नई योजना बनाना। पलंग भी प्लैनिंग का स्थान बन गया।

25-5-83ब्राह्मण आत्मा अर्थात् हर कर्म में बापदादा को प्रत्यक्ष करने वाली। कर्म की कलम से हर आत्मा के दिल पर, बुद्धि पर, बाप का चित्र वा स्वरूप खींचने वाली रूहानी चित्रकार बने हो ना। अभी ब्रह्मा बाप की, इस सीजन के रिज़ल्ट में बच्चों के प्रति एक आशा है। क्या आशा होगी? बाप की सदा यही आशा रहती कि हर बच्चा अपने कर्मों के दर्पण द्वारा बाप का साक्षात्कार करावे। अर्थात् हर कदम में फ़ालो फ़ादर कर बाप समान अव्यक्त फ़रिश्ता बन कर्मयोगी का पार्ट बजावे। यह आशा पूर्ण करना मुश्किल है वा सहज है?

22.2.84.....“आज बापदादा सभी बच्चों के कम्बाइण्ड रूप को देख रहे हैं। सभी बच्चे भी अपने कम्बाइण्ड रूप को अच्छी रीति जानते हो? एक – श्रेष्ठ आत्मायें, इस अन्तिम पुराने लेकिन अति अमूल्य बनाने वाले शरीर के साथ कम्बाइण्ड हो। सभी श्रेष्ठ आत्मायें इस शरीर के आधार से श्रेष्ठ कार्य और बापदादा से मिलन का अनुभव कर रही हो। है पुराना शरीर लेकिन बलिहारी इस अन्तिम शरीर की है जो श्रेष्ठ आत्मा इसके आधार से अलौकिक अनुभव करती है। तो आत्मा और शरीर कम्बाइन्ड है। पुराने शरीर के भान में नहीं आना है लेकिन मालिक बन इस द्वारा कार्य कराने हैं। इसलिए आत्म-अभिमानि बन, कर्मयोगी बन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराते हैं।

24-2-84..... जब आप सभी निमित्त आत्मायें कर्म के बन्धनों से देह के संस्कार – स्वभाव से न्यारे नहीं होंगे तो औरों को कैसे करेंगे! जैसे शरीर की बीमारी कर्म का भाग है, इसी रीति से अगर कोई भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है तो यह भी कर्म का भोग विघ्न डालता है। जैसे शारीरिक व्याधि कर्म भोग अपनी तरफ बार-बार खींचता है, दर्द होता है तो खींचता है ना। तो कहते हो क्या करें, वैसे तो ठीक है लेकिन कर्मभोग कड़ा है। ऐसे कोई भी विशेष पुराना संस्कार वा स्वभाव वा आदत अपने तरफ खींचती है तो वह भी कर्म भोग हो गया। कर्मभोग कोई भी कर्मयोगी बना नहीं सकेगा।

12.12.84सारे विश्व में सदा दिल खुश आप बच्चे ही हैं। बाकी और सभी कभी न कभी किसी न किसी दिल के दर्द में दुखी हैं। ऐसे दिल के दर्द को हरण करने वाले दुःख हर्ता सुख दाता बाप के सुख स्वरूप आप बच्चे हो। और सभी के दिल के दर्द की पुकार हाय-हाय का आवाज़ निकलता है। और आप दिल-खुश बच्चों की दिल से सदा वाह-वाह का आवाज़ निकलता है। जैसे स्थूल शरीर के दर्द भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं ऐसे आज की मनुष्य आत्माओं के दिल के दर्द भी अनेक प्रकार के हैं। कभी तन के कर्म भोग का दर्द, कभी सम्बन्ध सम्पर्क से दुखी होने का दर्द, कभी धन ज़्यादा आया वा कम हो गया दोनों की चिंता का दर्द, और कभी प्राकृतिक आपदाओं से प्राप्त हुए दुःख का दर्द। कभी अल्पकाल की इच्छाओं की अप्राप्ति के दुःख दर्द, ऐसे एक

दर्द से अनेक दर्द पैदा होते रहते हैं। विश्व ही दुःख दर्द की पुकार करने वाला बन गया है। ऐसे समय पर आप सुखदाई सुख स्वरूप बच्चों का फर्ज क्या है? जन्म-जन्म के दुःख दर्द के कर्ज से सभी को छुड़ाओ। यह पुराना कर्ज दुःख दर्द का मर्ज बन गया है। ऐसे समय पर आप सभी का फर्ज है दाता बन जिस आत्मा को जिस प्रकार के कर्ज का मर्ज लगा हुआ है उनको उस प्राप्ति से भरपूर करो। जैसे तन के कर्मभोग की दुःख दर्द वाली आत्मा को कर्मयोगी बन कर्मयोग से कर्म भोग समाप्त करे, ऐसे कर्मयोगी बनने की शक्ति की प्राप्ति महादान के रूप में दो। वरदान के रूप में दो, स्वयं तो कर्जदार हैं अर्थात् शक्तिहीन ही हैं, खाली हैं। ऐसे को अपने कर्मयोग की शक्ति का हिस्सा दो। कुछ न कुछ अपने खाते से अनेक खाते में जमा करो तब वह कर्ज के मर्ज से मुक्त हो सकते हैं। इतना समय जो डायरेक्ट बाप के वारिस बन सर्व शक्तियों का वर्सा जमा किया है उस जमा किये हुए खाते से फ़राखदिली से दान करो, तब दिल के दर्द की समाप्ति कर सकेंगे। जैसे अन्तिम समय समीप आ रहा है, वैसे सर्व आत्माओं के भक्ति की शक्ति भी समाप्त हो रही है। द्वापर से रजोगुणी आत्माओं में फिर भी दान-पुण्य, भक्ति की शक्ति अपने खातों में जमा थी। इसलिए अपने आत्म-निर्वाह के लिए कुछ न कुछशान्ति के साधन प्राप्त थे। लेकिन अब तमोगुणी आत्मायें इस थोड़े समय के सुख के आत्म-निर्वाह के साधनों से भी खाली हो गई हैं। अर्थात् भक्ति के फल को भी खाकर खाली हो गई हैं। अब नामधारी भक्ति है। फलस्वरूप भक्ति नहीं है। भक्ति का वृक्ष विस्तार को पा चुका है। वृक्ष की रंग-बिरंगी रंगत की रौनक ज़रूर है। लेकिन शक्तिहीन होने के कारण फल नहीं मिल सकता। जैसे स्थूल वृक्ष जब पूरा विस्तार को प्राप्त कर लेता, जड़जड़ीभूत अवस्था तक पहुँच जाता है तो फलदायक नहीं बन सकता है। लेकिन छाया देने वाला बन जाता है। ऐसे भक्ति का वृक्ष भी दिल खुश करने की छाया ज़रूर दे रहा है। गुरु कर लिया, मुक्ति मिल जायेगी। तीर्थयात्रा दान-पुण्य किया, प्राप्ति हो जायेगी। यह दिल खुश करने के दिलासे की छाया अभी रह गई है। “अभी नहीं तो कभी मिल जायेगा!” इसी छाया में बिचारे भोले भक्त आराम कर रहे हैं लेकिन फल नहीं है। इसलिए सबके आत्म-निर्वाह के खाते खाली हैं। तो ऐसे समय पर आप भरपूर आत्माओं का फर्ज है अपने जमा किये हुए हिस्से से ऐसी आत्माओं को हिम्मत हल्लास दिलाना

24-3-85.....आज के दिन सदा अपने को डबल लाइट समझ उड़ती कला का अनुभव करते रहना। कर्मयोगी का पार्ट बजाते भी कर्म और योग का बैलेन्स चेक करना कि कर्म और याद अर्थात् योग दोनों ही शक्तिशाली रहे? अगर कर्म शक्ति-शाली रहा और याद कम रही तो बैलेन्स नहीं। और याद शक्तिशाली रही और कर्म शक्तिशाली नहीं तो भी बैलेन्स नहीं। तो कर्म और याद का बैलेन्स रखते रहना। सारा दिन इसी श्रेष्ठ स्थिति में रहने से अपनी कर्मातीत अवस्था के नजदीक आने का अनुभव करेंगे। सारा दिन कर्मातीत स्थिति वा अव्यक्त फ़रिश्ते स्वरूप स्थिति में चलते फिरते रहना। और नीचे की स्थिति में नहीं आना। आज नीचे नहीं आना, ऊपर ही रहना। अगर कोई कमज़ोरी से नीचे आ भी जाए तो एक दो को स्मृति दिलाए समर्थ बनाए सभी ऊँची स्थिति का अनुभव करना। यह आज की पढ़ाई का होम वर्क है। होम वर्क ज़्यादा है, पढ़ाई कम है।

11.4.85.....सेवा करते हुए सदा अपने को कर्मयोगी स्थिति में स्थित रहने का अनुभव करते हो कि कर्म करते हुए याद कम हो जाती है और कर्म में बुद्धि ज्यादा रहती है! क्योंकि याद में रहकर कर्म करने से कर्म में कभी थकावट नहीं होती। याद में रहकर कर्म करने वाले कर्म करते सदा खुशी का अनुभव करेंगे। कर्मयोगी बन कर्म अर्थात् सेवा करते हो ना! कर्मयोग के अभ्यासी सदा ही हर कदम में वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बनाते हैं। भविष्य खाता सदा भरपूर और वर्तमान भी सदा श्रेष्ठ। ऐसे कर्मयोगी बन सेवा का पार्ट बजाते हो। भूल तो नहीं जाता। मधुबन में सेवाधारी हैं तो मधुबन स्वतः ही बाप की याद दिलाता है। सर्व शक्तियों का खज़ाना जमा किया है ना! इतना जमा किया है जो सदा भरपूर रहेंगे। संगमयुग पर बैटरी सदा चार्ज है। द्वापर से बैटरी ढीली होती। संगम पर सदा भरपूर, सदा चार्ज है। तो मधुबन में बैटरी भरने नहीं आते हो, स्वेज मनाने आते हो। बाप और बच्चों का स्नेह है इसलिए मिलना, सुनना, यही संगमयुग के स्वेज हैं।

20.2.86.....सदा स्वयं को कर्मयोगी अनुभव करते हो? कर्मयोगी जीवन अर्थात् हर कार्य करते याद की यात्रा में सदा रहे। यह श्रेष्ठ कार्य श्रेष्ठ बाप के बच्चे ही करते हैं और सदा सफल होते हैं। आप सभी कर्मयोगी आत्मायें हो ना! कर्म में रहते 'न्यारा और प्यारा' सदा इसी अभ्यास से स्वयं को आगे बढ़ाना है। स्वयं के साथ-साथ विश्व की जिम्मेवारी सभी के ऊपर है। लेकिन यह सब स्थूल साधन हैं। कर्मयोगी जीवन द्वारा आगे बढ़ते चलो और बढ़ाते चलो। यही जीवन अति प्रिय जीवन है। सेवा भी और खुशी भी हो।

10.3.86.....बाप के ऊपर जिम्मेवारी दे दी तो बेफ़िकर हो गये। अपने ऊपर जिम्मेवारी समझने से फ़िकर होता है। जिम्मेवारी बाप की है और मैं निमित्त सेवाधारी हूँ। मैं निमित्त कर्मयोगी हूँ। करावनहार बाप है, निमित्त करनहार मैं हूँ। अगर यह स्मृति हर समय स्वतः ही रहती है तो सदा ही बेफ़िकर बादशाह है।

23.1.87.....हर कर्म करते 'कर्मयोगी आत्मा' अनुभव करते हो? कर्म और योग सदा साथ-साथ रहता है? कर्मयोगी हर कर्म में स्वतः ही सफलता को प्राप्त करता है। कर्मयोगी आत्मा कर्म का प्रत्यक्षफल उसी समय भी अनुभव करता और भविष्य भी जमा करता, तो डबल फ़ायदा हो गया ना। ऐसे डबल फल लेने वाली आत्मायें हो। कर्मयोगी आत्मा कभी कर्म के बन्धन में नहीं फँसेंगी। सदा न्यारे और सदा बाप के प्यारे। कर्म के बन्धन से मुक्त – इसको ही 'कर्मातीत' कहते हैं। कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो जाओ। कर्म से न्यारे नहीं, कर्म के बन्धन में फँसने से न्यारे, इसको कहते हैं – कर्मातीत।

23.1.87.....कर्मयोगी स्थिति अति प्यारी और न्यारी है। इससे कोई कितना भी बड़ा कार्य हो लेकिन ऐसे लगेगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। चाहे कितना भी मेहनत का, सख्त खेल हो, फिर भी खेल में मज़ा आयेगा ना। जब मल्लयुद्ध करते हैं तो कितनी मेहनत करते हैं। लेकिन जब खेल समझकर करते हैं तो हँसते-हँसते करते हैं। मेहनत नहीं लगती, मनोरंजन लगता है। तो कर्मयोगी के लिए कैसा भी कार्य हो लेकिन

मनोरंजन है, संकल्प में भी मुश्किल का अनुभव नहीं होगा। तो कर्मयोगी गुप अपने कर्म से अनेकों का कर्म श्रेष्ठ बनाने वाले, इसी में बिज़ी रहो। कर्म और याद कम्बाइण्ड, अलग हो नहीं सकते।

20.2.87.....अगर किसी भी समय पहले साकार का सहारा याद आया तो नम्बरवन वह हो गया और दूसरा नम्बर बाप हो गया! जो बाप को दूसरे नम्बर में रखतेतो उसको पद क्या मिलेगा – नम्बर वन (एक) वा टू (दो)? सिर्फ सहयोग लेना, स्नेही रहना वह अलग चीज़ है, लेकिन सहारा बनाना अलग चीज़ है। यह बहुत गुह्य बात है। इसको यथार्थ रीति से जानना पड़े। कोई-कोई संगठन में स्नेही बनने के बजाए न्यारे भी बन जाते हैं। डरते हैं – ना मालूम फँस जाएँ, इससे तो दूर रहना ठीक है। लेकिन नहीं। 21 जन्म भी प्रवृत्ति में, परिवार में रहना है ना। तो अगर डर के कारण किनारा कर लेते, न्यारे बन जाते तो वह कर्म-संन्यासी के संस्कार हो जाते हैं। कर्मयोगी बनना है, कर्म-संन्यासी नहीं। संगठन में रहना है, स्नेही बनना है लेकिन बुद्धि का सहारा एक बाप हो, दूसरा न कोई। बुद्धि को कोई आत्मा का साथ वा गुण वा कोई विशेषता आकर्षित नहीं करे। इसको कहते हैं – ‘पवित्रता’।

18.12.87.....नाराज़ अर्थात् न राज़ अर्थात् राज़ को नहीं समझा। अधिकारी बन कर्मन्द्रियों से कर्म कराने का राज़ नहीं समझा। तो नाराज़ ही होगा ना। कर्मातीत कभी नाराज़ नहींहोगा क्योंकि वह कर्मसम्बन्ध और कर्मबन्धन के राज़ को जानता है। कर्म करो लेकिन वशीभूत होकर नहीं, अधिकारी मालिक होकर करो। कर्मातीत अर्थात् अपने पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के बन्धन से भी मुक्त। चाहे पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के फलस्वरूप तन का रोग हो, मन के संस्कार अन्य आत्माओं के संस्कारों से टक्कर भी खाते हों लेकिन कर्मातीत, कर्मभोग के वश न होकर मालिक बन चुक्तु करायेंगे। कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्तु करना - यह है कर्मातीत बनने की निशानी। योग से कर्मभोग को मुस्कराते हुए सूली से काँटा कर भस्म करना अर्थात् कर्मभोग को समाप्त करना है। व्याधि का रूप न बने। जो व्याधि का रूप बन जाता है वह स्वयं सदा व्याधि का ही वर्णन करता रहेगा। मन में भी वर्णन करेगा तो मुख से भी वर्णन करेगा।

10-1-88.....कर्म किया लेकिन कर्म और योग साथ-साथ नहीं रहा। कर्म कर्ता बने लेकिन कर्मयोगी नहीं बने। इसलिए कर्म करते भी, या मनन शक्ति या मग्न स्थिति की शक्ति, दोनों में से एक की अनुभूति सदा रहनी चाहिए। यह दोनों स्थितियाँ शक्तिशाली सेवा कराने के आधार हैं।

14.1.88.....अवज्ञा – एक होती है पाप कर्म करना वा कोई बड़ी भूल करना और दूसरी छोटी-छोटी अवज्ञायें भी होती हैं। जैसे बाप की आज्ञा है – अमृतवेले विधिपूर्वक शक्तिशाली याद में रहो। तो अमृतवेले अगर

इस आज्ञा प्रमाण नहीं चलते तो उसको क्या कहेंगे? आज्ञाकारी या अवज्ञा? हर कर्म कर्मयोगी बनकर के करो, निमित्त भाव से करो, निर्माण बनके करो – यह आज्ञाएं हैं।

22.1.88.....ब्रह्मा बाप की विशेषताओं को देख रहे थे। अगर ब्रह्मा बाप की विशेषताओं का वर्णन करें तो कितनी होंगी? हर कदम में विशेषतायें रहीं। संकल्प में भी सर्व को विशेष बनाने का हर समय उमंग-उत्साह रहा। अपनी वृत्ति द्वारा हर आत्मा को उमंग-उत्साह में लाना – यह विशेषता सदा ही प्रत्यक्ष रूप में देखी। वाणी द्वारा हिम्मत दिलाने वाले, नाउम्मीद को उम्मीद में लाने वाले, निर्बल आत्मा को उड़ती कला की विधि से उड़ाने वाले, सेवा के योग्य बनाने वाले, हर बोल अनमोल, मधुर, युक्तियुक्त थे। ऐसे ही कर्म में बच्चों के साथ हर कर्म में साथी बन कर्मयोगी बनाया। सिर्फ साक्षी होकर देखने वाले नहीं लेकिन स्थूल कर्म के महत्त्व को अनुभव कराने के लिए कर्म में भी साथी बने। जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख बच्चे स्वतः ही करेंगे – इस पाठ को सदा कर्म करके पढ़ाया। सम्बन्ध-सम्पर्क में छोटे बच्चों को भी सम्बन्ध से बच्चों समान बन खुश किया। वानप्रस्थ को भी वानप्रस्थ रूप से अनुभवी बन सम्बन्ध-सम्पर्क से सदा उमंग-उत्साह में लाया। बाल से बाल रूप, युवा से युवा रूप और बुजुर्ग से बुजुर्ग रूप बन सदा आगे बढ़ाया, सदा सम्बन्ध-सम्पर्क से हरेक को अपना-पन अनुभव कराया। छोटा बच्चा भी कहेगा कि “जितना मुझे बाबा प्यार करता, उतना किसको नहीं करता!” तो हर एक को इतना प्यार दिया जो हरेक समझे कि बाबा मेरा है। यह है सम्बन्ध-सम्पर्क की विशेषता। देखने में हर एक आत्मा की विशेषता वा गुण को देखना। सोचने में देखो, सदा जानते हुए कि यह लास्ट नम्बर के दाने हैं लेकिन ऐसी आत्मा के प्रति भी सदा आगे बढ़ें – ऐसा हर आत्मा प्रति शुभ चिन्तक रहे। ऐसी विशेषतायें सभी बच्चों ने अनुभव कीं। इन सभी बातों में समान बनना अर्थात् फ़ालो फ़ादर करना है। यह फ़ालो करना कोई मुश्किल है क्या? इसी को ही स्नेह, इसी को ही रिटर्न देना कहा जाता है।

19.3.88.....स्वयं को कर्मयोगी श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करते हो? कर्मयोगी आत्मा सदा कर्म का प्रत्यक्ष फल स्वतः ही अनुभव करती है। प्रत्यक्षफल – ‘खुशी’ और ‘शक्ति’। तो कर्मयोगी आत्मा अर्थात् प्रत्यक्षफल ‘खुशी’ और ‘शक्ति’ अनुभव करने वाली। बाप सदा बच्चों को प्रत्यक्षफल प्राप्त कराने वाले हैं। अभी-अभी कर्म किया, कर्म करते खुशी और शक्ति का अनुभव किया! तो ऐसी कर्मयोगी आत्मा हूँ - इसी स्मृति से आगे बढ़ते रहो।

31.3.88.....जो बाप ने सुनाया उसको कर्म में कहाँ तक लाया? मन्सा, वाचा, कर्मणा - तीनों की रिज़ल्ट कहाँ तक समझते हो? शक्तिशाली मन्सा, सम्बन्ध-सम्पर्क में कहाँ तक आई? सिर्फ अपने आप बैठ मनन किया- यह स्व-उन्नति के लिए बहुत अच्छा है और करना ही है। लेकिन जिन श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ मन्सा अर्थात् संकल्प शक्तिशाली हैं, शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले हैं। मन्सा शक्ति का दर्पण क्या है? दर्पण है – बोल और कर्म। चाहे अज्ञानी आत्मायें, चाहे ज्ञानी आत्मायें - दोनों के सम्बन्ध-सम्पर्क में बोल और कर्म दर्पण हैं।

अगर बोल और कर्म शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले नहीं हैं तो मन्सा शक्ति का प्रत्यक्ष स्वरूप कैसे समझ में आयेगा? जिसकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ है, उनकी वाचा और कर्मणा स्वतः ही शक्तिशाली शुद्ध होगी, शुभ-भावना वाली होगी। मन्सा शक्तिशाली अर्थात् याद की शक्ति भी श्रेष्ठ होगी, शक्तिशाली होगी, सहजयोगी होंगे। सिर्फ सहज-योगी भी नहीं लेकिन सहज-कर्मयोगी होंगे।

5.12.89.....पांडवों को चिंता है? कमाने की, परिवार को पालने के लिए पैसे की चिंता है? लेकिन चिंता से पैसा कभी नहीं आयेगा। मेहनत करो, कमाई करो। लेकिन चिंता से कभी कमाई में सफल नहीं होंगे। चिंता को छोड़कर कर्मयोगी बनकर काम करो, तो जहाँ योग है वहाँ कार्य कुशल होगा और सफलता होगी। चिंता से कभी पैसा नहीं आयेगा। अगर चिंता से कमाया हुआ पैसा आयेगा भी तो चिंता ही पैदा करेगा। जैसा बीज होगा वैसा ही फल निकलेगा और खुशी-खुशी से काम करके कमाई करेंगे तो वह पैसा भी खुशी दिलायेगा। वह दो रुपया भी दो हज़ार का काम करेगा और वह दो लाख दो रुपये का काम करेगा। इतना फर्क हैं, इसलिए चिंता क्या करेंगे! सच्ची दिल वालों को सच की कमाई मिलती है। बाप भी दाल-रोटी ज़रूर देते हैं। सुस्त रहने वाले को नहीं देंगे। काम तो करना ही पड़ेगा क्योंकि पिछले हिसाब भी तो चुक्ता करने हैं। लेकिन चिंता से नहीं, खुशी से। कोई भी काम करो - योगयुक्त होकर करो। योगी का कार्य सहज और सफल होता है, ऐसा अनुभव है ना! याद में कोई भी काम करते तो थकावट नहीं होती। खुशी-खुशी से करते तो थकते नहीं। मज़बूर होकर करते तो थक जाते हैं। बाप ने डॉयरेक्शन दिया है - योग से हिसाब-किताब चुक्ता करो। तो बाप के डॉयरेक्शन पर खुशी-खुशी से वह काम भी करो, मज़बूरी से नहीं। यह तो मालूम है कि वह बंधन है लेकिन घड़ी-घड़ी कहने से और भी बड़ा कड़ा बंधन हो जायेगा। मातायें बहुत करके कहती हैं - कब तक हमारा बंधन रहेगा? यह भी क्या बंधन बन गया? यह तो मालूम है कि यह बंधन है लेकिन अब यह सोचो कि योग से बंधनमुक्त कैसे बनें - यह भी ज्यादा नहीं सोचो। सोचने से कुछ नहीं होता है, करने से होता है। सोचते-सोचते मानो उसी समय अंतिम घड़ी आ जाए तो क्या होगा? बंधन है, बंधन है यही सोचते जायेंगे तो कहां जायेंगे? पिंजड़े में ही जायेंगे! अंत में अगर बंधन याद रहा तो गर्भ-जेल में जाना पड़ेगा और खुशी-खुशी से जायेंगे तो एडवांसपार्टी में सेवा के लिए जायेंगे, इसलिए कभी भी अपने से तंग नहीं हो। खुश रहो। क्या करें, कैसे करें यह गीत नहीं गाओ। खुशी के गीत गाओ।

13.12.89.....सदा हर कर्म करते हुए अपने को कर्मयोगी आत्मा अनुभव करते हो? कोई भी कर्म करते हुए याद भूल नहीं सकती। कर्म और योग - दोनों कम्बाइण्ड हो जाएं। जैसे कोई जुड़ी हुई चीज़ को अलग नहीं कर सकता, ऐसे कर्मयोगी आत्माएं हो। जैसे शरीर और आत्मा का कम्बाइण्ड रूप है तो उसको जीवन वाला कहते हैं और शरीर, आत्मा से अलग हो जाए तो उसको जीवन समाप्त कहते हैं। तो कर्मयोगी जीवन अर्थात् कर्म योग के बिना नहीं, योग कर्म के बिना नहीं। सदा कम्बाइण्ड। तो योगी जीवन वाले हो वा योग लगाने वाले हो? दो घण्टा योग लगाने वाले योगी तो नहीं हो? अमृतवेले योग लगाया तो योगी हुए और कर्म में आये तो कर्म ही याद

रहा - इसे योगी-जीवन नहीं कहेंगे। याद के बिना कर्म नहीं। जीवन निरंतर होता है, दो घण्टे का जीवन नहीं है। जो योगी जीवन वाले हैं उनका योग स्वतः और सहज है, मेहनत नहीं करनी पड़ती। क्योंकि योग टूटता ही नहीं है तो मेहनत क्या करेंगे! टूटता है तो जोड़ने की मेहनत करेंगे। ऐसा कम्बाइण्ड अनुभव करने वाले कभी माया के वश होकर क्वेश्चन नहीं करेंगे कि योग कैसे लगायें, निरंतर योग कैसे हो? याद करने वाले को कोई भी फरियाद करने की आवश्यकता ही नहीं। बाबा, मेरा यह काम कर देना, यह करा देना, यह संभाल लेना, इसका ताला खोल देना - यह फरियाद है। याद में स्वतः सब कार्य सफल हो जाते हैं। याद करने वाले हो या फरियाद करने वाले हो? बाप के आगे कभी कौनसी फाइल, कभी कौन-सी फाइल रखने वाले तो नहीं? फाइन बनने वाले का कोई फाइल नहीं होता। कर्मयोगी जीवन सर्व प्राप्तियों की जीवन है। कोई अप्राप्ति रह नहीं सकती। क्योंकि दाता के बच्चे हो। दाता के बच्चे सदा भरपूर। दूसरों को कहते हो ना - “योगी जीवन जी के देखो”। खुद अनुभवी हो तब तो कहते हो। अगर जीना ही है तो ‘योगी जीवन’। बापदादा को योगी जीवन वाले बच्चे अति प्रिय हैं, अति समीप हैं।

29.12.89.....आप ब्राह्मणों की जो पढ़ाई है वा मुरलीधर की जो मुरली है उसका सार यह दो शब्द ही हैं - “आना और जाना”। याद की यात्रा का अभ्यास क्या करते हो? कर्मयोगी का अर्थ ही है - मैं अशरीरी आत्मा शरीर के बंधन से न्यारी हूँ, कर्म करने के लिए कर्म में आती हूँ और कर्म समाप्त कर कर्म-सम्बन्ध से न्यारी हो जाती हूँ, सम्बन्ध में रहते हैं, बंधन में नहीं रहते। तो यह क्या हुआ? कर्म के लिए ‘आना’ और फिर न्यारा हो ‘जाना’। कर्म के बन्धन-वश कममें नहीं आते हो लेकिन कर्मेन्द्रियों को अधीन कर अधिकार से कर्म करने के लिए कर्मयोगी बनते हो। इन्द्रियों के कर्म के वशीभूत नहीं हो। कोई भी किसी के वश हो जाता तो वश हुई आत्मा मज़बूर हो जाती है और मालिक बनने वाली आत्मा कभी किससे मज़बूर नहीं होती, अपने ‘स्वमान’ में मज़बूत होती है। कई बच्चे अभी भी कभी-कभी किसी-न-किसी कर्मेन्द्रिय के वश हो जाते हैं, फिर कहते हैं - आज आँख ने धोखा दे दिया, आज मुख ने धोखा दे दिया, दृष्टि ने धोखा दे दिया। परवश होना अर्थात् धोखा खाना और धोखे की निशानी है - दुःख की अनुभूति होना। और धोखा खाना चाहते नहीं हैं लेकिन न चाहते हुए भी कर लेते हैं, इसको ही कहा जाता है- वशीभूत होना। दुनिया वाले कहते हैं - चक्कर में आ गये...चाहते भी नहीं थे लेकिन पता नहीं कैसे चक्कर में आ गये। आप स्वदर्शन-चक्रधारी आत्मा किसी धोखे के चक्कर में नहीं आ सकती क्योंकि स्वदर्शन-चक्र अनेक चक्कर से छुड़ाने वाला है। न सिर्फ अपने को, लेकिन औरों को भी छुड़ाने के निमित्त बनते हैं। अनेक प्रकार के दुःख के चक्करों से बचने के लिए सोचते हैं - इस सृष्टि-चक्र से निकल जायें...। लेकिन सृष्टि चक्र के अन्दर पार्ट बजाते हुए अनेक दुःख के चक्करों से मुक्त हो जीवनमुक्त स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं - यह कोई नहीं जानता है। आप चैलेन्ज करते हो कि हम आपको जीवन में मुक्ति डबल दिला सकते हैं - जीवन भी हो और मुक्ति भी हो, ऐसी चैलेन्ज की है ना? नशे से कहते हो कि जीवनमुक्ति आपका और हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, तो स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात् दुःख के चक्करों से मुक्त रहने वाले

और मुक्त करने वाले। वशीभूत होने वाले नहीं लेकिन अधिकारी बन, मालिक बन सर्व कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने वाले। धोखा खाने वाले नहीं लेकिन औरों को भी धोखे से छुड़ाने वाले। यही अभ्यास करते हो ना – कर्म में आना और फिर न्यारा हो जाना, तो याद का अभ्यास क्या रहा? – आना और जाना। और पढ़ाई अर्थात् ज्ञान का सार क्या है? कर्मातीत बन घर जाना है और फिर राज्य करने का पार्ट बजाने अपने राज्य में आना है। यही ज्ञान का सार है ना। तो 'जाना' और 'आना' – यही ज्ञान और योग है, इसी अभ्यास में दिन-रात लगे हुए हो। बुद्धिमें घर जाने की और फिर राज्य में आने की खुशी है। जैसे मधुबन अपने घर में आते हो तो कितनी खुशी रहती है। जब से टिकेट बुक कराते हो तब से जाना है, जाना है – यह बुद्धि में याद रहता है ना! तो जब मधुबन घर की खुशी है तो आत्मा के घर जाने की भी खुशी है। लेकिन खुशी से कौन जायेगा? जितना सदा यह 'आने' और 'जाने' का अभ्यास होगा। जब चाहो तब अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाओ और जब चाहो तब कर्मयोगी बन जाओ – यह अभ्यास बहुत पक्का चाहिए। ऐसे न हो कि आप अशरीरी बनने चाहो और शरीर का बंधन, कर्म का बंधन, व्यक्तियों का बंधन, वैभवों का बंधन, स्वभाव-संस्कारों का बंधन अपनी तरफ़ आकर्षित करे। कोई भी बंधन अशरीरी बनने नहीं देगा। जैसे कोई टाइट ड्रेस पहनते हैं तो समय पर सेकण्ड में उतारने चाहें तो उतार नहीं सकेंगे, खिंचावट होती है क्योंकि शरीर से चिपटा हुआ है। ऐसे कोई भी बंधन का खिंचाव अपनी तरफ़ खीचेगा। बंधन आत्मा को टाइट कर देता है। इसलिए बापदादा सदैव यह पाठ पढ़ाते हैं – निर्लिप्त अर्थात् न्यारे और अति प्यारे। यह बहुतकाल का अभ्यास चाहिए।

31.12.89.....सदा अपने को विशेष आत्मायें समझते हो? विशेष आत्माओं का कार्य वा सेवा क्या है? विशेष आत्माओं की विशेषता वा सेवा हर कर्म में यही होगी जो उनका एक-एक कर्म विशेषता अनुभव करायेगा। उनकी वृत्ति विशेष होगी, साधारण नहीं होगी। दृष्टि में विशेषता होने के कारण अलौकिक अनुभव होंगे। सबको महसूस होगा कि इनकी दृष्टि में अलौकिकता है, रिवाजी नहीं है। उनका हर कर्म विशेष है, यह अनुभव होगा। साधारण रीति से जो काम-काज के लिए बोल होते हैं, उस बोल में भी साधारणता नहीं होगी, विशेषता होगी। चाहे साधारण कार्य कर रहे हैं – खाना बना रहे हैं, कपड़े धुलाई कर रहे हैं। कोई भी साधारण कार्य कर रहे हैं लेकिन उस कार्य में भी विशेषता अनुभव होगी। क्या विशेषता अनुभव होगी? सभी अनुभव करेंगे कि यह काम तो हाथ से कर रहे हैं लेकिन काम करते हुए भी यह शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हैं, 'कर्मयोगी' हैं। सिर्फ कर्मकर्ता नहीं हैं लेकिन योगयुक्त होकर कर्म कर रहे हैं – यह महसूसता आयेगी। चाहे साधारण रीति से चल रहे हैं, खड़े हैं लेकिन उसकी रूहानी पर्सनैलिटी दूर से अनुभव होगी। जैसे दुनियावी पर्सनैलिटी उनको आकर्षित करती है, अटेन्शन जाता है। ऐसा रूहानी पर्सनैलिटी, प्योरिटी की पर्सनैलिटी, ज्ञानी वा योगी तू आत्मा की पर्सनैलिटी स्वतः आकर्षित करेगी। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा – चाहे बच्चों के साथ सब्जी भी काटते रहे, खेल करते रहे लेकिन पर्सनैलिटी सदा आकर्षित करती रही। तो ऐसे विशेष आत्माओं की भी यही निशानी दिखाई देगी।

31.3.90.....तो ज्ञान सहित रहमदिल आत्मा कभी किसी के ऊपर चाहे गुणों के ऊपर, चाहे सेवा के ऊपर, चाहे किसी भी प्रकार के सहयोग प्राप्त होने के कारण आत्मा पर प्रभावित नहीं हो सकती। क्योंकि बेहद की वैरागी होने के कारण बाप बाप के स्नेह, सहयोग, साथ - इनके सिवाए और कुछ उसको दिखाई नहीं देगा। बुद्धि में आयेगा ही नहीं। तुम्हीं से उठूं, तुम्हीं से सोऊं, तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से सेवा करूं, तुम्हीं साथ कर्मयोगी बनूं - यही स्मृति सदा उस आत्मा को रहती है। भले कोई श्रेष्ठ आत्मा द्वारा सहयोग मिलता भी है लेकिन उसका भी दाता कौन? तो एक बाप की तरफ ही बुद्धि जायेगी ना। सहयोग लो, लेकिन दाता कौन है, यह भूलना नहीं चाहिए। श्रीमत एक बाप की है। कोई निमित्त आत्मा आपको बाप की श्रीमत की स्मृति दिलाती है तो उनकी श्रीमत नहीं कहेंगे, लेकिन बाप की श्रीमत को फॉलो कर औरों को भी फॉलो कराने के लिए स्मृति दिलाती है।

31.12.91.....सदा बाप की ब्लैसिंग स्वतः ही प्राप्त होती रहे - उसकी विधि क्या है? ब्लैसिंग प्राप्त करने के लिए हर समय, हर कर्म में बैलेन्स रखो। जिस समय कर्म और योग दोनों का बैलेन्स होता है तो क्या अनुभव होता है? ब्लैसिंग मिलती है ना। ऐसे ही याद और सेवा दोनों का बैलेन्स है तो सेवा में सफलता की ब्लैसिंग मिलती है। अगर याद साधारण है और सेवा बहुत करते हैं तो ब्लैसिंग कम होने से सफलता कम मिलती है। तो हर समय अपने कर्म-योग का बैलेन्स चेक करो। दुनिया वाले तो यह समझते हैं कि कर्म ही सब कुछ है लेकिन बापदादा कहते हैं कि कर्म अलग नहीं, कर्म और योग दोनों साथ-साथ हैं। ऐसे कर्मयोगी कैसा भी कर्म होगा उसमें सहज सफलता प्राप्त करेंगे। चाहे स्थूल कर्म करते हो, चाहे अलौकिक करते हो। क्योंकि योग का अर्थ ही है मनबुद्धि की एकाग्रता। तो जहाँ एकाग्रता होगी वहाँ कार्य की सफलता बंधी हुई है। अगर मन और बुद्धि एकाग्र नहीं हैं अर्थात् कर्म में योग नहीं है तो कर्म करने में मेहनत भी ज्यादा, समय भी ज्यादा और सफलता बहुत कम। कर्मयोगी आत्मा को सर्व प्रकार की मदद स्वतः ही बाप द्वारा मिलती है। ऐसे कभी नहीं सोचो कि इस काम में बहुत बिज़ी थे इसलिए योग भूल गया। ऐसे टाइम पर ही योग आवश्यक है। अगर कोई बीमार कहे कि बीमारी बहुत बड़ी है इसीलिए दवाई नहीं ले सकता तो क्या कहेंगे? बीमारी के समय दवाई चाहिए ना। तो जब कर्म में ऐसे बिजी हो, मुश्किल काम हो उस समय योग, मुश्किल कर्म को सहज करेगा। तो ऐसे नहीं सोचना कि यह काम पूरा करेंगे फिर योग लगायेंगे। कर्म के साथ-साथ योग को सदा साथ रखो। दिन- प्रतिदिन समस्यायें, सरकमस्टांश और टाइट होने हैं, ऐसे समय पर कर्म और योग का बैलेन्स नहीं होगा तो बुद्धि जजमेन्ट ठीक नहीं कर सकती। इसलिए योग और कर्म के बैलेन्स द्वारा अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ।

31.12.91.....सभी फास्ट जाकर फर्स्ट आने वाले हो ना? नम्बरवन जाने वाली आत्माओं की विशेषता क्या होगी? जो बाप की विशेष श्रीमत है कि व्यर्थ को देखते हुए भी नहीं देखो, व्यर्थ बातें सुनते हुए भी नहीं सुनो - इस विधि वाला फास्ट और फर्स्ट सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। तो ऐसे प्रैक्टिकल धारणा अनुभव होती है या थोड़ा-थोड़ा कभी सुन लेते हो? कभी देख लेते हो? तीव्र पुरु- षार्थी के सामने सदा मंजिल होती है। वो यहाँ- वहाँ कभी नहीं देखेगा। सदा मंजिल की ओर देखेगा। फालो किसको करना है? ब्रह्मा बाप को। क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल है। कोई कितना भी बिजी हो लेकिन ब्रह्मा बाप से ज्यादा बिजी और कोई हो ही नहीं सकता। कितनी भी जिम्मेवारी हो लेकिन ब्रह्मा बाप जितनी जिम्मेवारी कोई के ऊपर नहीं है। इसलिए कोई भी कितना भी बिजी हो, कितनी भी जिम्मेवारी हो, लेकिन ब्रह्मा बाप जितना नहीं। तो ब्रह्मा बाप कर्मयोगी कैसे बने?

ब्रह्मा बाप ने अपने को करनहार समझकर कर्म किया, करावनहार नहीं समझा। करावनहार बाप को समझने से जिम्मेवारी बाप की हो जाती है और स्वयं सदा कितने भी कार्य करे, कैसा भी कार्य करे - हल्के रहेंगे। तो आप सबने अपनी बुद्धि की तार बापदादा को दे दी है या कभी-कभी अपने हाथ में ले लेते हो? चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है और आप निमित्त कर्म क्या करते हो? डांस कर रहे हो। कितना भी बड़ा कार्य हो लेकिन ऐसे समझो जैसे नचाने वाला नचा रहा है और हम नाच रहे हैं तो थकेंगे नहीं। कन्फ्यूज नहीं होंगे। एवरहेप्पी रहेंगे। इसलिए बापदादा सदा कहते हैं कि सदा नाचो और गाओ। क्योंकि ब्राह्मण जीवन में कोई बोझ नहीं है। ब्राह्मण जीवन अति श्रेष्ठ है। लौकिक जॉब भी करते हो तो डायरेक्शन प्रमाण करते हो, बोझ नहीं है। क्योंकि बाप डायरेक्शन के साथ-साथ एक्स्ट्रा मदद भी देते हैं।

18.1.92.....वैसे आज के दिन आप सभी आवाज़ से परे जाते हो और बापदादा जो आवाज़ से परे हैं उनको आवाज़ में लाते हो। यह प्रैक्टिस बहुत अच्छी है - अभी-अभी बहुत आवाज़ में हो, चाहे डिस्कस कर रहे हो, ऐसे वातावरण में भी संकल्प किया आवाज़ से परे हो जाएं तो सेकेण्ड में आवाज़ से न्यारे फरिश्ता स्थिति में टिक जाओ। अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी फरिश्ता अर्थात् आवाज़ से परे अव्यक्त स्थिति। यह नहीं कि वातावरण बहुत आवाज़ का है, इसलिए आवाज़ से परे होने में टाइम चाहिए। नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए। क्योंकि लास्ट समय चारों ओर व्यक्तियों का, प्रकृति का जलचल ओर आवाज़ होगा - चिल्लाने का, हिलाने का - यही वायुमण्डल होगा। ऐसे समय पर ही सेकेण्ड में अव्यक्त फरिश्ता सो निराकारी अशरीरी आत्मा हूँ - यह अभ्यास ही विजयी बन-येगा। यह स्मृति सिमरणी अर्थात् विजय माला में लायेगी। इसलिए यह अभ्यास अभी से अति आवश्यक है। इसको कहते हैं - प्रकृतिजीत, मायाजीत। मालिक बन चाहे तो मुख का साज़ बजाएं, चाहें तो कानों द्वारा सुनें, अगर नहीं चाहें तो सेकेण्ड में फुलस्टॉप। आधा स्टॉप भी नहीं, फुलस्टॉप। यही है ब्रह्मा बाप के समान बनना। स्नेह की निशानी है समान बनना। हरेक कहते मेरा स्नेह ज्यादा है। कोई से भी पूछेंगे किसका स्नेह ब्रह्मा बाप से ज्यादा है? तो सभी यही कहेंगे कि मेरा। तो जैसे स्नेह में समझते हो - मेरा स्नेह ज्यादा है, ऐसे समान बनने में भी तीव्र पुरुषार्थ करो कि मैं नम्बरवन के साथ, युगल दाने के साथ दाना माला में पिरोया जाऊं। इसको कहते हैं स्नेह का रिटर्न दिया। स्नेह में मणुबन में भागने में तो होशियार हो। सभी जल्दी-जल्दी भाग कर पहुँच गये हो ना। जैसे यह प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाया, ऐसे समान बनने का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाओ। स्थान छोटा है और दिल बड़ी है इसलिए उल्हना नहीं देना कि जगह नहीं मिली। जब दिल बड़ी है तो प्यार में कोई भी तकलीफ, तकलीफ नहीं लगती है। बापदादा को बच्चों की तकलीफ भी देखी नहीं जाती। हाँ योग लगाओ तो स्थान तैयार हो जायेगा।

13.2.92.....अगर आप किसी को भी कहते हो हम तो जीवनमुक्ति में आयेंगे। तो वो समझते हैं कि ये तो चक्कर में आने वाले हैं और हम चक्कर से मुक्त हो करके लीन हो जाएंगे। क्योंकि लीन होना अर्थात् बंधनों से मुक्त हो जाना। इसलिए वे लीन अवस्था को बहुत ऊंचा मानते हैं। समा गये, लीन हो गये। लेकिन आप जानते हो कि वह जो लीन अवस्था कहते हैं, ड्रामा अनुसार प्राप्त किसको भी नहीं होती है। बाप समान बन सकते हैं लेकिन बाप में समा नहीं जाते हैं। उन्हीं की लीन अवस्था में कोई अनुभूति नहीं, काई प्राप्ति नहीं। और आप लीन भी हैं और अनुभूति और प्राप्ति भी हैं। आप चैलेन्ज कर सकते हो कि जिस लीन अवस्था या समा जाने की स्थिति के लिए आप प्रयत्न कर रहे हो लेकिन हम जीते जी समा जाना वा लीन होना उसकी अनुभूति अभी कर रहे हैं। जब लवलीन हो जाते हो, स्नेह में समा जाते हो तो और कुछ याद रहता है? बाप और मैं समान, स्नेह में समाए हुए। सिवाए बाप के और कुछ है ही नहीं तो दो से मिलकर एक हो जाते हैं। समान बनना अर्थात् समा जाना, एक

हो जाना। तो ऐसे अनुभव है ना ? कर्म योग की स्थिति में ऐसे लीन का अनु- भव कर सकते हो ? क्या समझते हो ? कर्मयोगी स्थिति अलग बैठ करके लीन हो सकते हो ? मुश्किल है ? कर्म भी करो और और लीन भी रहो - हो सकता है ? कर्म करने के लिए नीचे नहीं आना पड़ेगा ? कर्म करते हुए भी लीन हो सकते हो ? इतनेहोशियार हो गये हो ? कर्मयोगी बनने वाले को कर्म में भी साथ होने के कारण एक्स्ट्रा मदद मिल सकती है। क्योंकि एक से दो हो गये, तो काम बट जायेगा ना। अगर एक काम कोई एक करे और दूसरा साथी बन जाये, तो वह काम सहज होगा या मुश्किल होगा ? हाथ आपके हैं, बाप तो अपने हाथ पाँव नहीं चलायेंगे ना। हाथ आपके हैं लेकिन मदद बाप की है तो डबल फोर्स से काम अच्छा होगा ना। काम भल कितना भी मुश्किल हो लेकिन बाप की मदद है ही सदा उमंग-उत्साह, हिम्मत, अथकपन की शक्ति देने वाली। जिस कार्य में उमंग-उत्साह वा अथकपन होता है वह काम सफल होगा ना। तो बाप हाथों से काम नहीं करते लेकिन यह मदद देने का काम करते हैं। तो कर्मयोगी जीवन अर्थात् डबल फोर्स से कार्य करने की जीवन। आप और बाप, प्यार में कोई मुश्किल वा थकावट फील नहीं होती। प्यार अर्थात् सब कुछ भूल जाना। कैसे होगा, क्या होगा, ठीक होगा वा नहीं होगा - यह सब भूल जाना। हुआ ही पड़ा है। जहाँ परमात्म हिम्मत है, कोई आत्मा की हिम्मत नहीं है। तो जहाँ परमात्म हिम्मत है, मदद है, वहाँ निमित्त बनी आत्मा में हिम्मत आ ही जाती है। और ऐसे साथ का अनुभव करने वाले मदद के अनुभव करने वाले के सदा संकल्प क्या रहते हैं - नथिंग न्यु, विजय हुई पड़ी है, सफलता है ही है। यह है सच्चे प्रेमी की अनुभूती। जब हृद के आशिक ये अनुभव करते हैं कि जहाँ है वहाँ तू ही तू है। वह सर्वशक्तिवान न ही है लेकिन बाप सर्वशक्तिवान है। साकार शरीरधारी नहीं है। लेकिन जब चाहे, जहाँ चाहे, सेकेण्ड में पहुँच सकते हैं। ऐसे नहीं समझो कि कर्मयोगी जीवन में लवलीन अवस्था नहीं हो सकती। होती है। साथ का अनुभव अर्थात् लव का प्रैक्टिकल सबूत साथ है। तो सहजयोगी सदा के योगी हो गये ना !

8.4.92.....यह चाहिए चाहिए का गीत कितने समय का है? गीत का भी 3 वा 5 मिनट टाइम होता है ना। तपस्या वर्ष में दृढ़ संकल्प किया या संकल्प किया? दृढ़ता की निशानी है सफलता। फिर तो इस वर्ष और फोर्स की तपस्या चाहिए ना। या सेवा करनी है? दोनों नहीं कर सकते हो? आपका कर्मयोगी टाइटिल नहीं है योगी हैं? वैसे देखा जाये तो सेवा उसको ही कहा जाता है जिसमें स्व और सर्व की सेवा समाई हुई हो। दूसरे की सेवा करें और अपनी सेवा में अलबेले हो जाएं तो उसको वास्तव में यथार्थ सेवा नहीं कहेंगे। सेवा की परिभाषा ही है - सेवा के मेवे मिलते हैं। सेवा अर्थात् मेवा - फ्रुट (Fruit), प्रत्यक्षफल। सेवा करो, मेवा खाओ। अगर स्व के तरफ अलबेले बन जाते हो तो वह सेवा मेहनत है, खर्चा है, थकावट है, लेकिन प्रत्यक्षफल सफलता नहीं है।

दुःख की लहर से मुक्त होने के लिये कर्मयोगी बनकर कर्म करो

24.9.92.....सभी अपने को श्रीमत पर चलने वाली श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? नाम ही है श्रीमत। श्री का अर्थ है श्रेष्ठ। तो श्रेष्ठ मत पर चलने वाले श्रेष्ठ हुए ना। यह रूहानी नशा, बेहद का नशा रहता है ना। या कभी-कभी हृद का नशा भी आ जाता है? इसलिये सदा अपने को देखो-चलते-फिरते कोई भी कार्य करते बेहद का रूहानी नशा रहता है? चाहे कर्म मजदूरी का भी हो, साधारण कर्म करते अपने श्रेष्ठ नशे को भूलते तो नहीं हो? घर में रहने वाली, घर की सेवा करने वाली साधारण मातायें हैं-यह याद रहता है या जगत माता हूँ, जगत का कल्याण करने के निमित्त यह कार्य कर रही हूँ-यह याद रहता है? जिसे यह रूहानी नशा होगा उसकी निशानी क्या होगी? वह खुशी में रहेगा, कोई भी कर्म करेगा लेकिन कर्म के बन्धन में नहीं आयेगा, न्यारा और

प्यारा होगा। कर्म के बन्धन में आना अर्थात् कर्म में फंसना और जो न्यारा-प्यारा होता है वह कर्म करते भी कर्म के बन्धन में नहीं आता, कर्मयोगी बन कर्म करता है। अगर कर्म के बन्धन में आयेंगे तो खुशी गायब हो जायेगी। क्योंकि कर्म अच्छा नहीं होगा। लेकिन कर्मयोगी बनकर कर्म करने से दुःख की लहर से मुक्त हो जायेंगे। सदा न्यारा होने के कारण प्यारे रहेंगे। तो समझा, कैसे रहना है? कर्मबन्धन मुक्त। कर्म का बन्धन खींचे नहीं, मालिक होकर कर्म कराये। मालिक न्यारा होता है ना। मालिक होकर कर्म कराना—इसे कहा जाता है बन्धन-मुक्त। ऐसी आत्मा सदा स्वयं भी खुश रहेगी और दूसरों को भी खुशी देगी। ऐसे रहते हो? सुनते तो बहुत हो, अभी जो सुना है वह करना है। करेंगे तो पायेंगे। अभी-अभी करना, अभी-अभी पाना। माताओं को कभी दुःख की लहर आती है? कभी मन से रोती हो? मन का रोना तो सबको आ सकता है। तो श्रीमत है—सदा खुश रहो। श्रीमत यह नहीं है कि कभी-कभी रो लो। बहुतकाल मन से वा आंखों से रोया, रावण ने रुलाया ना। लेकिन अभी बाप के बने हो खुशी में नाचने के लिये, रोने के लिये नहीं। रोना खत्म हो गया। दुःख की लहर—यह भी रोना है। यह मन का रोना हो गया। सुखदाता के बच्चे सदा सुख में झूलते रहो। दुःख की लहर आ नहीं सकती। भूल जाते हो तब आती है। इसलिये अभूल बनो। अभी जो भी कमजोरी हो उसे महायज्ञ में स्वाहा करके जाना। साथ में लेकर नहीं जाना, यहाँ ही स्वाहा करके जाओ। स्वाहा करना आता है ना। दृढ़ संकल्प करना अर्थात् स्वाहा करना। अच्छा! सभी की आश पूरी हुई। यह भी भाग्यवान हो जो ऐसे मिलते रहते हो। आगे चलकर क्या होता है.....। यह भी भाग्य जितना मिलता है उतना लेते चलो। उड़ते जाओ। यही याद रखना कि महान् हैं और महान् बनाना है।

30.11.92.....जो कभी-कभी याद में रहता है उसकी मूर्ति की पूजा भी कभी-कभी होती है और जो सदा याद में रहते हैं, सदा श्रीमत पर चलते हैं उनकी पूजा भी सदा होती है। जो हर कर्म में कर्मयोगी बनता है, उसकी पूजा भी हर कर्म की होती है। बड़े-बड़े मन्दिरों में हर कर्म की पूजा होती है—भोजन की भी होगी, झूले की भी होगी, सोने की भी होगी तो उठने की भी होगी। तो जितनी याद उतना राज्य, उतनी पूजा। अभी अपने आपसे पूछो कि मैं कितना याद में रहता हूँ?

20.12.92.....एक है—सेवा प्रति याद में बैठना और दूसरा है—स्व की कमजोरी को भरने लिए याद में बैठना। दोनों में अन्तर है। जैसे—अभी भी विश्व पर अशान्ति का वायुमण्डल है तो सेवा प्रति संगठित रूप में विशेष याद के प्रोग्राम बनाते हो, वह अलग बात है। वह तो दाता बन देने के लिए करते हो। वह मांगने के लिए नहीं करते हो, औरों को देने के लिए करते हो। तो वह हुआ सेवा प्रति। लेकिन अपनी कमजोरी भरने के प्रति समय पर विशेष याद करते हो और वैसे अलबेलेपन की याद होती है। याद होती है, भूलते नहीं हो लेकिन अलबेलेपन की याद आती है—हम तो हैं ही बाबा के, और है ही कौन। लेकिन यथार्थ शक्तिशाली याद का प्रत्यक्ष-प्रमाण समय प्रमाण शक्ति हाज़िर हो जाए। कितना भी कोई कहे—मैं तो याद में रहती ही हूँ वा रहता ही हूँ, लेकिन याद का स्वरूप है सफलता। ऐसे नहीं—जिस समय याद में बैठते उस समय खुशी भी अनुभव होती, शक्ति भी अनुभव होती और जब कर्म में, सम्बन्धसम्पर्क में आते उस समय सदा सफलता नहीं होती। तो उसको कर्मयोगी नहीं कहा जायेगा। शक्तियां शस्त्र हैं और शस्त्र किस समय के लिए होता है? शस्त्र सदा समय पर काम में लाया जाता है। यथार्थ याद अर्थात् सर्व शक्ति सम्पन्न। सदा शक्तिशाली शस्त्र हो। परिस्थिति रूपी दुश्मन आया और शस्त्र काम में नहीं आये, तो इसको क्या कहा जायेगा? शक्तिशाली या शस्त्रधारी कहेंगे? हर कर्म में याद अर्थात् सफलता हो। इसको कहा जाता है कर्मयोगी। सिर्फ बैठने के टाइम के योगी नहीं हो। आपके योग का नाम बैठा-बैठा योगी है या कर्मयोगी नाम है? कर्मयोगी हो ना। निरन्तर कर्म है और निरन्तर कर्मयोगी हो। जैसे कर्म के

बिना एक सेकेण्ड भी रह नहीं सकते, चाहे सोये हुए हो—तो वह भी सोने का कर्म कर रहे हो ना। तो जैसे कर्म के बिना रह नहीं सकते वैसे हर कर्म योग के बिना कर नहीं सकते। इसको कहा जाता है कर्मयोगी। ऐसे नहीं समझो कि बात ही ऐसी थी ना, सरकमस्टांश ही ऐसे थे, समस्या ही ऐसी थी, वायुमण्डल ऐसा था। यही तो दुश्मन है और उस समय कहो—दुश्मन आ गया, इसलिए तलवार चला न सके, तलवार काम में लगा नहीं सके, या तलवार याद ही नहीं आये, या तलवार ने काम नहीं किया—तो ऐसे को क्या कहा जायेगा? शस्त्रधारी? शक्ति-सेना हो। तो सेना की शक्ति क्या होती है? शस्त्र। और शस्त्र हैं सर्व शक्तियां। तो रिजल्ट क्या देखा? मैजारिटी सदा समय पर सर्व शक्तियों को ऑर्डर पर चला सकें—इसमें कमी दिखाई दी। समझते भी हैं लेकिन सफलता-स्वरूप में समय प्रमाण या तो शक्तिहीन बन जाते हैं या थोड़ा-सा असफलता का अनुभव कर फौरन सफलता की ओर चल पड़ते हैं। तीन प्रकार के देखे।

एक—उसी समय दिमाग द्वारा समझते हैं कि यह ठीक नहीं है, नहीं करना चाहिए लेकिन उस समझ को शक्तिस्वरूप में बदल नहीं सकते।

दूसरे हैं—जो समझते भी हैं लेकिन समझते हुए भी समय वा समस्या पूरी होने के बाद सोचते हैं। वह थोड़े समय में सोचते हैं, वह पूरा होने के बाद सोचते।

तीसरे—महसूस ही नहीं करते कि यह रांग है, सदा अपने रांग को राइट ही सिद्ध करते हैं। अर्थात् सत्यता की महसूसता-शक्ति नहीं। तो अपने को चेक करो कि मैं कौन हूँ?

10.03.96आज बापदादा ने चारों ओर के सेवा की गति देखी। साथ में स्व-पुरुषार्थ की भी गति को देखा। तो सेवा और स्व-पुरुषार्थ दोनों के गति में क्या देखा होगा? आप जानते हो? सेवा की गति तीव्र है वा स्व-पुरुषार्थ की गति तीव्र है? क्या है? दोनों का बैलेन्स है? नहीं है? तो विश्व परिवर्तन की आत्माओं को वा प्रकृति को ब्लैसिंग कब मिलेगी? क्योंकि बैलेन्स से जो आप सभी को ब्लैसिंग मिली है वह औरों को मिलेगी। तो अन्तर क्यों? कहलाते क्या हो – कर्मयोगी वा सिर्फ योगी? कर्मयोगी हो ना! पक्का है ना? तो सेवा भी कर्म है ना! कर्म में आते हो, बोलते हो वा दृष्टि देते हो, कोर्स कराते हो, म्युज़ियम समझाते हो—यह सब श्रेष्ठ कर्म अर्थात् सेवा है। तो कर्मयोगी अर्थात् कर्म के समय भी योग का बैलेन्स। लेकिन आप खुद ही कह रहे हो कि बैलेन्स कम हो जाता है। इसका कारण क्या? अच्छी तरह से जानते भी हो, नई बात नहीं है। बहुत पुरानी बात है। बापदादा ने देखा कि सेवा वा कर्म और स्व-पुरुषार्थ अर्थात् योगयुक्त। तो दोनों का बैलेन्स रखने के लिए विशेष एक ही शब्द याद रखो—वह कौनसा? बाप 'करावनहार' है और मैं आत्मा, (मैं फलानी नहीं) आत्मा 'करनहार' हूँ। तो करन- 'करावनहार', यह एक शब्द आपका बैलेन्स बहुत सहज बनायेगा। स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स या गति कभी भी कम होती है, उसका कारण क्या? 'करनहार' के बजाए मैं ही करने वाली या वाला हूँ, 'करनहार' के बजाए अपने को 'करावनहार' समझ लेते हो। मैं कर रहा हूँ, जो भी जिस प्रकार की भी माया आती है, उसका गेट कौन सा है? माया का सबसे अच्छा सहज गेट जानते तो हो ही – 'मैं'। तो यह गेट अभी पूरा बन्द नहीं किया है। ऐसा बन्द करते हो जो माया सहज ही खोल लेती है और आ जाती है। अगर 'करनहार' हूँ तो कराने वाला अवश्य याद आयेगा। कर रही हूँ, कर रहा हूँ, लेकिन कराने वाला बाप है। बिना 'करावनहार' के 'करनहार' बन नहीं सकते हैं। डबल रूप से 'करावनहार' की स्मृति चाहिए। एक तो बाप 'करावनहार' है और दूसरा मैं आत्मा भी इन

कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ। इससे क्या होगा कि कर्म करते भी कर्म के अच्छे या बुरे प्रभाव में नहीं आयेगे। इसको कहते हैं—कर्मातीत अवस्था।

13.2.99.....बापदादा ने सबसे पहला व्रत कौन-सा दिया? जब स्मृति का तिलक लगा तो पहला-पहला व्रत कौन सा लिया? याद है ना? सम्पूर्ण पवित्र भव। बाप ने कहा और बच्चों ने धारण किया। तो पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लेकिन ब्रह्मा समान हर संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता – इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी और ब्रह्माचारी। हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्त्व हो। हर कर्म में, कर्म और योग अर्थात् कर्मयोगी का अनुभव हो – इसको कहा जाता है ब्रह्माचारी। ब्रह्मा बाप को देखा हर बोल महावाक्य, साधारण वाक्य नहीं क्योंकि आपका जन्म ही साधारण नहीं, अलौकिक है। अलौकिकता का अर्थ ही है पवित्रता। तो रोज़ रात को अपना टीचर बनकर चेक करो और अपने को परसेन्टेज के प्रमाण अपने आपको हीमाक्स दो। बनना 100 परसेन्ट है। लेकिन हर रोज़ अपने आपको देखो, दूसरे को नहीं देखना। बापदादा ने देखा है कि अपने बजाए दूसरों को देखने लग जाते हैं, वह सहज होता है। तो अपने को देखो कि आज के दिन संकल्प, बोल और कर्म में कितनी परसेन्ट रही?

6.8.94.....(sandesh)तुम बच्चों की एक्सरसाइज़ कौन सी है? मन की एक्सरसाइज़ तुम लोगों को आती है? मन की एक्सरसाइज़ उसी प्रकार इज़ी हो जाए जैसे शरीर की। जैसे हाथ को जहाँ इशारा देंगे वहाँ टिक जायेगा, उसी प्रकार मन व बुद्धि भी ऐसी एक्सरसाइज़ के अनुभवी हो जाएं तो जहाँ भी जिस स्थिति में जितनासमय स्थित होना चाहो हो जाओ—कभी बीजरूप, कभी फ़रिश्ता रूप, कभी कर्मयोगी।

23.10.99.....याद निरन्तर है, ऐसे ही सेवा भी निरन्तर है। अपने को निरन्तर सेवाधारी अनुभव करते हो? या 8-10 घण्टे के सेवाधारी हैं? यह ब्राह्मण जन्म ही याद और सेवा के लिए है। और कुछ करना है क्या? यही है ना! हर श्वास, हर सेकण्ड याद और सेवा साथ-साथ है या सेवा के घण्टे अलग हैं और याद के घण्टे अलग हैं? नहीं है ना! अच्छा, बैलेन्स है? अगर 100 परसेन्ट सेवा है तो 100 परसेन्ट ही याद है? दोनों का बैलेन्स है? अन्तर पड़ जाता है ना? कर्म योगी का अर्थ ही है - कर्म और याद, सेवा और याद - दोनों का बैलेन्स समान, समान होना चाहिए। ऐसे नहीं कोई समय याद ज़्यादा है और सेवा कम, या सेवा ज़्यादा है याद कम। *जैसे आत्मा और शरीर जब तक स्टेज पर है तो साथ-साथ है ना। अलग हो सकते हैं? ऐसे याद और सेवा साथ-साथ रहे। याद अर्थात् बाप समान, स्व के स्वमान की भी याद।* जब बाप की याद रहती है तो स्वतः ही स्वमान की भी याद रहती है। अगर स्वमान में नहीं रहते तो याद भी पावरफुल नहीं रहती।

15.11.99.....अभी समय अनुसार सिर्फ अपने पुरुषार्थ में संकल्प और समय दो, साथ-साथ दाता बन विश्व को भी सहयोग दो। अपना पुरुषार्थ तो सुनाया - अमृतवेले ही यह सोचो कि – ‘मैं आज्ञाकारी बच्चा हूँ!’ हर कर्म के लिए आज्ञा मिली हुई है। उठने की, सोने की, खाने की, कर्मयोगी बनने की। हर कर्म की आज्ञा मिली हुई है। **आज्ञाकारी बनना यही बाप समान बनना है।**

15.12.99.....आपके जड़ चित्र पूजे जाते हैं। कोई भी आत्माओं की ऐसे विधिपूर्वक पूजा नहीं होती। जैसे पूज्य आत्माओं की विधिपूर्वक पूजा होती है तो सोचो ऐसे विधिपूर्वक और किसकी पूजा होती है! हर कर्म की

पूजा होती है क्योंकि कर्मयोगी बनते हो। तो पूजा भी हर कर्म की होती है। चाहे धर्म आत्मायें या महान आत्माओं को साथ में मन्दिर में भी रखते हैं लेकिन विधिपूर्वक पूजा नहीं होती।

16.12.2000.....तो बापदादा कहते हैं क्या साइलेन्स की शक्ति से, साइलेन्स की लाइट से आप कर्म नहीं कर सकते? नहीं कर सकते? इन्जीनियर और साइंस वाले बैठे हैं ना! तो आप भी एक रूहानी रोबोट की स्थिति तैयार करो। जिसको कहेंगे रूहानी कर्मयोगी, फ़रिश्ता कर्मयोगी। पहले आप तैयार हो जाना। इन्जीनियर हैं, साइंस वाले हैं तो पहले आप अनुभव करना। करेंगे? कर सकते हैं? अच्छा, ऐसे प्लैन बनाओ। बापदादा ऐसे रूहानी चलते फिरते कर्मयोगी फ़रिश्ते देखने चाहते हैं। अमृतवेले उठो, बापदादा से मिलन मनाओ, रूह-रूहान करो, वरदान लो। जो करना है वह करो। लेकिन बापदादा से रोज़ अमृतवेले 'कर्मयोगी फ़रिश्ता भव' का वरदान लेके फिर कामकाज में आओ। यह हो सकता है?

4.11.2001.....आज इस घड़ी जो भी बच्चा जो भी वरदान चाहे वह वरदान मिलेगा। सहज मिलेगा लेकिन इस वरदान को रोज़ अमृतवेले और कर्मयोगी स्थिति में बार-बार दिल से याद करना। दिलशिकस्त नहीं होना। वरदान प्राप्त है सिर्फ जैसे स्थूल नयनों के बीच में निरन्तर बिन्दी चमकती है ना! ऐसे सदा नयनों में बाप बिन्दी को समाकर रखना। रख सकते हो या मुश्किल है? (सहज है) तो जैसे स्थूल बिन्दी निरन्तर है, ऐसे नयनों में निरन्तर बाप बिन्दी भी समाया हुआ हो। समा लिया? फिट हो गया? निकल तो नहीं जायेगा? अगर नयनों में निरन्तर बाप बिन्दी समाया हुआ है तो और किसी तरफ भी नयन आकर्षित नहीं होंगे। मेहनत से छूट जायेंगे। और तरफ नज़र जायेगी ही नहीं। बिल्कुल सेफ हो जायेंगे। कुछ भी हो जाए लेकिन नयनों में सदा बिन्दी बाप समाया हुआ हो। सदा नयनों में समाया हुआ होगा तो दिल में भी वही समाया हुआ होगा। तो दिल में और नयनों में समाने की विधि है - बापदादा, साहेब को राज़ी करना।

15.12.2001.....तो अपने आपको देखो, चेक करो - हमारे संकल्प, बोल में रूहानियत है? रूहानी संकल्प अपने में भी शक्ति भरने वाले हैं और दूसरों को भी शक्ति देते हैं। जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो रूहानी संकल्प मनसा सेवा के निमित्त बनते हैं। रूहानी बोल स्वयं को और दूसरे को सुख का अनुभव कराते हैं। शान्ति का अनुभव कराते हैं। एक रूहानी बोल अन्य आत्माओं के जीवन में आगे बढ़ने का आधार बन जाता है। रूहानी बोल बोलने वाला वरदानी आत्मा बन जाता है। रूहानी कर्म सहज स्वयं को भी कर्मयोगी स्थिति का अनुभव कराते हैं और दूसरों को भी कर्मयोगी बनाने के सैम्पुल बन जाते हैं। जो भी उनके सम्पर्क में आते हैं वह सहजयोगी, कर्मयोगी जीवन का अनुभवी बन जाते हैं।

18.1.2003.....बापदादा ने देखा कि अमृतवेले मैजारिटी का याद और ईश्वरीय प्राप्तियों का नशा बहुत अच्छा रहता है। लेकिन कर्म योगी की स्टेज में जो अमृतवेले का नशा है उससे अन्तर पड़ जाता है। कारण क्या है? कर्म करते, सोल कान्सेस और कर्म कान्सेस दोनों रहता है। इसकी विधि है कर्म करते मैं आत्मा, कौन सी आत्मा, वह तो जानते ही हो, जो भिन्न-भिन्न आत्मा के स्वमान मिले हुए हैं, ऐसी आत्मा करावनहार होकर इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ, यह कर्मेन्द्रियां कर्मचारी हैं लेकिन कर्मचारियों से कर्म कराने वाली मैं करावनहार हूँ, न्यारी हूँ। क्या लौकिक में भी डायरेक्टर अपने साथियों से, निमित्त सेवा करने वालों से सेवा कराते, डायरेक्शन देते, ड्युटी बजाते भूल जाता है कि मैं डायरेक्टर हूँ? तो अपने को करावनहार शक्तिशाली आत्मा हूँ, यह समझकर कार्य कराओ। यह आत्मा और शरीर, वह करनहार है वह करावनहार है, यह स्मृति मर्ज हो जाती है। आप सबको, पुराने बच्चों को मालूम है कि ब्रह्मा बाप ने शुरू शुरू में क्या अभ्यास किया? एक

डायरी देखी थी ना। सारी डायरी में एक ही शब्द - मैं भी आत्मा, जसोदा भी आत्मा, यह बच्चे भी आत्मा हैं, आत्मा है, आत्मा है.... यह फाउण्डेशन सदा का अभ्यास किया। तो यह पहला पाठ मैं कौन? इसका बार-बार अभ्यास चाहिए। चेकिंग चाहिए, ऐसे नहीं मैं तो हूँ ही आत्मा। अनुभव करे कि मैं आत्मा करावनहार बन कर्म करा रही हूँ। करनहार अलग है, करावनहार अलग है।

30.11.2003.....यह परमात्म प्यार सारे कल्प में एक द्वारा और एक समय ही प्राप्त होता है। यह रूहानी नशा सदा हर कर्म में रहता है? क्योंकि आप विश्व को चैलेन्ज करते हो कि हम कर्मयोगी जीवन वाले विशेष आत्मायें हैं। सिर्फ योग लगाने वाले योगी नहीं, योगी जीवन वाले हो। जीवन सदाकाल की होती है। नेचुरल और निरन्तर होती है। 8 घण्टे, 6 घण्टे के योगी जीवन वाले नहीं। योग अर्थात् याद तो ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है। जीवन का लक्ष्य स्वतः ही याद रहता है और जैसा लक्ष्य होता है वैसे लक्षण भी स्वतः ही आते हैं।

30.11.2003.....बापदादा यही बच्चों को स्मृति दिलाते हैं - हर सुनी हुई बात जो भगवान बाप से सुनी, उसके अनुभवी मूर्त बनो। अनुभव की हुई बात हजार लोग भी अगर मिटाने चाहें तो मिट नहीं सकती। माया भी अनुभव को मिटा नहीं सकती। जैसे शरीर धारण करते ही अनुभव करते हो कि मैं फलाना हूँ, तो कितना पक्का रहता है! कभी अपनी देह का नाम भूलता है? कोई आपको कहे नहीं आप फलानी या फलाना नहीं हो, तो मान सकते हो? ऐसे ही हर स्वमान की लिस्ट अनुभव करने से कभी स्वमान भूल नहीं सकता। लेकिन बापदादा ने देखा कि अनुभव हर स्वमान का वा हर प्वाइंट का, अनुभवी बनने में नम्बरवार हैं। जब अनुभव कर लिया कि मैं हूँ ही आत्मा, आत्मा के सिवाए और हो ही क्या! देह को तो मेरा कहते हो लेकिन मैं हूँ ही आत्मा, जब हो ही आत्मा तो देहभान कहाँ से आया? क्यों आया? कारण, 63 जन्म का अभ्यास, मैं देह हूँ, उल्टा अभ्यास पक्का है। यथार्थ अभ्यास अनुभव में भूल जाता है। बापदादा बच्चों को जब मेहनत करता देखते हैं तो बच्चों पर प्यार आता है। परमात्म बच्चे और मेहनत! कारण, अनुभव मूर्त की कमी है। जब देहभान का अनुभव कुछ भी हो जाए, कोई भी कर्म करते देहभान भूलता नहीं है, तो ब्राह्मण जीवन अर्थात् कर्म- योगी जीवन, योगी जीवन का अनुभव भूल कैसे सकता!

8. रूहानी यात्री / याद की यात्रा

18.1.69(अव्यक्त सन्देश)4... .. अभी तो सभी बच्चे उपराम हो गये हैं। बाबा ने कहा यह उपराम अवस्था होनी ही चाहिए। हमेशा तैयार रहना चाहिए। यह भी याद की यात्रा को बल मिलता है। यह उपराम अवस्था सहज याद का तरीका है। अब बच्चों को कहना ज्यादा समय नहीं है। बाबा कभी भी किसको बुला लेंगे।

21.1.69... .. अब तो निरन्तर याद की यात्रा और जो शिक्षा मिली है उसे प्रैक्टिकल लाइफ में धारण करने का सबूत देना है।

6.2.69... .. जो अनन्य बच्चे हैं उन एक एक बच्चे द्वारा बाप के गुण प्रत्यक्ष होने चाहिए और होंगे। कैसे होंगे? उसका मुख्य प्रयत्न क्या है? मुख्य बात यही है जो साकार रूप से भी सुनाया है कि याद की यात्रा, अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर हर कर्म करना है।

6.2.69... .. तीन बातें छोड़ो और तीन बातें धारण करो। अब यह तीन बातें छोड़ेंगे तब ही स्वरूप में स्थित होंगे। सर्विस में सफलता भी होगी। बताओ कौन सी तीन बातें छोड़नी हैं? जो सर्विस में विघ्न डालती हैं, वह छोड़नी हैं। एक तो-कभी भी कोई बहाना नहीं देना। दूसरा कभी भी किससे सर्विस के लिए कहलाना नहीं। तीसरा – सर्विस करते कभी मुरझाना नहीं। बहाना, कहलाना और मुरझाना यह तीन बातें छोड़नी हैं। और फिर कौनसी तीन बातें धारण करनी हैं? त्याग, तपस्या और सेवा। यह तीन बातें धारणा में चाहिए। तपस्या अर्थात् याद की यात्रा और सर्विस के बिना भी जीवन नहीं बन सकती। इन दोनों बातों की सफलता त्याग के बिना नहीं हो सकती।

6.2.69... .. यूं तो सदैव इस स्थिति में रहना चाहिए लेकिन खास शिवरात्रि तक हरेक बच्चे को ऐसा समझना चाहिए जैसे शुरू में आप बच्चों की भट्टी के प्रोग्राम चलते थे, इसी रीति से हरेक को समझना चाहिए शिवरात्रि तक हमको याद की यात्रा की भट्टी में ही रहना है। बिल्कुल अव्यक्त स्थिति में स्थित रहने का, अपनी चेकिंग करने का ध्यान रखो। फिर इस अव्यक्त स्थिति का कितना प्रभाव निकलता है। मुश्किल नहीं है। बहुत सहज है। कारोबार में आते हुए भी भट्टी चल सकती है। यह तो आन्तरिक स्थिति है। आन्तरिक स्थिति का प्रभाव जास्ती पड़ता है।

13.3.69... .. आत्म-अभिमानि हो याद की यात्रा में बैठे हो? याद की यात्रा में भी मुख्य किस गुण में स्थित हो? याद की यात्रा में होते हुए भी मुख्य किस गुण स्वरूप हो? इस समय आप का मुख्य गुण कौन सा है? (सभी ने अपना-अपना विचार सुनाया) इस समय तो सभी विशेष प्रेम स्वरूप की स्थिति में है। लेकिन प्रेम के साथ-साथ वर्तमान समय की परिस्थितियों के प्रमाण जितना ही प्रेम स्वरूप उतना ही शक्ति स्वरूप भी होना चाहिए।

कुमारियों की रिजल्ट कैसी है? आप अपनी रिजल्ट क्या समझती हो? विशेष किस बात में उन्नति समझती हो? (हरेक ने अपना सुनाया) याद की यात्रा में कमी है। इसलिए इतनी महसूसता नहीं होती। अमृतवेले याद का इतना अनुभव नहीं होता है इसलिए जैसे साकार में यहाँ बाहर खुली हवा में सैर भी कराते थे, लक्ष्य भी देते थे, योग का अनुभव भी कराते थे। इसी रीति जो कुमारियों के निमित्त टीचर्स हैं वह उन्हीं को आधा घण्टा एकान्त में सैर करावें। जैसे शुरू में तुम अलग-अलग जाकर बैठते थे, सागर के किनारे, कोई कहाँ, कोई कहाँ जाकर बैठते थे। ऐसी प्रैक्टिस कराओ। छतें तो यहाँ बहुत बड़ी-बड़ी हैं। फिर शाम के समय भी 7 से 7.30 तक यह समय विशेष अच्छा होता है। जैसे अमृतवेले का सतोगुणी टाइम होता है वैसे यह शाम का टाइम भी सतोगुणी है। सैर पर भी इसी टाइम निकलते हैं। उसी समय संगठन में योग कराओ और बीच-बीच में अव्यक्ति रूप से बोलते रहो, कोई का बुद्धियोग यहाँ वहाँ होगा तो फिर अटेन्शन खँचेगा। योग की सबजेक्ट में बहुत कमी है। भाषण करना, प्रदर्शनी में समझाना यह तो आजकल के स्कूलों की कुमारियों को एक सप्ताह ट्रेनिंग दे दो तो बहुत अच्छा समझा लेंगी। लेकिन यह तो जीवन में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना है ना। उसी समय ऐसे समझो जैसे कि बापदादा के निमन्त्रण पर जा रहे हैं। जैसे बापदादा सैर करने आते हैं वैसे बुद्धियोग बल से तुम सैर कर सकती हो। जब याद की यात्रा का अनुभव करेंगे तो अव्यक्ति स्थिति का प्रभाव आपके नयनों से, चलन से प्रत्यक्ष देखने में आयेगा। फिर उन्हीं से माला बनवायेंगे।

20.3.69... .. समय पुरुषार्थ का बहुत कम है। इसलिए जैसे याद का चार्ट रखते हो, साथ-साथ अब यह भी चार्ट रखना चाहिए। साकार जो कर्म कर रहे थे, जो स्थिति, जो स्मृति थी उन सभी से भेंट करनी है।

17.4.69... .. अव्यक्त स्नेह ही याद की यात्रा को बल देता है। अव्यक्त स्नेह ही अव्यक्ति स्थिति बनाने की मदद देता है। 25 यह रिजल्ट क्यों? कारण सोचा है? समय अनुसार अब तक यह रिजल्ट नहीं होनी चाहिए। समय के प्रमाण तो 75 होनी चाहिए। फिर ऐसी रिजल्ट बनाने के लिए क्या करेंगे? उसका तरीका क्या है? (अन्तर्मुखता) यह तो सदैव कहते हो अन्तर्मुख होना है। लेकिन ना होने का कारण क्या है?

बापदादा से, सर्विस से स्नेह तो है ही। लेकिन पुरुषार्थ से स्नेह कम है। इसका भी कारण यह देखा जाता है कि बहुत करके परिस्थितियों को देख परेशान हो जाते हैं। परिस्थितियों का आधार ले स्थिति को बनाते हैं। स्थिति से परिस्थिति को बदलते नहीं। समझते हैं कि जब परिस्थिति को बदलेंगे तब स्थिति होगी। लेकिन होनी चाहिए स्व-स्थिति की पावर जिससे ही परिस्थितियाँ बद-लती हैं। वो परिस्थिति है, यह स्व-स्थिति है। परिस्थिति में आने से कमजोरी में आ जाते। स्व-स्थिति में आने से शक्ति आती है।

9.6.69... .. आज तो गोपों से मुलाकात करते हैं। अपने पुरुषार्थ में सन्तुष्ट हो? चल तो रहे हो लेकिन कितनी परसेन्टेज में? जो समझते हैं हम 75 श्रीमत पर चल रहे हैं वह हाथ उठाये। (कइयों ने हाथ उठाया) अच्छा मुख्य श्रीमत क्या है? मुख्य श्रीमत यही है कि ज्यादा से ज्यादा समय याद की यात्रा में रहना। क्योंकि इस याद की यात्रा से ही पवित्रता, दैवीगुण और सर्विस की सफलता भी होगी। जो 75 श्रीमत पर चलते हैं उन्हीं का याद का चार्ट कितना है? याद का चार्ट भी 75 होना चाहिए। इसको कहेंगे पूरी-पूरी श्रीमत पर चलने वाले।

26.6.69... .. गुरु रूप से जो शिक्षा देते हैं। उसमें मुख्य फॉलो किसको करना है? गुरु रूप से मुख्य फॉलो क्या है? (याद की यात्रा) याद की यात्रा तो एक साधन है। लेकिन

वह भी किस लिये कराते हैं? दूसरों की सद्गति करने पहले अपने को क्या फालो करना पड़ेगा? याद की यात्रा भी किसलिये सिखाई जाती है। गुरु रूप से मुख्य फालो यही करना है अशरीरी, निराकारी, न्यारा बनना। याद की यात्रा भी इसलिये करते हैं कि साकार में रहते निराकार और न्यारे अशीररी हो रहे। जब अशरीरी बनेंगे तब ता गुरु के साथ जा सकेंगे। मुख्य रूप से तो यही फालो कर रहे हो और करना है।

26.6.69... .. निर्णयशक्ति बढ़ाने के लिये पुरुषार्थ कौन सा करना है? याद की यात्रा तो आप झट कह देते हो – लेकिन याद की यात्रा को भी बल देने वाला कौन सा ज्ञान अर्थात् समझ है? वह भी स्पष्ट बुद्धि में होना चाहिए। टोटल तो रखा है लेकिन टोटल में कहाँ-कहाँ फिर टोटा(विघ्न) पड़ जाता है। स्कूल में कई बच्चे एक दो को देख – टोटल तो निकाल

देते हैं लेकिन जब मास्टर पूछता टोटल कैसे किया है? तो मूझ जाते हैं। तो आप टोटल याद की यात्रा कह देते हो लेकिन वह टोटल किस तरीके से होगा वह भी जानना है। तो निर्णयशक्ति को बढ़ाने लिये मुख्य किस बात की आवश्यकता है (विचार सागर मंथन) विचार सागर मंथन करते-करते सागर में ही डूब जाये तो? कई ऐसे बैठते हैं विचार सागर मंथन करने लेकिन कोई- कोई लहर ऐसी आती है जो साथ ले जाती है। जैसे कोई भी स्थूल शारीरिक ताकत कम होती है तो ताकत की खुराक दी जाती है। वैसे ही निर्णयशक्ति को बढ़ाने लिये मुख्य खुराक यही है जो पहले भी सुनाया। अशरीरी, निराकारी और कर्म में न्यारे। निराकारी वा अशरीरी अवस्था तो हुई बुद्धि तक लेकिन कर्म से न्यारा भी रहे और निराले भी रहें जो हर कर्म को देखकर के लोग भी समझे कि यह तो निराला है। यह लौकिक नहीं अलौकिक है। तो निर्णयशक्ति को बढ़ाने के लिये यह बहुत आवश्यक है।

23.7.69... .. परखने की शक्ति बढ़ाने का क्या पुरुषार्थ है? दिल की सफाई से भी इस बात में बुद्धि की सफाई जास्ती चाहिए। संकल्प की जो शक्ति है उनको ब्रेक लगाने की पॉवर हो। मन का संकल्प वा बुद्धि की जजमेंट जो भी होती है। तो मन और बुद्धि दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए। यह दोनों ही शक्तियों की बहुत जरूरत है। इसी को ही याद की शक्ति वा अव्यक्ति शक्ति कहा जाता है। अगर ब्रेक ना दें सकेंगे तो भी ठीक नहीं। अगर टर्न नहीं कर सकेंगे तो भी ठीक नहीं। तो ब्रेक देने और मोड़ने की शक्ति होगी तो बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं गवायेंगे। इनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी। यह भी अभ्यास भट्टी में करना चाहिए।

15.9.69... ..अगर यादगार कायम रखने का प्रयत्न करना है तो पहले याद कायम रखो। फिर उस आधार पर यादगार बनना है। हर एक के विशेष गुण पर हर एक का ध्यान जाना चाहिए। एक-एक का जो विशेष गुण है वो हर एक अगर अपने में धारण करे तो क्या बन जायेंगे? सर्वगुण सपन्न। जैसे आत्मा रूप को देखते हो ना। तो फिर जब कर्म में आते हो तो हर एक के विशेष गुण तरफ देखो। तो फिर और बातें भूल जायेंगी। गुणों को ही अपने में भरने का प्रयत्न करना है।

28.11.69... .. अपने में परिवर्तन करने के लिए जो लौकिक चीजें देखते हो या लौकिक सम्बन्धियों को देखते हो उन सभी को परिवर्तन करना पड़ेगा। लौकिक में अलौकिकता की स्मृति रखेंगे। भल लौकिक सम्बन्धियों को देखते हो लेकिन यह समझो कि अब हमारी यह भी ब्रह्मा बाप के बच्चे पिछली बिरादरी है। इसी रीति कोई भी लौकिक चीज देखते हो, दफ्तर में काम करते हो, बिज़नेस करते हो, खाना खाते हो, देखते हो, बोलते हो लेकिन एक-एक लौकिक बात में अलौकिकता हो। इसी शरीर के कार्य के लिए चल रहे हो तो साथ-साथ समझो इन

शारीरिक पाँव द्वारा लौकिक कार्य तरफ जा रहा हूँ लेकिन बुद्धि द्वारा अपने अलौकिक देश, कल्याण के कार्य के लिए जा रहा हूँ। पाँव यहाँ चल रहे हैं लेकिन बुद्धि याद की यात्रा में। शरीर को भोजन दे रहे हैं लेकिन आत्मा को फिर याद का भोजन देते जाओ। यह याद भी आत्मा का भोजन है। जिस समय शरीर को भोजन देते हो ऐसे ही शरीर के साथ में आत्मा को भी शक्ति का, याद का बल देना है।

6.12.69... .. वह लोग रिद्धि-सिद्धि प्राप्त करते हैं लेकिन यहाँ योग की रिद्धि-सिद्धि है। याद की रिद्धि-सिद्धि क्या होती है, वह सीखना है। जो सिद्धि को प्राप्त होते हैं उनके संकल्प, शब्द और हर कर्म सिद्ध होता है। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं उठेगा। संकल्प वह उठेंगे जो सिद्ध होंगे। सर्विस-एबुल उसको कहा जाता है जिसका एक भी संकल्प बिना सिद्धि के न जाये। अथवा ऐसा कोई संकल्प न उठना चाहिए जो सिद्ध होने वाला न हो। आप के एक-एक संकल्प की वैल्यू है। लेकिन जब अपनी वैल्यू को खुद रखेंगे तब अनेक आत्मायें भी आप रत्नों की वैल्यू को परखेंगी।

23.1.73... .. जैसे लौकिक पढ़ाई में तीन मास, छः मास, नौ मास का इम्तहान लेते हैं, जिससे हरेक को अपनी पढ़ाई का मालूम पड़ जाता है, ऐसे ही ईश्वरीय पढ़ाई का अब काफी समय बीत चुका है। इसलिये यह विशेष मास याद की यात्रा में रह अपनी चैकिंग (Checking) करने के लिए अर्थात् स्वयं अपना शिक्षक बन, साक्षी बन अपना पेपर ले देखने के लिए दिया हुआ है। अब सिर्फ फाइनल पेपर ही रहा हुआ है। इसलिए अपनी रिजल्ट (Result) को देख चेक (Check) करो कि इन चारों विशेषताओं में से किस विशेषता में और कितनी परसेन्टेज की कमी है। क्या फाइनल पेपर में सम्पूर्ण पास होने के योग्य सर्व योग्यतायें हैं? यह मास परिणाम देखने का है।

23.1.73... .. यूँ तो इस मास की रिजल्ट चारों ओर की बहुत अच्छी रही। अब आगे क्या करेंगे? याद की यात्रा में रहने से कोई नये प्लान्स प्रैक्टिकल में लाने के लिए इमर्ज हुए? जैसे चारों ओर संगठन के रूप में याद का बल अपने में भरने का पुरुषार्थ किया वैसे अब फिर आने वाले यह दो मास विशेष बुलन्द आवाज से चारों ओर बाप को प्रत्यक्ष करने के नगारे बजाने हैं। जिन नगरों की आवाज को सुनकर सोई हुई आत्मायें जाग जायें।

.. .ड्रामा में अब यह जो समय चल रहा है अथवा अभी का जो यह वर्ष चल रहा है इसमें बहुत अनोखी बातें देखेंगे। इसके लिए आरम्भ में विशेष याद का बल भरने का चॉन्स मिला है। अब बहुत जल्दी नये-नये नजारे और नई- नई बातें सुनेंगे और देखेंगे। इसके लिये अव्यक्त स्थिति और अव्यक्त मिलन का विशेष अनुभव करना है। जो किसी भी समय मिलन द्वारा बुद्धि-बल से अपने पुरुषार्थ व विश्व-सेवा के सर्व कार्य में सफलता-मूर्त बन सको। ईश्वरीय पढ़ाई का अब काफी समय बीत चुका है। इसलिए याद की यात्रा में रह अपनी चैकिंग करने के लिए अर्थात् स्वयं अपना ही शिक्षक बन, साक्षी बन अपना पेपर लेना है।

19.4.73... .. यह वर्ष विशेष रूप में याद की यात्रा में रहना है वा अव्यक्त स्थिति में स्थित रहते हुए वरदान प्राप्त करने हैं? जितना ही इस वरदानी वर्ष में वरदान लेने की स्मृति में रहेंगे तो सहज वरदान भी प्राप्त होंगे, और यदि विस्मृति हुई तो विघ्नों का सामना भी बहुत करेंगे। इसलिए चारों ओर सर्व ब्राह्मण परिवार की

आत्माओं के आगे सर्वप्रकार के विघ्नों को मिटाने के लिए जैसे पहले मास में याद की वा लगन की अग्नि को प्रज्वलित किया वैसे ही अभी ऐसा ही अव्यक्त वातावरण बनाना। एक तरफ वरदान दूसरी तरफ विघ्न। दोनों का एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध है। सिर्फ अपने प्रति विघ्न-विनाशक नहीं बनना है। लेकिन अपने ब्राह्मण-कुल की सर्व-आत्माओं के प्रति विघ्न-विनाश करने के लिए सहयोगी बनना है ऐसी स्पीड तेज करो।

13.6.73... .. यह शब्द निकलना कि मुझे व्यर्थ संकल्प आते हैं वा पुराने संस्कार वा स्वभाव अपने वशीभूत बना लेते हैं वा **बाप की याद का अनुभव नहीं है**, बाप द्वारा कोई प्राप्ति नहीं है वा छोटे-से विघ्न से घबरा जाते हैं, निरन्तर अति इन्द्रियसुख वा हर्ष नहीं रहता, खुशी का अनुभव नहीं होता, क्या वह बोल ब्राह्मण कुल भूषण के हैं ऐसे ब्राह्मणों को कौन से ब्राह्मण कहेंगे – ‘नामधारी ब्राह्मण’।

2.8.73... .. योग अर्थात् याद की शक्ति द्वारा ऑब्जेक्ट प्राप्त होनी चाहिए। वह जो भी संकल्प करेंगे वह समर्थ होगा। और जो भी कोई समस्या आने वाली होगी, उनका पहले ही योग की शक्ति से अनुभव होगा कि यह होने वाला है। तो पहले से ही मालूम होने के कारण वे कभी भी हार नहीं खायेंगे। ऐसे ही योग की शक्ति के द्वारा अपने पिछले संस्कारों का बोझ खत्म होता है। कोई भी संस्कार अपने पुरुषार्थ में विघ्न रूप नहीं बनेगा। जिसको नेचर कहते हो वह भी विघ्न रूप नहीं बनेंगे पुरुषार्थ में।

16.5.74... .. यदि कोई भी स्वभाव, संस्कार, व्यक्ति अथवा वैभव का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित करता है, तो बाप की याद की आकर्षण सदैव नहीं रह सकती।

18.6.74... .. दूसरा-याद की यात्रा में जो यथार्थ युक्ति-युक्त, योग-युक्त है उनका टाइटल है-पॉवरफुल। क्योंकि याद से सर्वशक्तियों का वरदान प्राप्त होता है। तो याद की यात्रा में जो यथार्थ रीति से चलने वाला है उनका टाइटल है-पॉवरफुल।

1.2.75... .. जैसे बाहर वालों को मिलन की तड़प रहती है ऐसे ही हर समय याद की तड़फ में रहते हो या साधारण स्मृति में रहते हो? हम तो हैं ही बाबा के, हम तो हैं ही समीप, हम तो हैं ही समर्पण और हमारा तो एक बाबा है ही – सिर्फ इन संकल्पों ही से तो संतुष्ट नहीं हो गये हो? अपनी लगन में अग्नि की महसूसता आती है? जिस लगन की अग्नि में स्वयं के पास्ट (Past) के संस्कार और स्वभाव और अन्य आत्माओं के दुःखदायी संस्कार व स्वभाव को भस्म कर सको?

2.2.75... .. जैसे विशेष मास याद की यात्रा के प्रोग्राम का निश्चय किया तो चारों ओर विशेष वायुमण्डल और रिजल्ट, विधि का सिद्धि स्वरूप प्रत्यक्ष फल के रूप में देखा। ऐसे ही अपनी उन्नति के प्रति जब तक समय निश्चित नहीं किया है कि इस समय के अन्दर हर विशेषता का सफलता स्वरूप बनना ही है व समय के वातावरण से स्व-चिन्तन के साथ-साथ शुभ-चिन्तक भी बनना ही है, तब तक सफलता-स्वरूप कैसे बनेंगे?

3.8.75... .. वातावरण का प्रभाव कमजोर आत्मा पर सहज ही हो जाता है। भय का सोच कि क्या होगा? कैसे होगा? इन बातों का प्रभाव न हो – उसके लिये कोई-न-कोई बीच-बीच में ईश्वरीय याद की यात्रा का विशेष प्रोग्राम मधुवन द्वारा ऑफिशियल जाते रहना चाहिए। जिससे कि आत्माओं का किला मजबूत रहेगा। ब्राह्मण बच्चों की साधारण रीति से दिनचर्या बीते वह आजकल के समय प्रमाण न होना चाहिये, नहीं तो वह प्रभाव बढ़ जायेगा। इसलिये विशेष रीति से वातावरण को याद की यात्रा से पावरफुल बनाने में सब बच्चों का अटेन्शन खिंचवाना चाहिए। अपने को उस दुनिया के वातावरण से कैसे बचा सकें? वह स्टेज क्या है? कर्म

योगी होते हुए भी योगीपन की स्टेज किसको कहा जाता है? इसी प्रकार की प्वाइण्ट्स के ऊपर अब विशेष अटेन्शन देना है।

3.8.75... .. अब ड्रामानुसार चारों ओर बड़ी-बड़ी सर्विस करने का टाइम कुछ समय के लिये मर्ज है ना। बड़े-बड़े प्रोग्राम्स बाहर के नहीं कर पाते हो-तो टीचर्स फ्री हुई-बाहर की सर्विस नहीं तो बाकी रही सेन्टर्स पर आने वालों की सेवा। बाहर की सर्विस से बुद्धि फ्री है। नहीं तो कहते हैं बहुत बिजी रहते हैं – प्लैन्स बनाना, मंथन करना। लेकिन अब तो वह भी नहीं है। तो अब याद की यात्रा की सब्जेक्ट के ऊपर ज्यादा अटेन्शन देना है। कोई-न-कोई प्रोग्राम हर सेन्टर पर चलना चाहिए-जो आने वालों में बल भर जाये। ऐसे समय पर वह भी न्यारे रहे, साक्षी होकर समस्या का सामना करें। उसके लिये याद का बल चाहिए।

8.12.75... .. ज्ञान-रत्नों और याद की शक्ति के द्वारा सर्व शक्तियों को स्वयं में सम्पन्न करने वाले, निरन्तर चैतन्य चात्रक जो हर सेकेण्ड लेने वाले अर्थात् धारण करने वाले जिन्हें सिवाय प्राप्ति के या स्वयं को सम्पन्न बनाने के और कोई लगाव नहीं। रात है अथवा दिन है, लगन एकरस है -- ऐसे चैतन्य चात्रक विदेश में और भारत में दोनों ही स्थानों पर देखे।

18.1.76... .. नये-नये बच्चों को विशेष रूप से बाप-दादा याद का रिटर्न दे रहे हैं। जैसे पुराने बच्चों को डबल इन्जन की लिफ्ट मिली, वैसे नये बच्चों को गुप्त मदद की प्राप्ति के अनुभव की, खुशी के खजाने की विशेष लिफ्ट, (Lift) बाप-दादा गिफ्ट (Gift) में दे रहे हैं। उनके अनेक उलाहनों को सेवा और सदा साथ के अनुभव द्वारा उलाहने उमंग-उत्साह के रूप में परिवर्तन कर रहे हैं। जैसे नये बच्चों का विशेष लगाव बाप और सेवा से है, वैसे बाप-दादा की भी विशेष सहयोग की नजर नये बच्चों पर है। बाप भी ऐसे बच्चों की कमाल के गुण गा रहे हैं।

22.1.76... .. याद की यात्रा में स्थित रहना – यह भी वर्तमान समय विश्व-कल्याणकारी की स्टेज प्रमाण सेवा में जमा हो जाता है। क्योंकि अब महारथियों की याद की यात्रा का समय सिर्फ स्वयं प्रति नहीं, याद की यात्रा का समय भी स्वयं के साथ-साथ सर्व के कल्याण व सर्व की सेवा के प्रति है। स्वयं का अनुभव करने का तो समय काफी मिला लेकिन अब महादानी और वरदानी की स्टेज है।

7.2.76... .. प्रत्यक्षता वर्ष मना रहे हो ना। बाप को प्रत्यक्ष करने से पहले स्वयं में (जो स्वयं की महिमा सुनाई) इन सब बातों की प्रत्यक्षता करो, तब बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। यह वर्ष विशेष ज्वाला-स्वरूप अर्थात् लाइट-हाउस और माइट-हाउस स्थिति को समझते हुए इसी पुरुषार्थ में रहो – विशेष याद की यात्रा को पाँवरफुल (Powerful) बनाओ, ज्ञान-स्वरूप के अनुभवी बनो। ऐसा स्वयं की उन्नति के प्रति विशेष प्रोग्राम बनाओ।

8.2.76... .. अगर साक्षी हो करेक्शन नहीं करेंगे तो यथार्थ कनेक्शन (Connection) रख न सकेंगे। तो यह सदैव चेक करो कि हर समय हर बात में करेक्शन करते हैं? एक है बुद्धि की करेक्शन जिसको याद की यात्रा कहते हैं दूसरा है साकार कर्म में आते हुए, साकार परिवार व साकार सम्बन्ध के कनेक्शन में आना। दोनों ही कनेक्शन ठीक हों। साकार में कनेक्शन में आने में मर्यादापूर्वक हैं? जैसे रूहानी परिवार का कनेक्शन रूहानियत के बजाय देह-अभिमान का कनेक्शन है तो वह भी यथार्थ कनेक्शन (Connection) नहीं हुआ।

6.2.77... .. बाप कहते सदा याद की साधना में रहो लेकिन साधना के स्थान पर अल्पकाल के साधनों में ज्यादा बिजी रहते हैं। साधनों के आधार पर साधना बना देते हैं। साधन ज्यादा आकर्षित करते हैं। ऐसे साधकों की साधना सफल नहीं होती। जीवन मुक्त के स्थान पर बन्धन मुक्त आत्मा बन जाते हैं। समझा? बाप क्या कहते और बच्चे क्या करते हैं? रिजल्ट सुनी?

27.5.77... .. आज अमृतवेले बाप-दादा चारों ओर के बच्चों के पास चक्कर लगाने निकले। क्या देखा? याद की यात्रा के चार्ट में क्या दिखाई दिया? पोजीशन (Position;मर्तबा) और आपोजीशन (Opposition;विरोध) दोनों का खेल देखा था। यथा शक्ति हरेक अपने पोजीशन पर स्थित रहने का प्रयत्न बहुत करते, लेकिन माया की आपोजीशन, एक रस स्थिति में स्थित होने में विघ्न-स्वरूप बन रही थी। इसका कारण क्या? (1) एक तो सारे दिन की दिनचर्या पर बार-बार अटेंशन की कमी है। (2) दूसरा शुद्ध संकल्प का खजाना जमा न होने कारण व्यर्थ संकल्पों में ज्यादा समय व्यतीत करते हैं। मनन शक्ति बहुत कम है। (3) तीसरा, किसी भी प्रकार की छोटी-छोटी परिस्थितियाँ जो हैं कुछ भी नहीं, उन छाटी सी बातों की कमजोरी का कारण बहुत बड़ा समझ, उसको मिटाने में टाईम बहुत वेस्ट (Time waste;समय व्यर्थ) करते हैं। कारण क्या? समय प्रति समय जो अनेक प्रकार की परिस्थितियों को पार करने की युक्तियाँ सुनते हैं, वह उस समय घबराने के कारण स्मृति में नहीं आती हैं। (4) चौथा अपने ही स्वभाव संस्कार, जो समझते भी हैं कि नहीं होने चाहिए, बार-बार उन स्वभाव-संस्कार के वशीभूत होने से धोखा भी खा चुके हैं, लेकिन फिर भी रचता कहलाते हुए भी, वशीभूत हो जाते हैं। अपने अनादि, आदि संस्कार बार-बार स्मृति में नहीं लाते हैं। इस कारण संस्कार स्वभाव मिटाने की समर्थी नहीं आ सकती हैं। ऐसे चारों ही प्रकार के योद्धा देखे।

योद्धा शब्द सुनकर हँसी आती है। और जिस समय प्रैक्टिकल एक्ट (Practical act;व्यवहारिक कर्म) में आते हो, उस समय हँसी आती है? बाप-दादा को ऐसा खेल देखते हुए, बच्चों पर रहम और कल्याण का संकल्प आता है। अब तक मैजारिटी व्यर्थ संकल्पों की कम्प्लेन (Complain;शिकायत) बहुत करते हैं। व्यर्थ संकल्प के कारण तन और मन दोनों कमजोर हो जाते हैं। व्यर्थ संकल्प का कारण क्या? सुनाया था, अपनी दिनचर्या को सेट करना नहीं आता। अमृतवेले रोज़ की दिनचर्या, तन की और मन को सेट करो। जैसे तन की दिनचर्या बनाते हो कि सारे दिन में यह-यह कर्म करना है, वैसे अपने स्थूल कार्य के हिसाब से, मन की स्थिति को भी सेट करो। जैसे अमृतवेले याद की यात्रा का समय सेट है, तो ऐसे सुहावने समय पर, जबकि समय का भी सहयोग है, सतोप्रधान बुद्धि का सहयोग है, ऐसे समय पर मन की स्थिति भी सबसे पाँवरफुल स्टेज (Powerful stage;शक्तिशाली स्थिति) की चाहिए। पाँवरफुल स्टेज अर्थात् बाप समान बीजरूप स्थिति। तो यह अमृतवेले का जैसा श्रेष्ठ समय है, वैसी श्रेष्ठ स्थिति होनी चाहिए।

साधारण स्थिति में तो, कर्म करते भी रह सकते हो, लेकिन यह विशेष वरदान का समय है। इस समय को यथार्थ रीति यूज (Use;प्रयोग) न करने का कारण, सारे दिन की याद की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। तो पहला अटेंशन – ‘अमृतवेले की पाँवरफुल स्थिति की सैटिंग करो।’

12.6.77... .. अभी भी याद की यात्रा के अनुभव और डीप (Deep;गहराई) रूप में हो सकते हैं। वर्णन सब करते हैं, याद में रहते भी हैं; लेकिन याद से जो प्राप्ति होनी है उस प्राप्ति की अनुभूति को और आगे बढ़ाते जाएं। उसमें अभी समय और अटेंशन देने की आवश्यकता है; जिससे मालूम पड़ेगा कि सचमुच अनुभव के

सागर में डूबे हुए हैं। जैसे पवित्रता-शान्ति के वातावरण की भासना आती है, वैसे श्रेष्ठ योगी लगन में मगन रहने वाले हैं यह अनुभव हो। नॉलेज का प्रभाव है – योग की सिद्धि स्वरूप का प्रभाव हो। वह तब होगा जब आपको अनुभव होगा। जैसे उस सागर के तले में जाते हैं वैसे अनुभव के सागर के तले में जाओ। **रोज नया अनुभव हो, तो याद की यात्रा पर अटेंशन हो। अन्तर्मुख होकर आगे बढ़ना, वह अभी कम है। सेवा करते हुए भी याद में डूबा हुआ है – यह प्रभाव अभी नहीं पड़ता।**

याद की यात्रा के अनुभवों की रेस करो। इसके लिए जो योग शिविर कराते हैं, उनको चान्स अच्छा है। और कोई ड्यूटी नहीं, एक ही ड्यूटी है।

18.6.77... .. यहाँ है विस्तार के बजाए एक संकल्प में स्थित होना, उन लोगों ने श्वास को कंट्रोल करने का अभ्यास चालू कर दिया है। **अब महारथियों के याद की यात्रा की ऐसी सिद्धि चाहिए।** ऐसे एक संकल्प को धारण करने वाले, जो जितना समय चाहे बुद्धि को स्थित करें।

30.6.77... .. अभी विशेष काम क्या करेंगे? सुनाया था ना कि याद की यात्रा का, हर प्राप्ति का और भी अन्तर्मुख हो, अति सूक्ष्म और गुह्य ते गुह्य अनुभव करो, रिसर्च करो, संकल्प धारण करो और फिर उसका परिणाम देखो, सिद्धि देखो – **जो संकल्प किया वह सिद्ध हुआ या नहीं?** जो शक्ति धारण की उस शक्ति की प्रैक्टिकल रिजल्ट होने कितने परसेन्ट रही? 'अभी अनुभवों की गुह्यता की प्रयोगशाला में रहना।' ऐसे महसूस हो जैसे यह सब कोई विशेष लगन में मगन इस संसार से उपराम हैं।

13.1.78... .. जब साइन्स का यंत्र गर्मी का या सर्दी का वायुब्रेशन वायुमण्डल बना सकते हैं तो **मास्टर सर्वशक्तिवान अपने साइलेन्स (Silence) अर्थात् याद की शक्ति से अपने लगन की स्थिति द्वारा जो वायुमण्डल या वायुब्रेशन फैलाना चाहें वह सब बना सकते हैं।** ऐसी प्रैक्टिकस करो। अभी-अभी सुख का या शान्ति का वायुमण्डल या शक्ति रूप का वायुमण्डल बना सकते हो। जिस वायुमण्डल के अन्दर जो भी आत्माएँ हों वह अनुभव करें कि यहाँ दुःख से सुख के वायुमण्डल में आ गये हैं।

24.1.78... .. जैसे धरनी में पहले हल चलाते हैं ना-और हल चलाते हुए बीज डाला जाता है ऐसे अपने भविष्य राजधानी में या अपनी आदि धरनी में हलचल रूपी हल चला -- कोई ताकत है, कोई शक्ति है, साधारण व्यक्तियाँ नहीं हैं, हलचल के साथ यह बीज डाला है। सम्मुख न देखते हुए भी चारों ओर यह धूम मचाई है कि यह कौन है और क्या है? गवर्न्मेण्ट के कानों तक यह आवाज़ पहुँची है। अभी इस बीज को वाणी द्वारा और **याद की शक्ति द्वारा फलीभूत करना है।**

14.2.78... .. बच्चा समझने से बाप की याद स्वतः आयेगी। हांगकांग की धरनी कम नहीं है, फलीभूत धरनी है और अनेक फल निकल सकते हैं। सिर्फ शक्ति सेना महावीरनी बन स्टेज पर आओ। खुशी का जो अखुट खज़ाना मिला है, इसी खज़ाने में सदा खेलते रहो। **याद का रिटर्न यादगार बनाकर दिखाओ।**

8.1.79... .. विदेशी बच्चों को बाप के सदा साथ के अनुभव की विशेष मदद है। **याद की यात्रा में सहज ही अनुभवों की खान प्राप्त होने का वरदान भी विदेशियों को प्राप्त है। तो बताओ कितने लकीएस्ट हो?**

14.1.79... .. प्राप्ति का समय अभी ज्यादा नहीं है इसलिए जितना चाहो उतना अभी कर लो नहीं तो यह प्राप्ति का समय याद आयेगा कि करना चाहिए था लेकिन किया नहीं! **अपने याद की यात्रा को पावरफुल बनाते**

जाओ। संकल्प में सर्व शक्तियों का सार भरते जाओ। हर संकल्प में शक्ति भरते रहो। संकल्प की शक्ति से भी बहुत सेवा कर सकते हो।

3.2.79... .. ब्राह्मण कभी मिट्टी से नहीं खेलेंगे, यह तो शूद्रपन की बातें हैं। तो सदा बाप की याद की गोद में रहो। याद ही याद है, लाडले बच्चों को माँ-बाप गोद में रखते, मिट्टी में नहीं जाने देते, तो आप लाडले बच्चे हो ना – तो मिट्टी में नहीं खेल सकते। रतनों से खेलते रहो। मिट्टी में खेलने वाले बाप के बच्चे हो नहीं सकते। रायल बाप के बच्चे मिट्टी से नहीं खेलते। तो सबसे बड़े से बड़े बाप के बच्चे सदा ज्ञान रतनों से खेलने वाली श्रेष्ठ आत्मायें – ऐसे हो ना।

14.11.79... .. संगमयुग पर बाप द्वारा जो खज़ाने मिले हैं उन सभी खज़ानों को अच्छी तरह से जमा किया है! माया खज़ाने को लूट तो नहीं लेती। पहले भी सुनाया था कि डबल लाक लगा दो एक बाप की याद की और दूसरी सेवा, यह डबल लॉक लगाने से कभी भी माया खज़ाना लूट नहीं सकती। सदा भरपूर रहेंगे। अमृतवेले स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान का तिलक दो। सारा दिन तिलकधारी रहने से कभी भी माया सामना नहीं करेगी। तिलक आपके विजय की निशानी है। अमृतवेले वरदानों का समय है, जितना अमृतवेले का महत्व रखेंगे उतना महान बनेंगे।

19.11.79... .. इस बारी विशेष एक शब्द पर डबल अन्डर लाइन करके जाना। वह कौन सा? निरन्तर। चाहे संकल्प चाहे बोल लेकिन – ‘निरन्तर’ शब्द को डबल अन्डर लाइन करके जाना। याद की यात्रा में निरन्तर, ज्ञान स्वरूप में निरन्तर, धारणा में निरन्तर, सेवा में भी निरन्तर। चारों सबजेक्ट्स में निरन्तर को डबल अन्डर लाइन करके जाना। समझा – यह एक शब्द वरदान के रूप में ले जाना।

28.11.79... .. सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर किसी भी प्रकार की माया के वार से व माया के अनेक आकर्षण से सदा सेफ़ रहने वाले हैं।

7.12.79... .. कोई रोता है, चिल्लाता है, साक्षी होकर देखने से मज़ा आता है। ‘क्या होगा?’ यह क्वेश्चन भी नहीं उठता। यह होना ही है। ऐसे अटल हो ना? ‘क्या होगा?’ यह क्वेश्चन तो नहीं उठता। अनेक बार यह सब हलचल देखी है और अब भी देख रहे हो। क्या भी हो दुनिया में, लेकिन याद की भट्टी में रहने वाले सदा सेफ़ रहते हैं।

12.12.79... .. हृद की छत्रछाया के अन्दर बैठे हुए अर्थात् अपने पुरुषार्थ के अन्दर सदा याद के बजाए नियम प्रमाण, समय प्रमाण याद में रहने वाले। 4 घण्टे वाले, 8 घण्टे वाले अर्थात् याद को भी हृद में लाने वाले। याद बेहद के बाप की है लेकिन याद करने वालों ने बेहद की याद को भी हृद में ला दिया है। सम्बन्ध अविनाशी है लेकिन सम्बन्ध निभाने वालों ने समय निश्चित कर विनाशी कर दिया है। तो निरन्तर याद को

हद लाये हुए हैं इसलिए छत्रछाया में भी नम्बर देखे। नम्बरवार होने के कारण माया के वायब्रेशन वायुमण्डल, व्यक्ति-वैभव, स्वभाव-संस्कार वार करते हैं। नहीं तो छत्रछाया के अन्दर सदा सेफ रह सकते हैं।

.15.12.79... .. बाप-दादा तो रोज़ चक्र लगाते हैं। आप सोचो जब बच्चे बाप को याद करते हैं तो बाप कैसे **याद का रिटर्न** नहीं देंगे? बाप-दादा सदा अमृतबेले हर बच्चे की सम्भाल करने के लिए, देखने के लिए विश्व-भ्रमण करते हैं। आप रुह-रुहान नहीं करते हो? आते हैं तब तो रुह-रुहान करते हो! रोज़ रुह-रुहान करते हो या कभी-कभी। एक होता है बैठना और दूसरा होता है – मिलन मनाना, तो बैठते हो लेकिन पॉवरफुल स्टेज पर बैठो तो सदा समीप का अनुभव करेंगे।

जितना आप लोग बाप को याद करते हो, बाप आपको पदमगुणा याद करते हैं। **इसलिए रोज़ याद का रिटर्न देने के लिए चक्र लगाते हैं।** बच्चे भले सोये भी पड़े हों, बाप सर्व बच्चों की देख-रेख का अपना कार्य सदा ही करते हैं। कोई कैच करते हैं कोई नहीं करते हैं, वह हुआ बच्चों का पुरुषार्थ। उसी समय कैच करो तो बहुत कुछ अनुभव कर सकते हो। सारे दिन के लिए एक खुराक मिल जायेगी।

19.12.79... ..सहज याद का साधन है – सदा स्वयं को खुदाई खिदमतगार समझो।

2.1.80... ..राजधानी को सजाने वाले सेवा और याद के बैलेन्स में रहो। हर संकल्प में भी सेवा हो। जब हर संकल्प में सेवा होगी तो व्यर्थ से छूट जायेंगे। तो चेक करना चाहिए जो संकल्प उठा, जो सेकेण्ड बीता उसमें सेवा और याद का बैलेन्स रहा? तो रिज़ल्ट क्या होगी? हर कदम में चढ़ती कला। हर कदम में पद्म जमा होते रहेंगे तब तो राज्य-अधिकारी बनेंगे। **तो सेवा और याद का चार्ट रखो।**

6.1.80... .. लौकिक रीति से भी कोई हिस्ट्री को याद करो तो हिस्ट्री में भी कौन पहले आता है? जो विशेष होगा वही याद आयेगा ना। संगमयुग की हिस्ट्री में भी जो जितना विशेष सेवाधारी हैं वह विशेष आत्मा है। तो बाप-दादा जब भी याद करेंगे तो पहले-पहले वह स्वतः ही याद आयेंगे। याद करो, यह कहने की ज़रूरत ही नहीं। **सिर्फ विशेष याद का रिटर्न लेने वाले बनो। बाप सबको याद का रिटर्न देते हैं लेकिन लेने वाले कभी-कभी अलबेलेपन के कारण लेते नहीं हैं। बाप के पास जो भी है, वह देने के लिए हैं, तो बाप सबको देते हैं, लेने वाले नम्बरवार हैं।**

23.1.80... .. **मुख्य सबजेक्ट है ही 'याद' की।** बाप-दादा अमृतबेले जब चक्र लगाते हैं तो थोड़ा पॉवरफुल वायब्रेशन की कमी दिखाई देती है। नेमीनाथ तो बन जाते हैं, लेकिन अनुभवी मूर्त बनो।

7.3.81... .. जैसे चारों ओर अंधकार हो और एक कोने में रोशनी जग रही हो तो सबका अटेन्शन स्वतः ही रोशनी की ओर जाता है। ऐसे सबको आकर्षण हो कि चारों ओर की अशान्ति के बीच यहाँ से शान्ति प्राप्त हो

सकती है। शान्ति स्वरूप के चुम्बक बनो। जो दूर से ही अशान्त आत्माओं को खींच सके। नयनों द्वारा शान्ति का वरदान दो। मुख द्वारा शान्ति स्वरूप की स्मृति दिलाओ। संकल्प द्वारा अशान्ति के संकल्पों को मर्ज कर शान्ति के वायब्रेशन को फैलाओ। इसी विशेष कार्य अर्थ याद की विशेष विद्धि द्वारा सिद्धि को प्राप्त करो।

7.3.81... .. अपने को सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर अनुभव करते हो? जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेली नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ है। कोई भी समस्या सामने आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, इसलिए घबरायेंगे नहीं।

%.17.3.81... .. नजदीक के सम्बन्ध को याद करना मुश्किल नहीं होता, न चाहते भी उनकी याद आती ही रहती है। और प्राप्ति को देखो, प्राप्ति के आधार पर भी याद करना अति सहज है। ज्ञान भी अति सहज और याद भी अति सहज।

18.3.81... .. याद की यात्रा में सदा चलते हुए हर कदम में पदमों की कमाई जमा कर रहे हो? हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने वाले कितने मालामाल होंगे! ऐसी सम्पन्न आत्मा अपने को अनुभव करते हो? अखुट खजाना मिल गया है? खजाने की चाबी मिल गई है ना? चाबी लगाना आती है? कभी चाबी लगाते लगाते अटक तो नहीं जाती है। बहुत सहज चाबी है। “मैं अधिकारी हूँ।” अधिकारी पन की स्मृति ही खजानों की चाबी है। यह चाबी लगाने आती है? इस चाबी से जो खजाना जितना भी चाहिए ले सकते हो। सुख चाहिए, शान्ति चाहिए, प्रेम चाहिए, सब कुछ मिल सकता है।

3.4.81... .. आपकी याद की यात्रा और उन्हीं की यादगार की यात्रा। आप लोग वर्तमान समय ज्ञान स्तम्भ, शान्ति स्तम्भ के चारों ओर शिक्षा के स्मृति स्वरूप महावाक्य के कारण चक्कर लगाते हो और सभी को लगवाते हो। आप शिक्षा के कारण चक्कर लगाते हो, एक तरफ भी छोड़ते नहीं हो। जब चारों तरफ चक्कर सम्पन्न होता तब समझते हो सब देखा, अनुभव किया। भक्तों ने आपके याद स्वरूपों का चक्कर लगाना शुरू किया। जब तक परिक्रमा नहीं लगाते तो भक्ति सम्पन्न नहीं समझते। सबका सब कर्म और गुण सूक्ष्म स्वरूप से स्थूल रूप का भक्ति में कापी किया हुआ है। इसलिए बापदादा सर्व देव आत्माओं को सदा यही शिक्षा देते कि सदा एक में अटल निश्चय बुद्धि रहो। अगर आप अभी एक की याद में एकरस नहीं रहते, एकाग्र नहीं रहते, अटल नहीं बनते तो आपके भक्त अटल निश्चय बुद्धि नहीं होंगे। यहाँ आपकी बुद्धि भटकती है और भक्त पाँव से भटकेंगे। कब किसको देवता बनायेंगे, कब किसको। आज राम के भक्त होंगे, कल कृष्ण के बन जायेंगे। “सर्व प्राप्ति एक द्वारा” – ऐसी स्थिति आपकी नहीं होगी तो भक्त आत्मायें भी हर प्राप्ति के लिए अलग-अलग देवता के पास भटकेंगे। आप अपनी श्रेष्ठ शान से परे हो जाते हो तो आपके भक्त भी परेशान होंगे। जैसे यहाँ आप याद द्वारा अलौकिक अनुभूतियाँ करने के बजाए अपनी कमजो-रियों के कारण प्राप्ति के बजाए उल्हनें देते हो। चाहे

दिलशिकस्त हो उलहनें देते, चाहे स्नेह से उलहनें देते, तो आपके भक्त भी उलहनें देते रहेंगे। उलहनें तो सब अच्छी तहर जानते हो इसलिए सुनाते नहीं हैं।

15.4.81... .. याद के पावरफुल प्रोग्राम रखो। वाचा सर्विस से भी ज्यादा याद के प्रोग्राम रखने चाहिए। वाणी में भी आने से कहाँ-कहाँ नीचे आ जाते हैं इसलिए कुछ समय याद का किला मजबूत बनाकर फिर सेवा के मैदान पर आओ। जो बात आती है वह चली भी जाती है, जैसे बात आती है और चली जाती है तो आप समझो – यह साइडसीन आई और चली गई। वर्णन भी नहीं करो, सोचो भी नहीं, इसको कहा जाता है – फुल स्टाप।

2.10.81... .. आज चारों ओर के याद में रहने वाले बच्चों को बापदादा साकार वा आकार में सम्मुख देखते हुए याद का रेसपान्ड पदमगुणा याद प्यार दे रहे हैं। कोई तन से, कोई मन से एक ही मिलन के संकल्प में, एक ही याद में स्थित हैं। बापदादा ख़ज़ाना तो दे ही चुके हैं। साकार द्वारा, आकार अव्यक्त रूप द्वारा सर्व ख़ज़ानों के मालिक बना चुके हैं। जब सर्व ख़ज़ानों के मालिक बन गये तो बाकी क्या रह गया है? कुछ रहा है? बापदादा तो सिर्फ मालिको को मालेकम् सलाम करने आये हैं। देखने में तो मास्टर बन ही गये हो, बाकी क्या रह गया है!

14.10.81... .. आजकल की दुनिया में जो अमूल्य ख़ज़ाने लाकर्स वा तिजोरियों में रखते हैं, उन्हों के खोलने की विधि डबल चाबी लगाते हैं वा दो बारी चक्कर लगाना होता है। अगर वह विधि नहीं करेंगे तो ख़ज़ाने मिल नहीं सकते। लाकर्स में देखा होगा – एक आप चाबी लगायेंगे, दूसरा बैंक वाला लगायेगा। तो डबल चाबी होगी ना! अगर सिर्फ आप अपनी चाबी लगाकर खोलने चाहो तो खुल नहीं सकता। तो यहाँ भी आप और बाप दोनों के याद की चाबी चाहिए। कई बच्चे अपने नशे में आकर कहते हैं – मैं सब कुछ जान गया हूँ, मैं जो चाहूँ वह कर सकता हूँ, करा सकता हूँ। बाप ने तो हमको मालिक बना दिया है। ऐसे उल्टे मै-पन के नशे में बाप से सम्बन्ध भूल, स्वयं को ही सब कुछ समझने लगते हैं। और एक ही चाबी से ख़ज़ाने खोलने चाहते हैं। अर्थात् ख़ज़ानों का अनुभव करने चाहते हैं। लेकिन बिना बाप के सहयोग वा साथ के ख़ज़ाने मिल नहीं सकते, तो डबल चाबी चाहिए। कई बच्चे बाप-दादा अर्थात् दोनों बाप के बजाए एक ही बाप द्वारा ख़ज़ाने के मालिक बनने के विधि को अपनाते हैं, इससे भी प्राप्ति से वंचित हो जाते हैं। हमारा निराकार से डायरेक्ट कनेक्शन है, साकार ने भी निराकार से पाया इसलिए हम भी निराकार द्वारा ही सब पा लेंगे, साकार की क्या आवश्यकता है। लेकिन ऐसी चाबी खण्डित चाबी बन जाती है। इसलिए सफलता नहीं मिल पाती है। हंसी की बात तो यह है, नाम अपना ब्रह्माकुमारी, कुमारी कहलायेंगे और कनेक्शन शिव बाप से रखेंगे। तो अपने को शिवकुमार, कुमारी कहलाओ ना! ब्रह्माकुमार और कुमारी क्यों कहते? सरनेम ही है शिव वंशी ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी तो दोनों ही बाप का सम्बन्ध हुआ ना!

1.11.81... .. बाप याद नहीं आता माना मोह है। बाप की याद से हर प्रवृत्ति का कार्य भी सहज हो जायेगा क्योंकि याद से शक्ति मिलती है। तो बाप के याद की छत्रछाया के नीचे रहती हो ना? छत्रछाया के नीचे रहने वाले हर विघ्न से न्यारे होंगे।

16.11.81... .. एक है- याद की माला, तो जितना स्नेह और जितना समय आप बाप को याद करते उतना और उसी स्नेह से बाप भी याद करते हैं। तो अपना नम्बर निकाल सकते हो। अगर आधा समय याद रहता और स्नेह भी 50 का है, वा 75 का है तो उसी आधार से सोचो 50 स्नेह और आधा समय याद तो माला में भी आधी माला समाप्त होने के बाद आयेंगे। अगर याद निरन्तर और सम्पूर्ण स्नेह, सिवाए बाप के और कोई नज़र ही नहीं आता, सदा बाप और आप भी कम्बाइन्ड हैं तो माला में भी कम्बाइन्ड दाने के साथ-साथ आप भी कम्बाइन्ड होंगे। अर्थात् साथ-साथ मिले हुए होंगे। सदा सब बातों में नम्बर वन होंगे। तो माला में भी नम्बरवन होंगे।

16.11.81... .. अमृ- तवेले सहज ही अपने आपको भी चेक कर सकते हो। याद की शक्ति से, सम्बन्ध की शक्ति से, स्पष्ट रूहानी टी.वी. में देख सकते हो कि बापदादा किस नम्बर में मुझे सिमरण कर रहे हैं। उसके लिए विशेष बात- बुद्धि की लाइन बहुत क्लीयर चाहिए। नहीं तो स्पष्ट नहीं देख सकेंगे। अच्छा, समझा मैं कौन हूँ!

21.11.81... ..सच्ची सीता वह, जिसकी नस-नस में राम के स्मृति का आवाज़ हो- अपने को सच्ची सीता समझते हो? सच्ची सीता अर्थात् हर कदम श्रीमत की लकीर के अन्दर। तो सदा लकीर के अन्दर रहते हो ना? राम एक है, बाकी सब सीतायें हों। सीता को लकीर के अन्दर ही बैठना है। सदा बाप की याद, सदा बाप की श्रीमत- ऐसी लकीर के अन्दर रहने वाली सच्ची सीता। एक कदम भी बिना श्रीमत के नहीं। जैसे ट्रेन को पटरी पर खड़ा कर देते हैं तो आटोमेटिकली रास्ते पर चलती रहती है, ऐसे ही रोज़ अमृततवेले याद की लकीर पर खड़े हो जाओ। अमृतवेला है फाउन्डेशन। अमृतवेला ठीक है तो सारा दिन ठीक हो जायेगा।

22.1.82... .. सभी बच्चे अपने याद की शक्ति से आकारी रूप में मधुबन पहुँचे हुए हैं। हरेक बच्चे के अन्दर मिलन मनाने का शुभ संकल्प हैं। बापदादा सर्व बच्चों को देख-देख हर्षित हो रहे हैं क्योंकि बापदादा हरेक बच्चे की विशेषता को जानते हैं। उसी विशेषता के आधार पर हरेक अपना-अपना विशेष पार्ट बजा रहे हैं। यही ब्राह्मण आत्माओं की वा ब्राह्मण परिवार में नवीनता है जो एक भी ब्राह्मण आत्मा विशेषता के सिवाए साधारण नहीं है। सभी ब्राह्मण अलौकिक जन्मधारी, अलौकिक हैं। इसलिए सभी अलौकिक अर्थात् कोई न कोई विशेषता के कारण विशेष आत्मा हैं।

27.3.82... .. सदा अपने ऊपर बाप के याद की छत्रछाया अनुभव करते हो? याद की छत्रछाया है। इस छत्रछाया को कभी छोड़ तो नहीं देते? जो सदा छत्रछाया के अन्दर रहते हैं वे सर्व प्रकार के माया के विघ्नों से सेफ

रहते हैं। किसी भी प्रकार से माया की छाया पड़ नहीं सकती। यह 5 विकार, दुश्मन के बजाए दास बनकर सेवाधारी बन जाते हैं। जैसे विष्णु के चित्र में देखा है – कि सांप की शय्या और सांप ही छत्रछाया बन गये। यह है विजयी की निशानी। तो यह किसका चित्र है? आप सबका चित्र है ना। जिसके ऊपर विजय होती है वह दुश्मन से सेवाधारी बन जाते हैं। ऐसे विजयी रत्न हो। शक्तियाँ भी गृहस्थी माताओं से, शक्ति सेना की शक्ति बन गई। शक्तियों के चित्र में रावण के वंश के दैत्यों को पांव के नीचे दिखाते हैं। शक्तियों ने असुरों को अपने शक्ति रूपी पाँव से दबा दिया। शक्ति किसी भी विकारी संस्कार को ऊपर आने ही नहीं देगी।

जैसे मन्दिर का वातावरण दूर से ही खींचता है, ऐसे याद की खुशबू का वातावरण ऐसा श्रेष्ठ हो जो आत्माओं को दूर से ही आकर्षित करे कि यह कोई विशेष स्थान है। सदा याद की शक्ति द्वारा स्वयं को आगे बढ़ाओ और साथ-साथ वायु मण्डल को भी शक्तिशाली बनाओ। सेवाकेन्द्र का वातावरण ऐसा हो जो सभी आत्मायें खिंचती हुई आ जाएं। सेवा सिर्फ वाणी से ही नहीं होती, मंसा से भी सेवा करो। हरेक समझे मुझे वातावरण पावरफुल बनाना है, हम जिम्मेवार हैं। ऐसा जब लक्ष्य रखो तो सेवा की वृद्धि के लक्षण दिखाई देंगे।

8.4.82... .. कर्म-बन्धनी आत्मा, बाप से सम्बन्ध का अनुभव कर नहीं सकेगी। कर्मबन्धन के बोझ वाली आत्मा याद की यात्रा में सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव कर नहीं सकेगी, वह याद के सबजेक्ट में सदा कमजोर होगी।

13.4.83... .. सीता के दो रूप दिखलाये हैं। एक सदा साथ रहने वाली और दूसरा शोक वाटिका में रहने वाली। तो संगदोष में आकर शोक वाटिका वाली सीता बन जाते हैं। वह एक है फरियाद का रूप और दूसरा है याद का रूप। जब फरियाद के रूप में आ जाते हैं तो फ़र्स्ट स्टेज से सेकण्ड में आ जाते हैं। इसलिए सदा बेदाग सच्चा हीरा, चमकता हुआ हीरा, अमूल्य हीरा बनो। इन दो बातों से सदा दूर रहो तो धूल और दाग लग नहीं सकता।

21.4.83... .. अभी समय है सेवा करने का। जितना आगे बढ़ेंगे, सेवा के योग्य समय होता जायेगा लेकिन उस समय परिस्थितियाँ भी अनेक होंगी। उन परिस्थितियों में सेवा करने के लिए अभी से ही सेवा का अभ्यास चाहिए। उस समय आना जाना भी मुश्किल होगा। मंसा द्वारा ही आगे बढ़ाने की सेवा करनी पड़ेगी। वह देने का समय होगा, स्वयं में भरने का नहीं। इसलिए पहले से ही अपना स्टॉक चेक करो कि सर्वशक्तियों का स्टॉक भर लिया है। सर्वशक्तियाँ, सर्वगुण, सर्वज्ञान के खज़ाने, याद की शक्ति से सदा भरपूर। किसी भी चीज़ की कमी नहीं चाहिए।

.24.4.83... .. ब्रह्मा बाप ने जन्मते ही बड़ी माँ के रूप में पवित्रता के प्यार से पालना की। माँ के रूप से सदा पवित्र बनो, योगी बनो, श्रेष्ठ बनो बाप समान बनो, विशेष आत्मा बनो, सर्वगुण मूर्त बनो, ज्ञान मूर्त बनो, सुख

शान्ति स्वरूप बनो, हर रोज़ यह लोरी दी। **बाप के याद की गोदी में पालन किया।** सदा खुशियों के झूले में झुलाया। ऐसे मात पिता के श्रेष्ठ बच्चे – ब्रह्माकुमार वा कुमारी हैं। ऐसा स्मृति का समर्थ नशा रहता है! ब्रह्माकुमार के विशेष जीवन के महत्व को सदा याद रखते हो?

24.4.83... .. बस सब कुछ बाप का है, सब कुछ बाप में है तो और कुछ रहा ही नहीं। जब रहा ही नहीं तो बुद्धि कहाँ जायेगी कोई पुरानी गली, पुराने रास्ते रह तो नहीं गये हैं! बस एक बाप, **एक ही याद का रास्ता**, इसी रास्ते से मंजिल पर पहुँचो।

17.5.83... .. संगमयुग है ही मौजों के नज़ारों का युग। मौजें ही मौजें हैं ना! खाओ तो भी बाप के साथ मौजों में खाओ। चलो तो भी भाग्यविधाता बाप के साथ हाथ देते चलो। ज्ञान-अमृत पिओ तो भी ज्ञान दाता बाप के साथ-साथ पिओ। कर्म करो तो भी करावनहार बाप के साथ निमित्त करने वाले समझ करो। **सोओ तो भी याद की गोदी में सोओ।** उठो तो भी भगवान से रूह-रूहान करो। सारी दिनचर्या बाप और आप। और बाप है तो पाप नहीं है। तो क्या होगा! मौजें ही मौजें होंगी ना। बापदादा देख रहे थे तो सभी बच्चे मौजों में रहते हैं। यह छोटा सा जन्म लिया ही मौजें मनाने के लिए है। खाओ, पिओ, **याद की मौज में रहो।** इस अलौकिक जन्म का धर्म अर्थात् धारणा 'मौज' में रहना है। दिव्य कर्म सेवा की मौज में रहना है। जन्म का लक्ष्य ही है – मौजों में रहना। और सारे विश्व को सर्व मौजों वाली दुनिया बनाना। तो सवेरे से लेकर रात तक मौजों के नज़ारे में रहते हो ना। बेफिकर बादशाह हो करके दिन रात बिताते हो ना। तो सुना आज वतन में क्या देखा! बेफिकर बादशाहों की सभा। **हरेक बादशाह अपने याद की मौज में** बाप के दिलतख्तनशीन स्मृति के तिलकधारी थे।

7.12.83... .. सदा बाप के **याद की मस्ती** में मस्त रहो। ईश्वरीय मस्ती क्या बना देती है? एकदम फर्श से अर्श निवासी।

16.1.84... .. बापदादा सारे विश्व के ब्राह्मण बच्चों की सभा देख रहे हैं। सभी राज्य अधिकारी नम्बरवार अपने सम्पूर्ण स्थिति की सीट पर सेट हो स्वराज्य के रूहानी नशे में कैसे बेफिकर बादशाह बन बैठे हुए हैं। हर एक के मस्तक के बीच चमकती हुई मणि कितनी सुन्दर सज रही है। सभी के सिर पर नम्बरवार चमकता हुआ लाइट का ताज देख रहे हैं। ताजधारी तो सब हैं लेकिन नम्बरवार हैं। सभी के नयनों में बापदादा की याद समाई हुई होने कारण नयनों से **याद का प्रकाश** चारों ओर फैल रहा है। ऐसी सजी-सजाई सभा देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं। वाह मेरे राज्य अधिकारी बच्चे!

18.1.84... .. सर्व बच्चों को अपनी स्थिति, ज्ञान स्तम्भ, शक्ति स्तम्भ, अर्थात् स्तम्भ के समान अचल अडोल बनने की प्रेरणा देने का दिन है। हर बच्चा बाप का यादगार 'शान्ति स्तम्भ' है। यह तो स्थूल शान्ति स्तम्भ बनाया है। परन्तु बाप की याद में रहने वाले **याद का स्तम्भ**, आप चैतन्य सभी बच्चे हो। बापदादा सभी चैतन्य स्तम्भ

बच्चों की परिक्रमा लगाते हैं। जैसे आज शान्ति स्तम्भ पर खड़े होते हो, बापदादा आप सभी याद में रहने वाले स्तम्भों के आगे खड़े होते हैं।

9.3.84... .. संकल्प रूपी बीज शक्तिशाली है लेकिन धारणा की धरनी, ज्ञान का गंगाजल और याद की धूप कहो वा गर्मी कहो, बार-बार स्व अटेन्शन की रेख देख, इसमें कहाँ-कहाँ अलबेले बन जाते हैं। एक भी बात में कमी होने से संकल्प रूपी बीज सदा फल नहीं देता है। थोड़े समय के लिए एक सीजन, दो सीजन फल देगा। सदा का फल नहीं देगा। फिर सोचते हैं – बीज तो शक्तिशाली था, प्रतिज्ञा तो पक्की की थी। स्पष्ट भी हो गया था। फिर पता नहीं क्या हो गया। 6 मास तो बहुत उमंग रहा फिर चलते-चलते पता नहीं क्या हुआ! इसके लिए जो पहले बातें सुनाई उस पर सदा अटेन्शन रहे।

17.4.84... .. पाकिस्तान में भी यही कहते थे ना – आप तो अल्लाह के बन्दे हो, आपको किसी बात से कनेक्शन नहीं। इसलिए आप ईश्वर के हो, और किसी के नहीं। क्या भी हो लेकिन डरने वाले नहीं। कितनी भी आग लगे बिल्ली के पूँगरे तो सेफ रहेंगे लेकिन जो योगयुक्त होंगे वही सेफ रहेंगे। ऐसे नहीं, कहे मैं बाप की हूँ और याद करे दूसरो को! ऐसे को मदद नहीं मिलेगी। डरो नहीं, घबराओ नहीं, आगे बढ़ो। याद की यात्रा में, धारणाओं में, पढ़ाई में सब सबजेक्ट से आगे बढ़ो। जितना आगे बढ़ेंगे उतना सहज ही प्राप्ति करते रहेंगे।

26.4.84... .. सदा याद की खुशी में रहते हो ना? खुशी ही सबसे बड़े ते बड़ी दुआ और दवा है। सदा यह खुशी की दवा और दुआ लेते रहो तो सदा खुश होने के कारण शरीर का हिसाब-किताब भी अपनी तरफ खींचेगा नहीं। न्यारे और प्यारे होकर शरीर का हिसाब-किताब चुक्तू करेंगे। कितना भी कड़ा कर्मभोग हो, वह भी सूली से काँटा हो जाता है। कोई बड़ी बात नहीं लगती। समझ मिल गई यह हिसाब-किताब है तो खुशी-खुशी से हिसाब-किताब चुक्तू करने वाले के लिए सब सहज हो जाता है। अज्ञानी हाय-हाय करेंगे और ज्ञानी सदा वाह मीठा बाबा! वाह ड्रामा की स्मृति में रहेंगे। सदा खुशी के गीत गाओ। बस यही याद करो कि जीवन में पाना था वह पा लिया। जो प्राप्ति चाहिए वह सब हो गई। सर्व प्राप्ति के भरपूर भण्डार हैं। जहाँ सदा भण्डार भरपूर हैं वहाँ दुःख-दर्द सब समाप्त हो जाते हैं। सदा अपने भाग्य को देख हर्षित होते रहो – वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! यही सदा मन में गीत गाते रहो।

29.4.84... .. महावीर बच्चों की विशेषता यह है कि पहले याद को रखते फिर सेवा को रखते। घोड़ेसवार और प्यादे पहले सेवा पीछे याद। इसलिए फर्क पड़ जाता है। पहले याद फिर सेवा करें तो सफलता है। पहले सेवा को रखने से सेवा में जो भी अच्छा-बुरा होता है उसके रूप में आ जाते हैं और पहले याद रखने से सहज ही न्यारे हो सकते हैं।

7.5.84... .. एक तो 'याद और सेवा'। याद में रह सेवा करना – 'यह है याद और सेवा का बैलेन्स'। लेकिन सेवा में रह समय प्रमाण याद करना, समय मिला याद किया, नहीं तो सेवा को ही याद समझना इसको कहा जाता है – अनबैलेन्स। सिर्फ सेवा ही याद है और याद में ही सेवा है। यह थोड़ा-सा विधि का अन्तर सिद्धि को बदल लेता है। फिर जब रिजल्ट पूछते कि याद की परसेन्टज कैसी रही? तो क्या कहते? सेवा में इतने बिज़ी थे, कोई भी बात याद नहीं थी। समय ही नहीं था या कहते सेवा भी बाप की ही थी, बाप तो याद ही था। लेकिन जितना सेवा में समय और लगन रहीं उतना ही याद की शक्तिशाली अनुभूति रहीं? जितना सेवा में स्वमान रहा उतना ही निर्माण भाव रहा? ये बैलेन्स रहा? बहुत बड़ी, बहुत अच्छी सेवा की यह स्वमान तो अच्छा है लेकिन जितना स्वमान उतना निर्माण भाव रहे। करावनहार बाप ने निमित्त बन सेवा कराई। यह है निमित्त, निर्माण भाव। निमित्त बने, सेवा अच्छी हुई, वृद्धि हुई, सफलता स्वरूप बनें, यह स्वमान तो अच्छा है लेकिन सिर्फ स्वमान नहीं, निर्माण भाव का भी बैलेन्स हो। यह बैलेन्स सदा ही सहज सफलता स्वरूप बना देता है। स्वमान भी ज़रूरी है। देह भान नहीं, स्वमान। लेकिन स्वमान और निर्माण दोनों का बैलेन्स न होने कारण स्वमान, देह अभिमान में बदल जाता है। सेवा हुई, सफलता हुई, यह खुशी तो होनी चाहिए। वाह बाबा! आपने निमित्त बनाया मैंने नहीं किया, यह मैं-पन स्वमान को देह अभिमान में ले आता है। **याद और सेवा का बैलेन्स** रखने वाले स्वमान और निर्माण का भी बैलेन्स रखते। तो समझा बैलेन्स किस बात में नीचे ऊपर होता है!

11.5.84... .. बाप की याद ही 'छत्रछाया' है। जो छत्रछाया के अन्दर रहते वह सदा सेफ रहते हैं। कभी बरसात या तूफान आता तो छत्रछाया के अन्दर चले जाते हैं। ऐसे **बाप की याद 'छत्रछाया'** है। छत्रछाया में रहने वाले सहज ही मायाजीत हैं। **याद को भूला अर्थात् छत्रछाया से बाहर निकला**। बाप की याद सदा साथ रहे। जो ऐसे छत्रछाया में रहने वाले हैं उन्हें बाप का सहयोग सदा मिलता रहता है। हर शक्ति की प्राप्ति का सहयोग सदा मिलता रहता है। कभी कमजोर होकर माया से हार नहीं खा सकते। कभी माया याद भुला तो नहीं देती है? 63 जन्म भूलते रहे, **संगमयुग है याद में रहने का युग**। इस समय भूलना नहीं। भूलने से ठोकर खाई, दुःख मिला। अभी फिर कैसे भूलेंगे! अभी सदा याद में रहने वाले।

21.11.84... .. **अभी याद की शक्ति और तीव्रगति से बढ़ाओ**। अभी साधारण स्वरूप में है। इसलिए कभी भी परिस्थितियों के वश धोखा मिल जायेगा। शक्तिशाली याद की भट्टी में रहेंगे तो सेफ रहेंगे। सेवा के झंझट से भी परे हो जाओ। जब सेवा में क्या-क्यों, तू-मैं, तेरा-मेरा आ जाता है तो सेवा भी झंझट हो जाती है। तो इस झंझट से भी परे हो जाओ। सेवा के पीछे स्वमान न भूलो। जिस सेवा में **शक्तिशाली याद** नहीं तो उस सेवा में सफलता कम और स्वयं को, और और को भी परेशानी ज़्यादा। नाम की सेवा नहीं – लेकिन काम की सेवा करो। इसको कहा जाता है – शक्ति सम्पन्न सेवा। तो ऐसे नाजुक समय आने हैं, जिसमें **याद की शक्ति ही सेफ्टी का साधन है** ना। ऐसे याद की शक्ति आपके चारों ओर सर्व शस्त्रधारी सेफ्टी के साधन है। इसलिए सदा

स्वयं को, सेवा स्थान को वा प्रवृत्ति के स्थान को और आने वाले सर्व सेन्टर्स के विद्यार्थियों को याद की शक्ति-स्वरूप वृत्ति और वायुमण्डल में लाओ। अभी साधारण याद की स्थिति सेफ्टी का साधन नहीं बन सकती।

21.11.84... .. हार और वार। माया से किसी भी प्रकार की हार और व्यक्ति तथा वायुमण्डल का वार साधारण याद वालों को धोखे में ला देगा। इसलिए बापदादा पहले से ही सभी बच्चों को ईशारा दे रहे हैं कि शक्तिशाली याद का वायुमण्डल बनाओ। जिससे स्वयं भी सेफ, ब्राह्मण आत्माओं को भी सहयोग और अन्य अज्ञानी आत्माओं को भी आपकी शान्ति और शक्ति का सहयोग मिलेगा।

21.11.84... .. जब सब कुछ बाप के हवाले कर दिया तो फ़िकर किस बात का। जब मेरा-पन होता है तब फ़िकर होता। जब बाप के हवाले कर दिया तो बाप जाने और बाप का काम जाने! स्वयं बेफ़िकर बादशाह। याद की मौज में रहो और सेवा करते रहो। याद में रह सेवा करो इसी में ही मौज है। मौजों के युग की मौजें मनाते रहो। यह मौज सतयुग में भी नहीं होगी। यह ईश्वरीय मौजें हैं। वह देवताई मौजें होंगी। ईश्वरीय मौजों का समय अभी है। इसलिए मौज मनाओ, मूँझो नहीं जहाँ मूँझ है वहाँ मौज नहीं। किसी भी बात में मूँझना नहीं, क्या होगा, कैसे होगा! यह तो नहीं होगा.....यह है मूँझना। जो होता है वह अच्छा और कल्याणकारी होता है इसलिए मौज में रहो। सदा यही टाइटल याद रखो कि हम बेफ़िकर बादशाह हैं। तो पुरुषार्थ की रफ़्तार तीव्र हो जायेगी। मौज करो, मौज में रहो, कोई भी बात को सोचो नहीं, बाप सोचने वाले बैठा है, आप असोच बन जाओ।

3.12.84... .. याद का कदम भरपूर है। बिना याद के कदम भरपूर नहीं, कमाई नहीं। तो हर कदम में कमाई जमा करने वाले कमाऊ बच्चे हो ना! कमाने वाले कमाऊ बच्चे होते। एक हैं सिर्फ़ खाया पिया और उड़ाया और एक हैं कमाई जमा करने वाले। आप कौन से बच्चे हैं? वहाँ बच्चा कमाता है अपने लिए भी और बाप के लिए भी। यहाँ बाप को तो चाहिए नहीं। अपने लिए ही कमाते। सदा हर कदम में जमा करने वाले, कमाई करने वाले बच्चे हैं, यह चेक करो। क्योंकि समय नाजुक होता जा रहा है। तो जितनी कमाई जमा होगी उतना आराम से श्रेष्ठ प्रालब्ध का अनुभव करते रहेंगे। भविष्य में तो प्राप्ति है ही। तो इस कमाई की प्राप्ति अभी संगम पर भी होगी और भविष्य में भी होगी।

3.12.84... .. बाप के स्नेही बच्चों को, याद में रहने वाले बच्चों को कुछ भी हो नहीं सकता। याद की कमज़ोरी होगी तो थोड़ा-सा सेक आ भी सकता है। याद की छत्रछाया है तो कुछ भी हो नहीं सकता। बापदादा किसी न किसी साधन से बचा देते हैं। जब भक्त आत्माओं का भी सहारा है तो बच्चों का सहारा सदा ही है।

12.12.84... .. यह नहीं सोचो – याद की शक्ति तो है, किसी गुण की कमी है तो कोई हर्जा नहीं। याद की शक्ति महान है, नम्बरवन है यह ठीक है। लेकिन किसी भी एक गुण की कमी भी समय पर फुल पास होने में फेल

कर देगी। यह छोटी बात नहीं समझो। एक एक गुण का महत्व और सम्बन्ध क्या है, यह भी गहरा हिसाब है, वह फिर कभी सुनायेंगे।

7.1.85... .. डबल विदेशी तो हैं ही डबल नशे में रहने वाले। **एक याद का नशा**, दूसरा सेवा का नशा। मैजारिटी इस डबल नशे में सदा रहने वाले हैं। और यह डबल नशा ही अनेक नशों से बचाने वाला है।

18.1.85... .. प्रतिज्ञा करने वालों को बापदादा बधाई देते। लेकिन सदा इस प्रतिज्ञा को अमृतवेले रिवाइज करते रहना। प्रतिज्ञा कर छोड़ नहीं देना। करना ही है, बनना ही है। इस उमंग-उत्साह को सदा साथ रखना। साथ-साथ कर्म करते हुए जैसे ट्रैफिक कंट्रोल की विधि द्वारा **याद की स्थिति** को लगातार बनाने में सफलता को पा रहे हो। ऐसे कर्म करते अपने प्रति अपने आपको चेक करने के लिए समय निश्चित करो। तो निश्चित समय प्रतिज्ञा को सफलता स्वरूप बनाता रहेगा।

18.2.85... .. रूहानी सेवाधारी की रूहानी झलक, रूहानी फ़लक सदा इमर्ज रूप में होनी चाहिए। रोटी बेलते भी 'स्वदर्शन चक्र' चलता रहे। लौकिक निमित्त स्थूल कार्य लेकिन स्थूल सूक्ष्म दोनों साथ-साथ, हाथ से स्थूल काम करो और बुद्धि से मंसा सेवा करो तो डबल हो जायेगा। **हाथ द्वारा कर्म करते हुए भी याद की शक्ति से एक स्थान पर रहते भी, बहुत सेवा कर सकते हो।**

.21.2.85... .. सारे कल्प में ऐसी श्रेष्ठ जीवन कभी भी नहीं मिलनी है। सतयुग में भी ऐसी जीवन नहीं होगी क्योंकि अभी बाप के डायरेक्ट बच्चे बने हो फिर तो बाप की याद समा जायेगी, ऐसे इमर्ज रूप में नहीं होगी। अभी **याद की विशेष खुशी** होती है ना। इसीलिए यह जीवन अति श्रेष्ठ है। ऐसे जीवन की सदा खुशी रहे।

27.2.85... .. ब्रह्मा बाप विशेष डबल विदेशी बच्चों को देख हर्षित हो बोले – कि कमाल है बच्चों की जो इतना दूर देशवासी होते हुए भी सदा स्नेह से एक ही लगन में रहते कि सभी को किस भी रीति से बापदादा का सन्देश जरूर पहुँचायें। उसके लिए कई बच्चे डबल कार्य करते हुए लौकिक और अलौकिक में डबल बिजी होते भी अपने आराम को भी न देखते हुए रात दिन उसी लगन में लगे हुए हैं। अपने खानेपीने की भी परवाह न करके सेवा की धुन में लगे रहते हैं। जिस प्युरिटी की बात को अननैचुरल जीवन समझते रहे, उसी प्युरिटी को अपनाने के लिए इम्प्युरिटी को त्याग करने के लिए हिम्मत से, दृढ़ संकल्प से, बाप के स्नेह से, **याद की यात्रा** द्वारा शान्ति की प्राप्ति के आधार से, पढ़ाई और परिवार के संग के आधार से अपने जीवन में धारण कर ली है। जिसको मुश्किल समझते थे वह सहज कर ली है।

रचता बाप को सामने रखने कारण निरअहंकारी और नम्रता भाव इस धारणा का लक्ष्य और लक्षण अच्छे धारण किये हैं और कर रहे हैं। दुनिया के वातावरण के बीच सम्पर्क में आते हुए फिर भी **याद की लगन** की छत्रछाया होने के कारण सेफ़ रहने का सबूत अच्छा दे रहे हैं।

निःस्वार्थ सेवा का फल ज़रूर मिलता है। सेवा ही स्व की स्टेज बना देती है। इसलिए यह कभी नहीं सोचना कि सर्विस इतनी बड़ी है मेरी स्टेज तो ऐसी है नहीं। लेकिन सर्विस आपकी स्टेज बना देगी। दूसरों की सर्विस ही स्व उन्नति का साधन है। सर्विस आपेही शक्तिशाली अवस्था बनाती रहेगी। बाप की मदद मिलती है ना। बाप की मदद मिलते-मिलते वह शक्ति बढ़ते-बढ़ते वह स्टेज भी हो जायेगी। समझा! इसलिए यह कभी नहीं सोचो कि इतनी सर्विस मैं कैसे करूँगा-करूँगी, मेरी स्टेज ऐसी है। नहीं। करते चलो। बापदादा का वरदान है – आगे बढ़ना ही है। सेवा का मीठा बंधन भी आगे बढ़ने का साधन है। जो दिल से और अनुभव की अथार्टी से बोलते हैं उनका आवाज दिल तक पहुँचता है। अनुभव की अथार्टी के बोल औरों को अनुभव करने की प्रेरणा देते हैं। सेवा में आगे बढ़ते-बढ़ते जो पेपर आते हैं वह भी आगे बढ़ाने का ही साधन हैं। क्योंकि बुद्धि चलती है, याद में रहने का विशेष अटेन्शन रहता है। तो यह भी विशेष लिफ्ट बन जाती है। बुद्धि में सदा रहता कि हम वातावरण को कैसे शक्तिशाली बनायें। कैसा भी बड़ा रूप लेकर विघ्न आए लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं का उसमें फायदा ही है। वह बड़ा रूप भी याद की शक्ति से छोटा हो जाता है। वह जैसे कागज का शेर।

6.3.85 डबल विदेशी भल यह अपनी श्रेष्ठता का यादगार न भी जानते हो लेकिन आपके याद का महत्व दुनिया वाले याद कर यादगार बना रहे हैं। समझा होली क्या होती है? आप सब तो रंग में रंगे हुए हो। ऐसे प्रेम के रंग में रंग गये हो जो सिवाए बाप के और कुछ दिखाई नहीं देता। स्नेह में ही खाते-पीते, चलते, गाते, नाचते रहते हो।

बांधेलियों की याद तो सदा बाप के पास पहुँचती है और बापदादा सभी बांधेलियों को यही कहते कि योग अर्थात् याद की लगन को अग्नि रूप बनाओ। जब लगन अग्नि रूप बन जाती तो अग्नि में सब भस्म हो जाता। जो यह बन्धन भी लगन की अग्नि में समाप्त हो जायेंगे और स्वतन्त्र आत्मा बन जो संकल्प करते उसकी सिद्धि को प्राप्त करेंगी। स्नेही हो, स्नेह की याद पहुँचती है। स्नेह के रेसपाण्ड में स्नेह मिलता है लेकिन अभी याद को शक्तिशाली अग्नि रूप बनाओ। फिर वह दिन आ जायेगा जो सम्मुख पहुँच जायेंगी।

याद की शक्ति से सफलता सहज प्राप्त होती है। जितना याद और सेवा साथ-साथ रहती है तो याद और सेवा का बैलेन्स सदा की सफलता की आशीर्वाद स्वतः प्राप्त कराता है। इसलिए सदा शक्तिशाली याद स्वरूप का वातावरण बनने से शक्तिशाली आत्माओं का आह्वान होता है और सफलता मिलती है। निमित्त लौकिक कार्य है लेकिन लगन बाप और सेवा में है।

21.3.85... .. एक स्थान पर बैठे जहाँ चाहो वहाँ रूहानी याद की रेज़िज़ (किरणों) द्वारा किसी भी आत्मा को टच कर सकते हो। परिवर्तन शक्ति इतनी तीव्रगति की सेवा करने लिए तैयार है? नालेज अर्थात् शक्ति सभी को प्राप्त हो रही है ना।

24.3.85... .. कर्मयोगी का पार्ट बजाते भी कर्म और योग का बैलेन्स चेक करना कि कर्म और याद अर्थात् योग दोनों ही शक्तिशाली रहे? अगर कर्म शक्ति- शाली रहा और याद कम रही तो बैलेन्स नहीं। और याद शक्तिशाली रही और कर्म शक्तिशाली नहीं तो भी बैलेन्स नहीं। तो कर्म और याद का बैलेन्स रखते रहना। सारा दिन इसी श्रेष्ठ स्थिति में रहने से अपनी कर्मातीत अवस्था के नजदीक आने का अनुभव करेंगे। सारा दिन कर्मातीत स्थिति वा अव्यक्त फ़रिश्ते स्वरूप स्थिति में चलते फिरते रहना। और नीचे की स्थिति में नहीं आना।

27.3.85... ..दो चार मिनट भी अगर स्थूल सहारा स्मृति में आया तो बाप का सहारा उस समय याद होगा? दूसरी बात अगर दो चार मिनट के लिए भी याद की यात्रा का लिंक टूट गया तो टूटने के बाद जोड़ने की फिर मेहनत करनी पड़ेगी। क्योंकि निरन्तर में अन्तर पड़ गया ना! दिल में दिलाराम के बदले और किसी की तरफ किसी भी कारण से दिल का झुकाव होता है।

18.11.85कुमार अर्थात् निर्बन्धन। सबसे बड़ा बन्धन मन के व्यर्थ संकल्पों का है। इसमें भी निर्बन्धन। कभी-कभी यह बन्धन बांध तो नहीं लेता है? क्योंकि संकल्प शक्ति हर कदम में कमाई का आधार है। याद की यात्रा किस आधार से करते हो? संकल्प शक्ति के आधार से बाबा के पास पहुँचते हो ना! अशरीरी बन जाते हो। तो मन की शक्ति विशेष है। व्यर्थ संकल्प मन की शक्ति को कमज़ोर कर देते हैं। इसलिए इस बन्धन से मुक्त। कुमार अर्थात् सदा तीव्र पुरुषार्थी। क्योंकि जो निर्बन्धन होगा उसकी गति स्वतः तीव्र होगी। बोझ वाला धीमी गति से चलेगा। हल्का सदा तीव्रगति से चलेगा।

20.11.85... .. यही लक्ष्य रखो – ऐसा याद का वातावरण हो जो विघ्न आ न सके। किला होता है तो दुश्मन आ नहीं सकता। तो निर्विघ्न बन निर्विघ्न सेवाधारी बनो।

25.11.85... .. सभी याद की यात्रा में आगे बढ़ते जा रहे हो ना। यह रूहानी यात्रा सदा ही सुखदाई अनुभव करायेगी। इस यात्रा से सदा के लिए सर्व यात्रायें पूर्ण हो जाती हैं। रूहानी यात्रा की तो सभी यात्रायें हो गईं और कोई यात्रा करने की आवश्यकता ही नहीं रहती। क्योंकि महान यात्रा है ना। महान यात्रा में सब यात्रायें समाई हुई है। पहले यात्राओं में भटकते थे अभी इस रूहानी यात्रा से ठिकाने पर पहुँच गये। अभी मन को भी ठिकाना मिला तो तन को भी ठिकाना मिला। एक ही यात्रा से अनेक प्रकार का भटकना बन्द हो गया। तो सदा रूहानी यात्री हैं इस स्मृति में रहो, इससे सदा उपराम रहेंगे, न्यारे रहेंगे, निर्मोही रहेंगे। किसी में भी मोह नहीं जायेगा। यात्री का किसी में भी मोह नहीं जाता। ऐसी स्थिति सदा रहे।

27.11.85... .. कुमार अर्थात् सदा सेवा और याद का बैलेन्स रखने वाले। बैलेन्स है तो सदा उड़ती कला है। जो बैलेन्स रखना जानते हैं वह कभी भी किसी परिस्थिति में नीचे-ऊपर नहीं हो सकते।

2.12.85... .. याद की खुशी से अनेक आत्माओं को खुशी देने वाले सेवाधारी हो ना। सच्चे सेवाधारी अर्थात् सदा स्वयं भी लगन में मगन रहें और दूसरों को भी लगन में मगन करने वाले।

9.12.85... .. अपनी मौज में रहने वाली हो ना। कभी ज्ञान के मौज में, कभी याद की मौज में। कभी प्रेम की मौज में। मौजें ही मौजें हैं। संगमयुग है ही मौजों का युग।

25.12.85... .. सेन्टर के वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने के लिए एक दो चक्र लगाते हुए शक्तिशाली याद की अनुभूतियों का प्रोग्राम बनाओ। शक्तिशाली वातावरण कई बातों से स्वतः दूर कर देता है। अभी स्वयं क्वालिटी वाले बन, क्वालिटी वाले बनाते चलो।

1.1.86... .. मन के मीत, अपने सर्व रूहानी मीत को, गाडली फ्रैन्ड्स को सभी के गीतों का रेसपाण्ड दे रहे हैं। सदा हर संकल्प में हर सेकेण्ड में, हर बोल में होली, हैप्पी, हेल्दी रहने की बधाई हो। सदा सहयोग का हाथ मन के मीत के कार्य में सहयोग के संकल्प के हाथ में हाथ हो। चारों ओर के बच्चों के संकल्प, पत्र, कार्ड और साथ-साथ याद की निशानी स्नेह की सौगातें सब बापदादा को पहुँच गईं। बापदादा सदा हर बच्चे के बुद्धि रूपी मस्तक पर वरदान का सदा सफलता का आशीर्वाद का हाथ नये वर्ष की बधाई में सब बच्चों को दे रहे हैं।

8.1.86... .. इस वर्ष में हर गुण की, हर शक्ति की रिसर्च करो। हर गुण की महीनता में जाओ। महीनता से उसकी महानता का अनुभव कर सकेंगे। याद की स्टेजेस का, पुरुषार्थ की स्टेजेस का महीनता से रिसर्च करो। गुह्यता में जाओ। डीप अनुभूतियाँ करो। अनुभव के सागर के तले में जाओ। सिर्फ ऊपर-ऊपर की लहरों में लहराने के अनुभवी बनना यही सम्पूर्ण अनुभव नहीं है। और अन्तर्मुखी बन गुह्य अनुभवों के रत्नों से बुद्धि को भरपूर बनाओ। क्योंकि प्रत्यक्षता का समय समीप आ रहा है। सम्पन्न बनो, सम्पूर्ण बनो तो सर्व आत्माओं के आगे से अज्ञान का पर्दा हट जाए। आपके सम्पूर्णता की रोशनी से यह पर्दा स्वतः ही खुल जायेगा। इसलिए रिसर्च करो। सर्च लाइट बनो। तब ही कहेंगे गोल्डन जुबली मनाई।

18.1.86... .. ब्राह्मण जन्म लेना अर्थात् याद का बन्धन बांधना। जैसे वह ब्राह्मण जीवन में कोई न कोई निशानी रखते हैं- तो इस ब्राह्मण जीवन की निशानी है – 'याद'। याद में रहना नैचुरल हो। इसलिए याद अलग की, सेवा अलग की, नहीं। दोनों इकट्ठे हों। इतना टाइम कहाँ है जो याद अलग करो, सेवा अलग करो।। इसलिए याद और सेवा सदा साथ है ही। इसी में ही अनुभवी भी बनते हैं, सफलता भी प्राप्त करते हैं।

20.2.86... .. कर्मयोगी जीवन अर्थात् हर कार्य करते याद की यात्रा में सदा रहे। यह श्रेष्ठ कार्य श्रेष्ठ बाप के बच्चे ही करते हैं और सदा सफल होते हैं। आप सभी कर्मयोगी आत्मायें हो ना! कर्म में रहते 'न्यारा और प्यारा' सदा इसी अभ्यास से स्वयं को आगे बढ़ाना है।

7.3.86... .. एक जन्म की आपकी यह जीवन, भक्ति के 63 जन्मों के लिए याद का साधन बन जाती है। इतनी महान आत्मायें हो! इस समय की सबसे वन्दरफुल बात यही देख रहे हो – जो प्रैक्टिकल भी मना रहे हो और निमित्त उस यादगार को भी मना रहे हो। चैतन्य भी हो और चित्र भी साथ-साथ हैं।

पाँच हजार वर्ष पहले हर एक ने क्या-क्या प्राप्त किया, क्या बने, कैसे बने- यह 5 हजार वर्ष का पूरा अपना यादगार चित्र और जीवन पत्री सभी स्पष्ट रूप में जान गये हो। सुन रहे हो और देख-देख हर्षित हो रहे हो कि यह हमारा ही गायन-पूजन हमारे जीवन की कथायें वर्णन कर रहे हैं।

19.3.86... .. खुशबूदार सभी हैं लेकिन किसकी खुशबू सदाकाल रहने वाली है और किसकी खुशबू थोड़े समय के लिए रहती है। कोई गुलाब सदा खिला हुआ है और कोई कब खिला हुआ, कब थोड़ा-सा धूप वा मौसम के हिसाब से मुरझा भी जाते हैं। लेकिन हैं फिर भी रूहानी बागवान के बगीचे के रूहानी गुलाब! कोई-कोई रूहानी गुलाब में ज्ञान की खुशबू विशेष है। कोई में याद की खुशबू विशेष है। तो कोई में धारणा की खुशबू, कोई में सेवा की खुशबू विशेष है। कोई-कोई ऐसे भी हैं जो सर्व खुशबू से सम्पन्न हैं। तो बगीचे में सबसे पहले नज़र किसके ऊपर जायेगी? जिसकी दूर से ही खुशबू आकर्षित करेगी। उस तरफ ही सबकी नज़र पहले जाती है। तो रूहानी बागवान सदैव सभी रूहानी गुलाब के पुष्पों को देखते हैं।

25.3.86... .. आपकी होली है 'संग के रंग' में बाप समान बनना। ऐसा पक्का रंग हो जो समान बना दे। ऐसी होली दुनिया में कोई खेलते हैं? बाप समान बनाने की होली खेलने आते हैं। कितने भिन्न-भिन्न रंग बाप द्वारा हर आत्मा पर अविनाशी चढ़ जाते हैं। ज्ञान का रंग, याद का रंग, अनेक शक्तियों के रंग, गुणों के रंग, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना स्वतः सदा बन जाए, यह रूहानी रंग कितना सहज चढ़ जाता है। होली बन गये अर्थात् होली हो गये। वह होली मनाते हैं, जैसे गुण हैं वैसा रूप बन जाते हैं।

27.3.86... .. स्नेही आत्मायें, स्नेह में रहती ज़रूर हैं लेकिन सदा न होने कारण कभी-कभी मन के संकल्प द्वारा भी कहाँ और तरफ स्नेह जाता। बहुत थोड़ा बीच-बीच में स्वयं को परिवर्तन करने के कारण कभी मेहनत का, कभी मुश्किल का अनुभव करते। लेकिन बहुत थोड़ा। जब भी कोई प्रकृति वा माया का सूक्ष्म वार हो जाता है तो उसी समय स्नेह के कारण याद जल्दी आ जाती है और याद की शक्ति से अपने को बहुत जल्दी परिवर्तन भी कर लेते हैं।

9.4.86... .. कई बच्चे समझते हैं कि क्या सिर्फ याद का अभ्यास करेंगे वा सेवा भी करेंगे! वा सेवा से मुक्त हो तपस्या में ही रहेंगे! बापदादा सेवा का यथार्थ अर्थ सुना रहे हैं – सेवाभाव अर्थात् सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना। श्रेष्ठ कामना का भाव। सेवा भाव अर्थात् हर आत्मा की भावना प्रमाण फल देना। भावना हद की नहीं लेकिन श्रेष्ठ भावना।

9.4.86... .. शरीर तो विनाशी है, लेकिन आत्मा शक्तिशाली होती है तो एक शरीर छूट भी जाता है तो दूसरे में याद की प्रालम्ब्य चलती रहेगी। इसलिए अविनाशी प्राप्ति कराते चलो। तो आप कौन हो? शान्ति के दूत। शान्ति के मैसेन्जर, मास्टर शान्ति दाता, मास्टर शक्ति दाता। यह स्मृति सदा रहती है ना! सदा अपने को इसी स्मृति से आगे बढ़ाते चलो। औरों को भी आगे बढ़ाओ, यही सेवा है!

9.4.86... .. सदा अपने को बाप की याद की छत्रछाया में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? यह याद की छत्रछाया सर्व विघ्नों से सेफ कर देती है। किसी भी प्रकार का विघ्न छत्रछाया में रहने वाले के पास आ नहीं सकता। छत्रछाया में रहने वाले निश्चित विजयी है ही।

11.4.86... .. सदा स्मृति में रहे कि –‘मैं अविनाशी बगीचे का अविनाशी गुलाब हूँ।’ कभी मुरझाने वाला नहीं। सदा खिला हुआ। ऐसे खिले हुए रूहानी गुलाब सदा सेवा में स्वतः ही निमित्त बन जाते हैं। याद की, शक्तियों की, गुणों की यह सब खुशबू सबको देते रहो। स्वयं बाप ने आकर आप फूलों को तैयार किया है तो कितने सिकीलधे हो!

21.1.87... .. सभी की मधुबन में आने की, मिलने की आशा पूरी हुई। भक्ति-मार्ग की यात्रा से फिर भी मधुबन में आराम से बैठने की, रहने की जगह तो मिली है ना। मन्दिरों में तो खड़े-खड़े सिर्फ दर्शन करते हैं। यहाँ आराम से बैठे तो हो ना। वहाँ तो ‘भागो-भागो’, ‘चलो-चलो’ कहते हैं और यहाँ आराम से बैठो, आराम से, याद की खुशी से मौज मनाओ। संगमयुग में खुशी मनाने के लिए आये हो।

20.2.87... .. याद की लकीर सभी की चमक रही है लेकिन नम्बरवार है। किसी की लकीर वा रेखा आदि से अब तक अव्यभिचारी अर्थात् सदा एक की लगन में मग्न रहने वाली है। दूसरी बात – सदा अटूट रही है? सदा सीधी लकीर अर्थात् डायरेक्ट बाप से सर्व सम्बन्ध की लगन सदा से रही है वा किसी निमित्त आत्माओं के द्वारा बाप से सम्बन्ध जोड़ने के अनुभवी हैं? डायरेक्ट बाप का सहारा है वा किसी आत्मा के सहारे द्वारा बाप का सहारा है? एक हैं सीधी लकीर वाले, दूसरे हैं बीच-बीच में थोड़ी टेढ़ी लकीर वाले। यह हैं याद की लकीर की विशेषतायें।

18.3.87... .. वह अनेक बीच देखीं, लेकिन ऐसी बीच कब देखी जहाँ ज्ञान सागर की स्नेह की लहरें, शक्ति की लहरें, भिन्न-भिन्न लहरें लहराए सदा के लिए रिफ्रेश कर देती हैं? यह स्थान पसन्द है ना? स्वच्छता भी है और रमणीकता भी है। सुन्दरता भी है। इतनी ही प्राप्तियाँ भी हैं। ऐसा मनोरंजन का विशेष स्थान आप आशिकों के लिए माशूक ने बनाया है जहाँ आने से मुहब्बत की लकीर के अन्दर पहुँचते ही अनेक प्रकार की मेहनत से छूट जाते। सबसे बड़ी मेहनत – नैचुरल याद की, वह सहज अनुभव करते हो। और कौन-सी मेहनत से छूटते हो? लौकिक जाँब (नौकरी) से भी छूट जाते हो। भोजन बनाने से भी छूट जाते हो। सब बना बनाया मिलता है ना। याद भी

स्वतः अनुभव होती। ज्ञान रत्नों की झोली भी भरती रहती। ऐसे स्थान पर जहाँ मेहनत से छूट जाते हो और मुहब्बत में लीन हो जाते हो।

20.3.87... .. सेवा करते हो, इसलिए मधुबन में, तपस्या-भूमि में रहने का अधिकार मिला है। यह अधिकार ही एक महान प्रसाद है। यहाँ की पालना भी महान प्रसाद है। इस भूमि पर सहज याद का जो अनुभव होता है – यह भी महान प्रसाद है। तो आप अब प्रसाद ही खाते हो, भोजन नहीं खाते। जो सदा प्रसाद खाये, वह क्या हुआ? इतनी पुण्य आत्मायें हुए ना। महान आत्मायें हुए ना। और जो भी यहाँ आते हैं, सब महान आत्माओं की नज़र से देखते हैं। तो महान हो, महान सेवा के निमित्त हो क्योंकि महायज्ञ है ना। महायज्ञ की सेवा, वह भी महान सेवा हो गई। स्वयं भी महान, सेवा भी महान, प्राप्ति भी महान

6.11.87... .. जैसे याद का अटेन्शन रखते हो कि निरन्तर रहे, सदा याद का लिंक जुटा रहे; वैसे सेवा में भी सदा लिंक जुटा रहे। जैसे याद में भी भिन्न-भिन्न स्थिति का अनुभव करते हो - कभी बीजरूप का, कभी फ़रिश्तारूप का, कभी मनन का, कभी रूह-रूहान का लेकिन स्थिति भिन्न-भिन्न होते भी याद की सब्जेक्ट में निरन्तर याद में गिनते हो। ऐसे यह भिन्न-भिन्न सेवा का रूप हो। लेकिन सेवा के बिना जीवन नहीं।

18.11.87... .. जैसे वर्तमान समय वाणी द्वारा याद की यात्रा का अनुभव कराते हो, ऐसे साइलेन्स की शक्ति द्वारा आपका चेहरा (जिसको मुख कहते हो) आप द्वारा भिन्न-भिन्न याद की स्टेजस का स्वतः ही अनुभव करायेगा। अनुभव करने वालों को यह सहज महसूस होगा कि इस समय बीजरूप स्टेज का अनुभव हो रहा है वा फ़रिश्ते-रूप का अनुभव हो रहा है वा भिन्न-भिन्न गुणों का अनुभव आपके इस शक्तिशाली फेश से स्वतः ही होता रहेगा।

6.12.87... .. यह सभा अर्थात् सिर्फ सामने बैठे हुए नहीं। बापदादा के सामने तो आपके साथ-साथ चारों ओर के बच्चे भी इमर्ज होते हैं। बेहद के परिवार के बीच बापदादा मिलन मनाते वा रूहरिहान करते हैं। सभी ब्राह्मण आत्मायें अपने याद की शक्ति से स्वयं भी मधुबन में हाज़िर होती हैं। और बापदादा यह भी विशेष बात देख रहे हैं कि हर एक बच्चे के विधि की लाइन और सिद्धि की लाइन, यह दोनों रेखायें कितना स्पष्ट हैं, आदि से अब तक विधि कैसी रही है और विधि के फलस्वरूप सिद्धि कितनी प्राप्त की है, दोनों रेखायें कितनी स्पष्ट हैं और कितनी लम्बी अर्थात् विधि और सिद्धि का खाता कितना यथार्थ रूप से जमा है? विधि का आधार है – 'श्रेष्ठ वृत्ति'।

23.12.87... .. बापदादा ऐसे सदा याद में रहने वाले, जिन्हों का यादगार अभी है, ऐसे बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। याद में रहने वालों का यह यादगार है। याद का महत्व यादगार देख रहे हो।

27.12.87... .. अज्ञानी जीवन में परिस्थितियों प्रमाण स्थिति बनती है लेकिन शक्तिशाली अलौकिक ब्राह्मण जीवन में परिस्थिति प्रमाण स्थिति नहीं बनती लेकिन बेफिकर बादशाह की स्थिति वा श्रेष्ठ स्थिति बापदादा द्वारा

प्राप्त हुई नॉलेज की लाइट-माइट द्वारा, याद की शक्ति द्वारा जिसको कहेंगे 'ज्ञान और योग की शक्तियों का वर्सा' बाप द्वारा मिलता है। तो ब्राह्मण जीवन में बाप के वर्से द्वारा वा सतगुरु के वरदान द्वारा वा भाग्यविधाता द्वारा प्राप्त हुए श्रेष्ठ भाग्य द्वारा स्थिति प्राप्त होती है।

6.1.88... .. जहाँ सन्तुष्टता नहीं, वहाँ अभी-अभी याद की अनुभूति से मस्ती में मस्त होंगे और अभी-अभी फिर दिलशिकस्त होंगे। क्योंकि लीकेज होने के कारण शक्ति थोड़ा टाइम भरती है, सदा नहीं रहती।

10.1.88... .. अब तो तीव्र पुरुषार्थ करने का समय है, उड़ने का समय है। इसलिए मनन शक्ति से बुद्धि को बिज़ी रखो। इसी मनन शक्ति से याद की शक्ति में मग्न रहना – यह अनुभव सहज हो जायेगा।

10.1.88... .. जो काम कर रहे हैं उसी के संकल्प में बुद्धि का बिज़ी रहना – इसको कहते हैं साधारण संकल्प। याद की शक्ति या मनन शक्ति जो होनी चाहिए वह नहीं होती और अपने को खुश कर लेते कि आज कोई पाप कर्म नहीं हुआ, व्यर्थ नहीं चला, किसको दुःख नहीं दिया। लेकिन समर्थ संकल्प, समर्थ स्थिति, शक्तिशाली याद रही? अगर वह नहीं रही तो इसको कहेंगे साधारण संकल्प।

14.1.88... .. कोई भी हिसाब – चाहे इस जन्म का, चाहे पिछले जन्म का, लग्न की अग्नि-स्वरूप स्थिति के बिना भस्म नहीं होता। सदा अग्नि-स्वरूप स्थिति अर्थात् शक्तिशाली याद की स्थिति, बीजरूप, लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति सदा न होने के कारण हिसाब-किताब को भस्म नहीं कर सकते हैं। इसलिए रहा हुआ हिसाब अपने तरफ खींचता है। उस समय कोई गलती नहीं करते हो कि पता नहीं क्या हुआ! कभी मन नहीं लगेगा-याद में, सेवा में वा कभी उदासी की लहर होगी। एक होता है ज्ञान द्वारा शान्ति का अनुभव, दूसरा होता है बिना खुशी, बिना आनन्द के सन्नाटे की शान्ति। वह बिना रस के शान्ति होती है। सिर्फ दिल करेगा – कहाँ अकेले में चले जाएँ, बैठ जाएँ। यह सब निशानियाँ हैं कोई न कोई अवज्ञा की। कर्म का बोझ खींचता है।

14.1.88... .. शरीर निर्वाह करने के लिए निमित्त मात्र काम करना दूसरी बात है लेकिन ऐसा लगे रहना जो न पढ़ाई याद आए, न याद का अभ्यास हो...उसको कहेंगे मोह। तो मोह तो नहीं है ना! जितना नष्टमोहा होंगे उतना ही स्मृतिस्वरूप होंगे।

हर आत्मा की विशेषता याद रखो, हर आत्मा का विशेष पार्ट याद रखो। तो इससे स्वयं में, वातावरण में सदा ही शान्ति और शक्ति रहेगी। और वह ऐसी आत्मा तो है ही नहीं जो उसको विशेष बल देंगे तभी खुश रहेगी। वह तो खुश है ही। बाकी अपने स्नेह की रीति याद की यात्रा से स्नेह का सहयोग देना वह तो ब्राह्मण जीवन की रीति-रस्म है।

18.1.88... सभी बच्चे अमृतवेले से चलतेफिरते, कर्म करते भी याद की लग्न में अच्छे तीव्रगति से आगे बढ़ रहे हैं। अपने उमंग-उत्साह का समाचार देते रहते हैं और बापदादा देख-देख हर्षित होते हैं।

30.1.88... सहनशीलता की शक्ति वाला कभी घबरायेगा नहीं कि क्या ऐसा भी होता है क्या! सदा सम्पन्न होने कारण ज्ञान की, याद की गहराई में जायेगा।

माताओं के लिए बापदादा ने सहज मार्ग कौन सा बताया है जिससे सहज ही बाप की याद का अनुभव कर सको, मेहनत न करनी पड़े? याद को भी सहज बनाने का साधन क्या है? दिल से कहो – “मेरा बाबा”। जहाँ मेरा कहते हो वहाँ सहज याद आती है। सारे दिन में, जो मेरा है वही याद आता है ना। कोई भी मेरा हो – चाहे व्यक्ति, चाहे वस्तु... जहाँ मेरा-पन होगा वही याद आयेगा। ऐसे यदि बाप को मेरा कहते हो, मेरा समझते हो तो बाप की याद आयेगी। तो बाप को याद करने का सहज तरीका है – दिल से कहो “मेरा बाबा”। सिर्फ मुख से मेरा-मेरा नहीं करना, अधिकार से कहना। यही सहज पुरुषार्थ कर आगे बढ़ते चलो।

16.2.88... आप जैसा शुद्ध भोजन, याद का भोजन विश्व में किसको भी प्राप्त नहीं है! इस भोजन को ही कहा जाता है – दुःख भंजन भोजन। याद का भोजन सब दुःख दूर कर देता है। क्योंकि शुद्ध अन्न से मन और तन दोनों शुद्ध हो जाता है। शुद्ध अन्न मन को शुद्ध बना देता है इसलिए धन भी शुद्ध हो जाता है। याद के अन्न का महत्त्व है, इसलिए ब्रह्मा भोजन की महिमा है। अगर याद में नहीं बनाते और खाते तो यह अन्न स्थिति को ऊपर नीचे कर सकता है। याद में बनाया हुआ और याद में स्वीकार करने वाला अन्न दवाई का भी काम करता और दुवा का भी काम करता। याद का अन्न कभी नुकसान नहीं कर सकता। इसलिए हर घड़ी उत्सव मनाओ।

जिन बच्चों ने दिल का उत्साह का यादप्यार वा किसी भी रूप से अपनी याद-निशानी भेजी है, उन सब बच्चों को बापदादा भी विशेष याद का रिटर्न पद्मगुणा दे रहे हैं और बापदादा देख रहे हैं कि हर एक बच्चे के अन्दर सेवा का और सदा मायाजीत बनने का उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। हर एक बच्चा अपनी शक्ति से भी ज्यादा सेवा में आगे बढ़ रहा है और बढ़ता ही रहेगा। बाकी जो सच्ची दिल से दिल का समाचार बाप के आगे रखते हैं, तो सच्ची दिल पर बाप सदा राजी है। इसलिए दिल के समाचार में जो भी कोई छोटी-छोटी बातें आती भी हैं तो वह बाप की विशेष याद के वरदान से समाप्त हो ही जायेंगी। बाप का राजी होना अर्थात् सहज बाप की मदद से मायाजीत बनना। इसलिए जो बाप को दे दिया, चाहे समाचार के रूप में, पत्र के रूप में, रूह-रूहान के रूप में – जब बाप के आगे रख लिया, दे दिया तो जो चीज किसको दी जाती है वह अपनी नहीं रहती, वह दूसरे की हो जाती है। अगर कमजोरी का संकल्प भी बाप के आगे रख दिया तो वह कमजोरी आपकी नहीं रहीं। आपने दे दी, उससे मुक्त हो गये। इसलिए, यही याद रखना कि मैंने बाप के आगे रख दी अर्थात् दे दी। बाकी विदेश के उमंग-

उत्साह की लहर अच्छी चल रही है। बापदादा बच्चों को निर्विघ्न बनने के उमंग और सेवा में बाप को प्रत्यक्ष करने के उमंग को देख हर्षित होते हैं।

20.2.88... कभी-कभी कोई सेवा का चांस होता है, मास-दो-मास में दो-चार बार देरी हो गई, वह दूसरी बात है, लेकिन अगर नियमित रूप से शरीर थका हुआ होगा तो याद में फर्क पड़ेगा। जैसे सेवा का प्रोग्राम बनाते हो, 4 घण्टे का समय निकालना है तो निकाल लेते हो। ऐसे याद का भी समय निश्चित निकालना ही है – इसको भी आवश्यक समझ इस विधि से अपना प्रोग्राम बनाओ। सुस्ती नहीं हो लेकिन शरीर को रेस्ट देना है – इस विधि से चलो।

बापदादा बच्चों की सेवा पर बहुत खुश हैं, हिम्मत पर बलिहार जाते हैं, लेकिन जो सेवा – याद में, उन्नति में थोड़ा भी रुकावट करने के निमित्त होती है, तो ऐसी सेवा के समय को कम करना चाहिए। जैसे रात्रि को जागते हो, 12.00 वा 1.00 बजा देते हो तो अमृतवेला फ्रेश नहीं होगा। बैठते भी हो तो नियम प्रमाण। और अमृतवेला शक्तिशाली नहीं तो सारे दिन की याद और सेवा में अन्तर पड़ जाता है। मानो सेवा के प्लैन बनाने में वा सेवा को प्रैक्टिकल लाने में समय भी लगता है। तो रात के समय को कट करके 12.00 के बदले 11.00 बजे सो जाओ। वही एक घण्टा जो कम किया और शरीर को रेस्ट दी तो अमृतवेला अच्छा रहेगा, बुद्धि भी फ्रेश रहेगी। नहीं तो दिल खाती है कि सेवा तो कर रहे हैं लेकिन याद का चार्ट जितना होना चाहिए, उतना नहीं है। जो संकल्प दिल में वा मन में बार-बार आता है कि यह ऐसा होना चाहिए लेकिन हो नहीं रहा है, तो उस संकल्प के कारण बुद्धि भी फ्रेश नहीं होती। और बुद्धि अगर फ्रेश है तो फ्रेश बुद्धि से 2-3 घण्टे का काम 1 घण्टे में पूरा कर सकते हो। थकी हुई बुद्धि में टाइम ज़्यादा लग जाता है, यह अनुभव है ना। और जितनी फ्रेश बुद्धि रहती, शरीर के हिसाब से भी फ्रेश और आत्मिक उन्नति के रूप में भी फ्रेश - डबल फ्रेशनेस (ताज़गी) रहती तो एक घण्टे का कार्य आधा घण्टे में कर लेंगे। इसलिए सदैव अपनी दिनचर्या में फ्रेश बुद्धि रहने का अटेन्शन रखो। ज़्यादा सोने की भी आदत न हो लेकिन जो आवश्यक समय शरीर के हिसाब से चाहिए उसका अटेन्शन रखो। कभी-कभी कोई सेवा का चांस होता है, मास-दो-मास में दो-चार बार देरी हो गई, वह दूसरी बात है, लेकिन अगर नियमित रूप से शरीर थका हुआ होगा तो याद में फर्क पड़ेगा। जैसे सेवा का प्रोग्राम बनाते हो, 4 घण्टे का समय निकालना है तो निकाल लेते हो। ऐसे याद का भी समय निश्चित निकालना ही है – इसको भी आवश्यक समझ इस विधि से अपना प्रोग्राम बनाओ। सुस्ती नहीं हो लेकिन शरीर को रेस्ट देना है – इस विधि से चलो।

24.2.88... पाण्डवों को विशेष अपना वरदान है। 'याद' और 'सेवा' का बल विशेष मिला हुआ है। 'याद का बल' भी विशेष मिलता है, 'सेवा' का बल भी विशेष मिलता है क्यों? उसका भी कारण है। क्योंकि जो जितना आवश्यकता के समय कार्य में आये हैं, उसको विशेष वरदान मिला हुआ है।

3.3.88... .. यह होली का उत्सव आप पावन आत्माओं के पावन बनने की विधि का यादगार है। क्योंकि आप सभी नम्बरवार पावन आत्मायें बाप के **याद की लग्न की अग्नि** द्वारा सदा के लिए अपवित्रता को जला देते हो। इसलिए पहले जलाने की होली मनाते हैं, फिर रंग की होली वा मंगल-मिलन मनाते हैं। जलाना अर्थात् नाम-निशान समाप्त करना।

जैसे सुनाया था - कई बच्चे जब याद में बैठते हैं वा ब्राह्मण जीवन में **चलते-फिरते याद का अभ्यास करते हैं तो याद में शान्ति का अनुभव करते हैं लेकिन खुशी का अनुभव नहीं करते**। सिर्फ शान्ति की अनुभूति कभी माथा भारी कर देती है और कभी निद्रा के तरफ़ ले जाती है। शान्ति की स्थिति के साथ खुशी नहीं रहती। तो जहाँ खुशी नहीं, वहाँ उमंग-उत्साह नहीं होता और योग लगाते भी अपने से सन्तुष्ट नहीं होते, थके हुए रहते हैं। सदा सोच की मूड में रहते, सोचते ही रहते। खुशी क्यों नहीं आती, इसका भी कारण है। क्योंकि सिर्फ यह सोचते हो कि मैं आत्मा हूँ, बिन्दु हूँ, ज्योतिस्वरूप हूँ, बाप भी ऐसा ही है। लेकिन मैं कौन-सी आत्मा हूँ! मुझ आत्मा की विशेषता क्या है? जैसे मैं पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूँ, मैं आदि रचना वाली आत्मा हूँ, मैं बाप के दिलतःख़तनशीन होने वाली आत्मा हूँ। यह विशेषतायें जो खुशी दिलाती है, वह नहीं सोचते हो। सिर्फ बिन्दी हूँ, ज्योति हूँ, शान्तस्वरूप हूँ - तो निल में चले जाते हो। इसलिए माथा भारी हो जाता है। ऐसे ही जब स्वयं के प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति परिवर्तन का दृढ़ संकल्प करते हो तो स्वयं प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति शुभ, श्रेष्ठ संकल्प वा विशेषता का स्वरूप सदा इमर्ज रूप में रखो तो परिवर्तन हो जायेगा।

3.3.88... .. सदा अपने को बाप की **याद की छत्रछाया** में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करते हो? छत्रछाया ही सेफ़्टी का साधन है। इस छत्रछाया से संकल्प में भी अगर पाँव बाहर निकलाते हो तो क्या होगा? रावण उठाकर ले जायेगा और शोक वाटिका में बिठा देगा। तो वहाँ तो जाना नहीं है। सदा बाप की छत्रछाया में रहने वाली, बाप की स्नेही आत्मा हूँ - इसी अनुभव में रहो। इसी अनुभव से सदा शक्तिशाली बन आगे बढ़ते रहेंगे।

7.3.88... .. भाग्यवान के नयन अर्थात् दिव्य दृष्टि किसी को भी सदा खुशी की लहर उत्पन्न कराने के निमित्त बनती है। जिसको भी दृष्टि मिलेगी वह रूहानियत का, रूहानी बाप का, **परमात्म-याद का अनुभव करेगा**। भाग्यवान आत्मा के सम्पर्क में हर एक आत्मा को हल्कापन अर्थात् लाइट की अनुभूति होगी। ब्राह्मण आत्माओं में भी नम्बरवार तो अन्त तक ही रहेंगे लेकिन निशानियाँ नम्बरवार सभी भाग्यवान बच्चों की है। आगे और भी प्रत्यक्ष होती जायेंगी।

सदा यह स्मृति रखो कि अमृतवेले से लेकर क्या-क्या भाग्य प्राप्त हैं! सारी दिनचर्या सोचो। सुलाते भी बाप हैं लोरी देकर के। बाप की गोदी में सो जाओ तो थकावट बीमारी सब भूल जायेंगी और आराम करेंगे! सिर्फ आह्वान करो – ‘आ राम’ तो आराम आ जायेगा। अकेले सोते हो तो और-और संकल्प चलते हैं। **बाप के साथ ‘याद की गोदी’ में सो जाओ**। ‘मीठे बच्चे’, ‘प्यारे बच्चे’ की लोरी सुनते-सुनते सो जाओ। देखो कितना अलौकिक

अनुभव होता है! तो अमृतवेले से लेकर रात तक सब भगवान करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है - सदा इस भाग्य को स्मृति में रखो, इमर्ज करो।

23.3.88... ..याद की शक्ति सदा हर कार्य में आगे बढ़ाने वाली है। याद की शक्ति सदा के लिए शक्तिशाली बनाती है। याद के शक्ति की अनुभूति सर्व श्रेष्ठ अनुभूति है। यही शक्ति हर कार्य में सफलता का अनुभव कराती है। इसी शक्ति के अनुभव से आगे बढ़ने वाली आत्मा हूँ – यह स्मृति में रख जितना आगे बढ़ना चाहो बढ़ सकते हो। इसी शक्ति से विशेष सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

31.3.88... .. बापदादा ने देखा – याद को शक्तिशाली बनाने में मैजारिटी बच्चों का अटेन्शन है, **याद को सहज और निरन्तर बनाने के लिए उमंग-उत्साह है।** आगे बढ़ भी रहे हैं और बढ़ते ही रहेंगे। क्योंकि बाप से स्नेह अच्छा है, इसलिए याद का अटेन्शन अच्छा है और याद का आधार है ही – ‘स्नेह’। बाप से रूह-रूहान करने में भी सब अच्छे हैं। कभी-कभी थोड़ी आँख दिखाते भी हैं, वह भी तब जब आपस में थोड़ा बिगड़ते हैं। फिर बाप को उलहना देते हैं कि आप क्यों नहीं ठीक करते? फिर भी वह स्नेह भरी मुहब्बत की आँख है।

17.12.89... .. बापदादा देख रहे थे कि कई बच्चों की अब तक भी बाप के आगे फ़रियाद है कि कभी-कभी **व्यर्थ संकल्प याद को फ़रियाद में बदल देते हैं,** चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाते हैं। विकल्पों की स्टेज को तो मैजारिटी ने मैजारिटी समय तक समाप्त कर लिया है लेकिन व्यर्थ देखना, व्यर्थ सुनना और सोचना, व्यर्थ समय गँवाना - इसमें फुल पास नहीं हैं। क्योंकि अमृतवेले से सारे दिन की दिनचर्या में अपने मन और बुद्धि को समर्थ स्थिति में स्थित करने का प्रोग्राम सेट नहीं करते। इसलिए अपसेट हो जाते हैं। जैसे अपने स्थूल कार्य के प्रोग्राम को दिनचर्या प्रमाण सेट करते हो, ऐसे अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करेंगे तो स्वतः ही कभी अपसेट नहीं होंगे। जितना अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिज़ी रखेंगे तो मन को अपसेट होने का समय ही नहीं मिलेगा।

29.12.89... .. **याद का अभ्यास क्या रहा? – आना और जाना।** और पढ़ाई अर्थात् ज्ञान का सार क्या है? कर्मातीत बन घर जाना है और फिर राज्य करने का पार्ट बजाने अपने राज्य में आना है। यही ज्ञान का सार है ना। तो ‘जाना’ और ‘आना’ – यही ज्ञान और योग है, इसी अभ्यास में दिन-रात लगे हुए हो। बुद्धि में घर जाने की और फिर राज्य में आने की खुशी है।

17.3.91... .. जो इस कल्प में पहली बार आये हैं उन्हों को बापदादा विशेष यादप्यार दे रहे हैं। फिर भी हिम्मत वाले अच्छे हैं। यहाँ से जाते ही टिकिट का इकट्टा करते हैं और आ जाते हैं। **यह भी एक याद की विधि है।** जाना है, जाना है, जाना है....। यहाँ आते हो तो सोचते हो – विदेश जाना है। फिर जाने के साथ आना सोचते हो। ऐसा भी टाइम आना ही है, जो गवर्मेन्ट भी समझेगी कि आबू की शोभा यह ब्राह्मण आत्माएं ही है।

17.3.91... .. जिससे प्यार होता है, वो जो चाहता है, वही किया जाता है। बाप से तो प्यार है ना? तो करो। जब यह याद रहेगा कि बाप मेरे से यही चाहता है तो स्वतः ही शक्तिशाली हो जायेंगे और मायाजीत बन जायेंगे। माया आती तब है, जब कमजोर बनते हो। इसलिए सदा मास्टर सर्वशक्तिवान बनो। मास्टर सर्वशक्तिवान बनने की विधि है – चलते-फिरते याद की शक्ति और सेवा की शक्ति देने में बिजी रहो। बिजी रहना अर्थात् मायाजीत रहना। रोज अपने मन का टाइमटेबुल बनाओ। मन बिजी होगा तो मनजीत मायाजीत हो ही जायेंगे।

25.3.90... .. साधना अर्थात् शक्तिशाली याद। निरंतर बाप के साथ दिल का सम्बंध। साधना इसको नहीं कहते कि सिर्फ योग में बैठ गये लेकिन जैसे शरीर से बैठते हो वैसे दिल, मन, बुद्धि एक बाप की तरफ बाप के साथ-साथ बैठ जाएं। शरीर भल यहाँ बैठा है, और मन एक तरफ, बुद्धि दूसरे तरफ जा रही है, दिल में और कुछ आ रहा है तो इसको साधना नहीं कहते। मन, बुद्धि, दिल और शरीर चारों ही साथ-साथ बाप के साथ समान स्थिति में रहें – यह है यथार्थ साधना। समझा? अगर यथार्थ साधना नहीं होती तो फिर आराधना चलती है। पहले भी सुनाया है कभी तो याद करते हैं लेकिन कभी फिर फरियाद करते हैं। याद में फरियाद की आवश्यकता नहीं। साधना वाले का आधार सदा बाप ही होता है। और जहाँ बाप है वहाँ सदा बच्चों की उड़ती कला है।

31.12.91... .. परिस्थितियाँ व्यक्ति द्वारा या प्रकृति द्वारा या माया द्वारा आना यह ब्राह्मण जीवन में आना ही है। लेकिन स्व-स्थिति की शक्ति ने परिस्थिति के प्रभाव को ऐसे ही समाप्त किया जैसे एक मनोरंजन की सीन सामने आई और गई। संकल्प में परिस्थिति के हलचल की अनुभूति न हो। याद की यात्रा सहज भी हो और शक्तिशाली भी हो। पावरफुल याद एक समय पर डबल अनुभव कराती है। एक तरफ याद अग्नि बन भस्म करने का काम करती है, परिवर्तन करने का काम करती है और दूसरे तरफ खुशी और हल्केपन का अनुभव कराती है। ऐसे विधि-पूर्वक शक्तिशाली याद को ही यथार्थ याद कहा जाता है।

13.2.92... .. सबसे सहज और निरन्तर याद का साधन है-सदा बाप का साथ अनुभव हो। साथ की अनुभूति याद करने की मेहनत से छुड़ा देती है। जब साथ है तो याद तो रहेगी ना। और साथ सिर्फ ऐसे नहीं है कि साथ में कोई बैठा है लेकिन साथी अर्थात् मददगार है। साथ वाला अपने काम में बिजी होने से भूल भी सकता है लेकिन साथी नहीं भूलता। तो हर कर्म में बाप का साथ साथी रूप में है। साथ देने वाला कभी नहीं भूलता है। साथ है, साथी है और ऐसा साथी है जो कर्म को सहज कर्म कराने वाला है। वह कैसे भूल सकता है! साधारण रीति से भी अगर कोई भी कार्य में कोई सहयोग देता है तो उसके लिए बार-बार दिल में शुक्रिया गाया जाता है और बाप तो साथी बन मुश्किल को सहज करने वाले हैं। ऐसा साथी कैसे भूल सकता है ?

24.9.92... .. सबसे सहज और निरन्तर याद का साधन है-सदा बाप का साथ अनुभव हो। साथ की अनुभूति याद करने की मेहनत से छुड़ा देती है। जब साथ है तो याद तो रहेगी ना। और साथ सिर्फ ऐसे नहीं है कि साथ में कोई बैठा है लेकिन साथी अर्थात् मददगार है। साथ वाला अपने काम में बिजी होने से भूल भी सकता है लेकिन साथी नहीं भूलता। तो हर कर्म में बाप का साथ साथी रूप में है। साथ देने वाला कभी नहीं भूलता है। साथ है, साथी है और ऐसा साथी है जो कर्म को सहज कर्म कराने वाला है। वह कैसे भूल सकता है! साधारण रीति से

भी अगर कोई भी कार्य में कोई सहयोग देता है तो उसके लिए बार-बार दिल में शुक्रिया गाया जाता है और बाप तो साथी बन मुश्किल को सहज करने वाले हैं। ऐसा साथी कैसे भूल सकता है ?

24.9.92... .. मधुबन की श्रेष्ठता तो यह है कि ब्रह्मा बाप की विशेष कर्मभूमि है। तो मधुबन निवासी जो भी कर्म करते हैं वो फालो फादर करते हैं। कर्मभूमि में विशेषता कर्म की है। तो कर्म में फालो है? जो भी अमृतवेले से लेकर रात तक कर्म करते हो उसमें फालो फादर है? मधुबन निवासियों को और **एक्स्ट्रा कर्मभूमि की याद का बल** है। वह कर्म में दिखाई देता है वा देना है, क्या कहेंगे? आप अपने में देखते हो? एक-एक कदम सामने लाओ-उठना-बैठना, चलना, बोलना, सम्बन्धसम्पर्क में आना-सबमें ब्रह्मा बाप के कर्म को फालो है? कर्मभूमि का फायदा तो यही है ना। तो इतना लाभ ले रहे हो?

यथार्थ सेवा वा यथार्थ याद की निशानी है-निर्विघ्न रहना और निर्विघ्न बनाना

3.10.92... .. याद से सब कार्य स्वतः सफल होते हैं, कहने वा मांगने की आवश्यकता नहीं

सदा और सहज याद कौन आता है? (बाबा) बाबा भी क्यों याद आता है? (प्यारा है) तो **जो प्यारा होता है उसे याद किया नहीं जाता, उसकी याद स्वतः आती है।** उससे दिल का प्यार है, सच्चा प्यार है, निस्स्वार्थ प्यार है। तो सबसे प्यारा कौन? बाप। तो बाप को भुलाना मुश्किल है या याद करना मुश्किल है? जब कोई ऐसी परिस्थिति आती है फिर स्थिति कैसी होती है? फिर याद करना पड़ता है या याद स्वतः आती है, क्या होता है? परिस्थिति का अर्थ ही है-पर-स्थिति। स्व नहीं है, पर है। दूसरे द्वारा आने वाली स्थिति-उसको कहते हैं पर-स्थिति। तो पर-स्थिति शक्तिशाली होती है या स्व-स्थिति शक्तिशाली होती है? लेकिन उस समय क्या होता है? उस समय पर-स्थिति पावरफुल हो जाती है और याद करना पड़ता है। मेरा बाबा, प्यारा बाबा-तो प्यारे को कभी भूल नहीं सकते। और निस्स्वार्थ प्यार सिवाए बाप के किसी आत्मा से मिल नहीं सकता। आत्मा को कोई न कोई अपने प्रति स्वार्थ रहता है। लेकिन परम आत्मा निस्स्वार्थ है, क्यों? क्योंकि परम आत्मा दाता है, आत्मा लेकर देने वाली है। आत्मा स्वयं दाता नहीं है लेकिन लेकर दे सकती है और परम आत्मा स्वयं दाता है।

12.11.92... .. कोई भी कार्य करो लेकिन यह याद रखो कि 'मेरा बाबा' और बाबा का यह कार्य कर रही हूँ। ट्रस्टी होकर कार्य करो। तो ट्रस्टी को कभी कोई बोझ नहीं होता है। न बोझ होगा, न भूलेंगे। फिर भी भक्ति में याद तो किया है ना। **याद का रिटर्न है-मौज में रहना।**

20.12.92... .. **एक है-सेवा प्रति याद में बैठना और दूसरा है-स्व की कमजोरी को भरने लिए याद में बैठना।** दोनों में अन्तर है। जैसे-अभी भी विश्व पर अशान्ति का वायुमण्डल है तो सेवा प्रति संगठित रूप में विशेष याद के प्रोग्राम बनाते हो, वह अलग बात है। वह तो दाता बन देने के लिए करते हो। वह मांगने के लिए नहीं करते हो, औरों को देने के लिए करते हो। तो वह हुआ सेवा प्रति। लेकिन अपनी कमजोरी भरने के प्रति समय पर विशेष याद करते हो और वैसे अलबेलेपन की याद होती है। याद होती है, भूलते नहीं हो लेकिन अलबेलेपन की याद आती है-हम तो हैं ही बाबा के, और है ही कौन। लेकिन यथार्थ **शक्तिशाली याद का प्रत्यक्ष-प्रमाण समय प्रमाण शक्ति हाज़िर हो जाए।**

22.12.95... .. बाप से प्यार होने के कारण याद में भी शक्तिशाली हो बैठने का, चलने का, सेवा करने का अटेंशन बहुत देते हैं लेकिन खेल क्या होता है कि चाहते हैं कि याद की सीट पर अच्छी तरह से सेट होकर बैठ जायें लेकिन थोड़ा टाइम तो सेट होते हैं फिर हिलना-डुलना शुरू होता है। जैसे बच्चा होता है,

उसको ज्यादा टाइम सीट पर बिठाओ तो हिलेगा जरूर। तो मन भी अगर कंट्रोल में, ऑर्डर में नहीं है तो थोड़ा टाइम तो बहुत अच्छे बैठते हैं, चलते हैं, सेवा भी करते हैं लेकिन कभी सेट होते हैं, कभी अपसेट भी हो जाते हैं। कारण क्या है? होना सेट चाहते हैं लेकिन अपसेट क्यों होते हैं? कारण क्या है? एकाग्रता की शक्ति, दृढ़ता की शक्ति, उसकी कमी है। प्लैन बहुत अच्छा सोचते हैं, ऐसे बैठेंगे, ये अनुभव करेंगे फिर ये सेवा करेंगे, फिर ऐसे चलेंगे, लेकिन कर्म करने में या बैठे-बैठे भी दृढ़ता की शक्ति कम हो जाती है। और बातों में मन-बुद्धि बट जाते हैं। चाहे काम में बिज़ी नहीं है लेकिन व्यर्थ संकल्प ये सबसे बड़ा काम है जो अपने तरफ खींच लेता है। तो स्थूल काम नहीं भी हो लेकिन दृढ़ता की शक्ति बंटने के कारण मन और बुद्धि सीट पर सेट होने के बजाए हलचल में आ जाते हैं।

16.2.96... .. झण्डा सदा ऊंचा रखते हैं क्यों? ऊंचे का अर्थ है कि सबकी नज़र उस तरफ जाये तो जब प्रत्यक्षता का झण्डा लहरेगा तो सबकी नज़र उसी एक बाप के तरफ होगी। **आपके दिलों में तो बाप का झण्डा याद का है ही** लेकिन अभी दूसरों के दिलों में ये प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना है। ये तो कपड़े का झण्डा लहराया लेकिन प्रत्यक्षता का झण्डा सभी को मिलकर लहराना है और लहरना ही है।

3.4.96... .. निमित्त बनने वालों का विशेष बैकबोन बाप है। चाहे बोल इन्हों के हैं लेकिन बैकबोन बाप है। कभी भी इन्हों के मुख से 'मैं' शब्द नहीं निकलेगा। बाबा-बाबा निकलेगा। **तो ये याद का प्रूफ है। 'मैं पन' बाबा में समा गया।**

30.3.98... .. जैसे पहले शुरू में याद का अभ्यास किया, सेवा के नये-नये प्लैन्स बनाये तो उससे इतनी वृद्धि हुई है ना। अभी जैसे पहली रचना हुई, मुख द्वारा डायरेक्ट, फिर हुई मन्सा संकल्प द्वारा ब्रह्मा द्वारा, अभी है शक्तियों द्वारा, जो कहते हैं कि शक्तियों ने वाण चलाये। तो यह वाण जो संकल्प द्वारा स्पष्ट आवाज पहुंच जाए, कोई बुला रहा है, कोई कुछ कह रहा है। जैसे कोई-कोई को स्वप्न पीछे पड़ जाता है, जब तक वह काम पूरा नहीं करता तो बार-बार स्वप्न उसको जागृत करता रहता। कई रिधि सिधि वाले भी कुछ विधि से करते हैं। लेकिन **योग की विधि द्वारा यह आवाज फैले। ऐसे सेवा के प्लैन बनाओ।** जैसे अभी यह उत्सवों का वर्ष मनाया ना। अभी वह तो हो गया, अभी फिर ऐसी कोई लहर फैलाओ जो विहंग मार्ग की सेवा हो। मुख की विहंग मार्ग की सेवायें तो बहुत की। उसकी रिजल्ट तो है ही। अभी फिर कोई नवीनता। समझा। देखेंगे कौन-कौन इसमें नम्बर लेता है।

13.2.99... .. जैसे यह झण्डा लहराया और पुष्पों की वर्षा हुई, ऐसे ही **सदा अपने दिल में बाप की याद का यह झण्डा लहराता रहे।** नीचे ऊपर नहीं हो। कभी भी याद का झण्डा नीचे नहीं हो, ऊँचा हो। तो दुनिया वाले अहो भाग्य, अहो बाप यह पुष्पों की वर्षा दुआओं के साथ आप सबके ऊपर करेंगे। तो एक तरफ याद का झण्डा लहराओ, दूसरे तरफ जो आज बाप का सन्देश मिला – एकानामी का अवतार बनो, तो ऐसे दृढ़ संकल्प का झण्डा अपने दिल में लहराना। और साथ में सेवा के प्रति सदा चारों ओर सर्व आत्माओं के आगे बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा लहराना। यह है झण्डे का महत्त्व। एक दिन आयेगा, आया-कि-आया जब सब लोग बाप की महिमा करते, प्रत्यक्षता के झण्डे के नीचे आयेंगे। सहारा लेंगे और आप सहारेदाता बाप के बच्चे, मास्टर सहारेदाता होंगे। आया-कि-आया।

30.3.99... .. विश्व में एक तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि होगी, दूसरे तरफ आप बच्चों का पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि ज्वाला रूप में आवश्यक है। यह ज्वाला रूप इस भ्रष्टाचार, अत्याचार के अग्नि को

समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी। आपकी लगन ज्वाला रूप की हो अर्थात् पावरफुल योग हो, तो यह याद की अग्नि, उस अग्नि को समाप्त करेगी और दूसरे तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करायेगी। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्वलित करायेगी। एक तरफ भस्म करेगी दूसरे तरफ शीतल भी करेगी। बेहद के वैराग्य की लहर फैलायेगी। बच्चे कहते हैं - मेरा योग तो है, सिवाए बाबा के और कोई नहीं, यह बहुत अच्छा है। परन्तु समय अनुसार अभी ज्वाला रूप बनो। जो यादगार में शक्तियों का शक्ति रूप, महाशक्ति रूप, सर्व शस्त्रधारी दिखाया है, अभी वह महा शक्ति रूप प्रत्यक्ष करो।

15.12.99... दुनिया घबराती है और आप, जितना वह घबराते हैं उतना ही आप सभी याद की गहराई में जा रहे हो। मन का मौन है ही - ज्ञान सागर के तले में जाना और नये-नये अनुभवों के रत्न लाना।

6.7.99(अव्यक्त सन्देश)... अब तो बच्चों को मर्सीफुल (रहमदिल) स्वरूप का पार्ट बजाना है क्योंकि समय अनुसार आत्माओं को बाप-समान शान्ति-देवा बन शान्ति देनी है। अब वायब्रेशन की सेवा आवश्यक है। इसलिए ही बापदादा ने 4 घण्टे पावरफुल याद का डायरेक्शन दिया है। जब निमित्त टीचर्स अपने में बल भरेंगी तब ही औरों में भी लहर फैलेगी। यह रेसपान्सिबिल्टी टीचर्स की है।

31.12.2000... जगत अम्बा माँ ने प्रश्न पूछा - याद की सब्जेक्ट में कई बच्चों का लक्ष्य भी अच्छा है, पुरुषार्थ भी अच्छा है, फिर जमा का खाता जितना होना चाहिए उतना कम क्यों? बातें, रूह-रूहान चलते-चलते यही रिज़ल्ट निकली कि योग का अभ्यास तो कर ही रहे हैं लेकिन योग के स्टेज की परसेन्टेज साधारण होने के कारण जमा का खाता साधारण ही है। योग का लक्ष्य अच्छी तरह से है लेकिन योग की रिज़ल्ट है- योगयुक्त, युक्तियुक्त बोल और चलन। उसमें कमी होने के कारण योग लगाने के समय योग में अच्छे हैं, लेकिन योगी अर्थात् योगी का जीवन में प्रभाव। इसलिए जमा का खाता कोई कोई समय का जमा होता है, लेकिन सारा समय जमा नहीं होता। चलते-चलते याद की परसेन्टेज साधारण हो जाती है। उसमें बहुत कम जमा खाता बनता है।

जमा के खाते की चाबी बहुत सहज है, वह डायमण्ड चाबी है, गोल्डन चाबी लगाते हो लेकिन जमा की डायमण्ड चाबी है “निमित्त भाव और निर्माण भाव”। अगर हर एक आत्मा के प्रति, चाहे साथी, चाहे सेवा जिस आत्मा की करते हो, दोनों में सेवा के समय, आगे पीछे नहीं सेवा करने के समय निमित्त भाव, निर्माण भाव, निःस्वार्थ शुभ भावना और शुभ स्नेह इमर्ज हो तो जमा का खाता बढ़ता जायेगा।

बापदादा ने जगत अम्बा माँ को दिखाया कि इस विधि से सेवा करने वाले का जमा का खाता कैसे बढ़ता जाता है। बस, सेकण्ड में अनेक घण्टों का जमा खाता जमा हो जाता है।

24.2.2002... बापदादा देखते हैं, उस समय उसको आइना दिखाना चाहिए। तो जिस बात में अपना कोई फायदा नहीं है, नॉलेजफुल बनना अलग चीज़ है, नॉलेज है - यह रांग है, यह राइट है। नॉलेजफुल बनना रांग नहीं है, लेकिन वृत्ति में धारण करना यह रांग है क्योंकि अपने में ही मूड आफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकसान होता है।

जितना-जितना याद का बल शक्तिशाली होगा उतना ऐसे ही महसूस करेंगे या कर रहे हैं जैसे बापदादा हमसे ही बात कर रहे हैं।

5.5.2001(अव्यक्त सन्देश).... .. बाप कहते बच्चे, सदा अपने बच्चे के सम्बन्ध से अधिकारी बन पूरा अधिकार लेते रहो। बस बाप को अपना अविनाशी कम्पेनियन बनाओ और हर हाल में अपना सहारा और सहयोग देने वाली कम्पनी है, इस अनुभव से सहज आगे बढ़ते चलो। **बाप के याद की गोदी वा छत्रछाया में सदा सेफ रहो।** कोई भी समस्या, परिस्थिति आवे सिर्फ दिल से याद करो ओ मेरे मीठे बाबा तो अनुभव करेंगे बापदादा मेरे साथी बन साथ हैं और सफलता सामने अनुभव होगी क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों की सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है।

12.9.2001(अव्यक्त सन्देश)..... .. बापदादा तो सदा कहते रहते हैं - एवररेडी रहो लेकिन साथ में यह प्रकृति भी समय समीप का इशारा देने लिए घण्टे बजाती रहती है। यह थोड़ी बड़ी घण्टी बजाई है कि बच्चे अलबेलेपन से अलर्ट हो जाएं। बाकी तो प्रकृति द्वारा विनाश का साधन है साइन्स, आप स्थापना वालों का साधन है - साइलेन्स। इसलिए जैसे वह फोर्स से कर रहे हैं ऐसे आप भी और योगयुक्त, कर्मयोगी स्थिति का जोर-शोर से **पावरफुल याद का स्वयं द्वारा वायुमण्डल बनाओ।** डरो नहीं।

17.9.2001(अव्यक्त सन्देश)..... .. मैजारिटी बच्चों के दिल में नयनों में बस बाबाबाबा ही समाया हुआ है। **उसी एक याद के बल से और सेवा के उमंग- उत्साह के कवच से आगे बढ़ रहे हैं।** बापदादा भी विशेष बच्चों को **याद का रिटर्न** दिल का सहयोग सदा देते रहते हैं इसलिए हर बच्चे को नाम सहित बापदादा की याद देना।

19.3.2002(अव्यक्त सन्देश).....**वर्तमान समय के वायुमण्डल प्रमाण याद की तपस्या ज़रूरी लगती है,** इसलिए वह प्रोग्राम्स ज़्यादा रखें। बाबा बोले, बापदादा तो अब हर मुरली में बच्चों को भिन्न-भिन्न इशारे देते रहते हैं कि समय अनुसार अब आवश्यकता है - सेवा करते भी मनसा शक्ति की सेवा भी साथ-साथ हो। कर्म और योग, बैठते भी और चलते-फिरते भी साथ हो।

बापदादा तो यही चाहते हैं कि अब एक ही समय मनसा शक्ति द्वारा अनुभूति कराने का अनुभव और वाणी की शक्ति द्वारा सन्देश देने का कर्तव्य दोनों का बैलेन्स हो। अभी तक इसमें कमी है।

एक प्रोग्राम के बाद एक दिन विशेष याद का रखना ज़रूरी है, जिसमें स्थूल कर्म करते भी **याद का चार्ट** अच्छा रखने का, कर्म और योग के पावरफुल अभ्यास का अटेन्शन ज़रूरी है। सिर्फ सेवा में बिजी रहना है, यह आवश्यकता नहीं है लेकिन बैलेन्स द्वारा आत्माओं को अनुभूति करानी है। इसके लिए अपनी श्रेष्ठ स्थिति, अपना शुभ चिन्तन शुभ वृत्ति, निरसंकल्प स्टेज में बहुत ध्यान देना ज़रूरी है।

30.11.2002... .. चारों ओर के बच्चों की याद सभी तरफ से बापदादा को पहुंची है। हर एक बच्चा समझता है हमारी याद देना, हमारी याद देना। कोई पत्र द्वारा भेजते, कोई कार्डों द्वारा, कोई मुख द्वारा लेकिन बापदादा चारों ओर के बच्चों को, एक-एक को नयनों में समाते हुए **याद का रेसपान्ड पदमगुणा यादघ्यार दे रहे हैं।** बापदादा देख रहे हैं सबके मन में इस समय कितना भी बजा है लेकिन मैजारिटी के मन में मधुबन और मधुबन का बापदादा है।

4.2.2003... .. आप सब बच्चे जो अब जोरशोर से चारों ओर सन्देश देने की सेवा कर रहे हो, यह सन्देश याद आयेगा कि क्या था, क्या कहा था। इसलिए सन्देश देना और स्व प्रति **याद की शक्ति ज्वाला रूप घण्टे बढ़ा रहे हो,** समय अनुसार यह सेवा और योग शक्ति का प्रभाव पड़ना ही है। आपकी साधना, साधनों से वैराग्य

दिलायेगी और सबका अटेन्शन एक की तरफ जायेगा। इसलिए बच्चे अब सर्व तरफ वैराग्य वृत्ति उत्पन्न कराने के लिए यह ईशारे मिले हैं। अब और तीव्र योग साधना को बढ़ाओ।

17.2.2004... आप सबके दिलों में तो **बाप की याद का झण्डा** लहराता ही रहता है। यह झण्डा तो यादगार के रूप में मनाते हैं। लेकिन आपके दिल में बाप के प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा रहा है। हर एक की दिल सदा क्या कहती! हर श्वास क्या गाता? मेरा बाबा। और बापदादा भी हर सेकण्ड क्या गाता? मेरे मीठे-मीठे बच्चे। अभी वह दिन समीप लाना है जो हर एक आत्मा के दिल में बाप के प्रत्यक्षता का झण्डा लहराये। हर दिल कहे मेरा बाबा। जो पाना था वह पा लिया, इस गीत पर डांस करें। वह दिन भी दूर नहीं है। वाह! भाबा वाह! वाह! बाप के सिकीलधे बच्चे वाह! यह खूब नारा लगेगा। तो आज बापदादा सिर्फ यह झण्डा नहीं देख रहे हैं लेकिन हर एक बच्चे के दिल में जो बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा रहा है वह देख रहे हैं।

24.10.2013... आज आवश्यकता है मन के शक्ति द्वारा परिवर्तन करने की। मन की वृत्तियों को परिवर्तन करने की। अभी चारों ओर जैसे भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार की बातें चल रही हैं **अभी इस वातावरण को मन की शक्ति द्वारा परिवर्तन कर सबके मन में परमात्म याद का उमंग-उत्साह पैदा करो।**

अव्यक्त वाणी संकलित सहज योग पुस्तिका

भाग 1

योगी / सहजयोगी
/ सहयोगी
राजयोगी
निरंतर योगी
प्रयोगी
ज्ञानयोगी
बुद्धि योग
कर्मयोगी
रूहानी यात्रा /
याद की यात्रा

भाग 2

अमृतवेला
योगबल
ड्रिल
प्रेक्टिस
अभ्यास

भाग 3

योगयुक्त स्थिति
विदेही
आत्म-अभिमानि स्थिति
अव्यक्त स्थिति
ज्वाला रूप/ज्योति
स्वरूप
सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप
लाइट माइट
बिन्दु रूप / बिन्दी रूप

भाग 4

देही अभिमानि
लवलीन
कर्मातीत
कम्बाइन्ड स्वरूप
स्मृति स्वरूप
बीजरूप स्थिति
अशरीरी स्थिति

अव्यक्त वाणी संकलित दिव्य शक्तियाँ पुस्तिका

भाग 1

ज्ञान की शक्ति
मनन शक्ति
परखने की शक्ति
निर्णयशक्ति
समेटने की शक्ति
सहयोग शक्ति

भाग 2

एकाग्रता की शक्ति
कैचिंग पावर
कंट्रोलिंग पावर
परिवर्तन की शक्ति
विल पावर
शान्ति की शक्ति

भाग 3

महसूसता की शक्ति
सत्यता की शक्ति
संकल्प शक्ति
संगठन की शक्ति
सामना करने की शक्ति
साइन्स और साइलेन्स

भाग 4

एडजस्टमेन्ट की शक्ति
समाने की शक्ति
सहन शक्ति
संग्रह शक्ति
संग्राम करने की शक्ति
स्नेह की शक्ति

अव्यक्त वाणी संकलित अन्य पुस्तकें

- मेरे ब्रह्माबाबा
- दिव्य गुण (भाग 1-6)
- विकर्माजीत भव। भाग 1 – 8
- उदाहरण मूर्त भव।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क

बी. के निलिमा : (मो) 9869131644, 8422960681